● मुद्रक : श्री सुमेर प्रिंटिंग प्रेस

सोजती गेट, जोधपुर

● मूल्य : ३०) तीस रुपये

● प्रतियां : १०००

● सन् :

● प्रकाशक : मेहरानगढ़ म्यूजियम ट्रस्ट के अन्तर्गत

महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश, जोधपुर

Shri Gaj Singh Rajasthani Series

[*General editor : Dr. Narayan Singh Bhati, Hon. Director*]

Pabu Prakash

[Written by : Mahakavi Modji Ashiya]

Vol. 1

Edited by

Dr. Narayan Singh Bhati
M.A., LL.B, Ph.D.

Published by

Maharaja Man Singh Pustak Prakash

Mehrangarh Museum Trust, Fort, Jodhpur,

Printed at :

Shri Sumer Printing Press

Sojati Gate, Jodhpur,

Cost : Rs 30-00 (Rupees Thirty only)

Copies: 1000

Year : 1983 A. D.

Published by :

Maharaja Man Singh Pustak Prakash

incorporated in—

Mehrangarh Museum Trust, Jodhpur.

अग्रलेख

साहित्य किणी देस या जाति री आतमा ने उजासण वाळी एक सास्वत चीज है जिकी समै रै उलट-फेर अर भौतिक उत्थान में भी उण देस रा लोगां री अंदरूणी ओळख ने वरकरार राखै नै आपरै आपै पांण उण नै आगै वधण री सगती भी देवै। साहित्य रो निरमाण उठारी भासा रै माध्यम सूं हुवै। इणी खातर हर देस री भासा री आपरो महत्व हुया करै, क्यूं के देस री आ भासा जिणनै आंपां मातृभासा केवां, मिनख रै जनम सूं ही उणरै संस्कारों सूं जुड़ियोड़ी हुवै नै पीढियां रो सचेतन सांवठो अनुभव उण भासा रै पांण ही एक पीढी सूं दूसरी पीढी रै संस्कारां में आवै नै आंपां नै सोचण समझण री सही सगती देवै। भारत री न्यारी-न्यारी प्रान्तीय भासावां इण वजह सूं उठा रा लोगां खातर घणी महत्व राखै। इण दीठ सूं राजस्थान री राजस्थानी भासा राजस्थान वासियां खातर घणी मैंताऊ है नै इणरै साहित्य रै उत्थान सूं ही आ भासा नै इणरा बोलण वाळा समरथ बण सकै है– आपरै चितण में अर आपरै कारोबार में भी।

आ खुशी री बात है कै लारला बरसां में आपांरी भासा रै महत्व वास्तै अठारा लोग विसेस जागरुक होया है। इण सूं साहित्य रौ नवौ विकास हुयो है उठै ही पुराणै साहित्य नै उजागर करण री लालसा वधी है।

आ बात सगळा विद्वान मानै कै राजस्थानी रौ पुराणौ साहित्य घणौ सबळ नै सांवठो है नै वो किणी प्रांतीय भासा सूं कमजोर कोनी, पण नवै साहित्य रौ विगसाव तेजी नैं समै री सूझबूझ सागै होणी चाहीजै जिणसूं आपांरो प्रांत समै री रफ्तार सागै चाल नै दुनियां रै चितण में आपरो योग दे सकै। नवै विगसाव खातर भी पुराणै साहित्य रो अध्ययन नै इण री सुरक्षा घणी जरुरी है क्यूं कै साहित्य एक सैलंग परम्परा है जिकी आप नै आपरै संस्कारा री असलियत सूं जुडियोड़ी राखै नै सहज ग्यांन नै हमेसां सगती देवती रैवै। म्हनै इण बात री गुमेज है कै जोधपुर राजघराणै री इण परम्परा नै सबळ बणावण में मोटो योग रह्यो, सृजन नै संरक्षण दोनूं ही तरह सूं। वर्तमान में भी "महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकास" री प्रकासण योजनावां में राजस्थानी ग्रंथां री प्रकासण राजस्थानी सीरीज रै माध्यम सूं करण री व्यवस्था है। इणमें 'पाबू प्रकास' री प्रकासण महत्वपूर्ण है। औ ग्रंथ राजस्थान री एक गोरव गाथा माथै लिखियोड़ो है जिण में राजस्थान रौ वीर–चरित्र आपरै पूरै उजास नै अनोखे आदर्श रै सागै प्रगट हुयो नै जिण रै अध्ययन सूं न केवल राजस्थानी री वीर रस परम्परा रो ही परिचय मिळै, नवी पीढ़ी रै चरित्र निरमाण खातर भी

इण तरै रा ग्रंथां री आज महत्व है। कर्त्तव्यपरायणता नै वचन-दृढ़ता इण री कथा रा मूळ आधार है। पाबूजी देवळ चारणी नै वचन दिया कै जद भी उण रै परवार या गो-धन माथै विपदा आवैला वे हर हालत में हरतरै सूं उणरी रखा करैला नै इण कर्त्तव्य नै निभावण खातर वां बड़ो सूं बड़ो त्याग नै उत्सर्ग कियो जिको दुनियां रै इतिहास में बेमिसाल है। दुनियां में जन-सेवा, त्याग, नै कर्त्तव्य री भावना री सदा महत्व है नै भारत री संस्कृति री तौ ओ ही मूळ आधार है, इणी खातर ऐड़ा कर्मवीर ही जनता री हिरदय जीत नै कालजयी हुया नै वांरा गीत करोड़ा कठां सूं आज दिन गाईजै। मानवता रै ऊँचै आदर्स ने सही विकास खातर इण तरै रा सस्कार जरूरी है नै वो साहित्य जो इण में मदद करै वो अमोल है।

म्हनै खुसी है कै 'महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश' री प्रकासण योजना में इण तरै री आ रचना प्रकाशित हो रयी है। म्हनै उम्मेद है कै राजस्थानी रा समरथ विद्वान डॉ. नारायणसिंह भाटी री देखरेख में संस्थान रा कार्यकर्त्ता नै अनुभवी विद्वान प्रकासण री इण उच्च परम्परा नै विकसित करैला।

गजसिंह

महाराजा, जोधपुर

पाबू प्रकास

: अनुक्रमणिका :

चित्र परिचय



॥ श्री ॥

राठौड़ पाबूजी



सुमेर प्रेस, जोधपुर

भूमिका

किसी भी देश का जैसा इतिहास, जन-जीवन और सांस्कृतिक गौरव होता है उसी के अनुरूप साहित्य की संरचना भी होती है। साहित्य सही मायने में उस समाज का अन्तदर्शन होता है जो एक दूसरी पीढ़ी को प्रभावित करता रहता है और संस्कारों के निर्माण में अपना योगदान देता है। इसलिए लम्बे समय तक उसी समाज का अस्तित्व बना रहता है जो अपनी पहचान अपने आप को अपने साहित्य के माध्यम से देता रहता है। इस प्रकार साहित्य समाज का सम्बल और पथ-प्रदर्शक भी बनता है तथा प्रतिकूल परिस्थितियों में भी उसे अक्षुण्ण बने रहने की शक्ति देता है।

राजस्थान के डिंगल साहित्य का यदि गहराई से अध्ययन किया जाय और उसके दाय की निष्पक्ष दृष्टि से सही परीक्षा की जाय तो यह सत्य निखर कर स्वत: ही सामने आ जाता है कि न केवल राजस्थान अपितु समस्त भारत की सांस्कृतिक और साहित्यिक धरोहर को राजस्थान की अनमोल देन है। यहां के डिंगल साहित्य का इतिहास करीब एक हजार वर्षों का है, जिसमें वीर रस की प्रधानता है तथा शृंगार, भक्ति और नीति विषयक साहित्य की भावधाराएं भी समाज के संस्कारों को बराबर पोषित करती रही हैं।

जब 11 वीं (ग्यारहवीं) शताब्दी के लगभग उत्तरी भारत में मुसलमानों के निरन्तर आक्रमणों से वहां पर राजपूतों का वर्चस्व कम होने लगा तो वहां के बहुत से राजपूत कबीले राजस्थान के मरुस्थल में आ गए और उन्होंने कालान्तर में अपने अनेक छोटे बड़े राज्य कायम किए। यद्यपि राजस्थान में राजपूतों के राज्य और जागीर-समूह इससे भी पहले विद्यमान थे (मेवाड़ में बाप्पा रावळ ने गुहिल वंश के राज्य की नींव बहुत पहले डाल दी थी) परन्तु 12 वीं शताब्दी के पश्चात् तो लगभग पूरा राजस्थान राजपूतों के ही शासन में आ गया था। इस काल में एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना यह घटी कि राठौड़ों ने कन्नौज से पलायन किया तो वे नए राज्य की ताक में थे और अन्ततोगत्वा उन्होंने निरन्तर संघर्ष करके राजस्थान में अपने पैर जमाये। सभी इतिहासकार इस बात को मानते हैं कि राव सीहा राठौड़ों का पहला पूर्वज था जो इस ओर आया और उसके पुत्र आसथान ने पाली पर राज्य कायम किया। इसके पश्चात् उसने खेड़ पर भी अधिकार कर लिया और उसके बाद उसका पुत्र धूहड़ गद्दी पर बैठा। उसने अपने राज्य का विस्तार किया और अपने पुत्र धांधल को कोळूगढ का राज्य दिया। धांधल बड़ा प्रतापी और रीझ-खीझ में पूर्ण क्षत्रिय था। इसी का पुत्र पाबू हुआ, जिसकी ख्याति आज समूचे राजस्थान में व्याप्त है।

पाबू के चरित्र और 'पाबू प्रकास' में वर्णित घटनाक्रम को समझने के लिए उस समय की परिस्थितियों को भली-भांति समझ लेना भी आवश्यक है। वह काल

ऐसा था जब पश्चिमी राजस्थान में राठौड़ अपना वर्चस्व कायम करने के लिए बराबर जूझ रहे थे। वे अपना राज्य स्थिर करने के लिए स्थानीय लोगों से भी आवश्यक सहयोग प्राप्त कर रहे थे। यहां पर पहले से ही ईन्दा, सांखला चौहान भाटी आदि पुराने राजपूत वंशों की बिखरी हुई शासकीय इकाइयां मौजूद थी उनसे जहां इनका निरन्तर संघर्ष होता रहा वहां मुसलमानों के कई कुटुम्बों की शक्ति भी बराबर अवरोधक बनी हुई थी यद्यपि ये कुटुम्ब हिन्दुओं से ही मुसलमान बने थे। उनसे इनका टकराव बराबर होता था। निरन्तर संघर्ष और उत्सर्गमयी स्थिति में रहते हुए उन्होंने न केवल एक लड़ाकू जाति अपितु क्षत्रियत्व के संस्कारों से सम्पन्न कौम का भी परिचय अनेक रूपों में दिया है तथा उनमें पाबू का चरित्र एक ज्वलत उदाहरण है जो आगे के क्षत्रियों का भी आदर्श बना व क्षत्रियों की वीरत्व भावना के साथ-साथ धरती प्रेम, वैर लेने की भावना, वचन, निर्वाह, नारी की संस्कारवान भूमिका, चारणों और गुणीजनों के प्रति सम्मान तथा उनकी धार्मिक व नैतिक मान्यताओं का प्रभाव आगे आने वाली पीढियों के सस्कारों में काम करता रहा।

यह काल यहां के इतिहास में इसलिए भी बड़ा महत्वपूर्ण है कि इस काल में जैसलमेर, चित्तौड़ और रणथम्भोर तथा जालौर आदि स्थानों पर बहुत बड़े शाके हुए, जिनमें यहां के लोगों ने न केवल अपने शौर्य और स्वतन्त्रता की भावना का परिचय दिया अपितु साथ ही आत्म-शक्ति के बल पर ऐसे मानवीय गुणों की ज्योति भी प्रज्व-लित की जो आगे के संघर्षों में बराबर राजस्थान का सम्बल बनी रहीं और आज हम जिस राजस्थान को देखते हैं वह राजस्थान अपने सांस्कृतिक धरातल पर अविचल बना रहा। प्रायः यह कहा जाता है कि इन शाकों में मुसलमानों से राजपूत परास्त होते रहे हैं परन्तु गम्भीरता से सोचने की बात यह है कि मुसलमानों की संगठित सैन्य-शक्ति के सामने इनकी शक्ति भले ही परास्त हो गई हो परन्तु उनका आत्म-बल और स्वाधी-नता में विश्वास परास्त नहीं हुआ था वरना पूरा राजस्थान उसी समय गुलाम हो गया होता और लगभग आठ सौ वर्ष तक यहां क्षत्रियों का राज्य नहीं रहता और तब राजस्थान का जीवन और यहां की संस्कृति क्या होती ? इसका अनुमान निष्पक्ष और सचेतन भाव से सोचने वाला कोई भी व्यक्ति लगा सकता है। यहां के लोगों में वीरों को लोक-देवता की तरह पूजने और उनमें अगाध श्रद्धा रखने की भावना के पीछे यही राज छिपा हुआ है। यद्यपि लोग आज इसे अन्ध-विश्वास और रूढिवादिता कहकर टाल देते हैं परन्तु इस भावना ने लोगों के जीवन को कितना सम्बल दिया है यह तथ्य कम लोग पहचानते हैं।

इस ऐतिहासिक व सामाजिक पृष्ठ-भूमि में लोक-देवता की तरह प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाले वीर प्रायः वे लोग हैं जो बड़े शासक नहीं थे, परन्तु जीवन-आदर्शों के लिए और लोक-मर्यादाओं की रक्षा के लिए उन्होंने बड़े से बड़ा बलिदान किया, इसीलिए

जनता में उनके प्रति विशेष आदरभाव है। जनता की कसौटी ही खरी कसौटी है जिस पर कोई विशिष्ट चरित्र काल के अन्तराल में स्वर्ण-रेखा की तरह चमकता है। ऐसी स्थिति में यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि ऐसे महापुरुषों की ओर न केवल शिष्ट साहित्य लिखने वाले कवि ही आकर्षित हुए अपितु बहुत विस्तृत लोक-साहित्य भी उनके चरित्र एवं कार्य-कलापों को लेकर सृजित हुआ और वह यहां की जनता के जीवन का एक अंग बनकर उनका पथ-प्रदर्शक बनता रहा। पाबू, गोगा व रामदेव आदि ऐसे ही चरित्र हैं और उनसे संबधित शिष्ट साहित्य और लोक साहित्य के महत्व का मूल्यांकन भी इसी परिप्रेक्ष्य में होना चाहिये।

जैसा कि ऊपर संकेत किया है ऐसे वीरों पर लोक-साहित्य और शिष्ट-साहित्य दोनों तरह का साहित्य लिखा गया है परंतु हमारा लक्ष्य पाबू पर लिखे गए एक महाकाव्य का मूल्यांकन करना है। अतः डिंगल की वीर रसात्मक शिष्ट साहित्य परम्परा की ओर भी संक्षेप में दृष्टिपात करना उचित होगा। उपरोक्त ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में डिंगल काव्य की यह परम्परा कोई 12 वीं शताब्दी से ही हमें दिखाई देने लगती है परन्तु 15 वीं शताब्दी तक की बहुत कम रचनायें आज अध्ययन के लिए उपलब्ध हैं क्यों कि या तो अधिकांश रचनाएं उस काल की विध्वंशात्मक परिस्थितियों में नष्ट हो गई हैं या जो मौखिक परम्परा पर जीवित रही वे भी कई कारणों से कालान्तर में विस्मृति के गर्त में खो गई। अतः उस काल के कुछ दोहे और छन्द आदि स्फुट रचनायें ही बच पायीं जो उस परम्परा का आभास कराने में सक्षम हैं।

राजस्थानी साहित्य का मध्यकाल वीररसात्मक कृतियों का अपूर्व भण्डार है। इस काल में सैकड़ों कवियों ने अपनी अनुभूति, कल्पना और वर्णन शक्ति का परिचय देते हुए भाव और शैली दोनों ही दृष्टियों से बड़े विस्तृत साहित्य का सृजन किया है और उसमें अनेक विधायें अपने शास्त्रीय पक्ष की सक्षमता के कारण भी यहां के साहित्य में विशिष्ट महत्व रखती हैं। मोटे तौर पर इस साहित्य को स्फुट और प्रबन्ध दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। स्फुट काव्य प्रायः दोहों, छप्पयों, गीतों झूलणों कुण्डलियों, निशाणियों आदि छन्दों के माध्यम से लिखा गया है। इन छन्दों के भी कई भेदों का प्रयोग विभिन्न कवियों ने अपनी प्रतिभा के अनुरूप किया है। प्रबन्ध-काव्य भी खण्ड–काव्य और महा–काव्य दोनों ही रूपों में लिखे गये हैं, जिनमें खण्ड–काव्यों की संख्या बहुत बड़ी है। प्रायः यह देखने में आया है कि पूर्व मध्य-काल में अधिकांश खण्ड–काव्य ही लिखे गये हैं क्यों कि वह काल प्रमुख रूप से स्फुट काव्य की परम्परा से अधिक प्रभावित रहा है और उच्च कोटि के कवि भी स्फुट काव्य की उत्कृष्ट रचनाएं करके ही उस समय के साहित्य जगत और समाज में ऊंचे से ऊंचा स्थान और सम्मान पाते रहे हैं। उत्तर मध्य काल में आते-आते कवियों ने महाकाव्य रचने की ओर विशेष ध्यान दिया और इस काल में 'सगत रासौ' 'गजगुण रूपक' 'राज रूपक' 'सूरज प्रकाश' 'विन्है रासौ' जैसे

महाकाव्य लिखे गये परन्तु यह परम्परा भी आधुनिक काल में आते-आते समाप्त प्राय: हो गई और बांकीदास जैसे समर्थ कवि ने भी खण्ड काव्य और स्फुट काव्य लिखकर ही संतोष कर लिया।

अंग्रेजी शासन-काल में तो राजस्थानी काव्य शिथिल-सा पड़ गया क्योंकि जिन परिस्थितियों के संवेग से यह साहित्य गतिवान था वे परिस्थितियां एकाएक समाप्त हो गई फिर भी पुरानी परम्परा समाप्त हो गई हो यह बात नहीं और राख में दबी हुई चिनगारी की तरह वे संस्कार अब भी जीवित थे जिससे लोक-मानस पर आदर्शों की छाप धूमिल जरूर हो गई थी परन्तु मिटी नहीं थी।

लोक साहित्य तो अबाध गति से यहां के जन-जीवन में अपना प्रवाह बराबर बनाये हुए था अत: लोक-देवताओं तथा लोक मानस में बसे हुए वीरों के चरित्र को काल विस्मृति के गर्त में डुबो नहीं सका। अत: एक वीर लोक-नायक को लेकर मोडजी आशिया ने 'पाबू प्रकास' जैसे महाकाव्य की रचना की कवि स्वयं चारण था और चारणों के ऐसे घराने में पैदा हुआ था जिसमें बांकीदास जैसे मान्य महाकवि पैदा हो चुके थे और जिन्होंने काव्य की बहुत बड़ी सम्पदा भी संकलित की थी अत: कवि का चारण-काव्य की परम्परा से गहरा लगाव और वीर भावनाओं से संस्कार-जन्य तादात्म्य आदि कुछ ऐसे महत्वपूर्ण तत्व थे जिसने कवि को एक महत्वपूर्ण महाकाव्य लिखने की क्षमता प्रदान की और उसने एक छोटे से गांव में रहते हुए ऐसे महाकाव्य का सृजन किया जो न केवल पाबू के आख्यान को वर्णित करता है अपितु ऐसे संस्कारों के पुंज को साकार रूप प्रदान करता है जो एक जाति के जीवन का सम्बल बनती है और जिसका सार्वभौम प्रभाव अक्षुण्ण रहता है।

कवि के पारम्परिक संस्कार चाहे जो रहे हों पाबू के प्रति समाज में यह सर्वमान्य धारणा कि कलयुग में पाबू एक प्रभावशाली अवतार हैं ने कवि को काव्य रचने की प्रेरणा दी। कवि के कोई पुत्र नहीं था और पुत्रहीन व्यक्ति मोक्ष को प्राप्त नहीं होता है, यह एक बहुत पुराना धार्मिक विश्वास यहां के जन-जीवन में रहा है। अत: कवि के मन में ग्रन्थ रचने के पीछे पुत्र प्राप्ति की चाह जो लौकिक अलौकिक दोनों ही एषणाओं की घुली मिली चाह कही जा सकती है ने इस ग्रन्थ के रचनाकार के हृदय में श्रद्धा भाव को अक्षुण्ण रखा। वैसे भी इस काल में वीर रस का ऐसा प्रबन्ध काव्य लिखना किसी सम-सामयिक प्रेरणा का कारण नहीं हो सकता था क्योंकि जैसा पहले कहा जा चुका है यह समय अंग्रेजी साम्राज्यवाद का समय था और राजस्थान के रजवाड़ों में अब युद्ध-अभियानों की वह स्थिति समाप्त प्राय: हो गई थी जिसने मध्यकाल में राजस्थान की वीर भावनाओं को आलोड़ित कर रखा था। इसके अलावा चारण-कवि-समाज के साथ राजाओं और सामन्तों के वे संबन्ध अब शिथिल पड़ने

लग गये थे जो कि मध्यकाल में देखने को मिलते हैं। अतः ऐसी परिस्थितियों में किसी सम-सामयिक लौकिक वीर-चरित्र को लेकर काव्य लिखने की अभिलाषा अब कवियों में जाग्रत नहीं होती थी, वे या तो नीति परक छोटी-बड़ी रचनायें बनाते थे या फिर पुराने वीरों पर लिखे हुए प्राचीन काव्य को याद करके ही सन्तोष कर लेते थे। यहां यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि चारण काव्य परम्परा एक रूढि में बंध चुकी थी और उसका उद्देश्य भी सीमित होता चला गया था, फलस्वरूप अब यह असंभव सा प्रतीत होता था कि उस परम्परा का कोई कवि समसामयिक परिस्थितियों के धरातल से ऊपर उठकर वीर भावना के शाश्वत तत्वों को सहेजता हुआ संस्कारों की उदात्त भूमिका पर किसी ऐसे वीर-काव्य का सृजन करे कि वह कृति कालावधि से भी ऊपर उठ जाये। फिर भी वंशानुगत अनुभव के आधार पर इस कवि ने एक अच्छी प्रबन्धतात्मक रचना परम्परागत शैली में प्रस्तुत की है।

'पाबू प्रकास' काव्य का मूल्यांकन

जैसा कि पहले कह आए हैं 'पाबू प्रकास' एक प्रबन्ध काव्य है और उसमें सम-सामयिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों के साथ पाबू का सम्पूर्ण चरित्र वर्णित है। हम उसे एक महाकाव्य की संज्ञा भली भांति दे सकते हैं। महाकाव्य के परम्परागत शास्त्रीय लक्षणों के अनुसार उसमें उदात्त चरित्र का जीवन-वृत्त, वीर शृंगार और भक्ति रसों में किसी एक की प्रधानता, प्रकृति चित्रण, चरित्र चित्रण और अन्य सामाजिक मान्यताओं का विस्तार, उस समय की संस्कृति का चित्रण, आठ सर्गों से अधिक सर्गों में ग्रन्थ का विभाजन, विभिन्न छन्दों का प्रयोग तथा धर्म, काम, अर्थ, मोक्ष आदि चारों में से किसी एक की लक्ष्य भूत उपलब्धि ये तत्व प्रमुख माने गए हैं। 'पाबू-प्रकास' में ये सभी तत्व किसी न किसी रूप में विद्यमान हैं।

'पाबू प्रकास' की कथावस्तु

ग्रन्थ में वर्णित कथा पाबू के जीवन को लेकर लिखी गई है। प्रारम्भ में अति संक्षेप में उसके पूर्वजों का वर्णन है। पाबू को एक अलौकिक पुरुष बताने की दृष्टि से उसके पिता धांधल के घर एक अप्सरा की कोख से पाबू का जन्म बताया गया है। बचपन से ही उसकी विचक्षण बाल-सुलभ प्रवृत्तियों को दर्शाया गया है और एक वीर के अच्छे गुणों को भी उसके चरित्र में प्रतिष्ठापित किया गया है। उस काल के वीरों का एक अनिवार्य गुण अश्वारोहण था और वे लोग घोड़ों के बड़े शौकीन होते थे, पाबू की नजर में देवलदे चारणी की घोड़ी काळवी चढ़ गई और उसने उस घोड़ी को प्राप्त करने के लिए उससे प्रार्थना की। चारणी को वह घोड़ी बहुत प्रिय थी और कई वीर उसे मांग चुके थे, यहां तक कि पाबू का बड़ा भाई बूड़ा भी उसे

मांग चुका था पर देवल ने वह घोड़ी उसे भी नहीं दी थी। पावू की विलक्षण वृत्ति को देखकर वह घोड़ी उसको इस शर्त पर दी गई कि वह घोड़ी उसके गायों की रखवाली करती है और जब कभी उस पर ऐसी आपत्ति आए तो पावू उसकी तुरन्त रक्षा करेगा। पावू ने वचन दिया और घोड़ी उसे प्राप्त हो गयी। इसके बाद पावू के अनेक वीरता-पूर्ण कार्यकलापों का वर्णन इस ग्रन्थ में किया गया है जिन्हें सविस्तार परिशिष्ट में दिए गए ग्रन्थसार में देखा जा सकता है। पावू की बहिन पेमलदे जायल के खींची सामन्त जिदराव को व्याही हुई थी और इन दोनों कुटुम्बों में बहुत पुराना वैरभाव था। खीचों के मन में यह कपट बसा हुआ था कि कभी अवसर आए तो पावू को मारकर यह वैर लिया जाय और कालवी घोड़ी को भी प्राप्त कर लिया जाय।

जायल की ओर अकाल पड़ जाने से ये लोग इधर अपनी गायों को लेकर आए थे और आग्रह करने पर भी वापिस जाने का नाम नहीं ले रहे थे जिससे दोनों पक्षों में कुछ तनातनी सी हो गई थी और अवसर देखकर जब पावू ऊमरकोट सोढों के यहां शादी करने गया हुआ था तो पीछे से जिन्दराव ने देवलदे की गायें घेर ली। चारणी ने तुरन्त पावू के पास पुकार की और पावू ने अपने वचन-निर्वाह में एक क्षण भर भी देरी न करके चंवरी में भंवारे खाती हुई अपनी नव विवाहिता पत्नी सोढी का हाथ छोड़कर काळवीं पर सवारी की और अपने कुछ साथियों सहित गायों की वाहर के लिऐ निकल पड़ा। घमासान युद्ध करके पावू ने गायें वापिस प्राप्त कर ली। युद्ध में अनेक वार ऐसा अवसर आया जब वह जिन्दराव को मार सकता था परन्तु उसने उसे अपना बहनोई समझकर और वहिन के सुहाग का ख्याल कर उस पर वार नहीं किया। परन्तु जब जिदराव का दाव आया तो उसने बूड़ा और बाद में पावू दोनों को मार डाला। ऐसी परिस्थितियों में जैसी कि राजपूत परम्परा रही है, पावू और बूड़ा दोनों की पत्नियां सती हुई परन्तु बूड़ा की पत्नी के गर्भ में पुत्र था अतः उसने सती होते समय अपना पेट चीरकर वह पुत्र-रत्न अपने मायके वालों को सम्भलाया। इस दृढ आशा के साथ कि यह इन दोनों वीरों का वैर जिन्दराव से लेगा। यह पुत्र जिसका नाम झरड़ा दिया गया (क्यों कि यह पेट चीर कर निकाला गया था) बचपन से ही बड़ा नटखट और निडर था। जब वह बड़ा हुआ तो उसकी बुआ ने उसे सारी कथा कही और झरड़ा वैर लेने की भावना को हृदय में संजोये वहा से निकल पड़ा। भटकते हुए वह नाथ योगियों के संसर्ग में आया। इस ग्रन्थ में यह भी दर्शाया गया है कि उसे गोरखनाथ के प्रत्यक्ष दर्शन हुए। गोरखनाथ की कृपा से वह दिव्य गुणों से ओतप्रोत अदम्य साहस का धनी हुआ। जिन्दराव उस समय का बड़ा सबल और सक्षम व्यक्ति था परन्तु झरड़ा रात को महलों में पावू की बहन से भेद लेकर पहुंचा और जिन्दराव को ललकारते हुए उसके सीने पर चढ़ बैठा तथा उसकी हत्या करके अपने पिता व काका का वैर लिया। इसके बाद पावू के लोकरंजनकारी चरित्र का बखान कई प्रवाड़ों के रूप में करते हुए ग्रन्थ की समाप्ति की गई है।

'पावू प्रकास' में वर्णित चरित्र

'पावू प्रकास' का प्रमुख नायक पावू राठौड़ है। वह एक धीरोदात्त और ऐतिहासिक नायक है। उसमें वीरता, वचन-बद्धता, नेतृत्व, उदारता आदि ऐसे गुण हैं जो न केवल उसे एक महान व्यक्ति के रूप में प्रतिष्ठित करते हैं अपितु उसे एक लोकादर्श के रूप में भी स्थापित करते हैं। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि पावू लोक-देवता के रूप में प्रतिष्ठित है और उच्च समाज से लेकर निम्न वर्ग तक का उसके प्रति सहज सम्मान भाव है। पावू का चरित्र उस युग की धरोहर है जब यहां सांस्कृतिक उथल-पुथल मची हुई थी और इस संक्रांति-काल में प्राचीन मूल्यों के सार तत्त्व के रूप में कुछ ऐसे नए मूल्यों का सृजन करने वाले लोगों की आवश्यकता थी जो समाज के आत्म - वल और संस्कृति को अक्षुण्य रख सकें। युगों-युगों के लम्बे संघर्ष में निम्नस्तरीय जातियें बड़ा संकटपूर्ण व कष्टप्रद जीवन व्यतीत कर रही थीं। क्षत्रिय आदि लड़ाकू कौमों के कुटुम्ब जहां अपने राज्यों की स्थापना करने में व्यस्त थे वहां हर परिस्थिति में वणिक समाज अपने लाभ की ओर ही दृष्टि लगाए बैठा था और किसी प्रकार के जोखिम का भागीदार बनने से कतराता था, वहां ब्राह्मण-समाज तटस्थ होकर केवल कर्म-काण्ड के जरिये उच्च वर्ग की श्रद्धा का भाजन बने रहने में अपनी होशियारी समझता था और शुद्र लोगों की उसे कत्तई परवाह नहीं थी। वे क्षत्रियों को समय-समय पर बस यह याद दिला देते थे कि वे गौ-ब्राह्मण प्रतिपालक हैं और ब्राह्मणों की रक्षा करना न केवल उनका कर्त्तव्य है अपितु पुण्य का भी मार्ग है। वे सनातन धर्म की उदात्त शिक्षा देने में अब सक्षम नहीं रह गए थे परंतु मन्दिरों और मठों में अपना एकाधिपत्य स्थापित कर सामन्तों का सा जीवन व्यतीत करने की ओर प्रवृत्त हो गए थे। क्योंकि उनकी जागीरें (डोली) थी और अपनी प्रवंध - व्यवस्था भी थी। ऐसी स्थिति में धर्म और संस्कृति के अत्यन्त संकुचित दायरे में पूरा समाज एक होते भी अलग-थलग पड़ने लग गया था और निम्न वर्ग के प्रति सद्भाव तथा उनकी कठिनाइयों से उन्हें उवारने की ओर समाज का उच्च वर्ग कोई ध्यान नहीं दे रहा था जिससे उच्च वर्ग को जो सहयोग पिछड़ी हुई जातियों से पहले प्राप्त होता था वह भी कम होता जा रहा था। ऐसी स्थिति में इस पिछड़े वर्ग को समाज का एक अभिन्न अंग बनाने और उनमें आत्म-विश्वास जाग्रत करने का कार्य पावू जैसे पुरुषों ने किया, इसीलिए उनके चरित्र की विशिष्ट स्थापना लोक-मानस में हुई। उन दो सौ वर्षों के काल में न केवल पावू अपितु अन्य लोकनायकों की भी अवतारणा हुई जिनमें रामदेव, हड़वू, गोगा और मेहाजी का भी उल्लेखनीय स्थान है। यह प्राचीन दोहा आज भी इस बात की साक्षी देता है :—

"पावू हड़वू रामदेव मांगळिया मेहा।
पांचू पीर पधारज्यो गोगादे जेहा॥"

कहने का तात्पर्य यह है कि पावू जैसे चरित्र की अवतारणा समाज में कोई आकस्मिक घटना नहीं थी, वह उस काल की एक ऐसी आवश्यकता थी जिसकी पूर्ति पावू

ने की। पाबू के उदात्त चरित्र का मुख्य तत्व उसका वचन निर्वाह है और वचन निर्वाह हेतु ही उन्होंने प्राणोत्सर्ग किया था और उसके गुणगान की काव्य में प्रेरणा भी इसी से फूट निकली है तथा उससे पवाड़ों और शिष्ट-साहित्य का सृजन हुआ है। वचनवद्धता के पीछे गौरक्षा का भाव चारणों और राजपूतों के सनातन सम्बन्ध का अत्यन्त पवित्र और ऊर्ध्वगामी निर्वाह आदि मुख्य बातें हैं जो यहां की संस्कृति की रेखाओं को उज्ज्वलतर और अधिक पुख्ता करती हैं परंतु इस आदर्श के निर्वाह हेतु पाबू ने अपने कुटुम्ब का जितना सहयोग नहीं लिया उतना यहाँ की भील जाति का लिया और उन्हें इतना अपनत्व दिया कि कर्त्तव्य की उच्चतम वेदि के चारों ओर बहते हुए रक्त में अपने रक्त के साथ भीलों के रक्त के मिल जाने की प्रसन्नता पाबू ने व्यक्त की :—

"ओ रगत मिळ जावण दे सांवळा रे रगत मांय ।"

इससे पाबू के चरित्र की सार्वभौम उदात्तता को कवि ने उच्चतम शिखर पर पहुँचा दिया है और यही पाबू के चरित्र की एक ऐसी विशेषता है जिसे कवि ने उपरोक्त विशेषताओं के साथ बखूबी अपने काव्य में प्रकट किया है तथा उसकी यथा स्थान सुन्दर व्यंजना की है। पाबू आज भीलों के पूज्य ही नहीं ईष्ट देव भी हैं और इसीलिए पाबू के पवाड़े मुख्य रूप से भील जाति ही गाती है जिन्हें समाज के सभी वर्ग बहुत श्रद्धाभाव से सुनते हैं। इस महाकाव्य में कवि ने पाबू को न केवल युद्ध-वीर ही बताया है अपितु उसे उदार और स्नेहिल भी चित्रित किया है। उसने अपनी बहिन के प्रति स्नेह के वशीभूत होकर ही अपने प्रबल शत्रु जिन्दराव को युद्ध में नहीं मारा। अपनी दूसरी बहिन के पति सिरोही के राव को भी बहिन के कहने पर क्षमा किया। वह युद्ध-भूमि में जहाँ वीर नायक है वहां विलास प्रसंग में शृंगार की सरसता का नायक भी है और अपनी प्रेमिका राज कुंवरी का वरण करने जिस उत्साह और सजधज के साथ जाता है उसी उत्साह और सज-धज के साथ वह सेनारूपी कुमारी का वरण करने के लिए भी प्रस्थान करता है। दोनों स्थितियों में उसका समभाव वीर और शृंगार रसों के एकत्व से उसके व्यक्तित्व को अक्षुण्ण रंगों से मूर्तिमान करता है। महाकवि बांकीदास ने भी इस रूप की बड़ी सुन्दर व्यंजना की है जिसे उद्धृत करने का मैं लोभ संवरण नहीं कर पा रहा हूं :—

'वरी रायकुंवरी जेण वागे रसिक ।
वरी घड़ा कुंवारी तेण वागे ।।"

युग-पुरुष अपने एक विशिष्ट दायित्व को पूरा कर लेने के बाद वहां नहीं ठहरते न वे अपने बलिदान से प्राप्त सफलताओं के भोग की इच्छा करते हैं और न यश की कामना ही करते हैं। पाबू भी ठीक इसी प्रकार के युग-पुरुष के रूप में इस काव्य में चित्रित हुआ जो अपने कर्त्तव्य-निर्वाह की छाप समाज में छोड़कर इस दुनियां से प्रस्थान कर जाता है और जल में कमल जैसे उसके व्यक्तित्व की सौरभ ही अब शेष रह गई है

जो कवियों की वाणी का शृंगार बनती है। इस काव्य में पाबू के उदात्त चरित्र की खूबियों को कवि ने बड़े धैर्य के साथ विस्तार दिया है और समय - सापेक्ष सांस्कृतिक उथल-पुथल में एक प्रकाश-पुन्ज की तरह उसकी सफल स्थापना की है। इस चरित्र से एक जातीय चरित्र का प्रकाश निरन्तर विकीर्ण होता है और आगे आने वाले काल में वह वीरों को प्रेरणा ही नहीं देता, उनके चरित्र को सामाजिक उपयोगिता की कसौटी भी प्रदान करता है।

पाबू की पत्नी सुपियारदे सोढ़ी

सोढ़ी क्षत्रिय नारियों के आदर्श की एक प्रतीक के रूप में इस काव्य में चित्रित हुई है। वह रूपवती और गुणवती तो है ही किन्तु साथ ही क्षत्रिय ललनाओं की तरह साहसी और कर्तव्यपरायण भी है। सोढी जाति की नारियों की सुन्दरता राजस्थान में प्रसिद्ध रही है और उसके अनुरूप ही इस काव्य में इसके सौन्दर्य का बखान किया गया है। राजपूत नारी में वीर-भावना, युद्ध में भाग लेने की लालसा और पति के मरण पर चितारोहण मध्यकालीन संस्कृति की सामान्य विशेषताएं बन चुकी थीं। इसी के अनुसार जब पाबू के पास देवल चारणी की पुकार पहुंची और वह चंवरी का गठबन्धन छोड़ कर युद्ध के लिए तत्पर हुआ तो साधारण नारियों की तरह प्रेम-विह्वल होकर सोढ़ी ने करुणा भरे आँसुओं की पाल बाँध कर अपने पति का रणपथ अवरुद्ध नहीं किया परन्तु उसने भी उसके साथ युद्ध में हाथ बटाने की इच्छा प्रकट की। एक सहधर्मिणी का इससे बड़ा धर्म क्या हो सकता था, जो नई दुल्हन ने यौवन की देहली पर पांव रखते ही प्रकट किया। यदि उस परिस्थिति की हम कल्पना करें तो एक अद्भुत चित्र हमारी आँखों के सामने प्रस्तुत होता है। वैसे तो वीर नारियां अपने पति के हर संकट में सहभागी बनती रही हैं पर जिस नारी ने चँवरी में बैठकर पूरे फेरे ही नहीं खाये न पति के प्रेम का कोई सुख-भोग ही किया वह जीवन की उद्दाम लालसाओं के आवेग को एकाएक जीवन की बलिवेदी पर समर्पण करने को तत्पर हो गई, यह यहां लक्ष्य करने की बात है कि सहधर्मिणी का यह विलक्षण साहस भरा त्याग पाबू के लिए कितना प्रेरणादायी रहा होगा। पाबू की वीरगति पर भला ऐसी नवविवाहिता पत्नी आँसू बहाने कब बैठती, वह उसी प्रणय-सूत्र का उल्लास हृदय में संजोये चितारूपी चँवरी पर सोलह शृंगार से सज्जित होकर आ बैठी और उस अग्नि में पावन होकर मानों धूम-लता के सहारे स्वर्ग में पहुंच गई। उस समय की नारी का यह सती-रूप वीरों के लिए सदा प्रेरणादायी मानकर उस समय के समाज और कवियों ने उनका बखान किया है और 'पाबू प्रकास' के रचयिता ने भी इसका निर्वाह सहृदयता पूर्वक किया है इसीलिए सोढ़ी रानी भी आज पाबू की तरह अमर हो गयी। आज की परिस्थितियां इससे बहुत भिन्न हैं अतः नारी का यह सती-रूप समय-सापेक्ष ही समझा जाना चाहिए।

बूड़ा

बूड़ा पाबू का बड़ा भाई है। वह धांधल की पहली पत्नी से पैदा हुआ था और धांधल की मृत्यु के उपरान्त गद्दी का अधिकारी बना था परन्तु उसमें पाबू जैसी वीरता, उदारता आदि विशेषताएं नहीं थीं, फिर भी वह अपने समय का माना हुआ वीर था। जब देवल चारणी की गायें चुराई गई तो उसने पहले पहल बूड़ा से ही निवेदन किया था कि वह उनका पीछा करे क्योंकि गायों की वाहर चढ़ना हर क्षत्रिय का धर्म था परन्तु बूड़ा ने ऐसा करने से इन्कार कर दिया। इस टालमटोल का मुख्य कारण यही रहा होगा कि बूड़ा ने भी काळवी घोड़ी चारणी से मांगी थी परन्तु देवल ने घोड़ी बूड़ा को न देकर बाद में पाबू को दे दी थी। यदि बूड़ा इस अवसर पर अपना कर्त्तव्य समझकर ही वाहर चढ़ जाता और गायों को घेर लाता तो शायद पाबू के प्राणोत्सर्ग की नौबत नहीं आती। परन्तु बूड़ा ने एसा नहीं किया जिसके फलस्वरूप संकट की विकरालता बढ़ गई और बाद में समाज की लांछना से बचने हेतु बूड़ा ने भी युद्ध में भाग लिया और वह भी युद्ध मारा गया। बूड़ा ने भी पाबू की तरह ही वीरता के साथ लड़ते हुए अपने प्राणों की आहुति दी थी और उसकी पत्नी भी उसके पीछे सती हुई परन्तु उसका चरित्र पाबू की तरह नहीं निखर पाया क्यों कि समय पर उसने अपने कर्त्तव्य की ओर ध्यान नहीं दिया तथा आपसी ईर्ष्या का शिकार हो जाने के कारण वह उस यश का भागी नहीं बन सका जैसा कि पाबू बना। इस प्रकार की ईर्ष्या की भावना उस समय के क्षत्रियों में खूब फैली हुई थी उसी का प्रतीक बूड़ा कहा जा सकता है और इस ईर्ष्या के वशीभूत ही अनेक घटनाओं में राजपूतों की पराजय होती रही है। इस परम्परा के लक्षण 'पाबू प्रकास' की इस घटना में भी देखे जा सकते हैं।

चांदा

चांदा भील जाति का सरदार था और पाबू का अभिन्न मित्र होने के नाते सदा उसके साथ रहता था। बचपन से ही पाबू भीलों के साथ खेलता शिकार में उन्हें साथ ले जाता और उनसे एक भातृत्व-भाव का व्यवहार करता। इस शूद्र जाति से इतना मेल मिलाप रखने के कारण कई बार उसके कुटुम्ब की नारियां और अन्य लोग भी पाबू को उपहास का पात्र बनाते परन्तु वह उसकी परवाह नहीं करता था। भीलों के प्रति पाबू की सहज आत्मीयता के कारण ही उनका सरदार चांदा हर संकट की घड़ी में उसके साथ रहता और अनेक युद्ध-अभियानों में भी उसने भाग लिया। चांदा वीर होने के साथ-साथ एक विश्वासपात्र व्यक्ति था। उसे जहां भीलों का पूर्ण विश्वास प्राप्त था वहीं पाबू के लिए क्षत्रियों से बढ़कर सहयोग देने वाला था। उसकी इस चारित्रिक विशेषता के कारण ही पाबू और भीलों का आद्योपान्त सम्बन्ध बना रहा और जब आखरी युद्ध में पाबू ने जूझ कर प्राणोत्सर्ग किया तो कितने ही भीलों ने उसके साथ

प्राणों की आहुति दी। इस प्रकार चांदा भील जाति की वीरता, विश्वसनीयता और स्वामी-भक्ति का प्रतीक बन गया और तब से भील जाति राजपूतों के बहुत निकट सम्पर्क में आयी। वह उनके शिकार अभियानों में भी सुरक्षा के लिए अंगरक्षक की तरह आगे आने वाले समय में बराबर काम देती रही। महाराणा प्रताप के युद्ध अभियानों और संकट के काल में उनका सहयोग इस परम्परा का एक बहुत बड़ा प्रमाण है अन्य शुद्र जातियों की अपेक्षा राजपूतों और भीलों का आधुनिक युग में भी घनिष्ट सम्बन्ध इसी संस्कारगत भावना के कारण है।

जिंदराव खीची

जिन्दराव जायल का खीची सरदार था। वह अपने समय का एक शक्तिशाली, सजग और प्रशासन-निपुण वीर था। बूड़ा की सगी बहिन पेमलदे उसे ब्याही हुई थी। इस प्रकार इन दोनों परिवारों में बहुत निकट का सम्बन्ध था परन्तु इन दोनों कुटुम्बों में पुराना वैर-भाव भी था क्यों कि उस समय में धरती के लिए कुटुम्बों में आपसी तनाव और युद्ध होना एक साधारण सी बात थी। जिन्दराव वैमनस्य, ईर्ष्या और वैर-भाव रखने वाला व्यक्ति था इसलिए वह पाबू से और भी रुष्ट हो गया क्यों कि चारणी ने काळवी घोड़ी जिन्दराव को नहीं दी थी। इन कारणों से उसके मन में वैर-भाव और प्रबल हो गया और उसने अवसर देखकर चारणी की गायें घेर ली जिसके फलस्वरूप युद्ध हुआ। इस युद्ध में ग्रन्थकर्ता ने बताया है कि पाबू को ऐसा अवसर मिला था कि वह जिन्दराव का प्राणान्त कर देता परन्तु उसने अपनी बहिन के सुहाग का ख्याल करते हुए बहनोई के प्राण बक्श दिये परन्तु जब जिंदराव का वार आया तो उसनें किसी प्रकार का खयाल नहीं किया और पाबू को मार डाला इससे उसके चरित्र की निकृष्टता प्रमाणित होती है। परन्तु युद्ध में अवसर न चूकना भी नीति का एक नियम है उसने उसी नीति का पालन किया लेकिन मानवता का अवलम्ब उसने त्याग दिया इसीलिए वह जन-प्रशंसा का पात्र नहीं बन सका। वह बड़ा सावधान व्यक्ति था और इसीलिए इस तथ्य को उसने कभी नजरअन्दाज नहीं किया कि उसने पाबू को मारा है अतः उसके कुटुम्ब वाले इसका वैर अवश्य लेंगे। इसलिए यह सदा सावधान रहता था और अपनी सुरक्षा का पूरा प्रबन्ध रखता था। इस ग्रन्थ में दर्शाया गया है कि रात्री को जहां वह अपने महल में सोता था उसके चारों ओर कितने ही सुरक्षात्मक उपाय किए गये थे। वैर कभी बूढा नहीं होता यह राजस्थान की पुरानी कहावत है अतः कई वर्ष बीत जाने के बाद भी 'झरड़ा' जब युवा हुआ तो उसने अपने पिता व काका का वैर जिन्दराव को मारकर ले ही लिया और उसके सुरक्षा-प्रबन्ध यों ही धरे रहे क्योंकि जो जैसा करता है वैसा भरता है। पाबू जैसे विलक्षण और उदार सम्बन्धी की उसके हाथों क्रूर मृत्यु के घोर अनाचार और सोढी के श्राप से भला वह कब उबर सकता था। इस प्रकार इस काल में जिन्दराव की स्थिति एक खलनायक की स्थिति के रूप में सफलता पूर्वक वर्णित की गई है।

'पावू प्रकास' में रस योजना

पावू प्रकास में जीवन के अनेक प्रसंगों का उद्घाटन यथास्थान हुआ है अतः इसमें लगभग नौ रसों का परिपाक देखने में आता है। परन्तु वीर रस इसका प्रधान रस है। वीर रस की उद्भावना पावू द्वारा लड़े गए तीन चार युद्धों के प्रसंगों में देखी जा सकती है परन्तु जहां पावू और जिन्दराव का अन्तिम युद्ध हुआ है वहां वीर रस अपनी चरमता में प्रकट हुआ है और वीर रस के साथ-साथ अद्भुत, भयानक तथा वीभत्स रस भी सहयोगी रसों के रूप में प्रकट हुए हैं।

वीर रस का वर्णन वैसे तो परम्परागत रूप में ही देखने को मिलता है परन्तु जब प्रतिपक्षी नायक जिंदराव से वह युद्ध करता है तो अर्जुन के सामने जैसी धर्म-संकट की स्थिति आ गई थी कुछ वैसी ही स्थिति पावू के सामने आयी और उसे यह खयाल बराबर बना रहा कि वह अपने कर्त्तव्य के लिए अपने बहनोई से ही लड़ रहा है। एक ओर उसने जहां अपनी कर्त्तव्य परायणता के निर्वाह के लिए युद्ध किया वहां उसने अपने शत्रु जिंदराव के प्राण न हरकर अपनी बहिन के प्रति स्नेहभाव का भी निर्वाह किया। पावू ने चारणी को गायें छुड़ाकर अपने कर्त्तव्य को पूरा किया यद्यपि उसे अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ा। इन परिस्थितियों के बीच से वीर रस का जो परिपाक हुआ है वह अपने सात्विक ओज में अद्भुत व अनुपम है। यही 'पावू प्रकास' के वीर रस की एक विशेषता कही जा सकती है जो डिंगल के अनेक वीर-काव्यों से उसे अलग करती है और इसका प्रभाव भी पाठक के मनपर स्थायी रूप से पड़ता है। इस वीर रसात्मक घटना के बाद यद्यपि पावू के क्षत्रियोचित उत्सर्ग की अमरता में किसी को कोई सन्देह नहीं रहता; परन्तु चारणी के भाव-विभोर कर देने वाले स्नेहिल वार्तालाप और सोढ़ी के सती होने की शृंगार-रंजित करुणा पाठक को एक विशेष भाव-जगत में पहुँचा देती है। यद्यपि सती के सती होने में भी उत्साह उसका स्थायी भाव माना जा सकता है और उसके अनुसार उसका चिता-रोहण भी कर्त्तव्य की वेदि पर एक वीरतापूर्ण कार्य ही है परन्तु यहां सोढ़ी के उत्साह को बरकरार रखते हुए भी कवि ने जो वर्णन किया है वह देवल चारणी के वार्तालापों के मध्य और कुटुम्ब की विलापजन्य स्थिति के मध्य पाठक का हृदय करुणा से आप्लावित कर देता है अतः वीर रस के बाद ही ठीक उसके विपरीत शृंगारमयी करुणा का यह वातावरण पाठक को द्रवीभूत कर देता है और सम्बन्धित पात्रों को एक नये मानवीय आलोक से स्नात कर उन्हें स्मरणीय उज्ज्वलता प्रदान करता है। इससे प्रतीत होता है कि कवि को मानवीय भावनाओं और जीवन की विकट परिस्थितियों में उनके उद्वेलन का बहुत अच्छा अनुभव था इसीलिए परिस्थितियों के अनुकूल वह ऐसी विचित्र रस-योजना का सामंजस्य बिठा सका जिसमें एक प्रकार की नाटकीयता भी देखने को मिलती है और पूरा प्रसंग एक क्रियाशील चित्र की तरह मानस-पटल पर उभर जाता है। इस प्रकार इस काव्य-नायक की मोक्ष-प्राप्ति भी अनन्त यश से मण्डित करने में कवि सफल हुआ है।

पावू का वचपन लाड प्यार से गुजरा था अतः उन स्थलों पर वात्सल्य रस की सृष्टि हुई है वहां 'झरडा' की गोरखनाथ में अनन्य भक्ति के चित्रण में भक्ति-रस की धारा भी प्रवाहित हुई है। इस प्रकार इस काव्य में प्रसंगानुकूल ढंग से सभी रसों का परिपाक देखने को मिलता है परन्तु वीर रस ही इसका प्रमुख रस है।

'पावू प्रकास' में वर्णन वैशिष्ट्य

जैसाकि प्रारम्भ में कह आये हैं वह काल एक सामाजिक ऊहापोह व राजनैतिक उथल-पुथल का काल था और उस समय में जहां अनेक राजपूत कुटुम्व अपना वर्चस्व कायम करने हेतु संघर्षरत थे वहां क्षत्रियोचित गुणों की स्थापना भी नये सिरे से हो रही थी, ऐसे समय में पावू का उपाख्यान हमारे सामने आता है। अतः इस काव्य में उस समय की राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक अवधारणाओं का चित्रण हुआ है और कवि ने उस काल के वातावरण को जीवन्त रूप में चित्रित करके अपने अनुभव का अच्छा परिचय दिया है। कवि को नाथ सम्प्रदाय की भक्ति-प्रणाली और उसकी क्रियाओं का भी अच्छा ज्ञान था उसका विस्तृत चित्रण उसने यथाप्रसंग किया है, यह उस समय में यहां नाथ सम्प्रदाय के प्रचार और उसके प्रभाव को द्योतित करता है।

भौगोलिक एवं आर्थिक स्थिति का वर्णन

'पावू प्रकास' में जिन घटनाओं का वर्णन है, ये घटनायें पश्चिमी राजस्थान से सम्वन्धित हैं, विशेषकर मारवाड़ से और इसमें कवि ने यह बताया है कि उस समय में पशु-धन तथा खेती पर समाज की आर्थिक स्थिति अवलम्वित थी इसीलिए चारणी अपनी गायों के प्रति इतनी चिन्तित थी और वास्तव में उस समय गौ - धन ही यहां की विशिष्ट सम्पति थी क्यों कि पशुओं को चराने के लिए यहां वहुत वड़े चरागाह उपलब्ध थे। उधर जिन्दराव भी अपने गाँव में अकाल हो जाने के कारण गायें लेकर ही इस ओर आया था। उस समय में गौ-धन की चोरी भी वहुत होती थी और गायों की रक्षा के लिए कई युद्ध होते थे। मारवाड़ एक निर्जल प्रदेश रहा है परन्तु आबादी की कमी की वजह से यहां पर्याप्त चरागाह उपलब्ध थे इसलिए गायों एवं ऊंटों के टोले रखने का विशेष रिवाज था और यह यहां के समाज की आर्थिक स्थिति का एक आधार भी था। घोड़े-घोड़ियों की बड़ी कद्र थी क्योंकि उस काल में सैन्य - शक्ति का अश्व विशिष्ट अंग थे।

सामाजिक रीति-नीति का वर्णन

उस समय भी यहां का समाज वर्गों के हिसाव से वंटा हुआ था परन्तु वर्ण-व्यवस्था की रूढ़ियों में कई परिवर्तन भी आ गये थे। क्षत्रियों का शूद्र जातियों से भी नजदीक का सम्पर्क यहां के जीवन की एक विशेषता के रूप मे इस काल में प्रकट

हुआ जिसकी वजह से पाबू के चरित्र को एक वैशिष्ट्य प्राप्त हुआ है। राजपूत कुटुम्बों के वैवाहिक सम्बन्ध, पुराने वैर को न भूलने की भावना, विवाह आदि उत्सवों के अवसर पर विशिष्ट साज-सज्जा और प्रदर्शन, आर्थिक सम्पन्नता का सामाजिक मूल्यों में स्थान, नारी सौन्दर्य के प्रति विशिष्ट आकर्षण आदि कुछ ऐसी बातें हैं जिनका विस्तार के साथ चित्रण इस काव्य में हुआ है। इस काल में जो विशिष्ट बात ध्यान देने योग्य है वह यह है कि चारणों और राजपूतों के आपसी सम्बन्ध इस काल में घनिष्ट से घनिष्टतर बनते जा रहे थे और चारण, राजपूतों के जीवन के एक विशिष्ट अंग के रूप में उभरते हुए दिखाई देते हैं उनका चोली-दामन का साथ एक विशिष्ट भाव-भूमि के आधार पर चित्रित हुआ है और पाबू की वचन-बद्धता ने उसे एक ऐसा गौरव प्रदान कर दिया है जो इन जातियों के आपसी सम्बन्धों को भविष्य में भी एक आदर्श पुन्ज की तरह प्रकाशवान करता रहा है और दोनों जातियों के बीच एक पवित्र सम्बन्ध के साथ साथ संघर्ष में उत्साह-वर्धक भूमिका के निर्माण में इन जातियों के योगदान को भी प्रकट करता है। चारणों द्वारा राजपूत वीरों के प्रशस्तिगायन के पीछे इस भावना को समझना बहुत आवश्यक है, क्योंकि इसे समझे बिना समूचे डिंगल साहित्य के मर्म को भी हृदयंगम नहीं किया जा सकता।

युद्ध वर्णन

वैसे तो पूरे ग्रन्थ में पाबू के वीरतापूर्ण क्रिया-कलापों में कई प्रसंग उभर कर सामने आये हैं परन्तु जहां तक युद्ध-वर्णन का प्रश्न है, मुख्य रूप से जिंदराव के साथ हुए पाबू के युद्ध का, कवि ने विस्तृत वर्णन किया है। पाबू की सेना जहा भीलों और भाई बान्धवों से सजी है वहां जिंदराव के पास अपने खुद के सैनिकों के अलावा भी खीची कुटुम्बों के कई सदस्य हैं। दोनों सेनाओं का युद्ध-वर्णन वैसे तो परम्परागत रूप में ही प्रकट किया गया है परन्तु उससे यह भली-भांति प्रकट होता है कि युद्ध के तौर-तरीकों व अस्त्र-शस्त्रों की अच्छी जानकारी के साथ शस्त्र-संचालन का भी कवि को पूर्ण ज्ञान है इसीलिए उसने धनुष, तलवार और भाले आदि के प्रयोग का बहुत ही सधे हुए ढंग से वर्णन किया है।

युद्ध की भयंकरता में बूड़े का मारा जाना, पाबू और जिन्दराव का आमने सामने होना आदि कुछ ऐसे वर्णन हैं जो पाठक को रोमांचित कर देते है। युद्ध-वर्णन में यह एक बड़ी विशेषता है कि कवि ने पाबू की घोड़ी को बड़ा महत्व दिया है। पाबू की अप्सरा माता उसे छोड़कर बचपन में ही चली जाती है परन्तु उसका मातृ-हृदय उससे अलग नहीं होता। वह कहती है कि वह काळवी घोड़ी के रूप में अवतरित होकर पाबू की रक्षा करेगी। यहां यह उल्लेखनीय है कि राजपूत संस्कृति में घोड़े-घोड़ियों को देव-योनि में माना गया है और घोड़े की पीठ थपथपाते समय उसे

'वापो' कहकर भी संवोधित किया जाता रहा है। अतः अश्व-योनी के साथ यह आदर-भाव का निर्वाह इस काव्य में अपनी चरमता पर पहुँच गया और पावू की घोड़ी स्वयं उस युद्ध में कितने ही शत्रुओं को अपने पैरों तले रौंद देती है, उसकी दहला देने वाली हिनहिनाहट और विकराल चेष्टाओं से शत्रुओं के कलेजे कांप उठते हैं और जिधर काळवी वढ़ती है उधर ही शत्रु-पक्ष को खण्ड-विखण्ड कर देती है। इस घोड़ी के सहारे युद्ध में पावू का ओज और वीरत्व भी द्विगुणित हो गया है। युद्ध-वर्णन में धराशायी होने वाले वीरों का वर्णन है वहां भीलों की वीर गति को भी असाधारण महत्व दिया गया है ऐसा महत्व जो सामान्य तथा वीर काव्यों में साधारण जन को नहीं दिया गया और न ही उनकी इतनी प्रशंसा की गई।

श्रृंगार वर्णन

प्रसंगानुकूल ढंग से कवि ने श्रृंगार का भी बड़ा सुन्दर वर्णन किया है। पावू जव विवाह करने जाता है तो दूल्हे के रूप में जहाँ उसके सौंदर्य का वखान कवि ने मुक्त कण्ठ से किया है वहां दुल्हिन सोढी के सौन्दर्य और परम्परागत श्रृंगारिक उपकरणों का भी विस्तार से वर्णन किया गया है। सोढा जाति की नारियों का सौन्दर्य मरुस्थल में विख्यात रहा है अतः कवि ने उस पृष्ठ भूमि में दूल्हे और दुल्हिन का प्रभावकारी वर्णन इस प्रसंग में किया है। इसके अलावा सुकोमल श्रृंगारिक भावना के वर्णन में भी कवि ने कसर नहीं रखी है और पावू तथा उसकी सद्य विवाहिता पत्नी सोढी रानी के वार्तालापों में यह भावना अपने सहज रूप में प्रकट हुई है। कवि ने एकाएक विवाह में युद्ध का प्रसंग लाकर उस समय के क्षत्रिय समाज में कर्त्तव्य की वेदि पर प्रेम किस प्रकार अमर हो जाता है, इसकी अच्छी व्यंजना की है।

इन मुख्य वर्णनों के अतिरिक्त उस समय के परिवारों के रहन-सहन महलों की साज-सज्जा, खान-पान आदि का भी अच्छा वर्णन किया है और जिदराव के वैभव को पावू से भी वढा-चढा कर वताया है। कवि की दृष्टि उस समय के सामान्य जन और योगियों, साधुओं आदि से भी ओझल नहीं हुई है और यथा - प्रसंग उनका भी वर्णन इस काव्य में आया है। खास तौर से नाथ योगियों का वर्णन यहां विशेष रूप से उल्लेखनीय है। कवि ने चारणियों का शक्ति रूप में वर्णन भी वड़े उत्कृष्ट रूप में किया है और उनकी मान्यताओं तथा भावनाओं को अपने वर्णनों से साकार रूप देते हुए उस समय के समाज में उनके स्थान की अच्छी व्यंजना की है। जो कि मध्यकाल के वहुत कम काव्यों में देखने को मिलती है।

इन वर्णनों को पढने से यह प्रकट होता हैं कि यद्यपि कवि आधुनिक काल में इस ग्रन्थ की रचना कर रहा है फिर भी उसे उस काल की गतिविधियों, मान-मर्यादाओं, भावनाओं और रीति-नीति का वहुत अच्छा ज्ञान है और अपनी कल्पना-शक्ति के वल

पर वह इतने लम्बे समय के अन्तराल को पाटता हुआ उस काल में उपस्थित होकर ही मानो यह सारा वर्णन कर रहा है। कवि की अनुभूति और कल्पना-शक्ति की यह एक बड़ी विशेषता है जिसने पूरे काव्य को सजीवता प्रदान कर दी है।

'पाबू प्रकास' में रूढियों का निर्वाह

महाकाव्यों की संरचना में रूढियों क निर्वाह एक ऐसा महत्वपूर्ण तथ्य है जिसकी ओर आलोचक का ध्यान आकृष्ट हुए विना नहीं रहता। इसका मुख्य कारण यही है कि समस्त रूढियों से मुक्त होकर महाकाव्य की रचना करना परम्परागत कवियों के बूते की बात नहीं थी और साधारणीकरण की दृष्टि मे वे लोग कुछ रूढियों का निर्वाह करना आवश्यक भी समझते थे। वीररसात्मक काव्य में प्रायः जो भी संघर्ष होता था वह या तो जमीन को लेकर होता था या फिर किसी प्रेम प्रसंग को को लेकर। इसके अलावा शरण में आए हुए व्यक्ति की रक्षा करने के प्रण को लेकर भी बड़े से बड़े युद्ध हुए हैं जिनमें अलाऊद्दीन के साथ लड़ा गया गागरोन का युद्ध एक अद्वितीय उदाहरण है यह बात क्षत्रियों की चरित्रगत विशेषता से सम्बन्ध रखती है और उसमें कवि ने इस काव्य में वचनबद्धता का प्रसग जोड़कर उसके लिए बड़े से बड़ा बलिदान करने की भावना को इस काव्य में व्यजित किया है। यह भावना भी शरणागत रक्षा की तरह ही मूल्यवान है और इसका उदात्त रूप में कवि ने निर्वाह किया है।

वर्णन-वैशिष्ट्य के निर्वाह में भी कवि ने रूढ़ियों का यत्र-तत्र निर्वाह किया है तथा अपनी ओर से उसमें विलक्षणता भी प्रदर्शित की है।

वैर भावना क्षत्रियों के चरित्र की एक विशिष्ट खूबी रही है इसीलिए सूर्यमल्ल ने भी कहा है—

"बारह बरसां बाप रो लहे वैर लंकाळ।"।

इस रूढि-निर्वाह के अन्तर्गत ही सोढों और राठौड़ों के पुराने वैर को याद कर बूड़ा की पत्नी पाबू का सोढी के साथ सम्बन्ध ठीक नहीं समझती क्यों कि सोढ़ों और राठौड़ों में कोई पुराना वैर था। इसी प्रकार जिन्दराव से भी इन लोगों का वैर था क्योंकि जिन्दराव के पिता सारंग को इन्होंने मारा था अतः पाबू ने अपनी बहिन का विवाह उससे करने में आपत्ति प्रकट की थी। यद्यपि विवाह-सम्बन्ध होने के बाद वैर ठण्डा पड़ जाता है परन्तु जिन्दराव इस वैर को भूला नहीं था क्यों कि उसके मांगने पर भी दहेज में अपनी काळवी घोड़ी देने से पाबू ने इन्कार कर दिया था। इस वैर-भाव के वशीभूत ही जिन्दराव ने पाबू को मारने की ठान ली थी। राजपूत-संस्कृति में यह वैर-भाव जहां बड़ा विघटनकारी सिद्ध हुआ वहां बड़े से बड़े बलिदान देकर भी अपनी बात को रखने की ललक उनके रक्त में सदा प्रवहमान होती रही।

इनके अतिरिक्त सती प्रथा का भी सांगोपांग वर्णन कवि ने किया है। युद्ध के पश्चात् न केवल पाबू की पत्नी सोढ़ी सती होती है अपितु बूड़ा की पत्नी गेली भी सती हो जाती है और अपना पेट चीर कर अपने बच्चे को पीहर वालों के सुपुर्द कर देती है। उधर जिन्दराव की पत्नी पेमल भी सती होती है, यद्यपि उसी के भेद से जिन्दराव मारा जाता है। यह यहां असाधारण बात लग सकती है परन्तु उस काल में लांछनापूर्ण जीवन जीने के बजाय नारी सती होना ही अधिक पसन्द करती थी और सती-प्रथा एक रूढ़ी के रूप में क्षत्रिय समाज में व्याप्त हो गई थी। अतः उस काल को देखते हुए यह भी एक सामान्य घटना ही थी।

'पाबू प्रकास' की भाषा व शैली

'पाबू प्रकास' एक वर्णन प्रधान महाकाव्य है जिसमें उस काल की सामाजिक व सांस्कृतिक व्यवस्था के दिग्दर्शन के साथ स्थान-स्थान पर युद्ध वर्णन आया है। अतः पूरा काव्य ओजपूर्ण शैली से ओत प्रोत है। परम्परागत डिंगल काव्यों को देखने से पता चलता है कि यह काव्य प्राचीन काव्यों की अपेक्षा प्रसाद गुण युक्त है। यद्यपि इसमें मध्यकालीन संस्कृति के चित्रण को लेकर अनेक विशिष्ट शब्दों का प्रयोग हुआ है परन्तु कुल मिलाकर कवि ने ग्रन्थ को दुरुहता से बचा लिया है। इसकी भाषा प्रवाहमयी और सुसंगठित है वहीं यह ठेट राजस्थानी में लिखा गया ग्रन्थ है जिसमें अरबी फारसी के कुछ शब्दों को छोड़कर अन्य भाषाओं का कोई प्रभाव परिलक्षित नहीं होता। कवि भावानुकूल भाषा का प्रयोग करने में सिद्धहस्त है, साथ ही उसकी भाषा में एक प्रवाह और चित्रोपमता है।

जिदराव और उसके साथियों द्वारा धांधलों की भूमि पर आतंक फैलाने का वर्णन इस दृष्टि से देखिये :—

नीसांणी

रैत थळी री रात दिन मन में धड़कंदे
कोटड़िया धमका करै चौविस भड़दे
चरण वछेरा चांचड़ां जिण दीध फड़ंदे
कूक तणा कोळ महां नित ढोल रणंदे
हाजा पीथल हाक हक हयपाह हड़दे
वाघण व्याई वेढ में कुण दूर करंदे
अबे खीची ऊससै सव ससतर वंदे
अंखे जनां कोर ओलमा कर मूठ धरंदे
वींभरियोड़ा वाघ जिम सव सरड़ चलंदे॥

ग्रन्थ में जहां बोलचाल की भाषा का प्रयोग हुआ है वहां ठेट के डिंगल शब्दों का भी प्रयोग देखने में आता है, जैसे- विडंग, डारण, अभागो, नरेहण, इकडाणी, रढराण, दुभाल, दाअड़ियाल, चंचाळ, आदि।

कवि ने काव्य में गति और जीवन्तता लाने के लिए स्थान-स्थान पर वार्तालापों का भी सुन्दर प्रयोग किया है। कवि इस काव्य में वैण सगाई के निर्वाह के प्रति सचेष्ट रहा है और साथ ही अनुप्रास और यमक के प्रयोग से काव्य में लय का चमत्कार पैदा किया है। जैसे:—

धुरजालां धसलतां पुळे पाटले पुळातां।

(पृ०–137)

कवि उपमा, उत्प्रेक्षा और रूपक अलंकारों का प्रयोग करने में भी बड़ा समर्थ है और इस महाकाव्य में अनेक स्थलों पर इनका बहुत ही सफल प्रयोग किया है। वर्णनों में कवि ने भाषा में ध्वनि साम्य ऐसी पटुता के साथ बिठाया है कि जिससे भाषा पर कवि का सहज अधिकार परिलक्षित होता है और इससे भाषा में चित्रोपमता आ गई है। इस प्रकार कवि के वर्णन जीवन्त हो उठे हैं:-

"जिणवार भड़ै हथनाळ भड़ै। पखराळ तुरंग सैलाड़ पड़ै।
भिड़जां पर खाळव फेर भरै। कमठालाय पायक तूंग करै॥

(पृ० न. 124)

"जिण वार नरां नर भील जुड़ै। पुल धूज वड़ा असवार पड़ै।
हय तोंण वालूचोय डांम हलै। सिरदारांय ऊपर पांण चलै॥

(पृ० नं. 124)

कवि का भाषा पर इतना असाधारण अधिकार है कि कहीं कहीं उसने भाषा के विलक्षण प्रयोग भी किये हैं, जैसे:—

'कोलू अद राजस करे। 'पत धांधल परताप'

इस पंक्ति में 'अद' और 'पत' दो शब्द आए हैं परन्तु वास्तव में ये दोनों शब्द मिलकर ही एक शब्द बनता हैं 'अदपत' जिसका अर्थ होता है राजा या शासक। परन्तु कवि ने इस शब्द को तोड़कर इस विलक्षणता के साथ रखा है कि पूरी पंक्ति पढने पर भाषा के चमत्कार की ओर ध्यान गए बिना नहीं रहता।

इसी प्रकार सामाजिक व्यवस्था को सूचित करने वाले विशेष शब्दों का प्रयोग भी कवि ने प्रचुर मात्रा में इस काव्य में किया है जिनका विस्तार के साथ अध्ययन अपेक्षित है और जो उस काल की संस्कृति को गहराई से समझने में सहायक सिद्ध होते हैं। जैसे :—

किरनालो, धमलकंत, प्रोखता, कुलवट, अन, प्रवाड़ा, कुलमण्डरण, गोळू आदि। कवि केवल युद्ध वर्णन, शृंगार वर्णन और सामाजिक परिस्थितियों के वर्णन के अनुकूल ही भाषा शैली पर अधिकार रखता हो, ऐसी बात नहीं है। वह जहां गोरखनाथ की विशिष्टता का वर्णन करता है वहां उसके अनुकूल ही भाषा का प्रयोग भी करता है जहां पारिभाषिक शब्दावली विशेष रूप से दृष्टिगोचर होती है।

"खट ऊरमी जीता अंग अदीठा। काळ वतीता थिर काया।
रिछ कंते तारणै कुंमक ठारणै। पूरक आंरणै फिर पाया।
काया न कष्टै कांमन इष्टै। संजक चष्टै सील सती।
जमका डर भागै भ्रम नह लागै। जागै गोरखनाथ जती जी।
जागै गोरखनाथ जती। मछली उर जाया जोग कमाया॥ (130)

(पृ. नं. 222)

कवि ने इस काव्य में दोहा, सोरठा, नीसाँणी, मोतीदांम, कवित्त, छप्पय, त्रोटक, त्रिभंगी आदि छन्दों का बहुलता के साथ प्रयोग किया है और कहीं-कहीं संन्दर्भ को उजागर करने हेतु वात' का प्रयोग भी दृष्टिगोचर होता है। कुल मिलाकर इस ग्रन्थ की भाषा शैली विषय के अनुकूल और जीवन्तता लिए हुए है। कवि के भाषागत अध्ययन और शब्द चयन की निपुणता इससे प्रमाणित होती है। जहां डिंगल के प्राचीन शब्दों का प्रयोग हुआ है वे भी यथा स्थान अपने सहज रूप में प्रयुक्त हुए हैं तथा अरबी व फारसी के शब्द भी इस ग्रन्थ की भाषा में ऐसे घुल-मिल गये हैं कि वे राजस्थानी के ही जान पड़ते हैं। कवि ने जिस साधना व धैर्य के साथ इस काव्य का सृजन किया है वह इस ग्रन्थ के शैली-सौष्ठव में प्रतिध्वनित होता।

कवि की यह विशेषता रही है कि एक वर्णात्मक काव्य की रचना करते हुए भी इस ग्रन्थ को अनावश्यक वर्णनों से बोझिल नहीं किया है तथा साथ ही वर्णन-विस्तार भी जितना उपयुक्त था उतना ही किया है। प्रायः यह देखा जाता है कि चारण कवियों ने अपने महाकाव्यों में काव्य-नायक के पूर्वजों का विस्तार से वर्णन किया है जो इतिहास का पिष्टपेषण मात्र-सा लगता है। इसके अतिरिक्त राजसी ठाट-बाट के वर्णनों को भी अनावश्यक विस्तार दिया गया है। अपने ज्ञान की छाप छोड़ने

के लिए भी स्थान-स्थान पर उन्होंने ऐसे प्रसंग पैदा किए गये हैं जिनकी वहां अपेक्षा नहीं थी। पावू कवि का आराध्य देव है और वह एक चमत्कारी पुरुष है फिर भी कवि ने पावू के अलौकिक चमत्कारों को प्रधानता न देकर व्यवहारिक धरातल पर उसके कार्य-कलापों का वर्णन किया है। तुलसीदास जैसे सधे हुए कवि भी राम की अलौकि शक्ति का वर्णन करने का लोभ सवरण नहीं कर सके और 'रामायरण' में अनेक चमत्कारी प्रसग उन्होंने वर्णित किये हैं परन्तु इस कवि ने पावू को उस समय का एक वास्तविक जन-नायक मानकर उसका पौरुषेय वर्णन ही प्रमुख रूप से किया है। यह कवि की एक विशेपता कही जा सकती है और यही विशेपता 'पावू प्रकास' को डिंगल काव्य की परम्परा में विशिष्ट महत्व प्रदान करने में सहायक सिद्ध होती है।

'पावू प्रकास' का महत्व

जैसा कि पहले कहा जा चुका है डिंगल काव्य की परम्परा में पावू प्रकास अपने ढग का निराला काव्य है और उसमें एक महाकाव्य के शास्त्रीय लक्षरण विद्यमान हैं। उसकी भाषा शैली भी सधी हुई और भावानुकूल है। चरित्र-चित्रण भी बड़ा सजीव समय-सापेक्ष और प्रभावशाली है। यह काव्य परम्परा से प्रभावित होते हुए भी परम्परा को आगे बढाने वाला है और उन बहुत सी कमियों से रहित है जो कि प्राय: चारण-महाकाव्यों में देखने को मिलती है, क्योंकि कवि ने यह काव्य स्वान्तः सुखाय लिखा है। किसी पुरस्कार अथवा राजकीय सम्मान के लोभ के वशीभूत नहीं।

इस काव्य की सबसे बड़ी विशेपता यह है कि इसमें कवि ने राजस्थान की सस्कृति का बड़ा ही जीवन्त चित्रण किया है और विशेप तौर से राजपूत संस्कृति की उन विशेपताओं को उजागर किया है जो क्षात्र-धर्म से ओत-प्रोत हैं और जिनमें जीवन का आदर्श ओर आत्मा के उत्थान की चेष्टाएं भी परिलक्षित होती हैं। डिंगल काव्यों में प्राय: राज्य प्राप्ति और जमीन की रक्षा के लिए किए जाने वाले प्राणोत्सर्ग तथा वीरतापूर्ण कार्यकलापों का बहुलता से वर्णन है और वह महाकाव्यों का तो मुख्य आधार-सा रहा है। परन्तु इस काव्य में मुख्य प्रसंग राज्य प्राप्ति के लिए युद्ध का नहीं अपितु वचन-बद्धता के लिए बलिदान और प्राणोत्सर्ग है। समूचे डिंगल काव्य में वचन-बद्धता को प्रकट करने के लिए ऐसा अद्‌भुत काव्य रचा गया हो ऐसी मिशाल देखने में नहीं आती। शरणागत रक्षा के लिए यहां बड़े से बड़े उत्सर्ग हुए हैं परन्तु यहां ऐसे प्रसंग को आधार बनाया गया है जिसमें काव्य-नायक चंवरी में से उठकर अपने वचनों की रक्षा के हेतु बिना एक क्षरण का विलम्ब किए प्रस्थान कर जाता है, अतः इस काव्य की कथा का मुख्य प्रसंग अत्यन्त ही मार्मिक है। और फिर पावू ने अपने वचन मात्र एक चारण जाति की स्त्री को दिए हैं जिनके निर्वाह की उसने इतनी बड़ी चिन्ता की

है। इस प्रकार इस काव्य का आधार एक अद्भुत आदर्श से सम्प्रेरित है और वह यहां की संस्कृति का एक ऐसा ज्वाजल्यमान प्रसंग है जिसकी तुलना भारतीय इतिहास के अन्य वीर-प्रसंगों से करना कठिन है।

कवि ने अपने काव्य-नायक के चरित्र में वीरता के साथ जिस उदारता, सहिष्णुता, प्रजा-वत्सलता और शूद्र जाति के लोगों से गहरा लगाव आदि गुणों की स्थापना की है वे वास्तव में इस काव्य को एक जातीय काव्य बनाने में सक्षम हैं और इन विशेषताओं को साकार रूप देने में कवि ने जिस काव्य-सौष्ठव की सर्जना की है वह वास्तव में इतना जीवन्त और प्रेरणादायी है कि पाठक के हृदय-पटल पर पाबू का चित्र एक लोक-नायक के रूप में उभर कर सामने आता है। ऐसा चरित्र जो बड़े से बड़े विजेताओं, सम्राटों और वीरों से अलग अपनी पहिचान और दीप्ति रखता है। कुल मिलाकर इस काव्य में समाज, संस्कृति, धर्म, नीति का ऐसा जीवन्त और सधा हुआ वर्णन हुआ है जो इस काव्य को एक सफल जातीय काव्य बना देता है।

डिंगल काव्य की सुदीर्घ वीर-रस परम्परा में इस काव्य का अद्वितीय स्थान है जिसके अध्ययन से मुगल कालीन राजस्थान के हृदय की धड़कन को पाठक महसूस कर सकता है। मानव - समाज के उदात्त जीवन—मूल्यों के संरक्षण की दृष्टि से ऐसे काव्यों का हर काल में महत्व बना रहेगा।

यह काव्य कोई पचास वर्ष पहले सन् 1927 में घांधलजी के वंशज केरू ठिकाने के ठाकुर साहिब भूपालसिंहजी के सौजन्य से श्री सुमेर प्रेस, जोधपुर ने छापा था। उस समय प्रकाशन के साधन बड़े सीमित थे अतः ग्रन्थ में अनेक अशुद्धियां भी रह गई फिर भी यह ग्रन्थ बड़ा लोक-प्रिय हुआ और अब इसकी प्रतियां बिलकुल दुर्लभ हो गई थी। इस काव्य के महत्व को देखते हुए 'म. मान. पुस्तक प्रकाश' से जब इसके प्रकाशन का विचार हुआ तो उसकी प्रकाशित प्रति पुनर्मुद्रण हेतु प्रेस के विद्याप्रेमी संस्थापक श्री सरदारमलजी थानवी ने हमें उपलब्ध कराई, इसके अतिरिक्त एक बुजुर्ग चारण से भी हमें एक निजी प्रति मिलान करने के लिये मिली परन्तु दोनों प्रतियों में कोई खास अन्तर नहीं था। हमने इस ग्रन्थ के प्रकाशन में पूरा प्रयास किया है कि ग्रन्थ शुद्ध रूप में छपे परन्तु इतने बड़े ग्रन्थ में प्रेस की त्रुटियों के अलावा सम्पादन की भूलें सीमित साधनों के कारण रह सकती हैं, खास तौर से ऐसी स्थिति में जब कि पहले वाली मुद्रित प्रति काफी अशुद्ध थी और इसकी हस्तलिखित प्रतियां बड़ी संख्या में उपलब्ध नहीं होती। अतः सुविज्ञ पाठकों से हम इसके लिये क्षमा चाहते हैं। इस ग्रन्थ के प्रूफ संशोधन तथा ग्रन्थसार लिखने में सुमेर प्रेस के भागीदार श्री रामदत्तजी थानवी ने जिस सहृदयता के साथ सहयोग दिया है उसके लिये हम उनके हार्दिक रूप से आभारी हैं।

यह हर्ष का विषय है कि संस्था की ओर से हम राजस्थानी पाठकों को एक ऐसा ग्रन्थ उपलब्ध करा सके जिसके लिये काव्य-प्रेमी लालायित थे और जो राजस्थानी साहित्य की परम्परा और सांस्कृतिक धरोहर को समझने हेतु एक आधारभूत साधन का काम देगा। ऐसे ग्रन्थ-रत्न को प्रकाश में लाने हेतु जो प्रेरणा और प्रोत्साहन महाराजा साहिब श्री गजसिंहजी ने दिया है वह उनके साहित्यक-प्रेम और सांस्कृतिक धरोहर के प्रति गहरी आस्था का प्रतीक है। उनकी इस संस्कार-सम्पन्न सुरुचि के फलस्वरूप हमें आशा है कि संस्था से राजस्थानी के कई दुर्लभ और अप्रकाशित ग्रन्थ समय-समय पर प्रकाशित होकर पाठकों तक पहुंच सकेंगे और इससे राजस्थानी भाषा तथा साहित्य के उत्थान को भी बल मिलेगा।

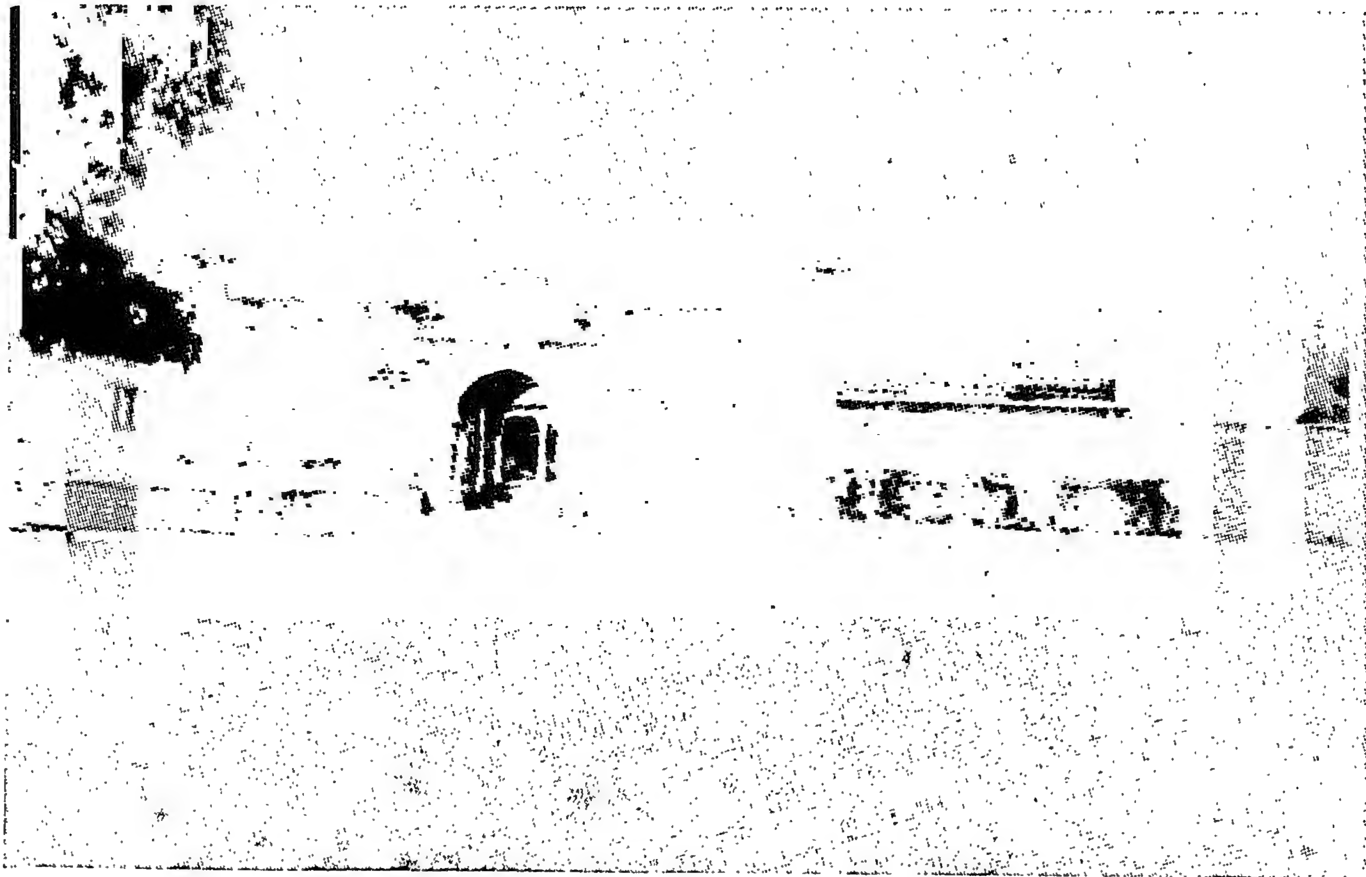
संस्था की अन्यान्य योजनाओं की तरह प्रकाशन योजना को फलीभूत करने में मेहरानगढ म्यूजियम ट्रस्ट के मैनेजर महाराज प्रह्लादसिंहजी का निरन्तर सहयोग प्राप्त होता रहा है तथा ट्रस्ट के मान्य सदस्य मेजर जसवन्तसिंहजी (सदस्य-राज्यसभा) से हमें उपयोगी सुझावों के साथ प्रोत्साहन मिलता रहा है। अतः इन महानुभावों का हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ।

—नारायणसिंह भाटी

पाबू प्रकास



कोळू ग्राम (मारवाड़) में पाबूजी के प्राचीन देवळ



पाबूजी के मन्दिर का मुख्य द्वार

मंगलाचरण

॥ दोहा ॥

एक रदन बुध सदन अख । अत गुण करण अनंद ।
पावू जस रूपग पढ़ू । नमूं पगां शिवनंद ॥ १ ॥

॥ गाथा ॥

कविता आद गुरू कनियांणी । कव मोड़ो समरे कनियांणी ।
कथ पावू कैहवा कनियांणी । करी हुकम मो पर कनियांणी ॥ २ ॥

॥ कवित छप्पय ॥

पारजीत जोगेन्द्र थयौ गोरख अविनासी ।
पारजीत खट जती नाथ नव सिद्ध चौरासी ।
पारजीत वैराग हुवा चौवीस तिर्थंकर ।
पारजीत चौवीस पीर मोटा पैगंबर ॥
पार रौ बोध लाधण प्रथम । आपै अकल आधारणी ।
जिण पारजीत आखूं जुगत । सुमत समापै चारणी ॥ ३ ॥

॥ गाथा ॥

उत्ती ध्यान धरचौ उर आई । मन सूं प्रसन बोले महमाई ।
भण तूं सगत तणौ जस भाई । मोनूं हुकम कियौ महमाई ॥ ४ ॥

॥ सम्बोधन ॥

सुण सुत समय सदेवत सूरह । पाबू समर वीर रस पूरह ।
दूजा देव कलू प्रत दूरह । है धांधल हाजर रा हजूरह । ५ ॥
प्रतप्यौ पाल वंस पोरसातन । पह पाबू सीधौ पोरसातन ।
पंड आयौ पाबू पोरसातन । प्रगट्यौ नाम पाल पोरसातन ॥ ६ ॥
ते धांधल आखेट नृभै तण । तिण अपसरा आप परणी तण ।
ते सूं भूतपाल उपज्यौ तण । ते पाबू जप सूं धांधल तण ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

केई गावे नृप कवत कर । कैई गावै करतार ।
गाऊं भालाळौ गुणै । सुणजौ सैह सिरदार ॥ ८ ॥

॥ कवित ॥

अरजण हुतौ अगेह वढण जदुपत विरदायौ ।
निपट अगे ज्वाळनळ पवन वालौ वळ पायौ ।
गोरख हुतौ अगेह गुरू मच्छंदर धारे ।
दहण सेन दांणवी हणुंकनै रांम हकारै ।
करण महावळ करण अगे कुरुपत उच्चरणै ।
अगे पाल राठोड़ वळै मोडो कव वरणै ।
कळ सीस नांम अवचल करण सूरज तेरे साखरौ ।
भालाळ तणौ रूपग भणूं जो बांधव नव लाखरौ ॥ ९ ॥
तन वीरा रस तमक पढण धुन चमतकार पर ।
ओजे अरथाभास पाल दुत दरस तात पर ।
वातप वचन विभाव पोख श्रोता चित पोरस ।
सूरवीर साहंस रैहस पूरण वीरा रस ।
धर वरण छंद प्रणमूं धणी सिद्ध देव आतम सगत ।
कव मोड रूप भापण करै आवै धांधल राव उत ॥१० ॥

॥ नांमी थांनक ॥

आरव सुणनै आव डांवरै रै खेड़ै सूं ।
पीर अरज सुण पाल आव नैड़ै नेतड़ सूं ।

कमध आव सुण कूक धणारी रा भड़ां सूं ।
कुरछी हूंता कहूं पाल कैरू पाड़ां सूं ।
महि मालम थान मसूरियौ ओथ हूंत खड़ आवजे ।
वेगड़ा पाल गउ वाहरू दम इक जेज म लावजे ॥११॥

कोळू मंढ सूं आव वचण सुणनै मो वाळा ।
कारियात सूं कमंध भीर आवै भालाळा ।
वळे मध धांगळवास हूंत आवे सुण हेलो ।
कमंध चढे कालमी आव मो करण उवेळो ।
चाचरै हूंत सावल सुणे ग्रहण भीड़ मेटण धणी ।
कालमी चढे ऊपर करण धांधलोत आवौ धणी ॥१२॥

॥ दोहा ॥

हरिया माली प्रगट हुय । पिड़ पैहली उतपत्त ।
थापी गोगे थापना । सही जांणै सोजत्त ॥१३॥
भालाळा मैं सांभळी । थूं जायौ जेकत्थ ।
आखर सूधा आंणनै । आखूं ख्यात अरत्थ ॥१४॥

॥ छन्द पद्धरी ॥

दत उतन भोम आघाट दीन । करमाणंद हूवा रीभ कीन ।
सुत आसथांन धांधल सकाज । रवि तेज करै थळ भोम राज ॥१५॥
विश्रम किय नव पुर विच विडांण । थित जूनै कोलू राजथांण ।
कमधज विभाग अस भड़ां कीन्ह । लघु भोम भाग नह वंट लीन्ह ॥१६॥
रख पिता पाट धूहड़ सुराय । खाग री खाटियौ आप खाय ।
नृप रोहड़ हूंता मांगलीन । नेगधर कियौ मीसण नवीन ॥१७॥
राखे कनोज पूरव रवेज । तेग धर तपै जैचन्द तेज ।
गिरधरा तणा गढवा सुग्यान । वेगा गल लाया कारवांन ॥१८॥
रख आद सनातन ब्याज रीत । पूरी नृप आणंद वढी प्रीत ।
कइ दिवस हुवा रहतां कमंद । अदभूत सुणी इक कथ अणंद ॥१९॥

गुणि अण मारू दिस पुरव ग्राम । धर सगत द्रव्य अवतार धांम ।
कन्यका तरुण वड़ चमतकार । घर लियौ कठण पण हृदय धार ॥२०॥
जद मांगू तद सर दै जरूर । संजात वरूं सो महासूर ।
पण दुतिय वेड सरतर प्रलंब । कर लावै वंदण तोरण कंभ ॥२१॥
सत वीस वरण चारण विख्यात । नर नको ग्रांमना निज सनात ।
काछेलति दक्षिण गमन कीन । नर पूर तास पण परणलीन ॥२२॥
कच गयौ जदन वन कंभ काज । मन अभय एक लौ ड्यांन माज ।
तर चढ्यौ करभ पद वंध तांम । तत प्रगटी भूतावळ तमांम ॥२३॥
हुय धड़धड़ाट धर व्योम हाक । दसही दिस वागी प्रेत डाक ।
दारुण चख लंबा दसण दीठ । उड झड़ै जेम कण कण अंगीठ ॥२४॥
केईकरभ महिष अज नर कितेक । अध उरध उठै झालां अनेक ।
हणु दीह हुआ चिर तत अलेख । दरक निज सहस सत दरक देख ॥२५॥
किसतूरी मलची मुख कमाल । सोकरी नासका गत संभाल ।
झट तोड़ खंभ चढ चल्यौ जत्र । तव हुआ विसरजन चिरत तत्र ॥२६॥

॥ दोहा ॥

विद्द मांन जो उर वसी । सोभा तणौ समाज ।
हद लोपी वारै हुवौ । किए दरसण कविराज ।
विजनस आसण वांसले । द्रव्य रूप मय दीठ ।
दरसण आणंद नै दियौ । परतक बैठा पीठ ॥ २८ ॥

॥ छन्द वृद्ध नाराच ॥

अही सुवैण मृग नैण दीप नासका भणूं ।
लिलाट चंद बीज बंद तिद्र क्रोध है अणूं ।
धनूष भूंह लाज व्यूह तद्रपि पंकजं मुखं ।
कर विसाल चंप डाळ ग्री कपोत के रुखं ॥ २९ ॥
प्रवाळ उष्ट वैण मिष्ट दंत वज्र के कणं ।
सुरं कलीप कोकला कनंक कुंभ से स्थणं ।

गजंद सुन्ड नाभ कुन्ड पेट पत्र पीपलं ।
नितंब तंब जंघ रंभ केहरी कटी मिलं ॥ ३० ॥
गति करिन्द की प्रभा पदं रिव्यंद ओपमा ।
गुमान मोख इन्द्र विद्र मान जो तिलोतमा ।
पतीव्रता सु पीव के हणंत आध व्याध कूं ।
उदार मेरु सक्ति हेरु जोग के समाध कूं ॥ ३१ ॥
मनो अतीसु ब्रह्मसी अनोप रूप गौर सो ।
महा वली अकाळ पै विरंच बोध जोर सो ।
घना गतीज व्योमसी रुसीत हेतु हीन सो ।
सदा गती सचेष्ट है रु ताप है दिनेस सो ॥ ३२ ॥
सरूप दिव्य अंबका सु देह तेज के मई ।
कहूंक वंद मोड कुंज सो दई दुखोज ही ।
कही स ओपमा अनोप धीजिती कविन्द्र की ।
महा सु सूर वीर की जनेत है जतेन्द्र की ॥ ३३ ॥

आणंद वाच

॥ कवित्त ॥

प्रगट व्यास प्रोषता कना अपछर हैतूं कह ।
इन्द्रायण कन आप रूप देखे विभ्रम रह ।
धरण आभ धारणी विश्व कारणी वखांणे ।
ऋध सिध नारायणी जगत अंबा मन जांणे ।
पनंगणी कना काय पंखणी । कोण देश हूंता गवण ।
हूं तुझ भेद जांणू नहीं । कह है तूं बाई कवण ॥ ३४ ॥

अपछरा वाच

॥ दोहा ॥

चाह न थी इण सबद री । मन्द मती सुण गुढ्ढ ।
प्रोढ देख धारण पती । मो मन हुती सु गुढ्ढ ॥ ३५ ॥

इन्द्र लोक री अपछरा । मंजूघोखा नाम ।
देव भाव सब निष्ट कर । कहो इष्ट धर कांम ॥ ३६ ॥
भयो श्राप सुर भूप को । आतम कदन अनन्त ।
अपछर आणंद रै धकै । वरण्यों सब व्रतन्त ॥ ३७ ॥
वाग सुनन्दन सूं वुहो । सची वोहत थी साथ ।
चढ विमांण नभ मग चलत । मैं न रख्यो इळ माथ ॥ ३८ ॥
देवंसी नर देखियों । तेज पुंज इण ताळ ।
सक्र प्रसंसा सुणत ही । क्रोध कियो ततकाळ ॥ ३९ ॥
सभा पुरन्दर की सरब । खेद कियो कर खीझ ।
सुरगण अहः सब छोड़ कै । रही मनुज पर रीझ ॥ ४० ॥
चपल मतो दुरचारणी । चित्त भाव विभचार ।
शीघ्र त्याग कर सुर सभा । कर नर अंगीकार ॥ ४१ ॥
देव लोक रा पांच दिन । लाभ भोग अत लोक ।
कांम अरथ ग्रहवा करहु । अष्ट पांच नर ओक ॥ ४२ ॥

॥ त्रोटक छन्द ॥

यह रीत भई गत ईश्वर की । पर त्याग पुरी की पुरन्दर की ।
अह श्राम विलोमपि माग अह्यौ । रिपुसो दुखदाय अठै न रह्यौ ॥४३ ॥
कल मानव रै ग्रहवास करूं । उण श्रापतें पार जदी उतरूं ।
सब मुज्भ मनोरथ सार सुण्यो । भगनी मुख वायक केम भण्यो ॥४४ ॥

आणंद वाच

मुझ वैण वृथा तुं गणै मतनूं । परणाउं अवैन महीपत नूं ।
कैहजे रवि जैचंद रै कुळ रौ । फिर लाउं अभूप अनै थळ रौ ॥४५ ॥

अपछरा वाच

यह काम सुधार दवै अपणो । तव पूत तूं साच सगत्त तणौ ।
नभ चंद्ररु नीर नक्षत्र न हैं । जड भूचर खेचर जामन है ॥४६ ॥

आणंद वाच

नभ चंद्र रा नीर नक्षत्र न हैं । जड़ भूचर खेचर जामन है ॥४६ ॥
कैहै लाउं अभूप मतौ करही । पुन जोग कठै मिलणी करणी ।
जगती पर साख भरै जिण रा । कर दधी मं जोराय कुंदण रा ॥४७ ॥

॥ दोहा ॥

तिण दीना कुंदण तणा । मांनव वचन मंजीर ।
वाज हुसी जिण ठां अवस । वह आसूं हूं वीर ॥ ४८ ॥

पुणियौ आणंद नैं परी । वीर फेर सुण वात ।
वरण सोह चढतै वरी । सगत जिका साख्यात ॥ ४९ ॥

केइ केइ कळैह करावसी । भूम उतारण भार ।
जिण रै पेट जनम्मसी । आवड़ रौ अवतार ॥ ५० ॥

ले मंजीर द्रढ वचन ले । कोलू गयौ कमंद ।
वरणी अंतहपुर वसै । आणंद सैहत अणंद ॥ ५१ ॥

रहै सगत रणवास में । आणंद पर गहै आप ।
कोलू अध राजस करै । पत धांधल परताप ॥ ५२ ॥

॥ सोरठा ॥

वांधी सहंस वरुध । आणंद री धांधल उचत ।
सगत तणी मन सूध । कमलादे वंदगी करै ॥ ५३ ॥

पलंग सदन पैलेह । तदन ढळै आणंद तणौ ।
मांझळ निस में लेह । दे साथे वैह दासियां ॥ ५४ ॥

पघड़ मल परमाण । गढवी सें है मालम गढां ।
कोड़ भड़ा दीवांण । राव हाथ जोड़ै रहै ॥ ५५ ॥

वा कथ विसराईह । वर घर तरुण विनोद में ।
आणंद नै आईह । सुघ कैइ दिन वीतां सदन ॥ ५६ ॥

॥ छन्द छप्पय ॥

प्रथम मार परमार लियौ जूनो लोहां लड़ ।
रहै राव पाकती भड़ां घोड़ां भीड़ोहड़ ।
करमाणंद आणंद कवेस वहण मारू भाषा वट ।
वगस जिको विरदेत ईकडांणी आगा हट ।
कनवज हूता करंड लाग हठ पेथड़ लायौ ।
थप नागांणै थांन पाट पत इय वर पायौ ।
जयचंद हरा तो सिर जपूं रजवंद सब दिन रहूं ।
इण भाकर सूं राजस अगड सौ सौ कोस दिसा चहूं ॥ ५७ ॥

॥ छन्द अनुष्टुप ॥

चक्रेस्वरी वलेस्थाने । राटेश्वरी तथा रटे ।
पंखणी सप्त मात्रेण । नागणेची नमस्तुते ॥ ५८ ॥

॥ सोरठा ॥

धूहड़ खेड़ धणीह । धांधल गिर जूनै धणी ।
आये पूर अणीह । भोपत जायल भूपती ॥ ५९ ॥
साहजादां समरूप । भोपत सुत चढती भरण ।
रावजादां रौ रूप । सारंगदे कंवरां सिरे ॥ ६० ॥

॥ छन्द मोतीदाम ॥

कही कथ राव धकै कवराज । सवै कर सम्रथ सोध समाज ।
कियौ अगिया नृप व्याज करूर । चढयौ भड़ मेल उगंतैय सूर ॥६१ ॥
रजावंद वंस मही रैहैमांण । दलां थंभ कोड़ भड़ां दइवांण ।
प्रती वज पोड़ तणो पिड़ताल । दियो हय आगळ दात्रड़ियाळ ॥६२ ॥
ग्रहै दिड़कंद तणां कुण गैल । उडावत तुंड धकै अजरेल ।
रट्टकत एक लहौ फर सूर । कटक्कत वाजत डाढ करूर ॥६३ ॥

विड़ंगांय लीध वळावळ वांह । वजी पिड़ हाक वराह वराह ।
विचै थट भूंडण चीभड़वाळ । ये दनह तोड़ण कोट डाढाळ ॥६४ ॥
दरांणाय डोर छुटा सिरडार । लगा वग कूकर सूकर लार ।
थहै चटकै रटकै कंध थूल । पमंग उलाळत ज्यों गज पूळ ॥६५ ॥
रह्यो रुप हेकल पाधर राड़ । उठै अस घांधळ राव उपाड़ ।
भड़ां मुंह थाट विखैरै है भीड़ा । गुड़ावीह एकल सांग धमीड़ा ॥६६ ॥

॥ कवित्त ॥

हणें आप हथवाह । राव वाराहर झालो ।
ले छकड़ां सिर लार । पुळै वाजू दळ पाळो ।
ओठी हाले अगे । पीठ घूमर पमंगाळो ।
आसथान रो उतन । साख तेरे उजवाळो ।
उडतां घांण सूघां अंतर, केसर चौसर कमकमां ।
आवियो सरोवर ऊपरै, तिम माछी वैहै हमतमां ॥६७ ॥

॥ दोहा ॥

सुरा पांन आमुख सैहैत । करी गोठ तिण ठौड़ ।
रात सरोवर पर रह्यो । राजंसी राठौड़ ॥ ६८ ॥
कव सिनांन कर धूप कर । अश्वपत ले एकंत ।
रव मंजीर सुणतां रमण । परी उडी नभ पंत ॥ ६९ ॥
असरां डमरां उड्डतां । मढ विप ग्रेहणां माय ।
पंड झलूस पोसाक कर । अपछर ऊभी आय ॥ ७० ॥

देवंगणा वायक

वसै नहीं देवंगना । महिपत मिनखां माय ।
आवै मन में आप रे । अठै मिळो नित आय ॥ ७१ ॥
अवै रहूं घर आप रे । व्है न जितै जग वात ।
जद घर छोडै जाव सूं । बात वुही विख्यात ॥ ७२ ॥
भेलो रैह ने भुगतणो । सव विध इन्द्र सराप ।
जाणो कत हूंरू जिका । आणंद नै कै आप ॥ ७३ ॥

नृप घांधळ नर नाह । परणी तांम अपच्छरा ।
राखण नाम रसाह । केइ सुख उद्मादां करै ॥ ७४ ॥
उण सरवर रै ऊपरा । परी रहै नृप पास ।
कोलू नृपत करावियो । ओदी मिस ऐवास ॥ ७५ ॥

॥ कवित्त ॥

दिवस रहै दरबार राव घांधळ रढगांमण ।
नृप अपछर रै नेह तजी कमलादे भांमण ।
ऊगै दिन आवंत धणी मन राखण धण रौ ।
कर ओदी मिस कमंद वैह जावै आथण रौ ।
निस दिवस रहै छकियौ नरिन्द्र अमल दुवारा प्रेम अंध ।
कमलादे हूंत राखै कपट कई दिन यूं गमिया कमंध ॥७६ ॥

॥ सोरठा ॥

भूप अपछर भेलाह । रंग मांणण दोहूं रहा ।
वढ की सुभ वेळाह । नग पाबू सिध नीपियौ ॥ ७७ ॥
अधपत वालौ अंस । पड़ियौ अपछर पेट में ।
तद लछमण अवतंस । रतन कंवर पाबू रह्यौ ॥ ७८ ॥
सुमनां झड छायोह । अमरां मिल आकास में ।
पाल जनम पायोह । सुभ वेला धांधळ सुतन ॥ ७९ ॥

॥ गाहा ॥

कमंधा घर ऊगौ किरणाळौ । भुज लग हथ पाबू भालाळौ ।
वेगड धमळ कंध वळ वाळौ । वाखांणू धांधल राव वाळौ ॥८० ॥

॥ कवित्त ॥

आखे के आखेट कमंध जावै निस करवा ।
केइ कहै सिध कनै जोग संथा उर धरवा ।
पुणै केक प्रोखता कमंध परणी धन कारण ।
जिण सारू निस जाय धणी कोलू रंग धारण ।

जगजीत परी मारण जिकौ जांण न को जिहांन में ।
रणवास महैल सूना रहै आप रहै उद्यान में ॥८१ ॥

॥ दोहा ॥

कमलादे वायक कै है । दाखी सच दरबार ।
मिस करनै जावौ मती । सूरां तणी सिकार ॥ ८२ ॥
हूं आखू साची हमें । तिण में झूठ न तार ।
सूर नही है सरवथा । नृपत उठै काय नार ॥ ८३ ॥

धांधल वायक

मिळै जठै सिध मंडळी । नाद पूर नव नाथ ।
उण कज जाऊं एकलौ । रांणी हूं अध रात ॥ ८४ ॥
भिड़जां परटा परभ गम । भंगमां तंबू भाल ।
उण प्रताप राजस अगड । वडकां थळां विचार ॥ ८५ ॥
वन उण में जोगी वसै । रहै सिधां रौ राज ।
तिण दीनौ जूनै तणौ । रिधु मनै धरराज ॥ ८६ ॥

॥ कव वचन ॥

कमधज जीण करावियौ । अधरैणी रै ऊठ ।
छांनै हय चढ चालियौ । पिलंग तजी धण पूठ ॥ ८७ ॥
निज चख खोल निहाल । नृपत पिलंग दीठौ नहीं ।
तुरंग चढे तिण ताल । वांसे कमलादे वुही ॥ ८८॥
आई सांमी अपछरा । धण पूठे धाईह ।
पुणिया आणंद नै परी । वायक कड़वाईह ॥ ८९ ॥

परी वायक

आखी आपांणीह । सह कथ चिरतां तणी ।
राज तणी राणीह । वांसै खड़ आई वहै ॥ ९० ॥
गहपत कीन्हो गूंज । कमलादे रांणी कनै ।
तिण कज पूठै तूज । आ आवी धण आपरी ॥ ९१ ॥

प्रीतम पाबू नेह । राजंद जतनां राखजो ।
नज जासूं तो नेह । नर पुर फिर मिळसूं नहीं ॥ ९२ ॥

जणणी नह जायोह । इण जोड़े दूजो अवन ।
ओ मो उर आयोह । जिण नै सेल म जांणजो ॥ ९३ ॥

पीतम म्हारो पूत । वरदायक घर वाजसी ।
सिव नर कंवर सपूत । पाबू घर पूजीजसी ॥ ९४ ॥

नव लख लोवडियाळ रै । अन मझ हतो न वीर ।
इण कज पाबू ऊपनो । धांधळ सुतन सधीर ॥ ९५ ॥

पवंग थकै नख पाळनै । कर धांधळ पर कोप ।
तत खिण पीतम नै तजै । अपछर हुई अलोप ॥ ९६ ॥

चपला गत चूंबीह । परी गई अपछर परै ।
आय आगल ऊभीह । कमलादे नर वे कियां ॥ ९७ ॥

राव धांधल वायक

पापण जा पालीह । हव तो मारयां स्या हुवै ।
आंन करी आछीह । पाबू नै कुण पाळीसी ॥ ९८ ॥

गेडा वांस ह्वै अकल । तिरिया तणी तमांम ।
कारण इण जग में कहै । नव खण्ड वेगम नांम ॥ ९९ ॥

कमलादे वायक

राखो सोच म राज । तार जितो वालक तणो ।
मो वाळो उर मांज । पोख करूं मोटो परो ॥१००॥

कव वायक

ले ऊंडलियां पालनै । भूप तणो तप भाळ ।
विडंग चढे वीखाविया । कोलू दिस ततकाल ॥१०१॥

अध रत रा आयाह । कमलादे धांधळ कमंद ।
वाजा वजवायाह । पुत्रोछव परभात रा ॥१०२॥

दे धांधळ नृप दांन । मन भायो धन मांगणां ।
वेवो हरप विदान । कमलादे जायो कंवर ॥१०३॥

वरदायक वालीह । अपछर रै उर ऊपनो ।
पावू पीथालीह । वरप जितौ दिन में वदै ॥१०४॥
आरौ सम्वन पेख । निसचै वरष निनांणओ ।
पावू जनम संपेष । मासोतम फागुण मुकर ॥१०५॥
फालगुणी उतरा फजर । पावू नाम प्रमाण ।
क्रिन्या रास जरूर कथ । जत मानव गुण जांण ॥१०६॥
जबर भुजा डण्ड जूंभमल । रंग है करण रढरांण ।
पख ऊजल नरपाल में । पिण्ड पौरस अप्रमांण ॥१०७॥
रजवट अंगली नां रहै । धर खावड़ री ढाल ।
वरदायक कुलवट वहै । पौरष छकियौ पाल ॥१०८॥
चण्ड मुण्ड से धारणी । आ लोंवड़ियालीह ।
आणन्द रै घर ऊपनी । देवल डाढालीह ॥१०९॥
जिण दिन पावू जनमियौ । भालाळो कुल मांण ।
उण दिन देवल अवतरी । आणंद रै घर आंण ॥११०॥

॥ कवित ॥

देवल पावू दखां वंश दीपक वरदाई ।
वेहुं भाई वैन रमे चौवटै सदाई ।
जोड़ हुंत घोड़ियां दौड़ आथण री आई ।
बेहूं बाळक वचै देव अस्वा दीठाई ।
मैल सात में माल वांह ओथसां वधारी ।
गहै वाळ लिय गोद लखै कंमलादे सारी ।
बदारी वांह देखे बहू वट रांणी संभ्रमै घणौ ।
सांप्रत उणहीं पुळ सगत री जांण लियौ देवत पणौ ॥१११॥

॥ दोहा ॥

देवळ सूं थम दाख नै । हली सगत वेहद ।
आघा सादां आवसूं । तू समरेसी तद्द ॥११२॥
वतका जग जाहर हुई । सांप्रत आसुर आय ।
तनुजा खांमद नै तज । मीळी देवगत माय ॥११३॥

॥ कवित्त ॥

आद १ जसो धन आख दाख दूजो२ यणवल नर ।
वीरतवन्त ३ सिद्धरावत ४ करसी घण ।
रख नारायण ५ हूदे सांडसीह धण जुध स्त्रावज ।
विकरम ७ करम ८ वखांण करन ९ सारण मोटा कज ।
गैंवर पछाड़ गोविंद १० गजो११ मंडलीक१२ भड़ हाकहम१३तणा ।
आफरीवाद वूडा अनुज तेरेहि भटियांणी तणा ॥११४॥
पह वूढो पाटवी १४ दाख नीवों १५ वाहड़दे १६ ।
धुरकाजल१७ रिणधमल१८ आल१९ऊदळ२० आखवए ।
वीरभांण २१ वडवरे धियां सोनस १ पेमल २ धन ।
पीथल २२ सोम २३ प्रमाण मुदे पावूजी २३ पणमन ।
दख वीर वड़ा मेकादसा वागां खग अणियांवनां ।
पुण मातुल गोहिल मालपत ऐ कमलादे ऊरना ॥११५॥

॥ दोहा ॥

आमथांन वाळो उतन । नवखण्ड जाहर नांम ।
धजवड़ इत कोलू धणी : धांधळ गयो सुरधांम ॥११६॥
विण धांधळ खारी विषम । कोलू रै रैवास ।
गिर री धरती नै गयो । आणद हुए उदास ॥११७॥
आद ख्यात सूधा अरथ । ले मत यंछया लेप ।
कव मोडे वरणन कियौ । उतपत रौ आखेप ॥११८॥

इति श्री पालपोरसातन आसिया मोडजी कृत उतपत रो समो संपूरण

अथ गोल रौ समौ

॥ दोहा ॥

जस लेवण जगजीत ! आथमियो धांधळ अवन ।
ऊगो थळ आदीत । वूड़ो नृप दन वार में ॥ १ ॥
वूड़ै नै वैसाणियो । पत धांधळ रे पाट ।
तपै देस खावड़ तणै । भलै न को खाग भाट ॥ २ ॥

यत धांधळ री पाग । टीकायत वांधी तरां ।
राईतन रंग राग । वरणांणौ पाछौ वळे ॥ ३ ॥
देस तणां बुडै दियौ । भुजांपाल भर भार ।
हालै हव जिण रै हुकम । चौवीसें सिरदार ॥ ४ ॥

॥ कवित्त ॥

धणर एक धारणा १ पार परमोद अपंपर ।
सात वाच २ संजमी ३ वांहनकरै ४ भागल पर ।
माताजीत मनजीत ५ सेवगी रौ पख सांचौं ६ ।
सुणे हाक सात्रवां पाल न दैवे पग पाछौ७ ।
नडर ८ सधर ९ नरलीभ १० वैर जूना उघरावै ११ ।
पारथियां १२ सिधपाल छतें नाकार न १३ लावैं ।
विकल मन हुवै नह समर वस परदुख कापण अडग पण १४ ।
न करै अध्रम १५ जुध कळह नड़ कहियां नर वाहण १६ करण ॥ ५ ॥
दोम काचा न दे १७ पाल मग वै १८ परियां रै ।
वाळै छूटा उतन विखें सरणायत ज्यांरै ।
ही छतां दलां हरोळ १९ पाल वांका पधोरण २० ।
प्रपत मृखे २१ अलीण रहै नर कपट २२ नरेहण ।
राजसी पणै मोद न २३ रखै खाट खाय निज खाग री २४ ।
पल करें प्रवाड़ा रवि उदय २५ सदा हांमस भाग री २६ ॥ ६ ॥
काछ पाक निकलंक जती पर न नार जोवै २७ ।
जोह अहल नह जाय २८ कलह नह जीव लुकोवै ।
वजे गजर जिण वखत अंग आजो नहि आंणैं २९ ।
करणी रहणी कमंद ३० पाल जोग मत ३१ प्रेमांणै ।
चारणां वरण संकट सुणै लाख वात अंजळ न लै ।
कमध यळ सीस राखण कथां घणां - खळां खपरां घलै ॥ ७ ॥
रूपनाथ रो हुकम ३२ रखें सवही दन धू पर ।
भावी समरथ कांम वणें जंद गणें सरोपर ३३ ।
सुणिया चारण सवद ३४ मिळै ऊठें कुळ मंडण ।

हैंक माड हिंदवाण ३५ पाल मेचांण वहै डण ।
सुरभियां ग्रहण श्रवणै सुणें दुरस ३६ छुडावण दाखड़ी ।
सिघ मरद पाल घांधळ सुतना, ऐ खटतीसां आखड़ी ॥ ८ ॥

॥ छन्द त्रोटक ॥

घक धूणिय माल मिमाड धरा । पत आयत खींवर आंन परा ।
कळचाळ वधे लहठी करड़ा । भड़कै घन देत गढां भरड़ा ॥ ९ ॥
गिर छोड़ वलै धर खूंद घणी । अडपात वार विखेर अणी ।
घरघाड़ मिमाढ वगाड धरें । केई मारग पाड़ विगाड़ करें ॥१० ॥
वड तंग खळों मगरा वळिया । नर नायक पायक नीकळिया ।
रखसी सुत घांधळ वंतरती । सपने मझ आंण कयौं सगती ॥११ ॥
लखपीट कमाल वळद्ध लदें । महिषां सगटां पर भार मुदें ।
कई काटळ पैंरण झूड़ कड़ा । कमठाळ किया अम्बुवा कपड़ा ॥१२ ॥
मुदवी नरपाल प्रतै मिळिया । श्रवणै सेहैं वायक सांभळिया ।
कदनी रुजगार वसीकरणें । सुत घांधळ राख लिया सरणें ॥१३ ॥

॥ दोहा ॥

सैहल गिणें समराथ नें । वडा कांम वणियांह ।
रही नहीं जुध रोडियां । ऐ धारां अणियांह ॥ १४ ॥
दे धर सस्तर पुरण दे । दे अन वस्त्र दुजाळ ।
रजवट पारख राखिया । पारधियां नें पाळ ॥ १५ ॥

॥ छन्द वेताल ॥

पटधरा पूर देसि अगल । ध्रवी नह गण धार ।
दख तिण कज खड़ दो खड़ै । आवियो राव उदार ॥ १६ ॥
सुरभियां महखी सांढियां । आवे न भूअमिरात ।
सैहै लोक लारे साळुळै । नरनाह जायल नाथ ॥ १७ ॥
धर थळी धीरा धूंधळां । खड़ तणा जाया खूर ।
सह साथ कोलू सीम में । संक्रम्या ऊगों सूर ॥ १८ ॥

रन मांझ गाडा राखिया । भरिया ते जाजे भार ।
महिपती सारंग मेलियो । आगन्ने एक असवार ॥ १९ ॥
कहजै थूं बूड़ा कमंध ने । जे हात हूंत जवार ।
गोळू धरा नागोर रा । संग लाविया सिरदार ॥ २० ॥
आप रौ आजो आण नैं । आविया म्हे वेहै एथ ।
एकंथ भोम वताय दौ । जिम गोळ बांधाँ जेथ ॥ २१ ॥
वचन सुण राव वजीर रा । परचण्ड तेज हुयौ पाल ।
सत्रवां साल दुझाळ समहर । धरा खावड़ ढाल ॥ २२ ॥
वरियांम चांदौ वीसळौं । भड़ लगै खळां भयांन ।
असमराँ जोर उठायलै । अणियां परै असमांन ॥ २३ ॥

कव वायक

धन नृपत धांधल रो धरम । दिन दिन वदै तप दीह ।
सत सूर हुकमी सगत रौ । आवियौ पाल अबीह ॥ २४ ॥

बूड़ै वायक

थित थंभ थळवट राय ने । कैहै तेड़ियौ डण काज ।
धनवाळ ले जायल घणी । आवियौ सारंग आज ॥ २५ ॥
किरणाळ चौविस कोटड़ी । सब चलत तुज्ज सलाह ।
चहुवांण लायो देस सैंहैं । निज हव रखां के नाह ॥ २६ ॥
बोलियौ नवलख सगत बंधव । कणण पाळ कंठीर ।
ऐ अपत आद अनाद रा । वसुधा न रक्खां वीर ॥ २७ ॥
दादो ज सारंग देव रो । पत खोर पंजर पीड़ ।
मजराद तद प्रथिराज मैहलां । करी जिण रित कीड़ ॥ २८ ॥
इयां रहां सुधरैं आंपणी । वहसे ज सूह विणास ।
इसड़ाई पिंडूं अलखांमणा । परगे है इसी सह पास ॥ २९ ॥
अै धया जाडा आदमी । गत कुटल जींद अमीर ।
ये सर सू नैंसार मुसकल । वरांसी मुण वीर ॥ ३० ॥

बूड़ वायक

कथ पाल तें सांची कही । वरदेत झूठ न वात ।
आया समै रा मारिया । ए करें सूं कव उतपात ॥ ३१ ॥

वेगडें पाल कहियौं भले । सिध मरद परियां सोज ।
चहुंआंण आयां सदन में । काले करी कन्नौंज ॥ ३२ ॥

वढ विवें फिर समवादिया । ऐ आती अमीणी आस ।
रटक धन धर नह राखसां । थासै जदी उपहास ॥ ३३ ॥

भूईहल थळ नी भीम ना । तें कीध साथ तयार ।
वसुधा तूं पड़त वतावजे । अण साथ जा असवार ॥ ३४ ॥

कोळू तणै कणवारियै । देवड़ वत्तायी वोल ।
डेरै में चौड़ै सगट । द्रढ गौलूयां दीठी गोळ ॥ ३५ ॥

चढ जाय बूड़ौ चंचळां । मन रख सगापण मेळ ।
दारुआं अमलां दोपटां । खीचियां कमधां खेळ ॥ ३६ ॥

अखिट भेळा रमै अवपत्त । जोख सूं दिन जाय ।
गायणी जांघड़ गावतां । इण रीत गोखां आय ॥ ३७ ॥

रैवास कूंजा ऊतरै । मदभर मण्डे मघवांण ।
रणवास भेळी रांणियां । दरगाय मभ दइवांण ॥ ३८ ॥

नृप सनढ कोळूनाथ रै । संग वंटै सारी रात ।
गुणिअणां भूलर गावतां । पीवतां मद परभात ॥ ३९ ॥

मनवार छाकां लेत मद । निछरावळां सिर नाय ।
केफांण नै डकावतौ । जींघरौ ढांणै जाय ॥ ४० ॥

रहै साध नारायण हुवै । वस निकट वीरतवन्त ।
धण हेत सूं गोविंद गजौ । उर होय हरक अनन्त ॥ ४१ ॥

वाघेल हूंता वैण कैठै । पाल दे मूंछां पांण ।
इण हेत फळ पाकै जिकै । भाळजै तूं चन्द्रभांण ॥ ४२ ॥

एक वरस लग वड रयौ आलण । नृप बूहो मग नीत ।
मन खंच दूजे वरस लग । अत लगौ करण अनीत ॥ ४३ ॥

॥ दोहा ॥

हळियां हळ संजोड़िया । गळियौ ग्रीखम गाढ ।
आळसुंआं उद्दम कियौ । आयौ धुर आपाढ ॥ ४४ ॥
तद सारै थळवट तणौ । कीनी लोक पुकार ।
ओ धर दानण आवियौ । जायल रौ सिरदार ॥ ४५ ॥
वरस दोय रैतां हुआ । जो घर अजे न जात ।
अवस हुवेला आपरै । यां हूंतां उतपात ॥ ४६ ॥
काढै सांचा कूट नैं । घोड़ां आगळ घात ।
चरण न देवैं सीम में । म्हारी तौ मीरात ॥ ४७ ॥
जाव नह केवां जकां । मांनैं नह तिलमात ।
गायां सांढां घोड़ियां । रुळा चरै दिन रात ॥ ४८ ॥
महिपत वूड़ै मेलियो । वरजण कज असवार ।
कूक लोक जादा करै । हमैं म्हे खादी हार ॥ ४९ ॥
धांर धरी सुरपत धरण । सारै हुवो सुगाळ ।
उतन पधारौ आपरै । काढ लिया दोय काळ ॥ ५० ॥
आवै वैह वैह नै अजे । लंगर लागा लोक ।
जकां दाव लीनी जमी । रन थन सारा रोक ॥ ५१ ॥
आंण वसी नागोर री । पटी सरब पासीह ।
आय गई जायल तणी । सारी चौरासीह ॥ ५२ ॥

ऐ समाचार कणवारिये सारंगदेजी नें कया जद पाछो सारंगदेजी कैवै है ।

॥ कवित्त ॥

म्हे ओठी मेलियौ जोवण नागोर धरत्ती ।
यते म पालौ आय सुरभियां मुज चरती ।
रहिया जतरा मास जता दन हमैं न रैवां ।
खमिया जिम हीज खमो केम आखत कर कैवां ।
खड़ मेह घणौ म्हांरी धरा जासां गढ जायल जठै ।
आप मत वो ऊनावळा अवै नहीं रैसां अठै ॥५३ ॥

॥ दोहा ॥

पाछै आय प्रधांन । कमधज नैं कहिया कथन ।
जिदै कह्या जबान । पख हेक में जासां परा ॥ ५४ ॥

॥ नीसांणी ॥

गोळ घलांणा वेड़ में अनियाव करंदे ।
वाट चहूंदस सांहरा । धरवाड़ धरंदे ।
घरा छुड़ावण धांधळां मन कीन मरंदे ।
हय वड़ दोय हजार सूं जिंदराव हलंदे ।
डारण तेड़ वेलदार भुरका लंदे ।
रोठ घतीजै रीठ में चाळा चंगअंदे ।
रैंत थळी री रात दिन मन पें धड़कंदे ।
कोटड़ियां धमका करै चौवीस भड़ंदे ।
चरण वछेड़ा चांचड़ां जिण दीध फड़ंदे ।
कूक तणा कोलू महां नित ढोल रणंदे ।
हाका पोथळ हाकहक हथपाह हड़ंदे ।
वाघण व्याई वेढ में कुण दूर करंदे ।
आवै खीची ऊससे सब सस्तर बंदे ।
अखे जनां कोई ओळभा कर मूठ धरंदे ।
वीभिरियोड़ा वाघ जिम सब सोहड़ चलंदे ।
ढोल घुरंदे ढांणियां, कख कूक करंदे ।
अवनां डाकां कड तणां नह पीयण दयंदे ।
ऊगै दिन कोलू अवन घमचक मच्छंदे ।
जखम घले केई भोळियां डीलियां ऊठंदे ।
नीत्रौ वाहडदे देव नर नित वाहर चढ़ंदे ।
खेत भीळंतां देख कर राठोड़ लड़ंदे ।
वड़ वड़ वीच भड़ांन विचे दास्तांन भड़ंदे ।
सिरदै दार मदार सिर हक खेड़ हुवंदे ।
संक न मानै जींदरौ नह रैढ खसंदे ।

धूणे सर कोळू घणो पछताव करंदे ।
वचन न मांन्या वीर रा हव हाथ घसंदे ।
देख जुलम जिंदराव का नित पाल हसंदे ।
एक निसांणी ऊमदा कव मोह कहंदे ॥ ५५ ॥

॥ दोहा ॥

फरमांणंद हूता कहै । बूड़ो नृप जिण धार ।
पालो हिव जायल पती । तुरत वजी तरवार ॥ ५६ ॥

बांधळ नृप दावी धरा । जका छुडावै जींद ।
कैहजो सारंगदेव ने । कळैह वणी ताकीद ॥ ५७ ॥

वाभां हव चढतां वही । कांनां ताती तोखार ।
सेल ओथ तेगां समस । विलकुल खांपां वार ॥ ५८ ॥

विष्टालू आया वहे । जींद कने खब जांण ।
कहिया बूड़ै रा कथन । वकियौ जायल रांण ॥ ५९ ॥

धूणै खग जायल धणी । दैण सत्रां कुळ देळ ।
करड़ा वायक काढिया । जींदे नृप अजरेल ॥ ६० ॥

विष्टालू पाछा आय जींदराव कह्या जिके वचन बूड़ेजी थकै जाहर करै है ।

॥ छन्द नाराच ॥

करै रखी न भोम का । अनाद आद सूं करणी ।
धरा परत्त तोज सा । अनेक हो गया धणी ।
मही प्रमार री थिरू । हूतो धुराद मंड सूं ।
अरोग भोम भूप आय । हो जको अफंद सूं ।
विसास घात गोहलां । निपात डाभियां बुरी ।
करै कमंध चूक जोम । भोम आप री करी ॥ ६१ ॥

वीडांण वीच ढांण दे । ऊजाड़ सूं विगाड़ सूं ।
चालाय दूं हिमायती । खगांन धार चाडसूं ।
हजार डोढ आदमी । चढै सवार हाजरी ।
विधूंसदै जरायतां । रखै न काण राजरी ॥ ६२ ॥

डरू न मीच भीच सूं । वदाय दूं सदावती ।
हलै न ग्रांन कोय । जींदराव वें हिमायती ।
करै विगाड़ घोड़ियां । मनू न कूक यूं कढी ।
घणी हैसाव जींदराव । खाग जोर सूं कढी ॥ ६३ ॥

छतीस वंस मोक नें । दये न ग्रंभ दांम नै ।
ठहै न वात ग्रा ग्रठै । खड़ो तुरंग ठांभ नै ।
मनी न वात जींदराव । जो बुलाय मात नै ।
धकाय कोह ठाह नै । दवाय धांधळोत नें ॥ ६४ ॥

बूड़ै वायक

ग्रवें करींज वाकवो हगीगतूं ग्रवेल नें ।
प्रचंड जूंझ मल्ल नै बुलाय वीर पाल नें ।
रखैन भीम दावलै कहो बावेल रांण नें ।
भुजाल ग्रम्बुग्राल फेर भीच चन्द्रभांण नें ॥ ६५ ॥

सलेस जो भड़ां हमें तमांम साख साख रा ।
पमंग ग्रोधवाळ जंग चाल सीस पाख रा ।
दुरील गोज जींदराव भीम दाव दोलियां ।
धडीज धांधळोत रै दुवार वंट गोळियां ॥ ६६ ॥

तुरंग पीठ ग्राविया ग्रभंग भीव ताकड़ा ।
हणू कण्ठीर भीम द्रोण पाथ वाग हाकड़ा ।
रमंत जोम सांवळा भ्रमन्त भूल रातड़ा ।
भराय नें कसाय कण्ठ पीठ सोर भातड़ा ॥ ६७ ॥

खळांडळां ग्ररी करै जिके हंगाम खेल रो ।
दहन्त कोम भेल ले सवार ग्राज ढेल रो ॥ ६८ ॥

॥ कवित्त ॥

भालां ग्रणियां भळक जागी ग्रागळ जांमकियां ।
सिंह रूप सांवळां कसी पलवट में रखियां ।
भू तारग भिड़ियां पूरजे ग्रीधण पक्खां ।

नड़ां भीड़ नायका दीघ टण्कार धनेखां ।
अभागो कियां चढियौ तुरी रज थळवट रो रूप रै ।
हृथ आत पाल भेळो हुवो आगै फळसै ऊपरै ॥६९ ॥
पुणै राव सूं पाल मर्ता चढजावौ माथै ।
ऐ वैहै जासी आज भार गाडां सिर घाते ।
रुको वाच रावळो अवस परभाते आवत ।
आप विनांहूं उठै वहै परबारौ जावत ।
सैर तणी सीम में कहूं खेतर काळां रा ।
चरण लगा धांन में विडंग जायल वाळां रा ।
ले माल अनैं ढांणां लगै डारण खग हृथ दौड़ियां ।
अन्त रूप सांढ घोड़े सैहत वढी पिषंतर घोड़ियां ॥७० ॥

॥ दोहा ॥

चांदे ढबा समर री । जवर दिखाई झाट ।
राव तणा गोळू रह्या । वुहा लोक घरवाट ॥ ७१ ॥

बूड़ै वायक

राव करे मन रीस अखै इम पाबू आगे ।
जींदो कुसलें जाय जदे लख लानत लागै ।
मो ऊभां माहरी धरा खग जोर धकावै ।
बोले मोटो बोल वळे मन में गरवावै ।
न जाय कुशल जायल नरिंद ग्रह विगाड़ कीनों घणौं ।
रण जींद तथा सारंग रखूं तद सागे धांधळ तणौं ॥७२ ॥

॥ दोहा ॥

पाल छांड़ जाय पागड़ौं राख कोट सम रात ।
संतरां पारधिया सैहत चांदो ढेंमो साथ ॥ ७३ ॥
आया सरणै आपणै आप हूंत ढिब आद ।
जो खीची कीनी वुरी वीरम कीजै वाद ॥ ७४ ॥

बूड़ै वायक पाबू सूं

॥ कवित्त ॥

मो चढियां री खबर जाय पूगी जायलियां ।
वां सजियां मोरचा ढोल जंगी धायलियां ।
उतरस हुवे जदे जींदों यम जांणै ।
राठोवड़ डरचो वहण आप रा वखांणैं ।
पाल नह जाऊं ढांणै परे कर सिकार आसूं कह्यौ ।
सब साथ रावळै संक्रम्यां रावत कोळू मंझ रह्यौ ॥७५ ॥

॥ दोहा ॥

बूड़ै वायक पाराधियां सूं

पैलां री दावण प्रथी रखिया पाबू राव ।
थां ऊभा पाराधियां धर ली जींद धकाय ॥ ७६ ॥

पाराधी वायक

हुवो आप वाळो हुकम । काढां खीची कूट ।
गायौं सांढयां घोड़ियां । लेसां सारा लूंट ॥ ७७ ॥

दुरस वतावां जींद नै । जवर भुजां री झाट ।
धर ऊपर ढोळां घणी । महियां भरिया माट ॥ ७८ ॥

तिरियां भूखण तोड़ सौं । जोखे जुवा जुवाह ।
गजब उठादां गोळ रा । धौळै दिवस धुवांह ॥ ७९ ॥

डार करांला देखिया । पीता सरवर पाल ।
ए नर पाछा आविया । टूंकी सूं ततकाळ ॥ ८० ॥

चेवह वांटी चेभड़ा । एकल दात्रड़ियाळ ।
कांनां सुण बूड़ै कमंद । चटकाया चंचाळ ॥ ८१ ॥

॥ सोरठा ॥

आवै उडतोड़ोह । एकल होफरतो उठी ।
ग्रह सावल घोड़ोह । दाकल कर नृप हाकियो ॥ ८२ ॥

तुरंग जोर भालै तणो । हुई राव हथवाह ।
अस पूठो उलटावतां । छड़ वारै फल मांह ॥ ८३ ॥
थे कीयो घायल थको । जिणमी जुवो जुवोह ।
डाढाळो पसरां दपै । धूंधा फेर हुवोह ॥ ८४ ॥
तिण पुळ में घोड़ां तणी । जोय घुमर जाडोह ।
करचाळो सारंग कंवर । आयो फिर आडोह ॥ ८५ ॥
बूड़ै नृप रा बोलिया । सोहड़ वचन सकाज ।
परठी जो सूवर परै । अवस वरां ला आज ॥ ८६ ॥
धांनक कर धूंकार । पाराधी आया पुळै ।
बुहा हको जिण वार । पिड़ धुबिया दोहु नरपती ॥ ८७ ॥

बूढै वायक

कहूं वाह थूं मत करे । सजियो म्हैं ओ सूर ।
वाह हुवां सूं विगड़ सी । जींदा आज जरूर ॥ ८८ ॥

॥ छन्द नाराच ॥

बन्दूक घोर उडे सोर भांण धूंधलो रह्यो ।
वाराह ऊठ खेंग पूठ भूपती ऊभो ग्रह्यो ।
भई न वाह रोक राह चाह चेत में रही ।
करोड़ प्रांण द्वार ढांण भांण मण्डली ग्रही ॥ ८९ ॥

॥ दोहा ॥

ग्रतरै सारंग आवियो । किया पयन्दा कोट ।
साट पड़ावण सूर री । गोठ करण मन मोट ॥ ९० ॥

॥ कवित्त ॥

मतै नृपत आविया । विडंग सेंफलै वैहन्ता ।
वर वरता वर देत । वहै मग पेड़ दहन्ता ।
अठी जींद अजरेल । अठो बूड़ो अड़पायत ।
प्रथमी मोटै पळै मणां । सत्रवां दळ घायत ।

है उभै ढाल हिदवांण री घण थट लीना घूमरा ।
वरदायक दोनूं ते विजै भूप उभै सिंह भूम रा ॥६१ ॥

बूड़ै वायक

॥ दोहा ॥

क्यूं सारंग थारो कंवर । महि अण भांत मरेह ।
घीवूं सांग उलाळ री । पळकै कूंत परेह ॥ ६२ ॥
यळ सारी यम ऊचरै । कमसल ग्रोध कदीम ।
म्हां ऊभां इज म्हांहरी । सारंग दावै सीम ॥ ६३ ॥

सारंगदे वायक

बूढा मत बोलेह । वेमुख से मुंह दुरवचन ।
तू मो पर तोलेह । आवध जोर उवां वरै ॥ ६४ ॥
बूड़ो ऊसस वोलियो । असमर करग उठाय ।
तूं किण कज नेवं त्रिपट । हणियो मैं वाराह ॥ ६५ ॥

सारंग वायक

गढां वढां नोवत घरै । मोद धरे मत रोक ।
यण वारै सिव ऊचरै । मेहलां रै मंडलीक ॥ ६६ ॥

॥ कवित्त छप्पै ॥

बूडो सारंग वेहू अखै वायक अरड़ीगा ।
छोड कसा ढालरा पालरा आवै पूगा ।
साहै मांणक छटा कंवर ताजी आताळै ।
आवै ढांणां अगे वग्गफिर सांमी वाळै ।

जींदराव वायक

तूं बूढ़ा नृप थळवट तणां । छै किण विध कैहै मो समी ।
रत पींडां सूं दावी रहे । जबर भड़ां घोडा जमी ॥६७ ॥

॥ दोहा ॥

आगे वळती आग । भालाळो सुण भटकियो ।
खीची ऊपर खाग । तद तोली धांधळ तणों ॥ ६८ ॥

विण पुळ लगी न वेर । वाग संभातां विडंग री ।
सारंग पर समसेर । तद तोली धांधल तणै ॥ ९९ ॥
महिपत धिक मोटेह । असमर बूडै आछटी ।
नरपत घर लोटेह । सारंग सर पड़ियौ समर ॥१०० ॥

॥ कवित्त ॥

धूकारव धांनकां रीठ वजियौ पिड़ टंकां ।
घोर सोर उड गजर वगो धम गजर बंदूकां ।
वहै घिरत वाहळा माट फूटै महियां रा ।
करै रैत त्रिय कूक लाज भूखण लहयां रा ।
गाखां धन गाडा लूंटिया यळ पर कथ राखी अमर ।
ाज ग्रैहण जींद भाजे गयौ सजियौ सारंग नै समर ॥१०१ ॥

॥ दोहा ॥

म्हाटो तज जींदो नरिंद । पड़तल आपांणोह ।
लड़ पारधियां लूंटियो । धोळै दिन ढांणीह ॥१०२ ॥
ते प्रधान वुड़ा तणो । प्रसण विभाड़ै पूग ।
पड़ियो सारंग साथ पिड । तेगां झडजे तूंग ॥१०३ ॥
काळा भंवरा कमंद रा । दोळो फिरिया दौड़ ।
खारा लागै खीचियां । भीलां रा भालोड़ ॥१०४ ॥
बोले आज बन्दूक । डोढी सूर ढांणै दसा ।
अड़ियो जाय अचूक । सारंग सूं बूड़ो समर ॥१०५ ॥
डारण नर दुरवार । बीजा भड़ चढिया मुरज ।
ले पारधियां लार । पातू हव खड़िया पमंग ॥१०६ ॥

॥ नीसांणी ॥

अतरे पातू आविया कीधा घमसांणा ।
पायक थट पाराधियां लीधा आंपांणा ।
वंसली डोढी वाजती हय अगर हलांणा ।
दहल पड़ै ज्यां देख नै राणा सुरतांणा ।
घोड़ां कीधां घूमरां रज उरस ढकांणा ।

पाछो वळियो राव पह धन लूंटे दांणा ।
मिळियो पाबू मारग मझ तड ऊंचीतांणा ।
गायां भैंस्यां घोड़ियां जे लूंट लिरांणा ।
विन सैंहे पाबू वीर रे निजरां गुजरांणा ।
सारंग खागां साझियो ए कत्थ सुणांणा ।
पाल कह्यो तुम पाटवी वड जुलम करांणा ।
दुनियां सब यम दाखसी अनियाव करांणा ॥१०७॥

॥ दोहा ॥

मराड़े पन मूरखां । काळो वदन करेह ।
लूंटावे धन लाख रो । जींदो गयो घरेह ॥१०८॥
अजरायल रहियो उठे । सारंग धारां सींध ।
कई घायल लारे करे । जायल पूगो जींद ॥१०९॥
रहियो सारंग देव रण । सुत उर सोक सरूह ।
दरसण जींदा नें दियो । गोरखनाथ गरूह ॥११०॥
राव सदा जावे रयण । माकबरी सूं थांन ।
मिळियो जो रिख माग में । गोरख मागर आंन ॥१११॥
मिळियो सुत माछन्द्र रो । वळियो वखन वळंत ।
आज लियो पड़तां पगां । गळियो ऊम गळन्त ॥११२॥
प्रगट अला पंथ पावरो । भूपत रख जे भाव ।
जींदा नो घर जनम सो । गेहो गींदण राव ॥११३॥
लख लांनत लागेह । किम जीवूं जींदो कहे ।
अम पिन सो आगेह । सो देखत मारीजियो ॥११४॥
सिख कीन्हो माछन्द्र सुत । जायलपत नूं जाय ।
घाव लगे न तुज्ज घट । पीठ फरे नह काय ॥११५॥
वैर मवायो बाळ सी । सुण सिख सनें सनेह ।
रण तो हाथां रेव सी । बूड़ो पाल विनेह ॥११६॥
रण सारंग विसरांमियो । नह बूड़ो नमियोह ।
गोल तणो कहियो गुणी । सम्पूरण समियोह ॥११७॥

इति श्री पाल पोरसातन आसिया मोडजी कृत गोल रो समो सम्पूर्ण ॥

अथ विनोद रौ समो

॥ गीत ॥

खीची राव सत्रू खंगाळण । गाढो जोर दळां वळ घालण ।
जायल नृप असंगां उर झालण। ओ सारंग सुत वंस उजालण ॥ १ ॥
वरदाई पावू वंसोधर । ओ वड पह विभै जींद वंसोधर ।
वैर वराह विनै वंसोधर । वड़सी जुद्ध विनै वंसोधर ॥ २ ॥

॥ छन्द त्रोटक ॥

जुड़वा रण पावुअ जींद जुआ । हट लाग सगा अस नेह हुआ ।
तण सारंग जायल सीस तपै । पित धांवल पाट बुड़ो प्रतपै ॥ ३ ॥
भिड़जां भड़ पारख साल भरै । करवा जुध वींदल मेलि करै ।
भर रीस जिदै धिक वैण भणै । गहै राख खळां तिलमात गिणै ॥ ४ ॥
कळचाळ भड़ां अस मेल करै । वरियांम किसौ ज पिता विसरै ।

जींदराव वायक

मणधार नलै नह आप मणी । तइयां घर आंटीय बाप तणौ ॥ ५ ॥
दसणां दळ हूं परि हंस दयूं । लघु खेत पिता चोय वैर लयूं ।

कव वायक

सुपहां दर चंचल वाळ सरू । घट व्यापक गोरखनाथ गरू ॥ ६ ॥
तुड़तांण जिसौ चउवांण तपै । कर वेढ सिमाड में वास कपै ।
धर खावड़ बूड़ीय राज धरै । कर ठाल पावू धकचाल करै ॥ ७ ॥

सीमाड़ा वायक

पहचां नह पोरस तुज्ज पणां । तुह सांमत धांधळ सीह तणा ।
जग जेठिय पाल वहांळ जपै । निग ताल उभै किरणाळ तपै ॥ ८ ॥
पित धांधल पूत विनै पड़दै । दुरजावत नींबोय वाहड़दै ।
सिध धांधल अेस खलां सलही । अल सूरण रींभळ ऊथलही ॥ ९ ॥
वरदायक वीरव देवण रा । कम ओज उजागर कैवण रा ।
सत्रुओं कुळ कादण काल सही । मदमांनत कांन कुवज्ज मही ॥१० ॥

हर सोधीय गाय परी हल नें। रखियो सपनें निस देवळ नें।
घर खावड़ पाळ भलाळ वणी। जिण री सुर वारण हूं जणणी ॥११॥
विध जोग विजोग हुवो वर सूं। सुत मूक चली तिण वासर सूं।
कैहूँ नां रमियो उर मोद करें। पहू पाल रमाडुंय पीठ परें ॥१२॥
घट तेज अनोंपम वेग घणूं। विण कारज तुज्ज विडंग वणूं।
रखसूं कर मोद वणी रळियां। उगनूं असमांन री ऊंडळियां ॥१३॥
तुज खेत हूदेवळ साल तणां। वहसे अस दौड़ सवार वणां।
रज मूं नर वंदण रेवति यूं। हय खेंगण धूप उखेंवति यूं ॥१४॥
धर मूक न ढील करो धम री। भड़ पाल तनूं समपें भमरी।
सगतो तुम मात अमां सुमना। वत मोह न दीजोय पाल विना ॥१५॥
प्रगटी घर देवळ रै पर ही। अवतार तुरंग अपच्छर ही।
कछ वागड खंड हलार करा। धुर मूंकिय नीलि नागोर धरा ॥१६॥
गडवां घट वाल घलै गढवा। पुळ आगम पाल थली पढवा।
धिप खेडहुं नांह हलीधर रा। गढवी धन वाल अमैं गिर रा ॥१७॥
उमरांण थई धरणी उण री। नव सोरठ पूपत नां घण री।
कछ देसाय आपण दुःख कियो। दत पाल मथांणांय गोल दियो ॥१८॥
पहू आवत जोण मही पर रा। कव रूप वखांणत केसर रा।
अहफीण गळे नित मोद अवं। चवरें चढ आवत पाल सिधं ॥१९॥
मिसटांण गरी चटकां मिळियां। गळियां पर साकर री डळियां।
विसरां मडकां थड दीह वटां। गजपाय है वेछर माड गढां ॥२०॥

॥ दोहा ॥

कोड़ जुगां राजस करो। प्रथमी बूडो पाल।
भूप उमैं भूलाविया। सरवैयां सुपखाल ॥२१॥

॥ कवित्त ॥

दई राव ने ढेल जींद ने दो गंगाजळ।
गहवण राखी गोप कमद पाबू कज फाजळ।

बंधी तिगर बूहरे सदा पीवजो चूनड ।
सिद रैवंत सुभ सेहज विडंग नह और जकण वड ।
नायकां साथ लीनां नरिंद मोर तुरंग चढ मोट मन ।
विडंग कज पाल आयो वहे चौड़े बांवल री सुतन ॥२२ ॥

॥ छन्द त्रोटक सुजपाल ॥

सुजपाल विडंग वखांण सुणै । भुरजाळ जुहार सिलाम भणै ।
अरजी सुण देवल मांन अनै । वगसीस करी अस वांधव नै ॥२३ ॥
वरदायक ताजण कोड वणें । जिण खेंगण मोल अमां न जुड़ै ।
समपे मुज बन्धव जांण सही । लख मौलिय केसर मोल नहीं ॥२४ ॥

कव वायक

कलमी अस देवल दैण कीयूं । लोवड़ी प्रतपाल यूं वैण लियूं ।

देवल वायक

विचि आयल लूंटत चार वला । रन मांझल म्हे धन वाल रुळा ॥२५ ॥
जग खोसिय कोलिय मीर जता । सिर बंध सराहिय राठ छता ।
जोहियां वाअली साय लूंट जणी । धनवाल अभे रन नांह धणी ॥२६ ॥

कव वचन

कर सूं हूं ऊपर पाल कियौ । दुतियां रखवालण वैण दियौ ।

श्री मुख सूं

तव कीं दरसावत वात तुमै । यण वंस तणा रचपाल अमै ॥२७ ॥
गणजे मत दांमण चोल गनौ । मुझ बन्धव सांचेय भाव मनौ ।
विवनौ घर जीवत रुप मुणै । चारणां कुळ संकट पाल सुणै ॥२८ ॥
गढवाडांय जीवत कौण गजै । व्रनपाल गवां धवपाल वजै ।
जग मांझ अमां घट प्रांण जितै । इह्म वित हेरण कोण यतै ॥२९ ॥
सपतास विडंग तणै समरी । वांहरे सुंय वाहर ली भंवरी ।

पाबू वायक

नह खेंग येसी घर सीस नरां । किरतार वणाविय आप करां ॥३०॥
सिर राखण देवल दीध सुणां । तुरगांण वचौ खगराज तणां ।

पमंगा दसि प्रथीमाद परै । गाय छैल दिनां कुण रीझ करै ॥३१ ॥
सअवां चख नीच हियै सल री । दत खँग दियोड़िय देवल री ।
हय देखत पाल घणू हूलसै । वरदायक लै सगती वखसै ॥३२ ॥
ग्रहणां मढ केसर रूप घणो । तन भीड़ब साज वणाव तणो ।
कंध थापल देवल रीझ करै । पग दे चढ पाल रकेव परै ॥३३ ॥

॥ सोरठा ॥

भुजां खअवट भार । सिघ खत्री धांधल सुतन ।
भाई का सूं भार । भूरा तो जोतां भिड़ज ॥३४ ॥
मन सुध हय मोनूंह । तें दीधो केसर तुरंग ।
वान्धव बाई नूंह । सीलवणो कद सील सूं ॥३५ ॥
तें देवल अणदां तणी । भूल असूलां भल्ल ।
पावू नै दी काळवी । गढां उबारण गल्ल ॥३६॥

॥ छन्द त्रोटक ॥

धुणियाळ थकै चड खँग घणी । असमांन लगा चड़ियाल अणी ।
सुरभी थल गांझ नचीत चरौं । खितपाल थयो रखवाळ खरो ॥३७ ॥
कहदे घर आगम केसर रो । संचकार उणी दिन सूं सिर रो ।
लख आंगिय केसर खँग लखी । धांधळां खिचियां फिर वैर धुकी ॥३८ ॥
प्रतपै नृप वूडोय पाट पतं । थिर कोलुअ पाल प्रधांन थितं ।
खित मारग खँग अलंग खड़ै । प्रसणां पर पाल अचिंत पड़ै ॥३९ ॥
कोटड़ो धरधाट दवी कुड में । दीपत राजस खावड़ में ।
थित वंगय काचरणै थल में । ग्रह पाल प्रमांणत पूंगल में ॥४० ॥
ततवी सत सोहड साथ समैं । रण आंगण धांधळ पूत रमै ।
मझ माड अनें खड आल मई । ठरहै घर जंगळ हाक ठई ॥४१ ॥
घर धूजत धांधळ पुत धकै । झप धोलिय सिंध तणीं झमकै ।
धजटां नल सीस खळां टकरं । भय मांनत है सिखरं मखरं ॥४२ ॥
कोपली गढ धोल वढार कपं । रिख राड विराजण धाड़ रुपं ।
अग सीस उपाडिय पाल जडा । कछ कपंद डूंगर झाले अडा ॥४३ ॥

किधै संतर भोम प्रचो करडो । बल आगम सांक मनै वरडो ।
दोयणां घर धांधळ चाल दखै । इभड़ा सवनी धर सेंक अखै ॥४४ ॥
जसभाल तणा पुगार जपै । प्रस घीस अढारे इया थरपै ।
भड़ लूंटीय हैदर मीर मणी । तिय सिंध वखांणु अ खांन तणी ॥४५ ॥
कमठाल हटाल डलां कलता । वह लावैय पीठ वसै वळता ।
कल अगर गूडर माग किया । लख झारोय डूंगर ठेक लिया ॥४६ ॥
पड़ सादर जागर सीस पड़े । सवियांण तणे गिर हींड चडै ।
हुय वाकव ते जयचन्द हरा । धुब अंग लोयाअह रीझ घरा ॥४७ ॥
वड़ माड़ पहाड़ कमाड़ वगी । लखते तव सायत नाल नगी ।
वसतं रसतं सब चीज वरं । यह राजत है एहलांण पुरं ॥४८ ॥
सांवलां सेहै राजव भोम सही । मिणिया गिर लूंट सुजेर मही ।
घर आंणिय सांढ्यां टोळ घणौ । तिण लंगेय सायर सिंध तणो ॥४९ ॥
किलमां मोहरों अरदास कही । सायेरे वाघांणी सूं रीझ रही ।
समपै एक चारण बंध सको । धर धूजत धांधल पूत धको ॥५० ॥
मेवास वडा व्रत है मिळिया । कळहे डरपे सह कांठलिया ।
जग जेठिय जोध फरै जतरा । होय तूलमतूल हकूमत रा ॥५१ ॥

देवल रे भतीज री जांन अलहणपुर पाटण रातरा उतरिया वाग में तठारा

॥ दोहा ॥

अधरत री उतपात । बावळ कांठळ सूं बणो ।
वळखे वदन वरात । आंण दाग मझ ऊतरी ॥ ५२ ॥
कहियो मालीकार । ऊतरचा न देवां अठै ।
मातां कले वधार । वागवान गढवां वुबो ॥ ५३ ॥
फजर वखत फिरिंद । कीन्ह जाय मिरजा कनै ।
सुण इक तरफा साद । रोके गढवा राखिया ॥ ५४ ॥
पड़ती रैण पुकार । देवल पाबू सूं दखी ।
तद चड़ वड़ तोखार । पह फाटी बढियार पर ॥ ५५ ॥

वड़ वड़ भीन वकार । खेंगा चढ कर खाटखड़ ।
आछट जोध तंवार । आछट धांधल राव उत्त ॥ ५६ ॥

॥ कवित्त ॥

पड़ती रजनी पाल रखी थळवट उपरांटी ।
जाम अरध जावतां क्रमण नइयड़ री कोठी ।
गढपत तीजी घड़ी गयौ गांयणें गिरवर ।
जांम निसा जावतां धरा पूगो राडधर ।
क्रमण कांपली कोट पांचमीं घटका पूगो ।
धरणीधर दे धोख अरध निस चंदौ ऊगो ।
वढियार वाड भाल वळै क्रमण पौर तीजी कियौ ।
दुत गैण उदे सिंदूरियौ लाग वाग पाटण लियौ ॥५७ ॥

॥ दोहा ॥

नरहां रांमत नींच । असली न खोसे अकस ।
दळतौ पाटण वीच । पाबू मिरजो पकड़ियो ॥ ५८ ॥
रंणबंको राठोड़ आह । सुणै देवल तणी ।
मिरजा खांन मरोड़ । गह लायो गढ गूंजवै ॥ ५६ ॥
जळ पूगै आडेर । जम ढल वृंदा चल ढाल ।
ज्यांरे पूगै वीज । जिम पाटण पूगी पाल ॥ ६० ॥

॥ कवित्त ॥

उतरंग नागदरी करी कमधज धारांकर ।
लाख वार लूणका अरी ढाहा तर उत्तर ।
जळ प्रजळ जोजरी क्रमी केसर वेला कुळ ।
जूसरिया जव रेल साथ सतवीसां सांवळ ।
भादरा मज्य भोगावती अवन सोंनमद्रा उठी ।
आधमण रसा साखी अरक हय धोया धांधल हठी ॥६१ ॥

॥ दोहा ॥

बाछीजे आका वगत । पाल धके पिसताव ।

देवराज भाटी दखी । सोलंकी सिधराव ॥ ६२ ॥
तवूं नृपत ऊदल तखत । अलहणपुर आथांण ।
नव टूंको राजै नहर । कुंडळ गिर कमठांण ॥ ६३ ॥
विजेराज समहर बढे । धड़ छकिया खगढेर ।
कनी कूतर परमार । कुळ चूंडाळे समसेर ॥ ६४ ॥
निभ आधी रा नीकलै । थळवट ग्रहियो थांन ।
गादीमालक गेलड़ा । पैह गूंगा परधांन ॥ ६५ ॥

देवल वायक

॥ सोरठा ॥

वेहल गिर वाळाह । थळ में की दायो थयो ।
छत्रपत– रा साळाह । भालाळा इण विध भणै ॥ ६६ ॥
रजपूतां रेह लाह । घर दावी भाला धकै ।
गढवां नै गैहलाह । तवै एम उदै तणा ॥ ६७ ॥
आंसूं आवै आंख । सालभ कू खत्री सबद ।
नरदप दीना नांख । ग्वाळा कूटै गेडियां ॥ ६८ ॥
कोळू सूं इक कोस । देछू सूं उत्तर दिसा ।
भूरे कोट भरोस । कोट गोळ गैहलां कियो ॥ ६९ ॥
देखे वरदाईह । तै लाई केसर तुरंग ।
वाभी रा भाईह । कुबचन बाई नै कहै ॥ ७० ॥

॥ कवित्त छप्पै ॥

देवल चख जळ देख पाल खग झाल पयंपै ।
गढपत जूंनै गयो सुता ऊदळ कळ चंपै ।
चांदे घोड़ी सीस कस कमर संज करायो ।
तेग झूसटाहियो यतै ठाहियो वेह आयो ।
गैहलां वाळी गाल पाल विण भड़ पाबू रा ।
अरक उदे आविया अंग टूंकस आबू रा ।

कलायों सीस हथनाळ कर दळ पंखारां दे रया ।
तड वंद वेल गडां तणी गूंगी गैहलां घेरिया ॥७१ ॥

नायक पूगा नेह तोड़ कूवा वढ ताटा ।
गाडा दिया गुड़ाय मही घृत भरिया माटा ।
पड़तल पिलंग पिलांण तोड़ भूखण तिरियां रा ।
आठ टूंक अरटियां छेक भयखी छुरियां रा ।

हुव चाह द्राह नरनाह हुव लता पंखाळे ले रया ।
महप रे सोग री माळियां वांदर रींछ विखे रया ॥७२ ॥

॥ सोरठो ॥

अन रो दिन वळियोह । गळियो गैहली रे घुमर ।
मोटो कव मिळियोह । आणंद पाबू आय नै ॥ ७३ ॥
सरणायां साधार । वरदायक तो विप विरद ।
वे भूटो इण वार । सुत ऊदळ साधारियां ॥ ७४ ॥
राजा मांणक राव रो । राजै सैंभर राज ।
लखपत कोडी जिण नगर । करे वाणवट काज ॥ ७५ ॥

॥ कवित्त छप्पय ॥

सुध नांमी चैतरी आय हरमल कळ आपी ।
सिध दाता दिन समझ पाल मढ रैवण थापी ।
पमंगां हुवा पिलांण भूप वूड़ा चढ भेळो ।
वण चांदे वागेल ठई संग सारो ठेलो ।
वहै ढेल वीटियां जगै जांमकियां ढोया ।
दरकासर दीवड़ा ओर भाथड़ां संजोया ।
किय ढालो पूनागर कने आय खबर यण रैवियां ।
सुरे तुरंग असी ऊठां सैहत है बोलावो खीचियां ॥७६ ॥
पमंगां चाढ पगड़ा वात त्रैघड़ा विचारी ।
आगे तूट आंपणै वैर सारंग वडारी ।

होसी होवणहार वेह लिखियो जिम ह्वै से ।
द्रग अपार धन देख कहो डर जावां कैसे ।
कर गाळ अमल मनवार कर वेलीवा पुकारिया ।
रिम दळ वडाळ संका रहत ते वंका तरवारिया ॥७७ ॥

अलग राख आरोह तसां कपड़ा वेतोड़ा ।
खर हुंड, नासा खांच रजक प्याले अण रोड़ा ।
क्रमी क्रमाळ कतार अठी आधी निस ऊपर ।
वोलाऊ वींटियां धुरज चौवड़ कन धूपर ।
काळी घटा अटोप कर धुर असाढ धड़ूकियां ।
कळ धवत दगी इकवार कन उडै नड़ैड अड़ूकियां ॥७८ ॥

॥ दोहा ॥

जोध समर वौह जूंझियौ । ऊफणतौ आपांण ।
वहियो रिण बालो उवां । वाज खेत निरवांण ॥ ७९ ॥

न्हाटा तद खीची निलज । घायल भड़ घोड़ाह ।
पुळतां निसमें पळकिगा । तारा जिम तोड़ाह ॥ ८० ॥

धाड़तां लीना धकै । असरफियां रा ऊंट ।
कोलू गढ आया कमंध । लै कोड़ां धन लूट ॥ ८१ ॥

॥ छन्द-त्रोटक ॥

जग में राव रांणवदे जव ही । सलतांणेइ जांण लियो सब ही ।
कमलायत माय विचार कियूं । तिह पूछ उभो सुत तेड़वियूं ॥८२ ॥

माजी कमलादेजी वायक बूड़ै पाबू सूं

सम सोध सगा घर मींढ सही । हव सोनला पेमल दीह हुई ।

बूड़ाजी वायक

सुभणै यम बूड़ोय वैण सुणै । पत पेमल जींदोय मींढ पुणै ॥८३ ॥
जग जोवण कास ग्र खांप जुई । देवड़ां नृप देसं ग्र वैन दुई ।

पाबू वायक

किम देवत पेमल जींद कथा । हणियां पिड सारंग राव हथां ।

बूड़े वायक

कथ वांधव पावुग्र सांच कही । सजियो मह सारंग खेत सही ।
परणावय वाढांय वैर परां । गढ राव बुलावय जींद घरां ।।८४ ।।
सुत सारंग सांभ्रथ वात सहू । दखजै सिर गोरख हाथ दहू ।

।। दोहा ।।

लखपत काले लूटियो । सजियो पित संग्राम ।
जीं सूं सगपण जोड़ियो । ग्रासी की ग्रारांम ।। ८५ ।।
गैरी सूं दोय गैर । करां ग्राप हूंता करी ।
बोलावै री वैर । वाप वैर हूंतां वहत ।। ८६ ।।

कमलादे वायक

प्रगळो वळ ग्रोपत पूर पटै । लख मोलिय जायल नेस लटै ।
झोळू घर राखण दाव कियो । दिल देख समै यह घाव दियो ।।८७ ।।

पाल वचन

गढ कोलुग्र ग्रासंग कोण घते । जणणी सुत ऊभोय पाल जते ।
रज पीत भुजां खग क्रीत रहै । कुण मांय ग्रमां घर मींढ कहै ।।८८ ।।
मन तोल ग्रमां वळ वैण मणूं । हट लागै न ग्राथण पैल हणूं ।
तरसै मुझ ईढ घुखै तड़ सूं । जिणनां कुळ खोद कढूं जड़ सूं ।।८९ ।।
जगती पुड़ ग्रोर न काय जगा । सत्रुग्रां कुळ थापोय केम सगा ।
कैहै केवत ग्राद संसार कलै । वुलवै घर प्रीतम ग्रांख वळै ।।९० ।।
दुरगारिय सोग न पाल दखै । भख ग्रो जोगणी दन मांझ भखै ।।
दसणां घर पूगत मैल द्रुवो । हटतै दन पावूग्र केम हुवो ।।९१ ।।
वर टीकोए पेमल मींढ वहू । घर वैठांहि मारण घाड़ घडूं ।
मवगो जिद राव दिनां में मरै । कछ देसांए खेचल केम करै ।।९२ ।।

चढसि रिप वंचक चारणियां । अर भूखेय भालेय री अणियां ।
अखवूं दिनता गल जींद अगे । लख लांनत धांधल पूत लगै ॥६३ ॥
अर वंचक घेनांय आय लियां । जोगणी भख लेसिय जायलियां ।
भड़ पाल तणां तन पांण भलां । कुण रेस दई दुख काछियला ॥६४ ॥
जुद वेध हुसी घर राह जुदो । मनवो गल खीचिय नै मत दौ ।
भण पाल सुणी सह मात भुवा । हव वूड़ोय पाबुअ दोय हुवा ॥६५ ॥

॥ कवित्त ॥

मुणै वैण खग तोल सेस उठ्यो रोसाजळ ।
करमाणंद परधांन आय दाढी हाथोगल ।
ऊसस कर आछटे वीर पायको वकारै ।
साथ लियां सांवलां पाल गूंजवै पधारै ।
सीमाड़ थयो अवनाड़ सिध अध मगे ऊंधां चला ।
कळचाळ वीर खाडूकियां सिंह अग्राजे सांवला ॥६६ ॥

॥ दोहा ॥

कोळू री ऊभी कियौ । कमधज पाबू काथ ।
आयौ चाड़े गूंजवै । सह भालां के साथ ॥ ६७ ॥
तूटी वूडै सूं तरां । हेतारथ री हील ।
कोळू सोमा कदमई । भूप भरै नह भील ॥ ६८ ॥

॥ नीसांणी ॥

गढी भलाणी गूंजवै मंड भुरजां माळा ।
ओप चहूं दिस आठिया जंजाळ भड़ाळा ।
नग छोटा जुधवी मवण वड पल्ले वाळा ।
माप सुं रखिया सोरचा तीर वंद विचाळा ।
सामत वसिया सांवला चहुं तरफ सिंगाळा ।
नजड़ां हाथ आंनी तणा वरियाम वडाळा ।
चांदे देवे सारखा भुज आभ भळाळा ।

बसिया सैंगा लोधिया भीलां भुरजाळा ।
भोम विगाड़ू भोमिया आया अरसाळा ।
पोहर पाल विखायता घर ठांमण वाळा ।
जिक विगाडूं जगनारा रजपूत रंदाळा ।
बसिया दोय हजार घर केह सह कंठाळा ।
गांम मथांणा गोलिया दोय गहवां वाळा ।
घणीं जकांरा धांधलोत पाबु रखवाळा ।
दस दम लूटण देस नैं जावे कमठाळा ।
आवै पूगे वाहरु सीमाल विचाळा ।
जवर वजै जद धमजगर नम सेस फणाळा ।
कमध चढै ऊपर करणा पाबू पोंछाळा ।
बचै नहीं कोय वाहरु देखाड़ विचाळा ।
धूखण मचियो धरण में कुण मेटण वाळा ।
जाहर सारै जगत में अजरेल भालाळा ।
मेवासी वांका मरद थळ भोम विचाळा ।
चांदे डेमे सारखा जबरेल ढालाळा ।
मेवासे डूंगर महीं सोहड़ कळचाळा ।
नम कुण मणले नागरो नर हाथ घालाळा ।
कुण जीतै बजरंग नै वड कळह विचाळा ।
अरजण नै कुण आगमण ले समर लड़ाळा ।
थाळ उखेलै वाघ रा कुण नर मुख वाळा ।
बाथ घलै असमांन नैं भड़ कौन भुजाळा ।
कवण उठावै पाल रा मेवास वडाळा ॥ ९९ ॥

॥ दोहा ॥

मेटे दुरभक मुरधरा । सुर भग्न चाड़ चाल ।
गगपाल पांयो विरद । महीरिखण भ्रण माल ॥१००॥

॥ छप्पय ॥

अलवाणि आपार मिळै कोली मूंछाळा ।

सोढा मिळिया सरस वळे बोलावै वाला ।
जत नायक जोइया वेढ घायक वाढेला ।
गिर मिणिया गामेंत तेग बंधा तूबेला ।
काठी वघेल भाला कमंद भुजां भींत मुरजाळ री ।
घमसांण कहक कीधा गजब पाल चाढ रायपाल री ॥१०१॥

॥ दोहा ॥

पूजीजे धूहड़ प्रतक । प्रगट माडलप पाल ।
वदलो लेवण कड़चियो । पाल अनै रायपाल ॥१०२॥
कागद वाही कर कटक । फर हरमल चहुं फेर ।
डेरा आथमतै दिया । आय नगर आमेर ॥१०३॥

॥ छंद ॥

हल्लियो कटक वीर पुर हूंता । कंवी पूर दिनां जाय कूंता ।
ठाकुर पाल कियो हद ठावो । मंडोवर ऊपर मेलावो ॥१०४॥
भुट्टा वलाचा राजड़ भाटी । वळजै लूटै ईदावाटी ।
नाहड़ पीप जिसा भड़ नाहर । थित ज्यां उतन घरै लिय थाहर ॥१०५॥
वाले वागन कीनी वाहर । हाली नह पाली घां साहर ।
सासळ वात घरैं वह आयो । रट रूपग पाबू रीझायो ॥१०६॥
भिड़ज सुतर ग्रस वहल डंडभर आडे फौज खरच सिर ऊपर ।
पिंड पिड़ियार हूवा गळ पांणी। ईदां थीं दीधी आ‌ाणी ॥१०७॥

॥ कवित्त ॥

मरग होय पांगळा पवै तन चाहै पांखां ।
हलचल प्रथमी हुई चाल परजा पड़ साखां ।
उहै धांम अपार जलै अम्बारत जागा ।
तर्फे मंडोवर तणा लोक जा छीतर लागा ।
खड़ झाळ दंत नाखै खड़ग सूं करजोड आगल सगां ।
परणाय कंवर केलम प्रथम पड़िया महिरेलण पगां ॥१०८॥

॥ दोहा ॥

अम्बा पावण वृन तणी । घर थलवट री ढाळ ।
वळै खणायो वेगड़े । पाबू सरवर पाळ ॥१०६॥

॥ इति श्री पाल पोरसातन आसिया मोडजी कृत विनोद समयो ॥३॥

—

॥ अथ विरोध रो समौ ॥

॥ छन्द त्रोटक ॥

सिर मालेय तेग अणी छड़ रै । विखियांत करी हरवी झड रै ।
सुत मात करी मिल गोप सला । भड़ वाजत भोमिय हुंत भींला ॥ १ ॥

अवनी कज उग्र करै तपऊं । नर वाजत भोम हुतैं नृप यूं ।
कल सीस अनेक उपाव करूं । जगती थिर राखत भूप जकूं ॥ २ ॥

यह पाल न मावत वीर पणै । गढराव जिकां अण मात गणैं ।
चक पोरस पावुअ जोम सरैं । वालु ओ नर नाहर पूर वरैं ॥ ३ ॥

कहै मुज्झ मिटै नह सोच कदा । सुज जींद सरांणैं साल सदा ।
प्रसधी लग वाद विनै पड़सी । अपभींच विनैं जुध आवड़सी ॥ ४ ॥

तनुजा अप पँमलदे रतिको । जग मांझल वाडय वैर जिको ।
नृप मेलिय करी फल विप्र नरं । कह वंदिय भूपत आप करं ॥ ५ ॥

गघ घोड़ाय झीनत कीघ घणी । तुल वाज वणाविय जान तणी ।
घुर ढोल रखे लघु वंध घरे । कर व्यंव चढ्यो नृप मोद करे ॥ ६ ॥

सह जांन पधारिय सैंण सगे । यम दाख वधाइयदार अगे ।
मंड साझ झलूस तमांम मिलै । चढिया अस सांमल सांमेहले ॥ ७ ॥

कमलादे सैवग हूंत कह्यौ । गुंजुवै अस तेड़णा पाण गयो ।
तवियौ यम माजिय वैण तुमे । चढ पाल पधारोय जांन समै ॥ ८ ॥

चांद वायक

जड़ झीण मई सिणगार जिता । रिम साल विड़ंग पिलांण रता ।
धुर गात समारेय साज धरौ । काळवीं अस पिडव त्यार करौ ॥ ९ ॥

कवराज वचन

परही युल ग्रांणिय ठांण परै । भुर जालेरी खेंग हुती वुहरै ।
भणियै क वखांण किसूं भलरी । वरदाइ नै दीधल देवल री ॥१० ॥

रंग रूप मिजाज ग्रपच्छर रा । सुल लौतर है साहलोतर रा ।
यळ ऊपर वात उचारण री । सिध रेवत दीधल चारण री ॥११ ॥

चकड़ो मुख कायज दीध सही । मुख तूलिय वाग लगांम मही ।
खुररो कर साकत गंठ खुली । सिणगारिय केसर वाज सली ॥१२ ॥

ग्रल गूंथत वाल समीप ग्रपं । लड़ सूं धज कोल लिलाट लिपं ।
हव होमियें ग्रग्गर ग्रंग हीयूं । दोउ पास रूग्रावळ वास दियूं ॥१३ ॥

तस मंडिय पीठ पिलांण तवां । दिय भीड़ कड़ा जुड़ तंग दुवां ।
गजगाह खुली विप स्वेत गणं । मुख रीचिय रोल हिलोल मणं ॥१४ ॥

सिणगार सिरोमण साकुर रो । तस बीड़िय रूप खुलं तुर रो ।
करती नभ सीकिर संप कियाँ । वलती फुरणा नृत वालकियां ॥१५ ॥

गळ जोड़त गूघर माल घली । भुरजाळ री टावल खूब भळी ।
सिणगारुग्र मारुग्र पाल सजे । काळवी चढियो पिड़जांन कजे ॥१६ ॥

काळवीं कल भोर तणी करियां । नख चाल वजै पग नेवरियां ।
धुणियाल दुगाल ढेवाल धकै । ग्रणियाळ ढळाल पेमाल ग्रखै ॥१७ ॥

ग्रर काळ विसाल कंधाल उरं । कल चाल वडाळ भुजाल करं ।
ग्रंबुवाल छोगाल खैगाळ ग्रणी। करवाल कुंदाल घनंक कणी ॥१८ ॥

गिड़ कंधन रीद ग्ररंद ग्रहं । कथ चंद न खत्र उड़ींद कहं ।
दिगपाल हले जमजाल दलं । कनहां हुलराव कंठीर कलं ॥१९ ॥

हलवै यम पायक मोद हमें । कन कांठल ग्रागल मोर क्रमे ।
मिल देखत जांनिय मांढ हूड़ो । ग्रसवर सूं केसर ग्रावतड़ो ॥२० ॥

परवी तिय ऊपर हाथ पड़ै । चपला गत ग्रंबर बीच चडै ।
घरती सिर पोड़ वणूध्रमती । यम ग्रावत केसर उक्रमती ॥२१ ॥

मिळ तंत हुवा दोय एक मनं । घन घन्न विडंग सवार धनं ।
करियै वरणाव वखांण किसो । जिणपै ग्रसवार जतेंद्र जिसो ॥२२ ॥

राजग्रंस न जायो वईरणियां । विज बाज न जाइय वाजणियां ।
भड़ ढाविय रांन स भीड़िय में । बुरछी कन सूरिय वीड़िय में ॥२३ ॥
गोलियो मण थांणय दोय गमे । सह देखत कूलुह चोकस में ।
पिड़जांन तुरो थत वंद पुरो । मुण पाबुग्र गोग हुतां मुजरो ॥२४ ॥
सत सूर मह्राजत सूरत यूं । कमधां गुर डोढोय कूंत कियूं ।
कल दीठांय पाल स पाप कटै । रायपालर गोग वखांण रटै ॥२५ ॥
घर रूप लछम्मण देव घनं । मिल आखत मोढिय मोद मनं ।
सह ध्यांन लये मन इंच्छ सची । वर वाज उडै वरछी वरछी ॥२६ ॥
खित देखत सांमिय जांन खड़ी । प्रसणां सिर ग्रंवर वीज पड़ी ।
निज पूठलियां असवार नवै । खिचियां दळ ऊपर कूंत खंवै ॥२७ ॥
महखी खर रूपीय हीण मणा । तिण वार तुरंगम जांन तणा ।
खित जांनिय वाज लसे खड़ता । तिण वार खंवै भंमरी तड़ता ॥२८ ॥
तद वाज महा खगराज तकै । धजराज उडै गजराज धकै ।
दुयणां उर ताप संताप दियो । कमधां गुर पूल मिलाप कियो ॥२६ ॥
ग्रह टूं किय सावळ ठांव गनै । कालमी ग्रस आणिय मोर कनै ।
धज पांव छत्रै न छत्रै धरती । काळमी ग्रस खूंद घणीं करती ॥३० ॥
मांढियाँ मिळ देखत मोद मती । जांनियां मद हीणाय देख जती ।

हमें वात सांमेळिया पाछा चढ़िया जठै पाबूजी घोड़ो फेरै छै

॥ छन्द त्रोटक ॥

असवार जोय दोए सिध ग्रणी । तड तागत झंपत पाल तणी ॥३१ ॥
वग पाल उथेलत रांन वळा । काळमी कपि वादिय एन कळा ।
डर चांह हुलाह दये डकती । असनास वजावत ओद्रकती ॥ ३२ ॥
घर पूरत हांम मनै धिकरी । चित री गत काय फरै चकरी ।
करता कर वाज सवीर कियूं । दल रूपन लाभत लाख दियूं ॥३३ ॥
धजराज यसी न लखी धर पै । जांनिया सह क्रीत वखांण जपै ।
परगै रह देखत पाल पना । वर जांन वखांनत पार विनां ॥३४ ॥

जींदराव वायक

घर लेवूंअ वाज उपाव घणौं । मन मांनिय केसर मुज्ज तणौं ।
दायजे हथलेवेय दात्र दयूं । लख मोलिय वाजिद एह लयं ॥ ३५॥

वडजानियां वायक

मुण वैण गमासिय तूं परनू । कुण देवैय जींदाय कैसर नू ।
हव होवत आलेय माट हसी । असवार न देवत खेंग इसी ॥३६ ॥
तुरगांण न देसिय पाल तनैं । मग माडेय वैण अमीणि मनैं ।
मुणिये धर खोसेय एण मुदे । काळमी नह देसिय पाल कदे ॥३७ ॥
सनमंध थयौ सुखमेळ सहं । परगै सह पालत राव पहं ।
नृप वूढेय पाबुअ मेळ नहीं । मुख व्याव थयौ यह बैर महीं ॥३८ ॥
जिण वंस महीं सिध पाल जगा सत्र आद अनाद न सैण सगा ।
दिल नांह मिळै पिडजांन दुवै । गैहैं राख भालाळ गयौ गुंजवै ॥३९ ॥
पगड़ौ चड़ संक्रम पाल पती । हय बांधिय पांडव हींसवती ।
कथ जींदोय एकन्त एम कहै । परगैं पिडजांनिय वैठ पहै ॥४० ॥

जींदराव वायक

दायजे नृप केसर खेंग दई । नहिं तो कमंधां मुज मेल नहीं ।
कह जासिय वैर नभैं कित नूं । पित मारत लूंट लखपत नूं ॥४१ ॥
सह वैठत जांन विछात सरै । वकियौ सुत सारंग पूरवरै ।
विप सोध जड़ां वसु वासवमें । वरतै मुख वायक आसव में ॥४२ ॥
सुणिया सह वायक सांग हणौ । तद चाकर वूडैय राव तणौ ।
कहियौ कमलावत हूंत कमैं । घर आयौहि सात्रव नाह गनै ॥४३ ॥
कळ नाथिय वात नहीं कववे । सनमंध कियौज विनास मवे ।
पत वैरन छोडुअ वाज वखै । असहां वरवायक एम अखै ॥४४ ॥
वर वांदिय तोरण रैण विखै । चवरी लिय फेराय सात सुखै ।
ग्रहणौ भळळाट पटी गठसूं । हथलेवोय हाथ ग्रह्यौ हटसूं ॥४५ ॥

बूढ़ै राव वायक

मुणियो यम वायक राव मुखं । सोई फूल चढंत महेस सुखं ।

जींदराव वायक

हय संग्रह नांह तजू हरनूं । काळवीं अस दोत छडूं करनूं ।।४६ ।।

बूढै वायक

गय घोड़ाय देवुंग्र और घणा । अस वा नहँ आवत आंगवणा ।
काळवीं घट भीतर जीव कलं । पह पाल न भूलत हेक पलं ।।४७ ।।

जींदराव वायक

गह चाढेय भूलोय सारंग मैं । मुणियौ तुम नाट तुरंग ममैं ।

बूड़ै वायक

हयळेवेय हाथिय दैण हमे । सुजवा अस पावुग्र प्रांण समे ।।४८ ।।
मुणिया वर वायक सांम हणा । घर घोड़ाय हाथिय मुज्ज घणा ।
चित धारत रीस जवां चलवी । कह क्यूं न लयूं हुं लेवू काळवीं ।।४९ ।।

कव वायक

मन जांनत बूडोय बांधव नूं । गळ मूकत धीर ग्रही गम नूं ।
सुणियौ जोय बूड़ेय एण समैं । घर नै वर जीवाय हूंत गमैं ।।५० ।।
ऊठ आयाय राव दरग्गाय नै । मुणिणौ राव पालरू गौगय नै ।

बूड़ै वायक

गुंजवै पर गाजत सिंघ गलां । कमधां घर लागिय वाद कलां ।।५१ ।।
जिदराव न मांनत टांक जितौ । छित सीस पावू अवतार छतौ ।
मुज भ्रात कंठीर जती मतनूं । नृप जांणत मांनव देवतनूं ।।५२ ।।
कथ संभर खेड़ नरेंद्र कही । सनमंधिय वल्लव जींद सही ।
दरसाय उभैं नृप हूंत दगै । उठ आयौय बूड़ोय मात अगै ।।५३ ।।

॥ छन्द ॥

जपै वात सारंग सारंग जायौ। उठै भ्रात पाबू घणो याद आयौ।
अखै वैण ते नैण ऊठै अगीठा। दुले पाल वाळा नहीं हाथ दीठा ॥५४॥
दखै वात की छांत फाटै डराडै। अमे मारियो तात चौड़ै अखाड़ै।
कहै वैण ऐ राव जांणंत काहै। महं पेम रांडी सरी मंत मांहै ॥५५॥
चवै वैंण वूड़ौ वक्रं क्रोध छायौ। अलो ऊदळो पान आणंद आयौ।
रखौ रव जींदौ घणं चाव राजी। मुखां ऊचरै जे सुणी वैण मांजी ॥५६॥
नरांनाथ एजात वेपात नीचो। खलूं आंणियां केम जामात खीची।

बूड़ै वायक

॥ त्रोटक ॥

दुख देस सबै मुज नैंज दयौ। कह पाल वरज्जण वैंण कह्यौ ॥५७॥
सद भूत जती सत सील सदा। कह वैण वृथा नह होय कदा।
वरजंतांय बांधव कीन वसू। हव सो फल पासांय लोक हसूं ॥५८॥
नड़ियौ सन घीयह दीयनला। पड़ पाप वचा वाह अग्रपला।
प्रत पेमोय द्वाग दई पर रौ। यह सोक होसी सह ऊमर रौ ॥५९॥
नह मांनत धूरत वाज लयूं। काळवीं अस देवण केम कहूं।
जिय धीर रहै हय वैंग जहूं। प्रसणां विच एकल पाल पहूं ॥६०॥

मासव कमलादेजी वायक

किम आप कमांण नजाज कितं। निसचै सिर भोगवणी नृपतं।
कथ कूड़ उपावय सांच करौ। हितसूं दुमणा पण द्वेग हरौ ॥६१॥
उर मांनिय आयस अंवाय रौ। क्रिमियौ चंवरी दिसै दाव करौ।
जणणी उपदेस ग्रह्यौ जपयूं। कथ कूड़ वणावत सांच कियूं ॥६२॥
जग मांन लियै सद भूत जिसौ। तिण ताल वणायोय कूड़ तिसौ।
कमधां घर होवणहार कियूं। दिल भाविय बैठ उपाव दियूं ॥६३॥
मिसलात विरोल अमंगल में। मंझ रात दरोल दमंगल में।
भ्रत थाल विसाल रसाल भरे। सह जानिय डेरेय संभर रै ॥६४॥

करचाव हुता जनवास क्रमें । मझरात लगी झड़ आरथ में ।
प्रत सांत हुवो प्रत ढोल पनें । वंदती किम लाय सवाय वनें ॥६५ ॥
जगसूं मृत होवत जेठिय रो । किम काल मिटै कणएठिय रो ।
चितयूं परवोल मसांण सिवा । दुय चार उभै हक साद दिवां ॥६६ ॥
चन्द्रभाण पहां रूग्र कोट सिरै । पठियों हुटियो भुरजाळ परें ।

चांदे वायक

कण थांन विडांण उद्दान कठी । अपसांण उनांम जिरांण उठी ॥६७ ॥
नर भूपत मीढ रखौ निसमें । देय पोर कोहर री निसमें ।
जन वासत वीगड़ जांण जहीं । मांझियां सिर भादर रोल महीं ॥६८ ॥
सुजला दिय चांदेय वात सहूं । कथ राखिय गोपन वैंण कहूं ।
यमसांण विचारिय जांण अगै। लोह आंच भड़ां अस अंग लगै ॥६९ ॥
कमधां गुर वूड़ेय व्याज कियौ दोयणां मिळ पूळोय लाय दियौ ।

वूड़ै वायक

सपती हथ एम चढ़ै सहुआं । गढवाड़ां री आंण ग्रही गउआं ॥७० ॥
सुरही लिये वूंवांय साज सलै । यम वार चढां मन ऊपरलै ।
वल विरोय गुन्न खगां वडसी । कटकां पर खैंग घणूं कढसी ॥७१ ॥
चारणां वत वार चढै सहियां । कछ आयल वून सगी क़हीयां ।
ग्रह धेनांह खेम गया घरनूं । वह लेसिय तो नृप केसर नूं ॥७२ ॥
समयां वत केसर वाज सटै । नरही दुख पाल कदे न सटै ।
छलसूं अंव घेंच लयो सेंहत । पुळ पूगीय पाल विनां पैहतें ॥७३ ॥
दिल धाव विचारिय मीट दई । यग दावतें केसर आवहई ।

कव वायक

जग जांणिय जींद आप जिसा । वकिया कथ धांधल वीम वसा ॥७४ ॥
सुणिया जेय वैण प्रमांण भलं । पह पाल न भूलत हेक पलं ।
भणिया जिय वायक साच भला। समपी यह सावत नेक मला ॥७५ ॥

दखवी गळ वूडय फेर दूग्रां । सनमंध नें वल्लभ ग्राप सुग्रां ।
धरती सिर ग्रंजस देख धरां । कैहै ग्राप हुतें किम दाव करां ॥ ७६ ॥
कर छोड़ सु राव विनोद कियूं । नृप कूड़ सवै सत मांन लियूं ।
धर पूठय धांधळ राव धिया । दुलहै जनवास नूं पैंड दिया ॥ ७७ ॥
जद भूमत जांमये चाळ भलो । भगियूं फिर राव ग्ररज्ज भली ।

बूड़े वायक

सखते रहसूं रस सील सिधं । जिदराव मारेय पाल जुधं ॥ ७८ ॥

जींदराव वायक

रखसूं तुज वांह सदीह रिधूं । धुर वैण ग्रमां थिर ग्रंबर धू ।
ग्रह जांमन गोरखनाथ गुरू ।कह क्रोड़ गुना जिण माफ करूं ॥ ७९ ॥
परणीजे पेमल जींद पती । नर नारिय नेह बंध्यो नृपति ।
नवळी लेय ग्रायोय जायळ यूं । भरता त्रिय रंग रमें भल यूं ॥ ८० ॥
नह भूलत खेंग हियै नित यूं । दन बोलत ग्रंजस दंपत यूं ।
चित भीतर जीवसजोत चडी । घट वाज न भूलत येक घड़ी ॥ ८१ ॥
जळ जीमण ग्रासव पांण जदं । काळवीं नह भूलत राव कदं ।
मन भाव स राग हुलास मिळा । करकंद्रप दीपत कांम कळा ॥ ८२ ॥

छन्द बेअक्खरी

दन सुभ लगन विप्र कर दीधो । रिड़मल हरो चाव वौह रीधो ।
सैहमल राव पती चण्डावळ । उण सिवपुरी वसाई उज्जळ ॥ ८३ ॥
सोभै क़ंवर तणी वउ सोभा । लखै वरात दुनी मन लोभा ।
धांधळ राव प्रौळ मांढह धन । एकां गमन एक ग्रावाहन ॥ ८४ ॥
ग्रा वरात कोळू गढ ग्राई । सौ पावू मन घणी सुहाई ।
गढ जूनौ बंध तणी गणायौ । ग्ररवद घणी मौड़ बंध ग्रायौ ॥ ८५ ॥

॥ दोहा ।

वर सोनल ग्राया वरण । नृपत नांद गिर नाथ ।

देवळ काया देवड़ा । चींवा घोड़ा साथ ॥ ८६ ॥
मन सायर कसमेरियो । नव खण्ड जाहिर नांम ।
आंगो सूधे गिरधणी । जवर अखे गढ जांम ॥ ८७ ॥
साथ जसो सोनीगरो । भीनमाळ भोपाळ ।
पोंहप माळ श्रीमाळ पर । रुद्रमाळ रखवाळ ॥ ८८ ॥
आवे दिरब अपार । रहीं जांन वह रंग सूं ।
जाजा करे जुहार । विडंग चढै घर दिस वुहा ॥ ८९ ॥
नृप बूड़ो नाराज । कोळ मंढ नायो कमंद ।
चढती जांन सकाज । पाबू मिलण पधारियो ॥ ९० ॥
आप भंमर असवार । ढाळेती पैदळ धकै ।
तैरह सथ तोखार । मणधारी आयो मिलण ॥ ९१ ॥
सोनल सिर से लाल । हठी फेर दाखै हठो ।
वाई जगत विचाळ । दयूं अपूरव दायजो ॥ ९२ ॥
वदसी वह विसतार । जो वळ पर रहजावसो ।
आंणों दयूं अपार । वण गणती सांढां वरग ॥ ९३ ॥
गूज वडै पर गोठ । वळती दई वरात नैं ।
पकवांनां भर पोठ । गाड़ां ढिग कीना गजब ॥ ९४ ॥
पोढावा नृप पाल । जांन साथ चढियो जरां ।
वैतां मांग विचाळ । सोभत कथ आखी सरब ॥ ९५ ॥

॥ कवित्त ॥

कांनां कमधज सुणी वात सारी बूड़ा री ।
हव खीची सूं हुई पाल आंगी ऊतारी ।
लेजासी धन लोड़ दोड़ जींदो देवळ रा ।
कूड़ा करणा कहूं वचन पाबू धांधळ रा ।

॥ श्री मुख ॥

चारणां तणीं लीनीं सुरै जुध रवि कोतक जोवसी ।
सिर धणां भड़ां वाळा समर हर गळ माळा होवसी ॥ ९६ ॥

क्रियां दुवाहाँ कोट पाल जांगड़ गवरावै ।
गह मह वै दुरवार वड़ा भूपत वह आवै ।
अमल उरड़ अपार मचै दरगह मारू री ।
परगह मझ विणपार ऊडै दपटां दारू री ।
नित जावै आखेट सदा नींसांण मण्डावे ।
लियां साथ नायकां धुरज केसर घ्रस लावै ।
कवराज वडा साथे कियां ते नित गुण रूपग तवै ।
भालाळ खड़ग तोलै भुजां यूं दन बोलै गूंजवै ॥ ९७ ॥

पाल वायक दोहा

वूड़ौ अर जींदौ विहूं यळ मोटे औसाप ।
आगे आगे कुखत्रियां । सगतां दियौ सराप ॥ ९८ ॥
कवराजां हुंता कहै । भालाळौ कुळ भांण ।
विप गोगो इण वखत में । सिध खत्री चहुंआंण ॥ ९९ ॥

कव वायक

अमल सुरा कर ऊघरा । परगै नूं पावन्त ।
मरण तणा दिन साधणा । पाल कहै आवन्त ॥१०० ॥

॥ इति श्री पाल पोरसातन आसिया मोडजी कृत चकार रौ विरोध समयौ ॥

॥ अथ आवाहन रयस ॥

॥ छन्द त्रोटक ॥

परचा योय पावुह सीस परां । धार नाम रखूं कर जंग धरां ।
कमधां कुळ रीत अखी करणां । मत धारिय पाल सही मरणां ॥ १ ॥

पाबू वायक

खित जासिय ऊमर पाय मही । नभ सूरज चन्द भुगोळ नहीं ।
जिदराव लेजासिय वित्त जठै । कह पाल वतासिय मूंह कठै ॥ २ ॥

अथ राईतन लोकायत वायक

वद वैर न्यो पेमल जींदव रो । अपमेल कियो रख पाल अरी ।
दुख देवण चारण देवळ नूं । परणाइय बूड़य पेमळ नूं ।। ३ ।।
घर दोय थयो सुख हेत घणो । टळ वैर रयो एक पाल तणो ।
पड़ले वेय संधव पेमल रो । अन वाहर वंधव देवळ रो ।। ४ ।।
घर रूप भुजां असमांन धरै । कव पाल तणो वरणांम करै ।
वरणूं कुण पावुअ वंस वडै । धांधळोत वड़ो जत मेर धड़ै ।। ५ ।।
सत द्वीप नवें खण्ड भूम सरै । कुण पाल तणी नर मींड करै ।
हिक मींड गोगो चहुंवाण हुवो । दखजै कुण पावूअ मींड दुओ ।। ६ ।।
नख तेत रती चण सूर नळै । तप धार जती चढियो असळै ।
मणधार नृभै मण हेक मणो । तुल वंधव जींजणियाळ तणो ।। ७ ।।
घर थंभ जती सिध धांधळ रो । हव सूर मांझी आसथांन हरो ।
जुड खेत तजूं तन वीध जोए । हिक वात इळा चहु भूठ हुवे ।। ८ ।।
वरदायक संजम सील व्रतं । सिध खत्रिय धांधळ राव सुतं ।
कच्छ देस तणो पहुराव कियूं । धांधळां घर चारणि वीद धीयूं ।। ९ ।।
मन जे जोस रांणिय एम मुणै । भुरजालय सोनळ बूंब भणै ।
काळमी चढ पावुअ साथ क्रमै । धर लूट सिरोहिय नैर धमै ।। १० ।।
लड़ राव भुजावळ वांध लियो । दुत मांनिय सोनल छोड़ दियो ।
प्रसधी चहुं कूंट सुणी यह यूं । अमरांणै सुं श्रीफलअव हियूं ।। ११ ।।
भूरजाळा नुं देहण काज भणां । तद आयाय सूरज भाळ तणा ।
सुपहां मिळ पंपय चांद सही । कथ पाळ अगे सनमंध कही ।। १२ ।।
जिण वार विचारिय एम जती । सुणियै मृत होसिय लार सती ।

।। दोहा ।।

पाल वायक

जद श्री मुख सूं यूं जती । फुरमावे फरमांण ।
सगपण री मा सावनै । जाचो पूछो जांण ।। १३ ।।

सोढां में सुरतांण सूं । देण लेण दोवेह ।
यां सूं सगपण आपणौ । है कै नह होवेह ॥ १४ ॥

ढाळैती हवै ढळकिया । जोधा जूंझ जवांन ।
हेंवौ चांदो धुर धमळ । पाबू रा परधांन ॥ १५ ॥

दुभ्भळ छतीसुंहि डाबियां । भूथारण भेड़ीह ।
धनुप भुजा डण्ड धारियां । आया आहेड़ीह ॥ १६ ॥

पारधियां भुज ऊपरै । रूप वंधे रण रोह ।
यां हूंतौं जुध आंगमै । कहजै मुख किणरोह ॥ १७ ॥

पारधियां भुज ऊपरै । रूप वंधै रजरोह ।
कळचाळां आवै कियौ । माजी सूं मुजरोह ॥ १८ ॥

माजी फुरमावै मुळक । जाब यसो ज्यांनोह ।
आज धणी भां आविया । मुदवी परधांनांह ॥ १९ ॥

अमल खठोळी ऊपरा । माजी वैठा आय ।
सांमी आंगण चौंक में । जाजम दई ढळाय ॥ २० ॥

सुपह वडा भड़ सांवळा । रजपूती रा कोट ।
वैठा गोड़ी खाय विप । दे ढाळांरी ओट ॥ २१ ॥

आहेड़ो माजी अगै । भाखै यम भुरजाळ ।
आवी लिछमण देव नै । सोढ़ांरी वरमाळ ॥ २२ ॥

म्हांने पाबू मेलिया । विध सह वड कानांह ।
माजी वाभी नै मुदै । पूछो परधानांह ॥ २३ ॥

किसड़ी धरवट जकणरी । है किसड़ौ हमरोट ।
सोढा किसड़ा यक सगा । किसड़ौ ऊमरकोट ॥ २४ ॥

माजो वायक

है आदू परमार ऐ । सोढां साख सुजांण ।
ज्यां सोढां मांहे जबर । चोखा है सुरतांण ॥ २५ ॥

अमर वसायौ नगर औ । पहलौ ऊमरकोट ।

तपिया वेह रांणा तठै । मेधा गुण मनमोट ॥ २६ ॥
घाट धरा रौ सै धणी । खत्रां घणां रौ साल ।
अमराणै रौ राजवौ । मुदवो सूरजमाल ॥ २७ ॥

आगे सगपण आंपणा । ज्यांसूं हुवा न जोय ।
सोढा चोखा है सगा । कुळ में फरक न कोय ॥ २८ ॥

विण आयां दीठा विगर । पूरी नहीं पिछांण ।
अतरी तो जाणां अवस । है ठाकुर सुलतांण ॥ २९ ॥

पांण जाड ढेवौ पुणै । जावक कथ भुरजाळ ।
विण रांणै रौ म्हे विभौ । नजरां लियौ निहाळ ॥ ३० ॥

धुर वंकौ खावड़ धरा । है सारी हमरोट ।
की लीजै दीजै किसूं । कोळू ऊमरकोट ॥ ३१ ॥

बाघाणी वाळा वरग । लीना भालाळेह ।
जद सूरजमल आवियौ । वातक विसटा लेह ॥ ३२ ॥

उण दिन थां रांणा अगे । हैंवर दोय हजार ।
सांवत कळचाळा सघर । चकडाळा सिरदार ॥ ३३ ॥

वीभै मांझ रांणी वडौ । जांणां वात जरूर ।
ऊंच नीच कुळ री अखौ । म्हेई करां मंजूर ॥ ३४ ॥

कमलादे वायक

प्रथम हुवौ दळ पांगळौ । यण घर में जयचन्द ।
अपड़ लिया पतसाह हट । म्लेचां वळ कर मंद ॥ ३५ ॥

वळ सारी यम ऊचरै । सीहौ सिव अवतार ।
जाय एवौ लखपत जवर । वागां खग रणवार ॥ ३६ ॥

॥ सोरठो ॥

पाली पकड़ांणाह । सुणियां दुज तिय सीमु रैह ।
काटे तुरकांणाह । आसथांन रहियो उठै ॥ ३७ ॥
पाळ गोदावां ऊपरै । रची दुजां छळ राड़ ।

पड़ियौ दादो पाल रौ । प्रसण घणां जुध पाड़ ॥ ३८ ॥
जग जाणै मौं जेठ । पाल तणा वड़को प्रता ।
भूप हुवो सुर भेट । बूहड़ वाहर धेन री ॥ ३९ ॥
मो देवर सगराथ । धुर दवाळ वाडे घणीं ।
नग किय जलँधरनाथ । जो पत वाली ज्वार रा ॥ ४० ॥
यण घर में तौ ऊपना । आगे अवतारीह ।
जग पाबू ऊभौ जितै । साबत कथ सारीह ॥ ४१ ॥
लंक गढां विहंगां गुरड़ । भाळ ग्रहां मझ भांण ।
कुळ खटतीसां कमंध कुळ । सुण यम है चन्द्रभांण ॥ ४२ ॥

गैली वायक

बोली गैली जिण विचै । विध यण अकल वणाय ।
औ सगपण जत रावरौ । नह है तौ सुभ न्याय ॥ ४३ ॥
आं सोढां सूं आंपणा । विध विध जूना वैर ।
कूड़ा सगपण मिस करे । गैरीं करसी गैर ॥ ४४ ॥
साढ्यां आंणी सिंध सूं । देवर लिछमण देव ।
ऐ सलामी अमरांण रा । विघन हूंसी यण भेव ॥ ४५ ॥
छत्रियां यण कुळ खेधरो । सत्र दन यसो सभाव ।
वाळै वचन सिघार वर । रण देसी धुर डाव ॥ ४६ ॥
कै विप करसी कुभद कर । वादे खड़सी बीज ।
कदे नहीं आसी कुसळ । पाबू धण परणीज ॥ ४७ ॥

चांदे ढैंबे वायक

पाळ परै खगपात । कैवी जुध मांझळ करै ।
रांणी जिसड़ी रात । नर कोई जायौ नहीं ॥ ४८ ॥
पायक चाकर पाल रा । लड़ण गणै मन लाभ ।
भड़ नायक ठांभै भुजां । आज पड़ंतौ आभ ॥ ४९ ॥

तूं गैहली ऊदा तणी । बोल न जाणै बोल ।
धुर लीना कोळू धणी । म्हारां मसतक मोल ॥ ५० ॥
कोळू वाळा कांगरां । तिण दिन पड़सी ताव ।
उण दिन आडा आवसी । भीलां तणां भड़ाव ॥ ५१ ॥
ते नायक तरवारिया । वरदायक देहवांण ।
कर पळवट वाळै करै । एक धरा असमांन ॥ ५२ ॥
करां समर मझ हेकवी । है जमघट हैडोय ।
कुण पाबू सूं जुध करै । ऊभां आहेड़ीह ॥ ५३ ॥

कव वायक

अंतहपुर वाळा महल । गळ सांभळ गळाय ।
उरस चिभेंतें ऊठिया । केहर जिम कणणाय ॥ ५४ ॥
वरी आवै वढण नै । खेलौं कर खेड़ाह ।
आप राव मेळे अगू । भळजो ज्यां मेळाह ॥ ५५ ॥
जुध तज नै नह जावसी । हार मांन हैरांन ।
धणी वर्कइज लादसी । पाबू रा परधांन ॥ ५६ ॥
सुपह दवै नह सांवळा । खीटिवयोड़ा नाग ।
मदरा पीतोड़ा गयंद । हाकळियोड़ा वाघ ॥ ५७ ॥
आप दूज राखौ यती । वदसी जण सूं वाद ।
यां लखणां सूं आपरौ । गळ में लैसा आध ॥ ५८ ॥
सारी वातां समझिया । म्हे अन्तर वुध मेल ।
आप वचन ऊचारिया । खमाखसी रो खेल ॥ ५९ ॥
पाबू ने परणीजसी । डरप पणो दिल देर ।
पाटोधर परणावसां । ले सोढां नालेर ॥ ६० ॥
यूं कै वारै आविया । डारण भाखर डील ।
नाम तणां पाखर सघर । भालांळा रा भील ॥ ६१ ॥
अनरै चाकर आवियौ । राव तणौ रड़ीह ।

भड़ नायक चन्द्रभांण नै । वौलावै बूड़ोह ॥ ६२ ॥
मूंछ जाय भूहां मिळी । मिळिया भुज असमांन ।
सांचौ सांमत चांदियौ । पाबू रौ परधांन ॥ ६३ ॥
मुजरौ कर मांभीह । ऊभौ आगे आयनैं ।
व्है नृप वेराजीह । बूड़ो इण तक बोलियौ ॥ ६४ ॥

राव बूड़ा वायक

पाल धणी पारधियां । पाराधी परधांन ।
पाराधी परणावसी । जावां म्हे नहिं जांन ॥ ६५ ॥
मांनै नह मोरीह । चांदा थारी ह्वै सला ।
पाल तणी फौरीह । दीसै हद्य आई दसा ॥ ६६ ॥
सगती देवळ सारखो । थां सरखौ परधांन ।
ढाळेती ढेवे जिसौ । होण पदारथ जांन ॥ ६७ ॥
जूंभारां री देवळी । कायर राज करंत ।
आंपां घर सांची वहो । चांदा पाल मरंत ॥ ६८ ॥
वीर प्रवाड़े वाड़ । चांदा औ न करै समभ ।
कोळू तणौ कमाड़ । पाल दिनां रौ प्रांमणौ ॥ ६९ ॥
येण उपाड़ी आग । आग खाय फिर ऊठियौ ।
वीरो मो वजराग । गुड़ै अगाजे गूंजए ॥ ७० ॥
धर थळवट बाळी धरा । सह लोकां संताप ।
काछेला राजस करै । पाल तणौ परताप ॥ ७१ ॥
पेमां परणाईह । डर हूंता सह जग दखै ।
जींदो जम्माईह । जमरांणौ हूंता जवर ॥ ७२ ॥
धांधळ सह धारैह । कुळ रव पाल कढावसी ।
चांदा चीतारैह । बूड़ै वाळा बोलड़ा ॥ ७३ ॥
धांधळ राजी रांण में । बूहड़ रा दींवांण ।
म्हे यळ पर पूजीजसां । यांरी फिरसी आंण ॥ ७४ ॥

कहजे चौवो कोटड़ो । एक धांधळ री आज ।
पाल तणै परताप सूं । रिम घर करसी राज ॥ ७५ ॥
चांदा वचन संभाळजे । अरियां वागां ऊठ ।
नैड़ौ वूड़ौ लादसी । पाबू वाळी पूठ ॥ ७६ ॥

॥ छप्पय ॥

कनवज हूंता कठठ म्हेई आया मुरधर में ।
जमूपाळ काज सिद्ध करण थेई आया माळवत ।
भूपांक भाल पाचाळ गढवी आया धर गिर रा ।
आय हुवा एकठा सरव भूला समहर रा ।
कळ प्रिया खेल खळखट करण रगत विना वह दिन रही ।
अव सगत रूप धारी अवन मांगै अक मुरधर मही ॥ ७७ ॥

चांदा वायक

॥ सोरठा ॥

पाछौ कहै प्रधांन । राव हूंत समझे रहस ।
वस भावी वळवान । होणहार ज्यूं होवसी ॥ ७८ ॥
लाग वाग दापै विना । त्यांसूं हुवे न तांन ।
कद इक कळह करावसी । जींदे तणी जबांन ॥ ७९ ॥
जींदो यम वायक जपै । तन मंझ आंण तरंग ।
वखत अणी सह राठवड़ । वांसै खड़ै विडंग ॥ ८० ॥
खीची यम वायक कहै । जे न सहै भालाळ ।
तिण कारण पिंड तूटसी । मुगताफळ री माळ ॥ ८१ ॥

॥ कवित्त ॥

कीनह वनवाळी सूतौं मालम जग सारै ।
सुर गंगा तट नुपह पाल दरसणां पधारै ।
वाग तणा मुत विमद यते वगडावत आया ।

नौवत सुणें नै हाव राव पाबू रीसाय ।
नायकां हुकम कीना नरिंद खोस सरब लीना खयंग ।
करदई नगरां कूंडियां पाल तणा पीना पमंग ॥८२ ॥

हव चांदौ चढियोह । ले रेवत रूड़ीह ।
घुरज लई म्हारै धणी । बीड़ी दे बूटीह । ८३ ॥

खोस लिया सारा खयंग । गाढ म गरभ गमाय ।
निकस गयौ परि हंस ले । भोजो रांण भणाय ॥ ८४ ॥

॥ कवित्त डोढौ ॥

सांबरोट धर दाब प्रांणजळ खाग पखाळै ।
गूंगा गैहला गाळ वचन देवळ रा वाळै ।
पिड़ सुरियां नै पकड़ साज पाबू समसां नें ।
पड़ मेचो कुळ दहळ दिपै जस दसूं दिसांनें ।
मिरजो गूजर महीं पकड़ मढ आंणियौं पाबू ।
सोनल वचन संभाळ आय नमियौ नृप आबू ।
सांढियां ले आयौ सिंध सूं मथै नीर मैहरांण रौ ।
भांण नभ भोम सिस जस भणौ पाल तणौ आपांण रौ ॥८५ ॥

जायल रौ जूंझार गयौ लखधन लोसावै ।
जायल रौ जूंझार गयौ आखेट खोसावै ।
जादल रौ जूंझार गयौ पितु नूं मरवाड़े ।
जायल रौ जूंझार गयौ घोड़ियां बढाड़े ।
जायल रौ जूंझार वळै कीनौ बोलावौ ।
लखपत लीधौ लूंट छिप गयौ सारंग चावौ ।
वणावौ आष वात्तां वड़ौ साप हुवे किम सीदरौ ।
सनमंद थयौ लांठौ सदा जांणां टणकौ जींदरौ ॥८६ ॥

॥ सोरठो ॥

आप थकै आयोह । आयौ जो पाबू अगै ।
जद सारंग जायोह । तपसी नह जायल तखत ॥ ८७ ॥

दाळंती दळियाह । सिधनृप रा दीवांण सूं ।
वागेला वळियाह । कमधज नै मुजरो करे ।। ८८ ।।

पाछा आय प्रधांन । पाल हूंत वायक पुणें ।
बूड़ो कपट निधांन । पंड पूरो दुसमण पणौं ।। ८९ ।।

कमळायत वायक कन्हीं । न देखियो निसाप ;
राव भरोसै रैवसो । अकन कुंवारा आप ।। ९० ।।

कूंकूं पत्र पाबू कमध । जो मेली हित जांण ।
सैंण मगा भाई सको । आगू मिळजो आंण ।। ९१ ।।

राव रह्यो रीसाय नै । कढ मोसूं कैवाह ।
अमरांणै हूं एकलो । जाऊं परणेवाह ।। ९२ ।।

॥ जान रो चढाव छन्द त्रोटक ॥

कसमेरिय रोलिय एक कियूं । हथ जोड़त श्रीफल वंद हियूं ।
वनड़ो वण सूर मनूर वरै । कछ देसिय वायळ लूंण करै ।। ९३ ।।

मिल पेम विसाल ढेंवाळ मुणो । तिणताळ हबोळोय जांन तणै ।
दंतवाळाय बाहिर झोल दियां। कमठालाय तेल चंपेल कियां ।। ९४ ।।

घण माळ भरे नयताल घणा । तविया दन पाव टकाळ तणा ।
उड केसर वीर गुलाल अगां । सतरंग सुरंग भूंगा चणगा ।। ९५ ।।

कमधां गुरु गोरखनाथ कळी । मिल मांझिय जांण जमात मिळी ।
हुय ढेंव सवार हणखुर रे । परधान चढें अस मोर परें ।। ९६ ।।

लखियो हथळेव प्रमांण लघो । विजड़ो हथ धांधळ मोड़ वन्धो ।
त्रिघना अंक मेटण को वरणै । पहवाळ जतिन्द्र जको परणै ।। ९७ ।।

कव वायक

अमनार गनाम वरात करी । फिर आडिय देवळ आंन फरी ।
लटयाळिय जोगण साथ लियां। कैंक आळण रूप विरूप कियां ।। ९८ ।।

सियकोतर भैरव साकणियां । डहरी वहरी मिळ डाकणियां ।

गयणागन मावत ग्रीधणियां । सुज भौम असी छत्र चारणियां ।। ९९ ॥
इण रूप भवानिय आय यतैं । पुणती केड सावळ पाल प्रतै ।
हव ढेंब कहै भड़ देर हुड़ी । वरजौ निय चारण आवतड़ी ।।१०० ।।
सुभ मौरत पाल वरात चढ़ै । कुव आंणिय वांणिय केम कढ़ै ।
परही हव टाळोय पारधियां । कंक आलण रूप विरूप कियां ।।१०१ ।।

पारधियां वायक

वनड़ौ परणीजण पाल वए । देयवी अण सुभ सगून दये ।
दुलहा पण मोद घटै दिल नूं । तिम पाल न जांणिय देवळ नूं ।।१०२ ॥
फजरै विकराळ सरूप करै । किम व्याव विचाळ विघन्न करै ।

देवल वायक

सव धाविय पाल कनै सिंधियां । पुणावां तुम नै नथि पारधियां ।।१०३ ।।
गणसै सुभ्रु दांमण चोळ गनै । वरदायक वाजै हैं पालव नै ।
अमनै मत जावोय छोड़ इयूं । दुलहा नवलाखनिआंण दियूं ।।१०४ ।।
गुरु अंग वडापण तुज्ज घणौ । तुअ वीर राजा थळवट्ट तणौ ।
धुन धाट पधारण चित्त धरी । किरणाळ भली प्रतपाळ करी ।।१०५ ।।
जसवंत महा सिध रुद्र जड़ा । अन कूकत मूक म ववौं वनड़ा ।
हय वाग भलौ असथांन हरा । धुरजाळ खड़ौ मत धांधळ रा ।।१०६ ।।
तत व्याव उमंग धरी तन री । वरदायक चीत रखो अन री ।
त्रिजड़ा लाग जांन हळै तुमणी । हव वांवव धात सुणौ हमणी ।।१०७ ।।
अर मारोय जाखिम आयल रो। यम वूंट उखेड़ेय जायल रो ।
इण कारण चांदय हूंत अखो । रखवाळण ढेंबोय कोट रखो ।।१०८ ।।
घण ढोल कुकाउ अरा घुरसी । फजरै पर जायलियौ फरसी ।
कमठाळ सबै भड़ साथ क्रमैं । हरियौ हव सूंपोय वेग हमैं ।।१०९ ।।
लज धार वड़ा अद सार लियां। काछे लीनु पाल जुहार कियां ।

जुग वीर हुवा तुव भेद जुवा । भुवपाळ देज्यार निहार भुवा ॥११० ॥

पाल वायक

कहिये तकसीर मुमें कित री । अखती थुंअ देव हुवे अत री ।
भुरजाळ सैलाळ भणें भळ सूं । हव तुज्ज हुकम्म हुवै हल सूं ॥१११ ॥
यण रूप पधारे भले आइयां । वहुए कर जोड़ खड़ौ बाइयां ।
तत राख सुं मन्न सधिर तुवां । हळ सूं सुरराय हुकम्म हुवां ॥११२ ॥
कर जोड़त पाल प्रणांम करै । चंद्रभांण विनां मुझ केम सरै ।
चढ रातळ देस प्रदेस सुणौ । तव अग्र हलै जसवंत तणौ ॥११३ ॥
अणियांटल वेढ हुसी अरती । धुर दीठळ धाट तणी धरती ।
प्रसणां विच एकल राड़ पलै । हरियै विण आगळ कोन हलै ॥११४ ॥
सगतांरि सिरायत वैण सुणौ । हव ढेंवै करावुहु आलहणौ ।
जद पाल वडै भड़ हूंत जपी । अमली सुंअ अग्याय एम अपी ।
वागेलाए नायक वैण वयौ । नव वाह भळामण ढेंव लयौ ॥११५ ॥

ढेंबे वायक

भड़ ऊसस पाल तणौ भळए । अम्बु आळ कहै सुण देवळए ।
सिध रींझ कियौ सुज चाकर नै। कर वेग विदा हव ठाकर नै ॥११६ ॥
दखियौ यम तद रुद्र दुती । जस लेण सधाव कमंद जती ।
प्रसधी जग ऊजळ चन्द्रपना । वरवा धरधाट अपार वना ॥११७ ॥
अजड़ा लोय नायक सूंप तुमै। हिंदवांणिय भांण सिदाव हमैं ।
भुरजाळोय चांवड पेम भणै। मुजरौ मुजरांणोय हूंत मुणै ॥११८ ॥
दत ले यम आयस पाल तणौ। मुणवै हव नायक आप मुणौ ।
सगतां मम वैण सुणौ सहुआं । गढवाडां री कोण गहै गउवां ॥११९ ॥
ताइयां दळ देखोए जांण तुमै । यत देजोय कोहर ठीक हमै ।
मारको सह ओडव आप मथै । सबळा भड़ सरार जेण सथै ॥१२० ॥
अजड़ा लोय जांन हूंतै टळियौ । वड़को भड़ कोट रखो वळियौ ।

यम आग धुखै जिण आँखड़ियां। वरदायक मूंछांय वांकड़ियां ॥१२१ ॥
पराधिय आज उजाळ पळी । वळतै मुख राग वजै वंसली ।
वरदायक नै व्रद देवो हला । सगतां मुख पाल तणा सोहला ॥१२२ ॥
गढवाड़ाँ भोळावण डैव ग्रह्यौ । रखवाळण भूरेय कोट रह्यौ ।
कमधेस दई वडक्राम तनै । सगताँरी भोळावण साँवत नैं ॥१२३ ॥
पंसही उड़ ग्रीधणियाँ परती । अंवुआळ री लूण उतारवती ।
किर दंत वराह सराह कसी । चढ मूंछ व्रुहारांय बीज ससी ॥१२४ ॥
गुंजवै पर ठाल नखै गिरजाँ । भुरजाळाय आँण ग्रही भुरजाँ ।
ग्रह मीद करी वरणाव घणौ । तिणरौ सुत बालकनाथ तणौ ॥१२५ ॥
अंवूवाळ वल्यौ लिथ चाळ अणी तद जाँन हली सिघ पाळ तणी ।
वाजरियां नीलाँणी आँभर टाँका पाँणी है ।
हसनाही नीरझर सहत घोर सिर ढाँणी है ॥१२६ ॥
कवळू यण सूं खड़ केसरियौ । उण कोळुअ धाँधळ ऊतरियौ ।
विप भीजत संज सवै वणगाँ । फजरै घणराव जमें फुणगाँ ॥१२७ ॥
जळ डोहत पंथ वरात जुई । हरिया व्रत डूंगर भूम हुई ।
अत सूर करूर तपै पल में । मंडियौ नभ मंडल वादळ में ॥१२८ ॥
गुड़ळापण तै गिर काँत गया । थळ धूंधळ ऊजळ रूप थया ।
धर सोर मयोर झिंगोर धरी । कर अग्र कतार बळाह करी ॥१२९ ॥
चढियौ भुरजाँ यम ढैव चवै । खित जंगळ वढाळ सीस खिमै ।
धल काँठळ गैणाँ भड़ाव घणाँ। तिण ताल चढाव वरात तणाँ ॥१३० ॥

॥ दोहा ॥

मैंहमंद चमणा मौलणौ । रंगवाहळा रलेच ।
भूपाळाँ सिर भींजसी । पागाँ वाळा पेच ॥१३१ ॥
त्रिथ रखालुअ ढैंव थयौ । घुर ढोल पावू अमराँण गयौ ।
ललकारत राग हूता लड़ियाँ । चत्र वीसत कोटड़ियाँ चड़ियाँ ॥१३२ ॥

॥ कवित्त ॥

चढे आल ऊदळह चढै नींवौ वाहड़दे ।

चढै पुत्र रणधमल चढै काजळ सुध पखदे ।
चढै हाफल बंवाळ चढै पेथड़ विक्रमायत ।
पह चढ केतूपाळ सूर लीनाँ जतने सत ।
एतळा नृपत चढिया असाँ पाँण पाड़ भोपाळ रो ।
थळ सैहर माग वागै थया जाँन सिधावण पाल री ॥१३३ ॥

॥ दोहा ॥

पूगै कागद पाल रो । सह परगह सणगार ।
हुव जेवर जायो हुवो । अस नीलै असवार ॥१३४ ॥

॥ छन्द पद्धरी ॥

पाल री जाँन परदंप गार । सिध गोग हुवो नीलै सवार ।
रजवार साख चौवीस रूप । भिड़जाळ खड़े दधरेळ भूप ॥१३५ ॥

पाल रो वराती वरन पाल । संभरी हाथ ग्रहियाँ चडाल ।
बाचत खत आयो वड़े वेव । दाखूं वरात मझ गोग देव ॥१३६ ॥

गोग रा भींच अंगाँ गरीठ । रणवार सत्राँ सिर देण रीठ ।
धुरजाळ खड़त सैंभर धणीह । तिम वजत रोळ गूवर तणीह ॥१३७ ॥

सुत भ्रात लियाँ परवार सेंग । खेड़ नृप खड़ै ततकार खेंग ।
आयो खड़ कोळूं वेहै उताळ । पाबू सूं मिळियो रायपाल ॥१३८ ॥

पतवंव वाह पूरो पुरस्स । दामेव सुतन दीनो दरस्स ।
लीना भड़ घोड़ा वहुत लार । जसराज आय कीन्हो जुहार ॥१३९ ॥

वळ ईठ साध लीधाँ वलोच । पूरो नर जादव वड़ी पोंछ ।
वीर देत हुवो मृत सूं अबीह । सीम रो पीतरो सोमसीह ॥१४० ॥

जत पाल दुलह अमराँण जात । सिधवीर सरव नर जाँन साथ ।
आद्य दिय पाल दोढो अमल्ल । मिळियो जद सोढो रायमल्ल ॥१४१ ॥

हक जोर सोर दळ घेर होय । जालोर दुरग चहुँ फेर जोय ।
मिळ किय जुहार दरगाह मांह । पाबू सूं मैंडी पातसाह ॥१४२ ॥

विढियो आँण फौजाँ विलंद । अणखलैं तणाँ आयो नयंद ॥१४३ ॥

॥ दोहा ॥

हव सारा भेला हुवा । अधपत कोळूं आँण ।
हूवो लछमण देवर । जाँन तणौ घमसाँण ॥१४४ ॥

॥ सोरठा ॥

जाँगड़ गावै जोड़ । पैहें वड़का दारू पियै ।
रंग दुलहा राठोड़ । कंकण हथ पाबू कमंद ॥१४५ ॥

घूमर घणौ घटियौह । तिण पुळ में बूड़े तणौ ।
थळ कोळूं थटियौह । कंकांणाँ हूंकल कळळ ॥१४६ ॥

रहियो एकज रात । कोळू मड पाबू कमंद ।
पमंग चढै परभात । वरवा धण खड़िया वनै ॥१४७ ॥

साथे ले सिरदार । पाबू पंथ खड़िया पमंग ।
लागू बूड़े लार । दाव दियौ दन देख नै ॥१४८ ॥

भेळा ले भोपाळ । पाल गयौ परणीजवा ।
विण धणियाँ धणवाल । गढवाड़ाँ वित घेचणौ ॥१४९ ॥

कागद मंझ बूड़ै कह्यौ । वेगम करजो वेल ।
पाल गयौ परणीजवा । मिल घोड़ांणा मेल ॥१५०. ॥

॥ छन्द त्रोटक ॥

लिय कागद ओठिय माग लियूं । गिरतें रित जायल नेर गयूं ।
थित मेर घड़ी दोय दीह थकै । धर धूसण झेंवयौय प्रोळ धकै ॥१५१ ॥
यत हूं कवळूं गढ आगम यूं । कर कागद सूंप जुहार कियूं ।

सांढियै वायक

कुसळायत पूछिय आप करा । मुणिया सह साथ घणा मुजरा ॥१५२ ॥
तिथ आठम तेड्याये वेग तुमै । दख सोह हकीकत कागद में ।
सिस कागद बाच नरिन्द्र सही । जिण मोद वध्यां मन सिद्ध जहीं॥१५३ ॥
सुपहां सुंआं दाखत सारंग रौ । कठओ तिनुं ओठिय त्यार करौ ।

लोह चाळ घोड़ा रजपूत लये । गिर खाट अमाग सवेग ग्रहे ॥१५४ ॥
मुंडए घर खीमर गांम मनै । करसां दळ मेळ नागोर कनै ।
कमधां घर फट खता करणी । फजरै पर पाल धरा फरणी ॥१५५ ॥

कव वायक

लिय वैण मुखां सह भेद लियौ । कळ दैण काई कोय उक्रमियौ ।
तैहै रांनक माल उड़वो समलौ। मिळियौ आय ओठिय उत्तमलौ ॥१५६ ॥
मुणिया सम वैण करे मुजरौ । कठ ओतिरा ठाकुर चेड़ करौ ।

मैहेदर वायक सोहलां सूं

मुणियौ कण ओठी परगैह नै । नह भूलोय जेठिय सारंग नै ॥१५७ ॥
रानवंव यियौ घण व्याव सटै । किम हूवे खत्रियां कुळ वैर कटै ।
जरणा रख वेस प्रता जरतौ । फिट ग्रीधड़ मात लियां फिरतौ ॥१५८ ॥
उण अंस सूं देह उरहैं अगयें । जिण खेत सूं देह यदे जगयें ।
धर सीस जकां सख फोट धरै । वरणी मन रज पिता विसरै ॥१५९ ॥
धर धाय दुती सुख मेळ घणौ । तित बीज नहीं पित अस तणौ ।
कुळ ऊगोय सूरज तेज करौ । चत्र वीसत साखांय सारंग रौ ॥१६० ॥
दुरियां जड़ तोड़ण रुद्र दती । जिण पीठ मछंदर पूत जती ।
कुळ खीचिय अंजस बोध करै । बडको कुण नौज पिता विसरै ॥१६१ ॥

मैहमंदर वायक ओठी सूं

धुर लूंटण धांधळ पूत धरा । चव मुज्ज हरोळिय सारंग रा ।
गिर आव तपै नृप दीह घणा । तुंअ हत्थ जोए लघु भ्रात तणा ॥१६२ ॥

वरियावत वायक दोहा

गढ़ राघो गढ़ गागरण । अचला मेळा आज ।
अंजस नोनं ईखनं । सारंग सुतन सकाज ॥१६३ ॥

॥ छन्द त्रोटक ॥

लड़वा दळ डोड़ हजार लियूं । कठत्रोतिय ठाकर चक्रिय यूं ।
दुरियौ धर बोलक नांदरियौ । यम ह्वी गिर गोढळ ऊतरियौ ॥१६४ ॥

जिंदराव भड़ां घड़ मेळ जुई । दुतियां धन घांसण धाड़ दुई ।
सांहणी हय सारत सादवियूं । तसलीम तुरंग वणावत यूं ॥१६५ ॥

घड़ डोहण पाखर पीठ घळं । हय हींस भड़ां हक होय हळं ।
पर अंग छतीस परंकड़ियं । कळ जन्त्र जड़ी तन चक्कड़ियं ॥१६६ ॥

दसता कर मोजाय पाव दयूं । सिर टोप कटी ग्रह सूथण यूं ।
सत साहस सूरत पाक सही । जिंदराव हुवा करु राज जही ॥१६७ ॥

कहजै दिगपाळ जटाळ कणा । मुदरा लाय जोगिय आप मणा ।
जुध पाल परीख धनंजय ज्यूं । कवळूं वैराट पुरीं कैह ज्यूं ॥१६८ ॥

कमधां घर हेरण चेड कियुं । दख तंग कड़ा जड़ ताक दयूं ।
जमजाळ मिळै नृप जींद झलौ। हय आवत ऊखंभ वेग हलौ ॥१६९ ॥

जरदाळ तुरंग वणाव जुओ । हय मोर परै असवार हुओ ।
चड राव सबै भड़ खेंग चडे । धांधळां धर धूसण मेर घड़ै ॥१७० ॥

प्रसणां घर अंबर मेघ परै । कर डंबर मारे क्लाब करै ।
सुण बात थरग्गह वैण सदी । कथ दासिय पेमल अग्र कही ॥१७१ ॥

चढ जावत पावुआ सीस सनै । मुणियौ यम पीहर मांणस नै ।
सुज आखत पेमल चोकस में । कळ भूप जती पर केम कमै ॥१७२ ॥

जिण वस मही सिध पाल जगा। चहुंआंण कमंदज आद सगा ।
सुत पाळोए मजिय साब सुणौ। तिम आगळ बांधव मुज्ज तणौ ॥१७३ ॥

दहवाटेय रोळ दये दिवड़ा । पह सूरज चंद सखी प्रवड़ा ।
चित धायोयै दूध अपच्छर नौ। मण देमु महा सिध पाल मनौ ॥१७४ ॥

यळ ऊपर नांह वड़ो उण रो । मुणजै अवतार लिछम्मण रो ।
नड़णो नह वाद कळु नर सूं । नृप जीत लई किम देवत सूं ॥१७५ ॥

वरदायक धारण मेर वड़ै । भुरजाळां सुं भूपत केम भड़ै ।

मांजी भाटियांणी वायक

रजवाड़ांय ऊकट काठ रिधूं । वीर तेड्योय कागद मेल विधूं ॥१७६ ॥
धांधळां कुळ धेख धिखै धर रो। गढवी कखपाळ रखै गुर रो ।
जिंदराव सहाय हुसी जिण रो । गढवा एक दांय नदै गण रो ॥१७७ ॥
वळ आसंग नायोय पाळ वरो । वैहनोइ नै तेड्योय उचव रो ।
लेय आसिय धेनांह एथ लगै । पड़सां जद पाबुअ राव पगै ॥१७८ ॥

पेमा वायक

यळ सीस न जायोय मात यसो। जिण पाय नमै मुज वीर जसो ।
यड भ्रात कियो यह कांम बुरो । कमधां खीचियों कुळ हांण करो ॥१७९ ॥
अखजे धन हेरुअ फेर अठै । कहो तेण वतायोय पाल कठै ।

महन्त वायक

लखियः खत अंक मिल्यो लह यूं। परणीजण धाट गयो पह यूं ॥१८० ॥
कह वाचिय कागद आप करां । धुरचंद लख्यो हमरोट धरां ।
पुळ आसिय लेवत खेम पती । जग जोध नहीं धर पाल जती ॥१८१ ॥
कुळधी जद एम विचार कियूं । दिल भ्रात किसूं यह धाव दियूं ।
जुध केम करासिय राव जहूं । बहनोइह बंधव प्यार वहूं ॥१८२ ॥
जिण दाव रचै सिर राव जियो। विप पाल उवारण कोण वियो ।
चित वांधिय धीरज व्यंव ससी। कुळ ढांकण केम बुरो करसी ॥१८३ ॥
सरवा वर पाबुअ जांण वनी । धर सीस चली जळ दोय धनी ।
तन अंण भड़ाव अहूं तड़यूं । सिस ऊगत जींद खड़े चड़यूं ॥१८४ ॥
भय भ्रंत उजाड़ सिगाड़ भड़ं। उपटै रज धूंध चढी अनड़ं ॥१८५ ॥

॥ दोहा ॥

इण घर में तो ऊपनी । ऊमां झूमां वात ।
मम घर में वहनां अधक । लोवड़ियाळां छात ॥१८६ ॥

॥ छन्द त्रोटक ॥

अस वाजस पक्खर गूघरियूं । तित थागत लेत सुरंतरयूं ।
अत वेग वढै लग पीठ अणी । तत सिध्र आवाहन मोर तणी ॥१८७ ॥
लग पूठीय दोय हजार लियूं । कन सूरीय ऊपर कूंत कियूं ।
अप पीठ अळो वंध ऊलळती । कमधां घर भेद लियां कळती । १८८ ॥
उपटा दळ काळ तणी अवली । चड़वां लाए सीस भमै सँवळी ।
नवनाथ जमात कियां नर सूं । मिळियौ फिर पापू मछंदर सूं ॥१८९ ॥
ग्रम आवत जींद उरव्वड़ियूं । चख जोस तैं महैंदर भींचड़यूं ।
रहियौ नभ चंग बंधै रज रौ । मारकां अस ठांम कियौ मुजरौ ॥१९० ॥
कळ कोयक जाय अगू कहला । अस पंथ खड़ौ वैहला वैहला ।

जींदराव वायक

जोवसां भुज जोर घणां जवरां । खळ वंकाय आज हुसी खबरां ॥१९१ ॥
जत पाल वड़ौ सत सील जथौ । हव देखूंअ धांधळ आग हथौ ।

पुनरपि जींदराव वायक मेंदर प्रतै

फिट लागत मो कुळ बोल फरूं । कळ ऊपर पाल जूंझार करूं ॥१९२ ॥
घवळै दिन सात्रव राड़ घरां । कमधां पर खाग टकाव करां ।
धुर थंभ वजैत मुरद्धर रौ । वरदाय तौ जोर जोऊं वर रौ ॥१९३ ॥
रैयणांयर पेथर जेम रजी । वड़ नौवत मेंगळ सीस वजी ।
हटकारेय खीज अमां हकतौ । निज वांधट आज मिल्यो नखतौ ॥१९४ ॥
सत्र अंग धुखै लग पाग सली । खत्र मांग तुमां चत्र वाग खुली ।
धुर सानुज जोर लियां घर रौ । सुन काढण आंटोय सारंग रौ ॥१९५ ॥
करतै विपरीत रजाय क्रमू । चत्र मास चढै नह भूप चमू ।
प्रतवंव गिरां सिखरां पड़िग्रां । कळळै नभ मारग कूंजड़िग्रां ॥१९६ ॥
धक सांभळ चाक चढी धर यूं । झुरिया गिर पाघर झंगर यूं ।

पतसा लुळ लेवण वित्त परा । असवार खड़े अस तूंगिय रा ॥१९७ ॥
पिड़ मोर उड़ांगा मृगांगा परे । कळ हांगा सिचांण हिहांण करे ।

धाड़ेतियां वायक

वरवा घरा धाट क्रमे वनड़ो । खळ थाटांए पीठ लियो खेहड़ो । १९८ ॥
पह फाटिय लेसांय वित्त परा । अज पाल है वाहड़मेर उरा ।
हिक मेक जवाहर धाड़ हुवां । तिल कांम न देह तनाळ तवां ॥१९९ ॥
खवि आंख गवी जल सीस खळां दुत रंग वही जलधार दळां ।
वरसे रसघेर भले रव ने । किय मोर दिनेर सुजेर कने । २०० ॥
रयणी हतभाग कियो रड़ियां । चव तीतर ओल लवे चिड़ियां ।
नभ नांखत सीस ढके निस में । कवळूगढ सीस खंवे कस में ॥२०१ ॥
लखि एत घडूंस लताळ पटा । घरा जोर वरे थळ सीस घटा ।
धुन अंतस नखत्र सीस धरे । हत्र आयोय सांढ पलांण हरे ॥२०२ ॥
प्रतकूल थिया विध अंक प्रमं। सांवडूं मग आयाइ प्रात समं ।
पधगा लेय दीठ लख्या पुळता । नहराळाय डावाय नीकळता ॥२०३ ॥
वहिया पंथ डाक पाछा न वळे । हय ठांभय चंद कह्यो हवळे ।
तुर आठ भळे मह झंप तठे । अपसांगा हुवा चख देख उठे ॥२०४ ॥
अत मंगळ ब्याव विनोद होए । हवसाण पलाउए केम हुए ।

॥ दोहा ॥

मिळे मोमसी रायमल । जठे गोग जसराज ।
पांच पीर इगा विध पूर्ण । ए सुकन किम व्है आज ॥२०५ ॥
पाल पवारे परगवा । सिध जांनी सैहै संग ।
वुवा सुकन किम वेद रा । वागां झलो विडंग ॥२०६ ॥

जसराज वायक

पाल तणो परधांन तूं । तूं नायक बोह जांण ।
सूरज ऊगे सावटू । सो किसड़ो चंद्रभाण ॥२०७ ॥

चन्द्रभाण वायक

गिड़िया गज समहर गुड़ै । छत्र पड़ै रवि झंक ।
यसा सुगन है आज रा । पुणे चन्द धांनंक ।।२०८ ।।

चांदै वायक छन्द त्रोटक

धिप आयय आधिय आध धरा । अमरांणौ सूं खाबड़ खंड उरा ।
कंध जोड़ उभै महि खाण कियां। दन टाळांय सोळह् पौर दयां ।।२०६ ।।
पग सीस धखावे आग पुड़ां । खित माग पछै यत हूंत खड़ां ।

पाल जतराव सिध वीर रौ वचन

नयड़ी मुझ मौत हमें नैहठी । सुपियार रखै किम तेल चढी ।।२१० ।।
मृत सांमिय सुद्ध लखै सांमण नूं। सरदार म पूंछौय सांमण नूं ।
मांझिय हव नांह टळौ मृत यूं। छिपती काय वात नहीं चत सूं ।।२११ ।।
ताइयां मिळ बंठोय बध तनूं । मरणौ हव लाजम जंग मनूं ।
परदेसिय बूडोय जींद परा । दुरही बित लेसिय देवळ रा ।।२१२ ।।
वहणौ मुज वाट खत्री वट री । घड़ियां मझ मौत वणी घट री ।
पोरसातन आयौय वेस परा । अपवैण न चूकुंअ सीस उरा ।।२१३ ।।
अवसांण वण्यौ मन भाव इयूं । दिल मांण न मूंकुअ सीस दयूं ।
पायकां रखजो तन पांण पणौ । तद अंत प्रवाड़ौ है पाल तणौ ।।२१४ ।।

।। दोहा ।।

पाल ए वायक पुणौ । सुणौ सरब सिरदार ।
सुगन बुराहज होवसी । है परख होणहार ।।२१५ ।।
तवै वचन धांधळ तणौ । आच कूंत ऊपाड़ ।
करणां यळ नांमां अमर । मरणौ मंगल राड़ ।।२१६ ।।

।। सोरठो ।।

वित देवळ वाळोह । लागू जींदौ लेवसी ।

वीरो मो वालोह । कळमथ घणो करावसो ॥२१७ ॥
ढोलां पड़सी धांह । करळा ग्वाला कूकतां ।
चारणियां री चीह । श्रवणां हूं कदे न सुणू ॥२१८ ॥
सूना मैल चकार । हूं परणेवा हालियो ।
वांसे गायां वार । करसी कुण मो विण कहूं ॥२१९ ॥
वणै दुलह जिण वार । पह वीजा सुध पांतरै ।
वचन सुरह री वार । पाबू वनो नह पांतरै ॥२२० ॥
मिळै जसो अर रायमल । जठै हुवे सुभ जोग ।
होणहार ज्यूं होवसी । हमैं खड़ावो गोग ॥२२१ ॥

॥ छन्द ॥

वेंगा गळ वाग्रह चाळ वियूं । सज वाग उछांटिय सावळयूं ।
भंमरी अलवांमण डांण भरै । कवराव कितो वरणाव करै ॥२२२ ॥
समरात सजै सवगात सळै । हमरोट घरात वरात हलै ।
करहां अस धांघळ तूंग कियूं । अमरांण जती खड़ आव हियूं ॥२२३ ॥
जळ व्यंब ढकै पग पंथ जपे । फुरमावत श्रीमुख हूंत फतै ।
कड़कै तड़तां नभ डाग करै । भुजिये पर कांठळ रोस भरै ॥२२४ ॥

॥ दोहा ॥

धोला धोरा धाट रा । कछ डूंगर काळाह ।
धण साम्हां लागा गयण । वड़ लम्बै वाळाह ॥२२५ ॥
धाटी गढ धाटी धमळ । धाटी सिरै धुरज्ज ।
पाबू धाट पधारियो । धण धाटेती कज्ज ॥२२६ ॥
राव कला री वार में । ईडर अधकांणाह ।
रांणा सूरजमाल रै । वारै अमरांणाह ॥२२७ ॥

गोग वचन

खयीश्रा पहरण पगखलां । लोवड़िग्रां नळतांन ।
अम्भी अस्सी ऊनरै । पाल सुमर परधांन ॥२२८ ॥

लांबै तलाव ऊपर पिणगट वै वै है तिण रौ वरणन

गजगमनी केहरकटी । हेम वरन्नी होय ।
मृगअंखी नासकसुकी । लख घाटेची लोय ॥२२९ ॥

हार हिये विच हींडळै । वाजै ऊपर पग्ग ।
विच गळ सोवन वाळला । लांबै पणघट लग्ग ॥२३० ॥

की कठिअंगणी कायथरण । पूंगल प्रसू प्रथीप ।
अमरांणै धर ऊपनी । दूजौ सिंघलदीप ॥२३१ ॥

होट ललाई सूं उदै । हासी उज्जळ होय ।
संध्या हूंतां चंद्रका । जांणै फैली जोय ॥२३२ ॥

मंत्र वसीकर मेहली । वांणी बोयलियांह ।
कुरजड़ियां गरदन कहूं । कंठां कोयलियांह ॥२३३ ॥

दूर निहारै दंतड़ा । अति ही ऊजळिग्रांह ।
कांठळ गूंघट ओटकिर । वादळ वीजळियांह ॥२३४ ॥

स्यांमा केसां सांवळी । रांमा अत रूड़ीह ।
हियै कामपावक हुवै । जस धुआं जोड़ीह ॥२३५ ॥

असत भमर सम ओपियां । बाम भुहारां वंक ।
प्रातै कमळ प्रकासिआ । ऐहो निरमळ अंक ॥२३६ ॥

मूंगफली करअंगळी । नग जुत विळय निहार ।
जांणै नवनिध देह जुत । आंण लियौ अवतार ॥२३७ ॥

एक कळस सिर ऊपरै । कळस उभै कर कीन ।
कंचन रा तीनूं कळस । नवळ संगाती लीन ॥२३८ ॥

॥ छप्पय ॥

करणाटी कट कहूं जंघ उतकळ त्रिय जेही ।
गूजरियां कुचगात केस केरळियां केही ।
करणा हाव कटाछ नार तरहैंत समी निज ।
नितंब तेलंगी नेक मिले देसांतर तन मझ ।

तनवास सहज सिंगल त्रियां मारू भूला देख मन ।
रायपाळ गागे हूंतां रटै घण धाटेची रूप धन ।।२३६ ।।

।। दोहा ।।

आभूपण तन आभरण । जकै आवता भूळ ।
हंसगती हमरोटियां । दिपै सुरंगद कूळ ।।२४० ।।

नेह नवळ नव नारियां । नवळ सुरंगा नीर ।
कर चंपक डाली कळस । लहर हिलोळै नीर ।।२४१ ।।

कुरजड़ियां पाळी कहूं । सर सारसणी सार ।
मानसरोवर हंसणी । लावै री पणियार ।।२४२ ।।

चंदो आठम भाळ छिब । मुख पूनम री चंद ।
भ्रूह उभै भंवरावळी । नैण उभै अरिवंद ।।२४३ ।।

नागण आठी अरुण नख । कनअक पात कपोळ ।
ठणणण नूपुर पग ठमक । रमक भमक रमझोळ ।।२४४ ।।

कर इक गह लोटी कळस । अंग भूखण ओठीह ।
नवकोटीपत नै निरख । हाली हमरोठीह ।।२४५ ।।

।। छन्द त्रोटक ।।

सिणगार वनै नृप जांन सजै । तिण देखत इन्द्र गुमांन तजै ।
सर लंबेथ ऊतरिया सब ही । दिन अंथ वधाऊअ ठीक दई ।।२४६ ।।

कमधां नृप री पिड़ जांन कजे । सिणगार सबै नृप अंग सजे ।
दखरांण वजीर हुकम्म दिया । करहां तन भाटक संज किया ।।२४७ ।।

विडंगां गळ घूघर माळ चजे । वज ढोल त्रिवाट निसांण वगे ।
सुरभी घर आवत जेण समै । करहां गळ मंगळ माळ क्रमै ।।२४८ ।।

मन मोद अलंकृत सूं मढिया । सब साथ वणाव करे चढिया ।
रंग पंच कुंआं रखवा रुळता । हल आगळ जांगड़ हूकळता ।।२४९ ।।

परधै लिय आमोय धाटपती । त्रिडंगा पग नेवरियां वजती ।
वण जांन सुप्यार तणै वर री । धमचोळ वजै बहु घूघर री ।।२५० ।।

मिळ मांढिय जांन किया मुजरा। गहरै सद सोर अखी गजरा ।
जद भूप बछायत बैठ जुआ । दुलहै मुख जांघड़ देत दुआ ॥२५१ ॥

तद मीट लखंत धनंतर री । उड घांण सुगंधक अंतर री ।
सब भूप पियै मनुहार सिरा । उणवार पियालाय आसबा रा ॥२५२ ॥

अज काछ कफीण सुराब अगां। पिडजान सवार हुआ पमंगां ।
पह पीठ बड़ा सुखपाळांय री । भलखै अणियां बह भालांय री ॥२५३ ॥

मिळ चोवड जोत मसालांय री। उणबार कथा अब दाखांय री ।
कर माळ दुबाहुय कोट कियां। लख पैदल साथ ढाळेत लियां ॥२५४ ॥

चळ भूप जलेब कियां सुमनूं । नृप सूरजमल्ल समागम नूं ।
जतराव समे लोय वंद जठै । त्रिय भुल लखै नृप नार तठै ॥२५५ ॥

सब भूप बिछावत बैठ सई । गउ घूलक धांधळ वाग ग्रही ।
कमठालोय साथ हुवो कनलै । सरदार मिळैं सह सामेहळै ॥२५६ ॥

॥ कवित्त ॥

मिळ रांमा राजसी मिळै भोजा भुरजाळा ।
मिळ दोनूं अरबाब वडा नृप बंगे वाळा ।
मिळ वीरम गंगदा मिळै भुज बळकळ चाळा ।
मिलन ह्वै वैरसी घाट घर रा रखवाळा ।
सुरतांण उदा मिळिया सको घण थट लीनां घूमरा ।
आविया सांमेळै कज यता अमरांणै रा ऊमरा ॥२५७ ॥

सूरजमल वायक दोहा

सुणता था आगे श्रवण । सिध खत्री चहूंआंण ।
आज भलां दरसण कियो । रटै मुखां सूं रांण ॥२५८ ॥

यळ मोटे औसाप । विभै वडी यण वखत में ।
आयो क्यूं नहिं आप । वडजांनी जींदो वणै ॥२५९ ॥

चन्द्रभांण वायक

प्रसण वुभो रे पाल सूं । जम्माई जमरांण ।
खीची अस न्यारा खड़ै । भाखै यूं चन्द्रभांण ॥२६० ॥

सूरजमल वायक

पाल तणो नृप पाटवी । राजवड़ां री रीत ।
दूड़ो जांन न आवियो । औ कुळ रो आदीत ॥२६१ ॥

चन्द्रभाण वायक—कवत्त

दीयो रींझकर दांन पाल गोलियो मथांणो ।
केसर दीनी सगत राव बूड़ो रूसांणो ।
गढवाडां गउग्राह जको गण मांगे वत री ।
दये न चारण दाम राव रीसियो कुखतरी ।
परणाय वैन पेमावती रूख जींद हुतें रखै ।
पाल सूं हुवो पूरो प्रसण यूं चांदो नायक अखै ॥२६२ ॥

॥ दोहा ॥

सामिळै मिळिया सरब । जांनी करै जुहार ।
हव अमलां छक हालिया । डेरां दिस सिरदार ॥२६३ ॥

॥ कवित्त ॥

सिध जांनी सैहै साथ नाथ दघरेल जिसा नर ।
संग नृपत सोमसी गणे अहमंड पंडकर ।
जसधारी जसराज पुणो वारड़ कुळ छत्रपत ।
मेहो हरभू विनै मरद सिधियळ जोगयमत ।
आविया परम आलग उठै पीरंम थोरे पूजिया ।
विदायत हूंत उठै विलंद गढपत सैह डेरे गया ॥२६४ ॥

रांणा सूरजमल वायक—छन्द त्रोटक

रज झाड़त्त रांणाय देखरती । जग जेठ घनंजय पाल जती ।
मिळियो वर सूरज रूप मनं । धनधन्न अमां सुत भाग धनं ॥२६५ ॥

अब आखत विप्र अखी यळकै । मन में जत राव जठै मुळकै ।
अम धूंधळ वंदरण तोरण री । डह सेल झलें रज डांरण री ॥२६६ ॥

सज राग हवोलय रंग सही । मचियौ अमरांण रे चौक महीं ।
हिय गायक कंठ सुराग हुकै । कळ कंठिय घाट धिगा कहुकै ॥२६७ ॥

मुगताफळ ऊपर भाग मणी । तिणताल भळाभळ मौड़ तणी ।
कालमी अस उक्रम हींस कियूं । हय कंबड़ तोरण बंध हियूं ॥२६८ ॥

वसुधा पर भूपत कोण वडै । हव आयोय पाबुअ मांढ हुडै ।
जनसांण मिठांण प्रमाण जठै। अनमांण अठारह वखांण उठै ॥२६९ ॥

परमा छळयां पथ मांण परा । असमांण विमांण अहा अचरा ।
प्रसधी सुण झंखत क्रात परै । सोढियां चढ देखत मैल सरै ॥२७० ॥

मन भाव श्रंगारुअ वीर मढै । कमधा गुर तांम रिकाभ कढै ।
वरवा वर पाबुअ राज विधू । सिणगारित सूरजमाल सिधू ॥२७१ ॥

सिखराळ लड़ी छिब सोभतियां। उतारैह झळामळ आरतियां ।
भव साजणरीत जती भंवरी । चढिया घण वींद वनै चंवरी ॥२७२ ॥

जत यंद्र महा सिध तत जती । सुपियार वडी ब्रत सील रती ।
दोय फेर खगां रुअ पाल दये । लुक जींदय थांणय सीमलये ॥२७३ ॥

सिर पाल महातिस रैण सिरै । हव ढोयय ग्रीधण राव हरै ।
करजोड़ सजोड़य विप्र कही । समियंत स फेराय लीध सही ॥२७४ ॥

होय रंग हवोळोय मांढहड़ौ । वळियौ जनवास हमैं वनड़ौ ।
भूरै रतकोट सनंद भया । गुडला पण नखत्र गैण गया ॥२७५ ॥

॥ दोहा ॥

मझ आथण मेवासियौ । पंचादी परभात ।
वाट निहारै वेगड़ौ । जपण उड कियौ जात ॥२७६ ॥

॥ छन्द ॥

लखिये रंग हाथ लगी लपटां । परमेस न पायोय झूंब्र पटां ।
डेयरां लगि आविय जोड़ दहूं । सोढियां घण वींटिय ओड चहूं ॥२७७ ॥

नरपाल पधारत डेरां लगै । अमरांणें रो रांण भालाळ अगै ।
नुसरी अर सालाय वंधस नै । मिळिया सह मांढिय मोद मनै ॥२७८ ॥

सिध सत्रिय ऊनरियौ चंवरी । भंवती हिणणाट करै भंवरी ।
ऊन नीग संग्राम विरोध करी । खय मोसिर वोलत खंभ करी ॥२७९ ॥

गन जांणिय आगम नी गम ए । खित केसर थूं धमए खिम ए ।
भड़ जावत काळ वाताल भड़ै। अवतारिय नायक आभ अड़ै ॥२८० ॥

दुलहै परणै चित वोध दिया । कमठालाय आय जुहार किया ।
वजनाग अहास आभास वळा । काळवी हरि पिंडत देव कळा ॥२८१ ॥

कंध ऊपर हूकल सूल कियूं । विपरोम वालू छौय फूलवियूं ।
अमतां नह सूभत माग कठी । उतराधुअ कांठळ जोर उठी ॥२८२ ॥

भर मांभण जांमण भादवरी । उद्रिअांमण दांमण आधव री ।
तिम नाळाग खाळाय नीर तजै। वरसाळाय काळाय दूक वजै ॥२८३ ॥

कर जोड़त पावुअसीण करी । वुधळोमल वाहर चित्त धरी ।
वनड़ां घर डेरांए हूंत वळी । रंग रैण रमाड़न कीध रली ॥२८४ ॥

सुपियारिय सूरजमाल सिधू । वडभाग वखांणुअ वाळ वधू ।
जनवास रह्यौ कळ चाळ जती । सुपियार वली पतसाळ सती ॥२८५ ॥

दिल पाल कदे रस में न दियौ । कव मेह अगे वरणाम कियौ ।
मन हेक रह्यौ हढ जोग मची । जनम्यौ जिम जोध जवांन जती ॥२८६ ॥

हळकार भड़ां थट पाल हसै । कमरां वंध मांभिय साथ कसै ।
अमरांण में वाजिय डाक अड़ै । सुपियारि रौ सायव आज चड़ै ॥२८७ ॥

सोढा वायक

धुरदात पधारण चित्त धरौ । किम राव पावू अनियाव करौ ।

दुलहै वायक

मालाळौए वायक एम भणै । वेवगी म्हांनै दीवांए सखी वणै ॥२८८ ॥
गढवाड़ांय वाद धुजै गढियां । सरदारांय मुज्ज सजै चढियां ।

ऊण ढांणिय कोहर ओटड़ियां। केइ दोरिहै तापर कोटड़ियां ॥२८९ ॥
नृप मोराय पाल घड़ी कनरैं । पतसा हिय फौज सिवांण परैं ।
रवदां वल लूंटत गांम रटै । विछत्रां दळ घेरव लाख वटै ॥२९० ॥
गण राठ मेवात सेहाय घणा । तिम वागुए बंधव गोग तणा ॥२९१ ॥

॥ दोहा ॥

तमराळी वाळी सरस । बंभण वाहै ताव ।
चढजासी इणहिज समै । जस दोमैं वसुजाव ।२९२ ॥

॥ छन्द ॥

कमठालाय चित्त धणी कलता। यत आयाय साकाय ऊलळता ।
भुव धारण वागाय पीठ भड़ां । धक चालण हाथ कियां धुहड़ां ॥२९३ ॥
जुग पौर रही निस आय जुओ। हव पाल वेगा असवार हुओ ।
धिग दूराए कोस नवैं धरती । फजरैं विच होय करौ फुरती ॥२९४ ॥
रिछपालग धाट सुपाट रखै । अर वाव उभै कर जोड़ अखै ।
विप्र चारण वंस घणू वलहा । दळ थंभ सवार भवौ दुलहा ॥२९५ ॥

सोढा वायक—दोहा

सोढा यम वायक चवै । जांमां करसूं झाल ।
मो ऊपर कर नै मया । पख हेक रहवो पाल ॥२९६ ॥

॥ सोरठा ॥

थिर देवैं थांनांह कांकण वंध नाळेर कर ।
मोटे मझमांनाह सुज मैं पूगां चाकरी ॥२९७ ॥

पाबू वायक—कवित्त

मिळै सरव मांढियां पाल कथ गोप प्रकासिय ।
कमंध नाम यळ करण वरण अछरां खग वासिय ।

झाळू रो सिरदार जिको तेड़े जायलियो ।
वित लेने वरन रो जाय कुसले न घायलियो ।
सगत रो कांम बाहर सुहर वचन मुज्ज सावत वळे ।
रण जूंझ यसो अब मरण रो मोनू जोताइ ना मिळे ॥२६८ ॥
यळा तांजे तद अनन्त दिनन्द ऊगे पिछम दिस ।
गोरस गोरस अग्रे व्यास सिखवे माया वस ।
वक्र गति तज सरप दरप दूरजोधन मूके ।
मोज तजे मेहरांण वांण रिण अरजुन चूके ।
गुरड वेव साहंस घटै मरण संक हणवंत मुड़े ।
जग यता थोक थावै जदै पाल वचन भूठा पड़ै ।२६६ ॥

॥ सोरठा ॥

एही अखे अरज्ज । सोढा भेळा हुय सको ।
पहु हरखाय परज्ज । राज अरोगे मांहरै ॥३०० ॥

॥ छप्पय ॥

ढाळ खंवै ढळकती मूठ तरवार ग्रहो कर ।
कर दूजै रूमाल घके कालमी डोर धर ।
जगी मसाळां जोत पाल आभास वडो कण ।
साथ सरब सिरदार मेहर मरजाद सूरमण ।
दासियां दौड़ आगू दखै साथ विराजो सांगणै ।
कणडोर छोड़ पूजाकरण पाल पधारो आंगणै ॥३०१ ॥

ग्रन्थकरता वचन

कड़ाजूड़ लोहलोट पाल आयो राय आंगण ।
सोढी कंवर सुप्यार अवल झूलां आभूखण ।
तेज तेज सूं मिळै किरण सिस मिळै प्रभाकर ।
हूर नूर हेक हुवा कहो रांणी जोड़े कर ॥३०२ ॥

सुप्यारी कंवर वायक

हुकम धणी जो हुवे साथ हालूं इण सायत ।
कही पाल चढ काठ मिळै सतियाँपुर मांहित ।
खग तोल ऊठ मिळ दोलहर सीख प्रबोधिय सायधण ।
काछेल वेंण ऊपर करण कनओजे कीनूं कयण ।।३०३ ।।

।। दोहा ।।

ठहरो ठहरो ठाकुरां । अखत म धारो अंग ।
सुपियारी नह छोडसी । सोढी थाँरो संग ।।३०४ ।।
हूं कद भेळी होवसूं । करसूं किण दिन कोड ।
वरराजा जावो मती । सुपियारी ने छोड ।।३०५ ।।
आप पधारो एकला । मेले पीहर माँझ ।
एकळड़ी लेसूं अवस । सारे थांरी साँज ।।३०६ ।।
पतियारो आवे प्रसध । राड़ रहे सोराज ।
सोढी थांने साधसो । महिथळ अंबर समाज ।।३०७ ।।
पाछी नह लेसो पिया । सुपियारी री सार ।
रांडी हुय रैसूं नहीं । मिळसूं अगन मंझार ।।३०८ ।।
देवां नह मुजरां दिया । छेड़ो वाधो छोड़ ।
हथ कांकण ले हालिया । रिण जूंझण राठोड़ ।।३०९ ।।

पाल वायक

सोढो आखर सांच रा । चित प्यारी सुणलेज ।
म्हारो आवे मोळियो । जिण दिन म करो जेज ।।३१० ।।
जो हूं रहियो जीवतो । पीहर रखूं न प्यार ।
अमरांणै फिर आवसूं । ले जासूं अहै लार ।।३११ ।।
सोढी जो रहिया कुसळ । मिळ करसां उदमाद ।
भावै काला आखरी । आ दिन रखजे याद ।।३१२ ।।

जीवां नो गढ गूंजवे । चित वोह करसां चाट ।
सोढो मिळसां सायवण । वैकुंठां री वाट ॥३१३ ॥
मेसरणे वादळ महीं । रवि श्री हाथां रोक ।
ऐ वातां अवसी यळा । उण दिन अळग न ओक ॥३१४ ॥

सुप्यारी वायक

आप सिधावो वेग अव । करो भला जुध काज ।
जो हूं सूरजमल तणी । रहूं न वांसे राज ॥३१५ ॥
गाढे विधवापण ग्रहूं । हूं न करूं तन हांण ।
पींह जिण लाजे अमरपुर । सूरजमल सुरतांण ॥३१६ ॥
धीरज रख म्हारा धणी । पख दोनूं पूरीह ।
सुपियारी साथे सदा । जाई सूजे रीह ॥३१७ ॥
वरदायक सांभळ वना । सोढी धण रा सांम ।
एक घड़ी हो एकली । रखे न थां विन रांम ॥३१८ ॥
पाल दये पग पावटे । ऊतरतां ऐवास ।
श्री मुख फुरमावे वचन । सोढी ने छंवास ॥३१९ ॥

पाबू वायक

ऊवरियां जुध आवसूं । विलस करेसूं वात ।
मुझ म मेले एकला । सोढी रहजो साथ ॥३२० ॥

सोढी वायक

कासूं आखो ठाकुरां । विळकुळ भोळी वात ।
सुपियारी नह छोड़सी । सोढी थांहरी साथ ॥३२१ ॥
हथलेवे भेळी हुई । नह होसी न्यारीह ।
सोढो रहसी सरवदा । साथे सुपियारीह ॥३२२ ॥

कोड लाड नांहीं किया । सुपियारी रै साथ ।
परो सिधावै प्रामणौ । रह्यौ न हेकण रात ॥३२३ ॥

वनो वनी नै तज वुही । भालाळौ कुलभांण ।
धणी तणौ सिर धारियौ । फूल कंवर फुरमांण ॥३२४ ॥

पाछा करलीधा पुरण । जांनी जीमण जीम ।
हय ऊठां चढ हाकिया । सरस विडांनां सीम ॥३२५ ॥

गावै पदमण गीत । महिपत भर बाथां मिळै ।
वेतां अरध वतीत । कमध अरोही काळवीं ॥३२६ ॥

॥ छन्द ॥

चढियोय हिंदवा भाण । साथ गोगदे चहुंआंण ।
सारांहि विळखतां सुरतांण । उण पुळ नीसरघा अमरांण ॥३२६ ॥

॥ दोहा ॥

भड़ तन सम्र भड़ाव । कमध भले भांलो करग ।
रटतौ पावूराव । कमध अरोही काळवी ॥३२८ ॥

आधी निस अमरांण । ग्रहण अरध निस जूं जुए ।
मंडियौ घांण मथांण । पीह पावू ढेबा प्रतै ॥३२९ ॥

सारे सोढां साथ सूं । जाभा करे जुहार ।
हव जांनी सारा हुवा । अस करहां असवार ॥३३० ॥

जांनी मुजरा कर वुवा । कीया मागां केकांण ।
हुंओ टळै गिर सम हठी । उण निसरौ अमरांण ॥३३१ ॥

कव यायक

दई भवानी रीझ कर । पमंग पिलानी पाल ।
धव छानी ताई तिके । मानी सूरजमाल ॥३३२ ।

कस आयुध पावू कमर । धयर घणौ मनधार ।
करण समर घांघळ हुओ । भिड़ज भमर असवार ॥३३३ ॥

पाल भुजां साबळ पकड़ । साल लखी अणसंक ।
कळह साल आगे कियो । ढाल जेम धानंक ॥३३४॥

कवत्त दोहौ

पाबू खड़िया पमंग नेतियारां संग लीधां ।
हाडो रे पड़ हेट कमध घूमर थट कीधां ।
सर लंबै तट सरव भूप मुजरा कर मलिया ।
जुदा जुदा जांन रा तूंग घर दिसनै टलिया ।
वाटां वाटां विडंग अधक खड़ै उताळा ।
रन ऊज रात रा वहै जांनी सिधवाळा ।
पाल हो पधारै परणनैं नायकां साथ लीना नरां ।
अमरांण हूंत खड़े अलल गढपत सह जावै धरां ॥३३५॥

॥ दोहा ॥

पुणै सरव नृप पालनै । वीछड़ता जिण वार ।
टळे जठालग टाळजो । वडका पणी विचार ॥३३६॥

कवत्त संकखणरौ

जांमकियां जगमगां साथ भूधारण सींधड़ ।
कोड़ भिड़ै कस समार धकै जुभिया भड़ धींगड़ ।
खाटखड़ां वडगड़ां पुळै काळवी पुलावै ।
कभी वाग ठलवळां यतै कह पाळा आवै ।
नेहराळ माग चालै नखत घाट हुंतां धळ धरणनै ।
गूंजुवै सीस आघी गया पाल पधारयो परण नै ॥३३७॥

॥ छप्पं ॥

अतरयणी ऊजळी गयण नांहीं वादळ गण ।
निरमळ जळ नाडियां दयै हैला पैलै कण ।

ध्रंग खूह ढांणियां चवें आहट सदमीरां ।
हरिया मारग हलण घरा पंडुरदुत घोरां ।
ओडांमण गरजंत चीह पपीह वडां सिर दरां ।
लवै दादुरा करै भली बोह झंकरां ।
थंत पवन मंद वजै यळा हरिग्र हार निहारिया ।
गूंजवै सीस आधी गयां पाबू परण पधारिया ।।३३८ ।।

।। दोहा ।।

हरिये मारग हींडता । मन सागर मन मोट ।
लायो हरियो अरध लग । कमधज भूरै कोट ।।३३९ ।।
मह सूरो पूरो मरद । खळ धू रो खेगाळ ।
पाराधी तूरो पुणै । भूरां भूरो भाळ ।।३४० ।।
राव ताजण ही रात । आवे सुतो गूंजवै ।
पह तिणरी परभात । कोळू धव कीधा कटक ।।३४१ ।।

।। इति श्री पाल पोरसातने आसिया मोडजी विरचिते
आवाहन रयस विवाह रो समो सम्पूर्ण ।।

।। अथ आक्रत छन्द ।।

क्रम राव वडो अनियाव कियो। दुरिया मुंह पाल विसास दियो ।
नृप रो मुख देखण जोग नहीं। मण दीह रयो सुविचार महीं ।। १ ।।
खड आरुण स्वंदन वाज खथा। जिम ओळ ग्रहां चल अस्त जथा ।
लखणां रज वादळ ओह लही । भ्रग अंक धस्यो दरिआव मही ।। २ ।।

। छन्द त्रोटक ।।

तेय छाड के वाय वंध तुरी । दुरियां निस काळांय डेर दुरो ।
प्रथमी पर नांखिय भोण पला । जंगमां चढियां नर घेन भळा ।। ३ ।।

अथ रैण भवानिय आय यतै । पुणियौ यम देवळ डेंव प्रतै ।

देवल वायक

जिदराव तणा दळ हेम झला । अखवू दुरिया तुम खेड़ यळा ॥ ४ ॥
कह वीर चकार थका किणरा । दळ आयाप यिक दीयण रा ।
थित आज चकरांय लाज थनै । अनवीत भळांमण दीध वनै ॥ ५ ॥
खळ थाट घणा पिड खाय करां। कस भीच हमी वरदायक रा ।
तसलीम करै भड़ हाक तवै । सांमियां कस आवध भीच सवै ॥ ६ ॥

ढेंबे वायक

अग जेठिय जूंझ भुजां झल नै। दखवै यम वायक देवल नै ।
अवुवाल अफीण अणी अड़ियां। केई भींच करी सिर काठड़ियां ॥ ७ ॥
अर नार सुहागन होय अखी । अख सै वड ठाकुर सेर अखी ।
सिरदार विमांण घणा चढियां। पुळसी वत तुज्झ अमां पड़ियां ॥ ८ ॥
रण पूर लरावू चठार गतां । सुर राय री लार वडी सगतां ।
फजरै पायकां भुज जूंझ फतै। महमा करवावण राड़ मचै ॥ ९ ॥
सत्र वां पर घाव घली सुरगां । हळ सीखळ जीद चली दुरगां ।
गुडसी खळ पायक मोद घणै । तुव पीठ भवांनिय पाल तणै ॥ १० ॥
रण डोहण साथ घणां रिमरां। कमठाळांरी खांभ वंधी कमरां ।
धुर मूंड अमां सिपमाळ धरूं । कछ देसिअ देव प्रणाम करूं ॥ ११ ॥
गह पूर मदंध दुगाळ घणा । तिण वार कसै अवुआल तणा ।
उण वार महाभड़ ढेंब इयूं । कुस मांडव भैरव रूप कियूं ॥ १२ ॥
कमठाळ कंठीर जिसो कणणो । हरणं खुर आंच क्रमै हणणो ।
अमरांणं में भूप भालाळ तजां। भिड़ बंधिय भीच कंदाळ भुजां ॥ १३ ॥
धुर ऊरर नांम अखी धरणी । मन पायक आदरियो मरणी ।
रज धूंधळ झाटक काढ रखी । भिड़ अंत उठाविज सोर अखी ॥ १४ ॥

जगजेठ डिग्गंतोय आभ झलै । हड़मांन कनां भड़ ढेब हलै ।
जुध जूटण झूझर कांध झळी । अरियाँ घर काळ जिसौ अमली ॥ १५ ॥

विप पूर महा रुद्र भेख वर्णे । तिण तांळरि नाळ दुगाळ तणी ।
करनाळ करा करमाळ करै । लोहचाळ विनै रत पीण लड़ै ॥ १६ ॥

चंद्रहास में तेज घणौ चमकै । हथनाळ में काळ झड़ै हमकै ।
अथमें नभ जोडर पेर उठी । अपठाँण यतै अमराँण उठी ॥ १७ ॥

रिप तूंगिय डाक वजै रहियूं । गुंजवै पर चंद भड़ाँ गहियूं ।
घुणियाळ उगाड़िय प्रोलघरै । क्रमियाँ मग जायल तूंग करै ॥ १८ ॥

सवळाँ पख रेंण विखै सुणियाँ । गणणाइह अंबर ग्रीधणियाँ ।
घुरराय अलूकरताँ घुरियाँ । करराय वडाँ लड़ कोचरियाँ ॥ १६ ॥

कवळ खित जींद चमू कलियौ । सतराँ सुंग्र ढेंबोय सालुळियौ ।
मुरजाळाँ री घूपर बाँध भड़ाँ । उण घालिय फाटिय घूंभ अडाँ ।
तन सूर म तेज करूर तपै । सुह हावत सीतल वात सुपै ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

खेल भुजां बळ खेलणौ । आहव मन ऊभेळ ।
वरदायक दीठां वणौं । वण पुळ री वाघेल ॥ २१ ॥
संग चौसठ लेवण चठा । खित वावन खेळाह ।
हव ढेबौ सभ्भ हालियौ । बिड़वा वाघेलाह ॥ २२ ॥

॥ छन्द त्रोटक ॥

धन लूसण कोट कटक्क धकं । वसुधा रिव ऊगम जेण विखं ।
पह फाटिय सूर उदे पर यूं । फजरे अर पाल धरा फरियूं ॥ २३ ॥
घुरजां चढ लीनिय धेन धकै । वित टोळण क्रूकाय वैण बकै ।
मिळियौ राव बूडोय दाव मतै । आय वित्त लिया दिन ऊगमतै ॥ २४ ॥
अवनो रज डेरण ऊपड़ियूं । त्रंब थेट न जाँण दई तड़यूं ।
लेय धेन सवाळख लोवलियूं । क्रमिया मग जायल तुंग कियूं ॥ २५ ॥
ग्वाळिया हय फेट धकै गुड़िया । अवती खेह लाटाय ऊपड़िया ।

पुळिया मग वेग पगां पणयूं । तेह कूक करै वोह लेग़ी यूं ॥ २६ ॥
घर मंडळ गैण दवै घुड़रै । भुरजाळेय सेन कियो भुहरै ।
लख अंध दिसा निस वेन लही। चांदियै कळ पाबूनै दोघ सही ॥ २७ ॥
घलियो गढवाड़ां में सोर घणो । ग्रह ढोल घुरै वह छेड़ तणो ।
पय भायल मायल बूंनपुणै । कछ देसांना आयल लीध कुणै ॥ २८ ॥
भेह रायल देवल एम भणी । तक सूझेहै जायलराव तणी ।

गढवाणां वायक

भणजै गढवाडांय लाज भगी । लोवड़ी कर सावळ साद सगी ॥ २९ ॥
दुख देण अमांनेय यां दुसटी । वळ थेन लई सगतां त्रिसटी ।
पूळ आयै यै नायकव ाल वळी । वध तेनाय देवल पूछ वळी ॥ ३० ॥

देवल वायक

भगग्या ग्वाळिया तन भीत भणै। कह वीर अमां वित लीध कणै ।

नायक वचन

जग जेठवी जायल नाथ जिग्रो । कण एठिय मेंदर साथ कियो ॥ ३१ ॥
दरकां अस आगळ वित्त दिया । करता जुद पाबुहुं चित्त किया ।
कर सावळ चारण ढूळ क्रमी । अंब वाहर बूड़ाए राव तुमी ॥ ३२ ॥

गढवाणा वायक

भणिया पण दाखब आज धणी । विखमी घणि आ पुळ आय वणी।
खळ लीनाय मो वित खार खघू । रजवाड़ां प्रभाकर राव रिधूं ॥ ३३ ॥
मज लेम कवांणेय मूक ग्रही । गोलिये भण थांणेय भूम ग्रही ।
पछ आयत वागड़ छोड़ थितं । पळटी घर धांधल पाट पतं ॥ ३४ ॥

कर सावळ न्हाठिय कंठ कळी । लख फाटिय वीर लखी लोवड़ी ।
सच सीधिय कोय नहीं सगती । प्रव पूगेय जायल नेर पती ॥ ३५ ॥
चुंग्र थाँणाय चारण हीण सकै । धवले दन कोलुग्र गाँम धकै ।
कमधाँ घर राज किसूं कहला । वत वाहर वीर चढी वैहला ॥ ३६ ॥
ग्राया वूंवड़ी गळ देत ग्रठै । कमठाळाँ रौं ठाकुर पाल कठै ।

देवल वायक

धांधळां कुळ सूरज ऊंच घड़ो । वरवा वरण घोड गयो बनड़ो ॥ ३७ ॥
वित लींनाय जींदिये एथ वगां । पड़िया ताय वेहळ तुज्झ पगां ।
ऊतारिय ग्रोडिय तो ग्रवळै । वत वीर हमे तोंय हूंत वळै ॥ ३८ ॥
मारुग्रा व्रन ग्रोठेभ धीर मतूं । पहु वीर गरीवांय पाल गतूं ।
गढवां वित लीनाय कोण गनै । कह कूकत देवल राव कनै ॥ ३९ ॥
घर घावांय वूंब दयां घरणै । सरणा यांय चूंथ लिया सरणै ।

बूड़ै वायक

थिर रांख्याय थेटुग्र जेण थनै । कह कूकत देवळ राव कनै ॥ ४० ॥
धांधळां घर वेध घणूं धुखियौ । दुखतै निस दीह म्हूं दूखियौ ।
विप सिंघज वीन थियौ वरधा । सगतां पिंड मुज्झ नथी सरदा ॥ ४१ ॥
दुख वींचख ऊतर राव दियौ । कळळाहट चारण साद कियौ ।

देवल वायक

झिट राव बुढ़ा पुळ एण फरै । घल डाक कूकाउग्र ढोळ धुरै ॥ ४२ ॥
घट मुज्झ भरोसोय तुज्झ घणौ । तुंग्र वीर पोतो ग्रासथांन तणौ ।
वड वंधव पाल समौवड़ियां । किरणाळ चौवीसेई कोटड़ियां ॥ ४३ ॥
सुत धांधल ढाल वरन्न सही । नटवाराय तुज्झ विरद्द नहीं ।

बूड़ै वायक

भुगतूं दुख वाद थयो भाइयां । बिरदावोय पाल बनो वाइयां ॥ ४४ ॥
दिग आविय लार लियां ढचरी। कंक आलण चारण तूं कछ री ।
तुम जावोय गोळ मथांण तजै । अतरै सजियो ग्रंव हूंत अजै ॥ ४५ ॥
कर दावत वाहर कारणियां । चढसी दुरवारिय चारणियां ।

देवल वायक

धन मुज्झ दरावोय जींद धकै । बूअड़ा मत कूड़ाय वैण बकै ॥ ४६ ॥
सत म्हांदोय नासत आयो सही । रजपूती निरेजम नांह रही ।
किम याल रसातळ डोर कटै । नरनाथ बूड़ा पुळ एण नटै ॥ ४७ ॥
दळ नांह मिल्या सुखमान दुवै । हव वीर अमां स्युंअ हाल हुवै ।
सवही समधी मिळ मेळ सला । भड़ एह नमाया मेवास भला ॥ ४८ ॥
वत जाय अमीणोय वार वही । नरनाह घरां आज पाल नहीं ।
रन रोवैय देवल दूख रणै । सिधपाल अमीणाय वैण सुणै ॥ ४९ ॥

॥ दोहा ॥

धांधळरो सुत रणधमल । दूजो वाहड देव ।
वरियांमां वाकारियां । जुजठळ स्वातक जेम ॥ ५० ॥
कूकै गढवणियां कळह । धेन लई खळ धूत ।
कांधळ मोटळ मेह करण । पांण वजो रजपूत ॥ ५१ ॥
धीचीजै गायांह । धरणां धावळिआळियां ।
पाबू दुख पायांह । आंपांनै मरणों अवस ॥ ५२ ॥
पकड़ै पमंग पलांण । कड़ आवध खट तीस कस ।
भड़ वळिया कुळभांण । धर खत्रवट पोड़ां धकै ॥ ५३ ॥

॥ वात ॥

इसांणा घोड़ा रजपूतां रे घरे या सो धांधलोतां ललकारिया जरां भीण करवा लागा, जका बगन मगनां ऊमां राव बूड़ाजी धकै कह्यो जद पाछो बूड़ै कणावारियै कनै कह्यो ।

॥ छन्द ॥

कोटवाळ बुलाविय राव कहै । परगै सब पाळोय गांव पहै ।
करणां तल वैण सबै कढजो । चारण वित वार मती चढजो ॥ ५४ ॥

बूबड़ी गळ बोलत राड़ वळा । कळ देखुग्र चारण देव कळा ।
अण ताळ त्रसूळांए चाड अगां । पड़सी हव जींदल आय पगां ॥ ५५ ॥

॥ दोहा ॥

दुरस पखां पर देख । कोय अमां बाहर करै ।
बरजै ढोल विसेख । सुण चमार कुबत्री सबद ॥ ५६ ॥

तांणे तूटै तंत्र । स्राप दियौ जद सूं इनूं ।
मनै न कुळ ना मंत्र । घूड़ो स्राप नुगुरो विवध ॥ ५७ ॥

ऊठां भूळ अपार । घोड़ां रा कर घूमरा ।
नींवै बाहड़ लार । क्रमियो थळवट रौ कटक ॥ ५८ ॥

आ सुण लोवड़िआळ । हरखै अत राजी हुई ।
दो अण पड़ै दुकाळ । सत नह ढटै चमार रौ ॥ ५६ ॥

उरस लगी अणिआंह । खेहाखमां झळ खवें ।
जोवौ जोगणिआंह । सगत त्रसूळ न चमकिया ॥ ६० ॥

मोर चढै खळ मारणी । महिष चढै भाळांण ।
बाघ चढै बाघेश्वरी । नाग चढै नागांण ॥ ६१ ॥

॥ दोहा माबळ रा ॥

जाखी खायोय जींदरौ । अंब लायोय थण ताळ ।
आयोय वेग उतावळी । धावोय धावळियाळ ॥ ६२ ॥

धीचीवियूं घोड़ेह । अम ईणौ वित आतळै ।
बूड़ा लज बोडेह । फिरस्यूं बैठौ फातळा ॥ ६३ ॥

आवै धूं आईह । सावळ रा सांभळ सबद ।
असगत भरताईह । जोगण खपरे जींदरी ॥ ६४ ॥

॥ स्नाप ॥

आग जायसो अऊत । जायो धासी जोगटो ।
कुखत्री कमध कपूत । वीर वचन अमणो वदे । ६५ ॥
हे न तायळो राज । तर चोयल भालो टकै ।
मरसो जुध नै माज । वीर वचन अमणो वदे ॥ ६६ ॥
आगे कुखत्री एक । तोजेही हूंतो अपट ।
सांप्रत कीनो सेख । नाच नचायो नागवी ॥ ६७ ॥
कुखत्री लोपी कार । बूडैनै जींदै वहू ।
चोडे चूंथ चकार । हमणो वित ले हींडिया ॥ ६८ ।
वित लेजावै विसटिया । पांण चकारां पाड़ ।
मारो ज्यांनै मोटवी । सगत असूळां चाड़ ॥ ६९ ॥
पीनो धारे पांण । हेकण चळुए हाकड़ो ।
रे कछ धरणीं रांण । आज कठी गी आवड़ा ॥ ७० ॥
नवलख सोरठ नाथ । तैं कीनो कुलड़ी अपत ।
मारण जींदो मात । वेग सिधावो वरवड़ी ॥ ७१ ॥
पावे पूंगी पार । नागां गढ गिरनार ही ।
महिर सूर जूं मार । जोगण खावो जींद ने ।। ७२ ॥

देवल वायक गढवणां सूं

जावै वित ले जींदरो । घोड़ां आगळ घाल ।
लोवड़ियाळां घर नहीं । पोहर म्हारा पाल ॥ ७३ ॥
कूके कमधां कोटड़ी । देवळ दुखदाईह ।
गढवां आज अळगो घणो । भालाळो भाईह ॥ ७४ ॥
लोवड़ियाळी वित्त ले । जावै जमरांणांह ।
कूक न पूगे कमध ने । अळगां अमरांणांह ॥ ७५ ॥
सेस फुणांधर सरकती । मेरु करत रुंडमाल ।
यण पुळ जो होवत अठै । भाई मो भालाळ ॥ ७६ ॥

देवल चख जळ देख । पावू मिरजो पकड़ियौ ।
धरियो म्हांसू धेक । विजलग हल्लां वाढियां ।। ७७ ।।

।। कवित्त छप्पै ।।

जितौ पटंतर सांच कूड़ जिम केहर जंबक ।
हरण वाघ किम होय होवे चींटी कुंजर तक ।
निशा द्योस अंतरो जेम वंबूल सूरंतर ।
रवि समान खद्योत सेस जळ साप समीसर ।
देवळ कह सगतां अगर पाट देख मत पांतरौ ।
है पाल अनै बूड़ै तणौ यतो वरोवर आंतरौ ।। ७८ ।।

।। दोहा ।।

धक बूड़ा कोळू धणी । राव हुवो तूं रंक ।
वायक सुण वाहर बुग्रो । धन ढेंवा धानंक ।। ७९ ।।
आयौ रांघड़ एक । फेटांणौ कोळू फलौ ।
दारुण रगतां देख । परळोकां नूं पूछियौ ।। ८० ।।

लोकायत वायक

गढवां री ली गाय । अप्रछन खोचो आय नै ।
बूड़ो तज आकाय । मिळ वैठो जींदो मई ।। ८१ ।।
वाहर वत दोना वचन । जग सारौ जाणेह ।
पाल गयौ परणीजवा । रावत अमरांणेह ।। ८२ ।।

सांमन्त वायक

कळपौ मत काछेलियां । दिल भीतर दुख दाय ।
सुत धांधळ सिध सांघणीं । रावत देयूं वताय ।। ८३ ।।
रावत आधी रैण । आयौ परणीजै अभंग ।
वकता सांभळ वैण । चित हरखांणी चारणी ।। ८४ ।।

॥ कवत ॥

करग अभागो कियां वदन वींटियां बुकांनो ।
घांनंक कर डाबियां क्रमै पायक चहुं कांनो ।
सिध रैवंत रा विरद दुरद घट देवल दीनो ।
विर रज सूं वींटियो भंवर परसेपैं भीनो ।
कमठाळ भीच आगे कियां भिड़ बंधै भाराथ रो ।
आवियो गूंजुए रूप यण रावत आधी रात रो ॥ ८५ ॥

देवल वायक दोहा

सांमंत नै सुभराज । कहियो गर आयो कमध ।
आमीणी अत आज । जाणां जायस नो नहीं ॥ ८६ ॥
भुजलग हथ भालाळ । गढवण आयो गूंजुए ।
तै कहियो यण ताळ । वीर चिरंजी रैवसूं ॥ ८७ ॥
विन देवल वालोह । जांणू हमें न जावसी ।
माई भालाळोह । आयो कोहर ऊपरै ॥ ८८ ॥
हालो सेहे सगतां हमै । भाखां जण नै भेव ।
कूक सुणे कासूं कहै । देखां लिछमण देव ॥ ८९ ॥

दूजी सगतां वायक

मेहण तजै मरजाद । अरक पिछम दिस ऊगमै ।
सांभळ साबळ साद । पाबू नट वैसे परो ॥ ९० ॥

देवल वायक

कमधज सांभळ कूक । धेनाळी जायल धणी ।
चूटै मांडी चूक । नरपत कुखत्री लला ड़री ॥ ९१ ॥
भारी तुज्ज भरोस । जिन में थित वांधे रह्या ।
सोची लीनो सोस । थारी मो वाली सुरै ॥ ९२ ॥

देवल करै पुकार । गढवण आवत गूंजुए ।
सुत धांधळ संभार । वीरा तो वाळा वचन ।। ९३ ।।

दूजो थां विण देव कुण । धावळियाळी धीर ।
बूड़ो खारो वोलियो । पाबू म्हारा पीर ।। ९४ ।।

पड़ै चखां पाणीह । जोर नहीं लागै जको ।
देवल लूंटाणीह । गढवण कोळू गूंदरै ।। ९५ ।।

मूको गोळ मथांण । पड़े इज पकड़ीजसो ।
क्यूं दीधी केकांण । कोळू रौ ठाकुर कहै ।। ९६ ।।

खीची ग्रस खड़ियाह । वित ले आगळ विसटियै ।
धांधल धूहड़ियाह । हव सह ताळी दे हँसै ।। ९७ ।।

नीवीं तुज्ज नजीक । सतवादी तो ज्यूं सदा ।
कमधज नग कोड़ीक । वाहड़दे ऊदल विनै ।। ९८ ।।

लख नव सगतां लार । दौड़े करजाळौ दियौ ।
पाबू कनै पुकार । काछेली आवै करण ।। ९९ ।।

।। छन्द त्रोटक ।।

वकती मुख सावळ देव बळी । कळपै चारणी गत हंस कळी ।
लग वेध ग्रमीणिय धेन लए । दुलहा सुण देवल साद दए ।।१०० ।।

गणणाय वळा वळ भींच गळी। भुरजाळां री मूंहर आय भळी ।
पड़ पायक पावेय वैण पुणै । चुण देवल सावळ पाल सुणै ।१०१ ।।

मिळ आयोय खीचिय वाद मतै। वह कायल बूड़ेय वात वतै ।
मनवै निय वायक पाल मरै । कल लाग वडो अनियाव करै ।१०२ ।।

पुळ आज वुरी ग्रत पाल प्रतै । जोय बूड़ोय जींदोय हेक जथै ।
विभ ना पुळ अंतर पाल वये । दिन आजकी देवल द्राह दये ।।१०३ ।।

उरडो कर सावल वोल अछै । पुळ आविय जोगण देण पछै ।

देवल री साद

न रही घर संपत धेन नठी । किरणाळ सिघायाय पाल कठी ॥१०४ ॥
सगती राय बान्धव सूर सती । जग जागत सूतोय पाल जती ।
जिय जावत धार विना जखंमी। वनड़ा आज वार घणू बखमी ॥१०५ ॥
सँवतिय गूगळ धूप खुरी । उण त्रंबां नै ताजण मार अरी ।
करती सर चंवर प्रांण कळी । घुरजांळाय खोसलई घवळी ॥१०६ ॥
परियंक तजो परिआळ पना । वडंगांण चढो हरिआळ वना ।
पुळ गैण विमांण चढी परियां । काळवी चढ दे सिर केसरिया ॥१०७ ॥
वजरै घर व्योम सिसू वरळा । करती केय श्रोण तणा कुरळा ।
खड़ आवत सूनांय खेड़ांय री । अर फाटक पेड़ उखेड़ांयरी ॥१०८ ॥
धिप सूतोय नींद मुरद्धर रा । गउ घाट उलंग हली गिर रा ।
भड़कै खुरही हय अग्र भगै । असमांन न सूझत धूंब अगै ॥१०९ ॥
न रही चख्र आंसुअ धार नरै । कुण पाल तुमां विण वार करै ।
असमांन गो खेह उड़े थळ री । वज हाक वळा वळ सावळ री ॥११० ॥
चढियो नह केसर पाल सुणो । त्रंब आगळ वाजेहे वेढ तणो ।
पाराधिय काळ जिसा पुळता । अस अग्र न आयाइ ऊलळता ॥१११ ॥
किय धू दुलहा पण मोह कना । अन वाहर खैग पलांण वना ।
राअठोड़ तुमे घर बेठ रह्यो । वित्त आज अमीणोय धाड़वह्यो ॥११२ ॥
सुण हाक जगे उठ पाल सही । वदळे तुरंगांण रे गाय वही ।
पाराधिय लोधिय आय मळे । मझ नायक पेमोय चांद मिळे ॥११३ ॥

पेमे चांदै वायक

गुण लेवत वात तुमां सुरही । भरणो कर दांम दयां भरही ।
जिण वार वुयो लछमंण जती। रत साहस सूर दातार सती ॥११४ ॥
कर हाकल भीलांए दूर किया। दरसाव दिनंकर जेम दिया ।
मणधार जुवार जती मन में । सुण सावळ कान लिये चित में ॥११५ ॥
सुत घांघळ केसर वाग सही । जगजेठ मणांधर नाग जेही ।

लघुता दुख दोवडियाळ लखै । धिक रोस मुराड़िय आंख धिखै ॥११६ ॥

॥ दोहा ॥

भूपन सूतो भूहरे । भर निन्द्रा भालाळ ।
अब सावळ सुण ऊठियो । कोप घड़े किरणाळ ॥११७ ॥

॥ सोरठा ॥

हे सावळ हाकोह । गायां रज मंडियो गयण ।
पड़े ढोल डाकोह । गाजे कोहर गूंजुए ॥११८ ॥
वरन ढाल आवे वुही । सूळ भाल चांडीस ।
नींद पाळ ग्रह भाळ नर । पाल ढाल पसांडी ॥११६ ॥
ममहर दांम सुजाव चढ । ऊमर धाव आलोच ।
व्याह लई इण वखत में । वेभण वाह बलोच ॥१२० ॥
जांगीयो वारे जुआ । जिणमे एकज जांण ।
घुरे आज गढ गूंजुए । सिर दधरेले सिवांण ॥१२१ ॥

॥ कवित्त ॥

अंग आळस मोड़तो नैण धोळतो निद्रालू ।
कर मेंहदो रंग कियो रोस भरियो रुद्रालू ।
परणेत पोशाक झिलंब पैरियां जवाहर ।
सिर दुपवेटो बाधियाँ झळळ सोभा जर जेवर ।
सुरतन तेज जीतो समर कोटां सिर नांमां कियो ।
डोरड़ा बंध मुजरा दयण इण विध पावू आवियो ॥१२२ ॥

॥ दोहा ॥

सुण आयो सावळ सबद । अंग पौरस अजरोह ।
कीनो देवळ ने कमंध । मोड़ बांध मुजरोह ॥१२३ ॥
सगनां विच ऊभो सुपह । धांधल ऊंच धड़ोह ।
कर जोड़े मुजरा करे । वरदायक वनड़ोह ॥१२४ ॥
आवे जींजलियाळ । देवळ सगत आसीस दे ।

भवयण नन भालाळ । रहण अजरोमर रहो ॥१२५ ॥

पाबू वायक

रे वायां बोली रहो । घेनां आमी घांम ।
यळ पाबू ऊभो पते । कोसा वळ रो कांम ॥१२६ ॥

गढवण थूं गेहलीह । कूकी जाय बूड़ा कने ।
पोते दी पेहलीह । मुरही लेवण री सला ॥१२७ ॥

अचळा मेळा आविया । सारंग रा सेहचाळ ।
अंव लीनो तीनूं तड़ां । पूठै चढसी पाल ॥१२८ ॥

सगतां री लीनीं सुरह । बीच चरंती वेड ।
कर आयो बूड़ै कहो । खीची ठाकुर खेड़ ॥१२९ ॥

सूकत अख जळहर सवद । लगां अगन रंग लाल ।
पायो दरसण पाबुआं । पूरै संकट पाल ॥१३० ॥

मेहंदर नै मारूंह । वातां ऊवारू वसां ।
चोड़ै सिणगारूंह । माथा हूंत महेस नै ॥१३१ ॥

आवे मोनू याद । बाई नह भूलो वचन ।
बाहर करवा वाद । आयो खड़ अमराण सूं ॥१३२ ॥

देवल वायक

वीरा गायां वाळ । अरियै फौज उथाळ नै ।
आज विरद उजवाळ । तूं सीहै घांधल तणा ॥१३३ ॥

जायल रो जूंभार । गांयां ले जावे घरे ।
विरदां वाळी वार । कीना इज सरसी कमंद ॥१३४ ॥

पाबू वायक

आज घलूं अममांन नै । बाई चोड़ै बाथ ।
करूं अरुण रंग समर कर । भिड़ज भंवर भारात ॥१३५ ॥

कलपत उक्त

देवळ छोडू जींद नैं । बाई पेमा लार ।
मारू मैंहदर राव नैं । तो लछमण अवतार ॥१३६ ॥

जिका अगे हूं जाणतौ । कूड़ी हुई न काय ।
लारे वीर लिरावसी । गडवां वाळी गाय ॥१३७ ॥

॥ सोरठा ॥

आयौ ऊतालोह रहियौ कौहर रात रौ ।
वित देवळ वाळोह प्रसण लियौ परभात रौ ॥१३८ ॥

इणमें इधक मौरौ देवल वायक

पाबू लोपी पाज । जींदै नृप मैहरांण ज्यूं ।
लोवड़ियांळां लाज । राखे तूं जिण दिन रही ॥१३९ ॥

पाबू वायक

देवल तूं मत कर फिकर मोटो देख मथांण ।
कळह विरोड़ुं एकलो घांसाहर घमसांण ॥१४० ॥

कह देवल कीभोह आंखां जळ न्हांखै यतौ ।
यळ सावत ऊभोह पाबू वरस पचीस रौ ॥१४१ ॥

फजरै अर फरियोह धेनां थट धरियौ धकै ।
कहै यम केसरियोह म्हैतौ आदरियौ मरण ॥१४२ ॥

देवल नूं धीरज दये सुत धांधल मनसूध ।
गायां जाती गढवणां खुरियां सू धड़ खूंध ॥१४३ ॥

देवल वायक छन्द त्रोटक

भुरजाळ अमैं दुख दीन भई । गढवालों तणी मरजाद गई ।
अण जात टळां ऊपहास तिका । जिंदराव करी मोय मांझ जिका ॥१४४ ॥

धर सीम अमां नह कोय धणी । तूं रखै लज लोवड़ियाळ तणी ।
त्रिय होय बहूविध कूक कियां । अर जाय अमीणिय धेन लियां ।।१४५ ।।

पाबू वायक

भालाळ ओपाळ स्युं बैण भणै। मिळ मूंछ ओहाळ रोसाळ मुणै ।
बाइयां मत कावळ बैण बको । धुर आज हुमी मोय हूंत धको ।।१४६ ।।
धट भांजण मो मन चाह घणी । अन कांम अनै चंव वार वणी ।
कह कूक करै किण कारणियां। चुप रो चुप रो चुप चारणियां ।।१४७ ।।

चारणियां वायक

निबळै दुख नीर झरै नयणै । गऊवों रज उड्डु चढा गयणै ।
बत खोसय लोन घणी वणियां। चुप रै किम बांधव चारणियां ।।१४८ ।।

पाबू वायक

दळ सैम फुणां धर मेर दहै । रिण वांवन जावत पाल रहै ।
रिम आभन छोडुअ फेर रसा । दुर जामिय जिंदोय कोण दसा ।।१४९ ।

गढवणां वायक

निपणां बत बाहर कोण नडै । चारणां धन खोस लिया चवडै ।
घट जींद कुखत्रिय धेम घणो । तिल तागत मांनत मुज्झ तणो ।।१५० ।।

पाबू वायक

कुमनै अरजाग चमू कणाणी । जद लाजत पाल तणी जणणी ।
घळतूं मयूआं मिर घाव घणो। नद जांणीय घांधल राव तणो ।।१५१ ।।
जोयमो धुअ मान पयाळ जमै । गयणा गडला धुअ एक गमै ।
महरांण मनूं पुड़ फेर महो । सगता थांरी लाऊंअ धेन सही ।।१५२ ।।

देवल वायक

कवळू पत लूंटण वैण कह्या । रवि अंसिय ओठेभ आय रह्या ।
गमिया धन नांह धणी गवळू । कछ देसांय आंण घटी कवळू ॥१५३ ॥

जुड़सी कद धेनांय फेर जुई । हव काछ अमां वोह दूर हुई ।
सुरही लिय केसर राज सटे । नवलाख री पीहर नांज नटै ॥१५४ ॥

पाबू वायक

पल सूह मूंड महेसर रै । सुंगले वित नाए कैसर रै ।
वदळै लेय जासिय जींद सही । कळ पाल सजीवत जोग सही ॥१५५ ॥

देवल वायक

निज वीर चकार साकार नहीं। रूपहां कुखत्रीपण लीध सही ।
गढ ओळ सदा मढ लाज ग्रहं । मढ ओठ गढां मरजाद मही ॥१५६ ॥

पाबू वायक

कमधां गुर ऊसस वैण कहै । रवि अंस अजे घर सीस रहै ।
रणहूं धलसूं रगतां रिप रां । खळ मैंदर जोगण रै खपरां ॥१५७ ॥

देवल वायक

वइयां मत साद दयो बौहळा । कमदां कुळ देख अपांण कळा ।
धेनां दिन खोस लिवी धवळै । कव कासुंअ वीर बकूं हवळे ॥१५८ ॥

पाबू वायक

यण रोम तदै जेयने देख यते । परणीजण गौ अमरांण प्रते ।
अर लेवूअ आपड़ आइ ऊरा । परते नह छंडोअ सिन्ध परा ॥१५९ ॥

अपना पण जींद नणी न रही । चारणां धन गेन लई सुरही ।
मंच पाबू कहै रज ग्राव निके । जिंदराव तणा दनमांन जके ॥१६० ॥

देवल वायक

गुपड़ाल अमोणाय पीर सुणो । गढवाडां में संगठ आज घणो ।
चित धांधल अंम रुदैव प्रभा । यम आखत चाल ग्रहे ओळभा ॥१६१ ॥
पड़तो जळ देखेय पार पखां । चित चायोय धांधल चोळ चखां ।
जल बूनम नांखेय सोक जळा । कुळ जींद करू जळ बोळ कळा ॥१६२ ॥
कळपै सगती यूग्र केण कजे । यळ ऊभोय धांधल पाल अजे ।
सुण देवल नीर म नांख चखाँ । जम भेट करू वन लीन जकां ॥१६३ ॥
मत आंणव धोखोय वेन मतै । जग सीस पाबू घट प्रण जितै ।
सगती सुण मोबिय आज सहीं। रिणवां वित लायांय लाज रही ॥१६४ ॥
गुन धांधल धीर दये सिधियां । पह पाल बुलाव्याय पारिधियां ।
धन लीधाय जायलनाय घलो । चांदियां वत वाहर वेग चलो ॥१६५ ॥

चांदै वायक

पुणचां दोय पाल सुणो प्रथमं । अव आसिय मो सुत जांन अपं ।
रस क्रोध ग्रहो तन धीर रसा । दुर जासिय जींदोय कोण दसा ॥१६६ ॥

पाबू वायक

रजपूतिय हीण लगै रटणो । नागकां पुळ एम नहीं नटणो ।
अरमी न विरोलय जोग अछै । परणासाय तो सुत आय पछै ॥१६७ ॥

चांदे वायक

मुग्ध लोचन चोळ करै मयनूं । असवै यम पातक लोकायनूं ।
नरमं मुन आज नणी नकसै । वरदायक पाल घणी वगसै ॥१६८ ॥

लोकायत वायक

वढ़ियां विण पाल पाछौ न वळै । टाळियां दिन आज तणौ न टळै ।

खट मांझियां वायक देवलसूं

मुण तूं धर राखण पाल मुदै । अड़ लावांए तो धन सूर उदै ॥१६९ ॥

पाबू वायक

अम वान वणाय वियां भणनूं । कुसळै घर राखेय तूं किणनूं ।
जिय ओळ लियौ मिस जीवणरौ । वर आयीय तोरण कापण रौ । १७० ॥

भरसूं सर देवळ रौ भरणौ । मांझियां आज पाल वणौ मरणौ ।
अर ते जगनाथ तणा अटका । विप जूंझ करूं बटका वटका ॥१७१ ॥

गढ कोळुअ खेह नखै गमनै । अर जावत मोनुंअ आंगमनै ।
मिळ आयोय खीचिय वाद मतै । चंद्रभांण डरां किम याण छतै ॥१७२ ॥

फजरै रवि ऊगण रै फरही । सत्र लीनिय देवळ री सुरही ।
कळ मेलांय कोरत सिंध कड़ै । सत्रवां पिड़ राड़ रचौं चवड़ै ॥१७३ ॥

मृत सूर कटै अणभांत मरै । यळ कायर सोध कठै अमरै ।
हिय हाथन ने सह लाक हसै । खित कोय अखूटिय नाह खसै ॥१७४ ॥

सिर रीझ दयूं हूं महेसरनै । कर साकत आंणीय केसरनै ।
महिपाल को आयस अंत मता । रज भाटक खेंग पलांण रता ॥१७५ ॥

सांहणी सुण वायक वेग सही । लख मोळिय साकत सार लई ।
काळवी पर त्यार पलांण कियौ । दुत वाल समार लगाम दियौ ॥१७६ ॥

हिय आगळ अगर होम हुओ । दोहुं पास रूं आंवळ बास दुओ ।
चकड़ो मुख कायज कंध चढै । काळवी कंध कोमंड वाल कढै ॥१७७ ॥

सांहणी विरदाय संवार सलों । जिण पीठ प्रसीनेय मेल भलौ ।
दृढ कीनीय दोवड़ संभ डळी । मंड पीठ खोगीर वनात मिळी ॥१७८ ॥

जिण ऊपर काठिय हीर जड़ी । लख पोस वनात्त जुहार लड़ी ।

गुनगांजिय पाखर पीठ घली । खत अंग ममी गजगाह खळी ॥१७६ ॥
तमतीम वणाविय साजन नै । काळवी सज आणिय पाल कनै ।
भर तीन कनावळ पैंड भरै । कमधां गुर पाल वणाव करै ॥१८० ॥
काळवी नक देवल ओर क्रमै । जत रावक गोरखनाथ जमै ।
कड़ पांटळ नावळ हाथ करै । फिर वैण कहै खग तोल फरै ॥१८१ ॥

देवल वायक

बरदायक नां अन रावतहा । दिन आजके जोखम है दुलहा ।
अब दागदखूं चढवान तुमै । हिंदवांण रा सूरज थांभ हमैं ॥१८२ ॥

पाबू वायक

बंध लाम्बोय सूरज पुत्र वियो । दिप उच्छन गूजर खंड दियो ।
असुरांगण विप्र अहा अहयूं । पड़दादोंग जूज कटै पहयूं ॥१८३ ॥
अन पान असै मब दोह वजां । उण गायद पाळिय नेर अजां ।
दुछनी मत देवळ आंण दये । हल एह असां घर आद हुये ॥१८४ ॥
जियणो तन मोह वृथाज करै । मरणो दिन आज कियो मुकरै ।
रंग भाव ससार नहीं रजणो । तन चेतन आज परी तजणो ॥१८५ ॥
फळ ऊंच मई जनमेम कियो । दिन चेतन मृथ विखे न दियो ।
अजड़ी घकधूण नकी तरछी । बुरचींतोग देवल नां बिरची ॥१८६ ॥
वट बारात मुजम भुजां वदियां । अणियां तुल गांभिय ओळ जियां ।
बमुधा परचंड कलाय वळै । मांझियां मन भीलाय लोह भिळै ॥१८७ ॥
हलकार करै नृपसं हंगियां । यम सांभळ चांदोय ऊमगियो ।

चांदै वायक

रग गुण नुमां नर भोम रहै । जिम पाल धणी यम वैण कहै ॥१८८ ॥

यह श्री मुख बोल सुणै अजरा । धर सेस तजै सुण धांधळरा ।
जत राव महा सिव पंथ जुग्रौ ।हाय ग्राज भालाळ त्रिकाळ हुग्रौ ॥१८९ ॥

गम राख धणी मन धीर ग्रहौ । बळ ग्राप धरौ मत वार वहौ ।
घन लावांय तोगांय भूट घणी । ग्ररियां थट मूंहर भांग ग्रणी ॥१९० ॥

सतरां सुंग्र ढेवोघ ग्रालुळियौ । दळ ग्रागळ दाबोय जाय दियौ ।
पिड़ पूठिय जाय ग्रमै पोहचौं । रण री हस देवळ ने रहैचां ॥१९१ ॥

जिण काज कहां फिर वैंण जुग्रा। हल ग्राप चढौ म्हेय त्यार हुग्रा ।

चांदै वायक सांवळां सूं

वत वाहर ग्रावांय कांम वजे । सांवळां हव धावोय वेग सजे ॥१९२ ॥

पाल री जंगी वणाव

करवा जुध सूथण सार कसी । दसतां कर मोजाय पाव बिसी ।
जगवार कड़ी जरदाळ जड़ी । उणवार ब्रूही लग मूंछ ग्रड़ी ॥१९३ ॥

क्रमतौ धर पाल सताव करै । फुरती कर पेटियबंद फुरै ।
करबांण ग्रहै कड़ बींट कसी । वड पीठ ग्रली बंघ ढाल वसी ॥१९४ ॥

कड़ भीउत ऊसस जोस कणां । ग्रंव वाहर धांधल राव तणां ।
जमदाढ छुरी चकमार जड़ी । कसमार मेखंज में भीड़ कड़ी ॥१९५ ॥

रण ठांमण पाल किसौ रटकै । लज ग्रालय सीस कड़ौ लटकै ।
हय द्वादस भांण मगां हरणौ । परटौ सुतरां पर पाखरणौ ॥१९६ ॥

नरनांह भुजां बळ सैल लियौ । काळवी दिस पाल पयाण कियौ ।

चांदै वायक

ग्रच भेलिय सावल ठांभ हमै । कछ ग्रायळ पाल विहंग क्रमै ॥१९७ ॥

भेह राय वलाबळ साद भयौ । गढवां थट ग्रायर माग ग्रह्यौ ।
कर ठांभौय ग्राज उपाव कणी । घर सूं रण जावत दूर घणी ॥१९८ ॥

वसुधा सिर जांमण पाय वळै भांभियां ने तो ठाकुर नांम मिळै ।

चांदै वायक सांवळा सूं

[illegible] [illegible] गोम पहै । सांवळा साज [illegible] पान वहै ॥१९९ ॥
[illegible] नं [illegible] [illegible] उठै । मरणो प्रव आयोह पाल मणै ।
[illegible] [illegible] बूहैव [illegible] मनै । वडवा पुळ पान हुवो त्रिभ नै ॥२०० ॥
[illegible] [illegible] [illegible] निरा धरो । कमठाळ हमें मन जेज करो ।
[illegible] [illegible] वैन [illegible] [illegible] । वडवा काज भीन कमो वेहला ॥२०१ ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हमै । कमठाळाय एकल पाय कसै ।
[illegible] [illegible] [illegible] किया पैहली । सिध नांदिय पाल तणो छेहली॥२०२ ॥
[illegible] पुन [illegible] गोम वणां । धुणियाळांरी जेहं पाल धणो ।
[illegible] कमठाळांय जात गही । जांगियां नृप हाथांय रेख जिही ॥२०३॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । सांभिजां नह पैंड पाछो मुड़णो ।
[illegible] [illegible] पान तणो [illegible] । मिळ भोलाय जांगण नै मरणो॥२०४ ॥
[illegible] [illegible] [illegible] नो दीध गटां । नागको पग आंगेय कैम नटां ।

ढोल नें चांदे री हाक

[illegible] [illegible] वैण पहै । [illegible] आगोग पान विडंग चहै ॥२०५ ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] वेग हकै । धुणियाळ मिळो भड़ पाज धकै ।
[illegible] [illegible] [illegible] वीय विनै । कड़ भीड़ कड़्ठ त पान कनै ॥२०६ ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । मारका भड़ आय करै मुजरो ।
[illegible] [illegible] [illegible] वंदूक कड़ा । भक चालणा हाथ वजे घुहड़ा ॥२०७ ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] रंगाग गोरखनाथ [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हुयो । [illegible] कुण [illegible] गींद दुयो ॥२०८ ॥

कव वायक

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] धणो । [illegible] [illegible] हुयो [illegible] तेज [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] हाथ [illegible] [illegible] ॥२०९ ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।

तन प्रीत तजी ऐह लोक तणी । घट चाह वसी सुरलोक घणी ।।२१० ।।
जुध पाल हुवो मन मोद जितो । अन भूपन आवत व्याव यतो ।
वरणी ग्वि ऊगम सेन विधू । चंद उगम सूरज पाल सिधू ।।२११ ।।
वर फूलवरी अर फौज वनै । बंधिया तण कांकण डोर विनै ।
पह सोढिय सांझ समै परणी । विण प्रात घड़ा अवरी वरणी ।।२१२ ।।

।। कवत्त ।।

मोड़ वांध जगमांय जगत सहै देव जुहारै ।
वांध मौड़ भालाळ पाल जुध करण पधारै ।
आरतियां अमरांण रांणियां कीनी राते ।
ऊतारे आरती परी भूलर परभाते ।
कांवड़ी लगाई वरण कज राते तोरण रींझियो ।
ऊससे पाल ऊगे अरक लड़वा कर भालो लियो ।।२१३ ।।
अरातुणी अध रात सोढियां गाया सोळा ।
अजहुंणी परभात हुए कुका चहुं दोळा ।
सोढी निस साहिव हाथ जोड़े हथळेवो ।
ग्रहै सो कर रिम धड़ा आच भुज लग हथ एवो ।
हलकार वीर वावन हलै चौसट जोवण चालवी ।
वाळवा वित्त देवळ तणो कमध चढै अस काळवी ।।२१४ ।।
करे पाल अत कोप निजर अर दिस्स निहारै ।
निपट कांम री निजर वाम तण री वीसारै ।
सुपरस करत चडाल पाल हीचोल भुजां पर ।
प्रसण त्रिया चख परस मिटै काजळ रेखा कर ।
अणियाळ ग्रहै लागो ऊरस सो उतोल ओपम सही ।
केवियां तणी जै कामणीं वलियाळ चूरण वही ।।२१५ ।।

।। वात ।।

देवल मन में जांणियो आज पाबू मारीजसी अर हमें पालियो विण रया नहीं जद दूजी सगतां ने कह्यो पांपां माथे मोटी ढांक आसी ।।

॥ छंद ॥

निजगाव आयो घर पाल नहीं । जुद्ध नेगिय जीदोय धेन जुई ।
भय सो बनयोन किमीक भई । हुव सीस समां बदनाम हुई ॥२१६॥
सगतो दोय दोढ़िय नांम नहीं । कमलादे रे आगळ जाय कही ।

सगतां वायक

गवही मिळ वात करी सगगे । लग वीकल वार घटी लखगी ॥२१७॥
तन आयांए स्नेह रहै तुरियां । असगांगी सूं पाल अधी तुरियां ।
असांण सूं झूंगर क्रोध चिते । परगेह जूते भुरैय कोट प्रिते ॥२१८॥
दोयगां मिळ पूलोये लाय दियो । कर द्रोह भलो गाव कांम कियो ।
धेयनो काज वाद उभे घरसी । मारका घरगा जूंझ ऊभे मरसी ॥२१९॥
कर पाल परंग हुवे कुरियां ।खळ खीचिय धेन तणी खुरियां ।
जिदराव लये धनपाल जई । हुव देस त्रणो सुंयलाय हुई ॥२२०॥
मृत मान करी मिळ वात मलो । घर दोय विचं तरवार घलो ।
गूंजवे पर आयुध पाल ग्रहे । रखवो कोय जावेय हाल रहे ॥२२१॥
कमळाग न दोढ़िय आय कहे । रण पाल वहे घर गाव रहे ।

माजी वायक पुत्र रतन भाय धुन

केंचिया मनवच्छत काम करै । छयपन अकेलोए पाल चढै ॥२२२॥
वळ आवल लोक मळां वळियो । मनवंछत पूत समै मिळियों ।
रिन वीर महायन को रण रो । मृतदोह कंवार लिछमण रो ॥२२३॥
धुरजा थट धूड़ सबै धन नै । दुजए रजपूत किसै धन नै ।
यळ मीर न जामण पाग यसो । जाय पूत अकेलोय पाल जिसो ॥२२४॥
कुळ दीपक जायोव जोग कणी । धिन और न आयोय दोय धणी ।
गंगियां वड सूरन संवरनी । जगजो सुत सीद्दुश्र पाल जनी ॥२२५॥

बूढा वायक

मन पाल चयो निजमाउ रहनै । केंचियां थट दोय हजार करै ।

घड़ियाल रखो त्रण पाल घरां । कह ढोल दये दळ मेळ करां ॥२२६ ॥
कमळायत आतुर माग क्रमी । सगतां संग पालण आप समी ।

बूढा वायक

विप पाल हगीगत केम वहै । करमाणंद पात विदात कहै । २२७ ॥
निज लागन दीह घणू नखरो । सुकनां दिन काल किसो सखरो ।

करमांदे वायक

रजमां झटके रविचक्र रथ । मिळियां दळ पाल वहाल मथं ।
मुण जीवण चील बुरै मन रो । चढतां हुय तीर चींगण रो ॥२२८ ॥

॥ कवित्त ॥

दिसासूळ दाहनो पूब जोगणी पुणीजै ।
डावो दिन मांनियो चंद सनमुखी सुणीजै ।
कहूं निरंजण काळ वास वडफर कुळां वीचे ।
सिद्ध जोग संक्रमण अलळ आरोह कुंत ईछे ।
सांवणू विजेदसमी सुकल तणां चवै नह पाल तण ।
आदीत चंद साखी ऊभै पाल जीन आमी प्रमण ॥२२६ ॥

॥ दोहा ॥

विधन लाख कोड़ां वहो । ईस दई कर ओट ।
कळे पाल आसी कुमल । कमधज भूरै कोट ॥२३० ॥
सनमुख भें सो सावडू । नाहर लाळो नाळ ।
डावी दिसनूं दरसिया । दळ लड़ घरा दराड ॥२३१ ॥
कमधज घाकी खड़ग कर । पाल प्रसण दळ पोस ।
तरण ममसत ताड़सी । सबळ गूंजवै सीस ॥२३२ ॥

॥ कवित्त ॥

भैरव डावी भणै डुगड़ियो मान दिरीजै ।

ओ राजा जीवणो पोहर रैकण ठेहरीजे
सब आड़ो देखतां पोर खोडस पांरभण
आठ पोहर यो मान चलैक भेड़ी ते सुण ।
जोम चिरवनी दत जरख रा मींह पोहर मोळेह सहै ।
नह दियो मांन पाबू नृपत करमाणंद वायक कहै ॥२३३ ॥

॥ दोहा ॥

अरज आप जननां अखूं । दिवस प्रळे री दोड़ ।
राखो थोने दांतियो । ठहरीजे इण ठोड़ ॥२३४ ॥

॥ छन्द त्रोटक ॥

परधानांहि साथ थकै पूछियो । कळ चालण पाल सवै कळियो ।
ललकार भिलां भड़ साथ लियां । हय पीठ पाबू असवार कियां ॥२३५ ॥
गूंजश्रो कर मालग कोट गहै । चारणां वन वाहर पाल चढ़ै ।

देवल वायक

भुरजाळाय झाल विडंग भणां । तूं बांधव खीचड़ियाळ तणां ॥२३६ ॥

पाबू वायक

किम झालुअ वाग सेलाळ कहै । वाडयां वन जीवत पाल वहै ।
सब मेळेय बूटोय वैठ रहै । गढ़वां वित जागल राव ग्रहे ॥२३७ ॥
वचनां मुझ देवल वित्त वुहो । हव जीवण फोटन जांग हुवो ।
धयनां अण मूक तुमां धरणो । मम देवळ आज भलो मरणो ॥२३८ ॥
टणयायण मोन न मांम टळो । मुळकं मिळ चुदय वात मिळो ।
विन धाड़ धकै व्रन री सुवहै । रजपूतपणो तन रो न रहै ॥२३९ ॥
खित मीग मरणा मनमें रखसे । हठ जीवण लोक संसार हसै ।

देवल वायक

अग जांगिय आगम वात भणी । वळ वीण ग्रमे जांणां चेन वळी ॥२४० ॥

प्रधान वायक

मरदां कोय वाग भलै मुरडो । अस चालव पाल कियौ उरडो ।

पाल वायक

ठह वाल अमां फिर आय ठगै । लठमार प्रधानांय सीस लगै ।।२४१ ।।
कमधज्ज भिळां हलकार करी । फिर गाहण फौलांय वाग फरी ।
हिय आगळ दोवड़ तोड़ हड़ो । कूंदियळ वळावळ वांध कड़ो ।।२४२ ।।
विच वूड़ेय आय थया विसमें । भुरजाळ वळावळ भील भगै ।
थिग पारन जावत लाय थटो । चल पूर कराडोंय सीस चढो ।।२४३ ।।
फरियां सुख आगळ भील फरै । कुण पाल तणौ विसवास करै ।
आहेड़िय पंथ हुवा उरळा । कमठां कर पीठ सरी कुरळा ।।२४४ ।।

चांदै वायक

कनलै चढ चांदिय हाक करी । फिर फांदल पाबुअ वीट फरी ।
काळवी अस पाल करै कढवा । चंद्रभांण रै मोर तुरी चढवा ।।२४५ ।।
रुघ आगळ पीठ न लाग रहो । अह गोडेय केसर वाग अहो ।
धुहड़ा सर मूछिय मांझ धरो । कुंदयल कळा गांय सीस करो ।।२४६ ।।
खिन मारग धीमैय पाल खड़ो । धम ऊठ बंदूकन वंघ धड़ो ।
चढवा कज वाहर पाल वुओ । हिक चंग रजी असमांन हुओ ।।२४७ ।।
विगटाळुअ गोम दिसा वळिया । पाअराधिय पाल धकै पुळिया ।
उतमंगिय वंध लिया अंववा । सांवळी कन आज उठै संवळा ।।२४८ ।।
केकियां सुर कंठ भरै कनड़ो । वेरियां सर तुंग खड़ै वनड़ो ।
विय सोतर पाल घणौ वलहो । दुरियां घर काळ हलै दुलहो ।।२४९ ।।
दिन अनक पाल तणो दरमीं । रजसूं हुय मंदर त्रीर समो ।
खित दावण भाव न खोलत है । दमही दिस दिग्गज डोलत है ।।२५० ।।
गुजुण सुअ सोहड़ दोड़ गया । कथ राव धकै यम जाय कह्या ।
गाजियां घट वींट मही मंढियो । सत्र साजण पाल परी चढियो ।।२५१ ।।

भड़ मौजिय बंग समेलयरा । मिळ आगाय सारंग मेळेयरा ।
उप बंगिग बंगन जींदल रो । धिक है आज एकल धांधल रो ॥२५२ ॥
दिन गूंद लई दळ मेळ सळां । कदई न पाल रहे कुसलां ।
सुफ नाराय वायक एम सही । निसचै घर आसिय पाल नहीं ॥२५३ ॥
दिन आज लगे लख फोट घनै । बुग्रड़ा नृप बोटिय लाज बिनै ।
गिड आयर जींदय धेन ग्रही । सुत लोवण सारंग बैर सही ॥२५४ ॥
चअ बीस त कोटड़ियां न नठी । पह बूड़ाय नो सिर धूड़ पड़ी ।
मिळ मैदर वीर चमू मुदियो । यह गांभळ सोक हिये उदियो ॥२५५ ।
श्रवणां नृप बंग यसा सुणिया । हिय हारव घोक मथां हणिया ।
वाजियो पिड़ व्योम विनै वगडो । जांणियो राव आज हुसो भगड़ो॥२५६ ॥

बूड़ै वायक

गदवां वत जींद धाड़ीत घणी । निम बाहर बंधव मुझ तणी ।
धर सारंग वैर मका बोहनूं । पर धाट न छोडय पाबूग्र नूं ॥२५७ ॥
ग्ररिसेन बह जत एक हियूं । त्रंय बाहर पाल हतै तइयूं ।
मुझ बांधव पाल जिसो न मिळै । वंस दीपक आज परो वेहलो ॥२५८ ॥
कुसळं दन केण प्रकार कढै । चंवरी जिण जायळ नाथ चढै ।
अंगियां फिर बंधव पाल यगो । जड़ काटण वंस कुदाळ जगो । २५९ ॥
मिटसी नह धोलाय जूंभ मुएं । जावसां सरगापुर पंथ जुएं ।
कर आतुर बुड़ेय राव किही । मेहड़ां थट वांटिय सोर सिही ॥२६० ॥
धन जाघड़ हाकेय जुंभ घणी । तिम सूर बंधे सेहै वार तणी ।
प्रभ जूंभण पाल हुतै पैहला । विडगां पर भींण म्हसो वेहला॥२६१ ॥
मुझ बांधव सांम ग्ररी मिळिया । ग्रस नायन हाथ ग्रबै ढळिया ।
भड़ घोटक संज करो भिड़वा । मन मांझ रही मवही विड़वा ॥२६२ ॥
थड़ ऊकट काट करावणनूं । सिध तेड़ियो है देवळ चारणनूं ।
सर चक्र ग्रमून करां धरही । नव लाग्गय पाट तपै नरही ॥२६३ ॥
हूत सेवग वेग गया हुत नै । दुग्वार लोग्राविय देवळ नै ।
महि मंडिय गैण प्रभा मुगती । सत चंडिय रूप पिया सगती ॥२६४ ॥

बूड़ै वायक देवल सूं

मुणियै यळ धूज गयण मही । न रही सम और सगत नहीं ।
पुणियै सगती भव पालण री । खत्रियां स्रग द्वार खुलावण री ।।२६५ ।।

।। कवित्त ।।

देवळ हूंतां वयण जपै बूड़ौ कर जोड़ी ।
सगती लाऊं सूरै अजड़ धारां अर तोड़ी ।
भई अकल मो भिसट कह्या कूवचन आई नैं ।
सगत खिम्यारा समझ विरद वडकी बाई नैं ।
कमवेस सिलैह पूरी कियां लियां चखां रंग लालरी ।
यम सगत हूंत वायक अखै पोरस जेठी पालरी ।।२६६ ।।

देवल वायक

।। यण मैं रूपग ।।

तूं बीरा वड तमण रसा मुरधर री राजा ।
तो ओळे खट वरण सदा विलसै दन साजा ।
तूं धांधळ पाटवी गरठ लीना भड़ घोड़ां ।
कियौ थनैं किरतार राव सूरज राठौड़ां ।
हिंदवांण तणीं आगळ हठी भुजां लाज भर भार री ।
पालरां वीर वांह्यं प्रलंब सत्रद न ढाल चकार री ।।२६७ ।।

।। दोहा ।

रैणां एक मनां रहौ । भूप उभे भाईह ।
कुण थांनै गांजे कळह । दोनूं वरदाईह ।।२६८ ।।

बूड़ै वायक छप्पय

आगे गयौ अंबुआल परव मोटे दिन पायौ ।
पूठै चढियौ पाल अनग हूंता खड़ आयौ ।

गजमेगो आरांग खगां रहियो तो खासी ।
मो जादवनां मोहर आज जींदो भगजासी ।
पेमां इळां विष रैहसी विमुख जुद्ध जो नां हुओ ।
कर जामी नेह कछोटियो हूं पाबू भेळो हुओ ॥२६९ ॥

॥ यण में परिया उचित ॥

मो आगे भज गयो जद न लखपत लूटांणो ।
मो आगे भज गयों कळह सारंग कूटांणो ।
खोखलई आखेट घूंमर तेगां अहियांरा ।
म्हे कूटे काढियो माट फोड़े महियांरा ।
पाल सूं हमें पहली परव म्हे भजियो सोवारनैं ।
विध विध हूंत जांणूं भळे जायळरा जूभारनैं ॥२७० ॥

॥ छन्द त्रोटक ॥

सहड़ां तन पोरस सालुळिया । विडंगां दिस जीण लए वळिया ।
डवढा उड़ तांणिय तंग दिया । कड़कांण पिलांण त्यार किया ॥२७१ ॥
लोह लाठ कड़ा जुड़ साथ लियां। दळ रूप रकेबांय पाव दियां ।
चढनां अस बूढेय राव सही । गहलो धण आवोय चाल ग्रही ॥२७२ ॥
विप कंपत कंठ भरे विलखी । मुणिया यम वायक चन्द्रमुखी ।

गैलो वायक

धर धीर रखे बुध राव धरो । कल ओ दिन मुझ पसाव करो ॥२७३ ॥
इक छूटिय मोतन प्रांण डकें । लख दीह भयंकर रूप लगैं ।

बूड़ा वायक

जगजेठ सुजाळ धनंजय नैं । नह मेळूअ एकल पाबुअ नैं ।२७४ ॥
पिट जूंभअ पाल हूतै पैहली । गहली गत बांह अहै गहली ।

गहली वायक

मन टांभेय क्रोध करो मरजी । अड़पै अहचाल कहूं अरजी ॥२७५ ॥

बूड़ा वायक

जुधराव वकारत जूंभ झला । वरियाम चढो वैहला वैहला ।

गैली वायक

हळकारन कीजत वेग हलां । भुरजाळै रा बंधव मांन भलां ।।२७६ ।।
घेखियां मन वंछत पाव धरै । किस नाथ अमां अरण नाथ करै ।
असवार हुए पुन राज इयां । वैरियां रा करो मत चींतवियां ।।२७७ ।।
जुध जोवोय जींदोय पाल जुतं । पिड जूंभ मवार मवो नृपतं ।
अहियां दन ऊगमतो गणलो । नृप धीर घरै यण आथणलो ।।२७८ ।।
गणिए समतो तन सार गनै । बहनोइय बांधव वाद विनै ।
जुध ताल जवाब दयो जिण रो । करसो जाय ऊपर थे किण रो ।।२७९ ।।
नड़ियो सन धीयह दीह नळा । सुत मांत वताविय पेल सला ।
वड राजाय ओ दन मो वगसो । चढ प्रात करीजोय राड़ चसो ।।२८० ।।
कर क्रोध दुहाग दयो किण नै। धारुआं जड़ साज चलो धण नैं ।

बूड़ा वायक

गम नां हिय बेगम जात गणं । हथ छोड़ अमां भुज जींद हणं ।।२८१ ।।
वढ नांम कढूं यह संघव नूं । नड़ वाद ढहै मुभ बंघव नूं ।
पह ठीक पड़ै किस पूरांय री । रवि साख भरै नह सूरांय री ।।२८२ ।।
अस चालन ओरुअ सीस अणी । धुर लाजव धूहड़ खेड़ धणी ।
हय द्वादस भांण मगां हरणां । परठो सुतरों पर पाखरणो २८३ ।।
खळ जावेअ लोवत वैण खता । पण लाजेय धांधळ-मुज्झ-पिता ।

।। नीद रसना अलंकार ।।

जिदराव लेजासिय वेन जदं । असताचळ ऊपर सुर उदं ।।२८४ ।।
हण जावत पावुअ जींद हतं । मणधार न झालत भार मथं ।
गढ कोलुअ सीस न्हखै गिरदं । नह जावत खेम फदे निरदं ।।२८५ ।।

जगिग्ग वन राव विमेक जतं । मनिया नह रांणिय वाल मतं ।
मुग गेह करे यम वेण भगुं । हथ छोड़ नतो उर कूंन हणूं ॥२८६ ॥
धणनूं कर धाकल क्रोध धरे । कळचाळ उछांटिय चाळ करे ।
मन साहग सूर मनूर मडै । छत्रपत्त मयूरिय सीस चढे ॥२८७ ॥
मथ तूटेय वावत खाग मणा । जुध साथ चढै वय वीस जणा ।
किन्हां छुह कीण वंघे कुरळा । अस हीलय पंथ किया उरळा ॥२८८ ॥
धुरजां खड़ आतुर माग घसो । जाय वंधु अकेलोए पाल जसो ।

॥ हय द्रागम छन्द त्रोटक ॥

गध राव उड़ावन खेंग घणा । तिण वार कणेठिय पाल तणा ॥२८९ ॥
रह अंतर कोस दसेक रसा । जिहमें नृप वाहड़ देव जिसा ।
दळ अंतर राव सुसाज सजो । गज मारण भीम गयंद गजो ॥२९० ॥
मन सूर मडील रजी मंडिया । चवदे सुत धांधळ रा चढिया ।
वड़ वेग कमाल खड़े वळ रा । थळ लांघ कटक गया थळ रा ॥२९१ ॥
वदनो मुख मूंछ अंहार वळे । तिण दीह अपाल सुं काल टळे ।
अम आवस छद रंग्यो उरसी । तन आंगह पीठ फबे तुरसी ॥२९२ ॥
खग खेंग उडै रज डंबर में । अणियाळ खवें भुज अम्बर में ।
अंग साथिय भीन इकीस सथा । हय डीलविया चढ आग हतां ॥२९३ ॥
मन क्रोध अमां पग जां मुरडे । कमधां गुर आज मते करडे ।
घस आग धुखे नन लाय नड़ो । कहदे जिण रूप भिलांव कड़ो ॥२९४ ॥
विक्रमी पुळ चामंड मींड वणी । तद वीर भयंकर राव तणी ।
धुर छातिय वज्र कमाड़ धरा । असवार कना भड़ अन्तक रा ॥२९५ ॥

॥ इति श्री पाल पोरमातने पुष्वायण विभागे श्रासिया मोडजी कृत प्राकृत रो समो संपूर्ण ॥

—

अथ उतरायण सम्प्रहार रौ समौ

॥ छन्द त्रोटक ॥

क्रमते अस फेरव राव कियौ । दुरियौ दळ टाळोय पाल दियौ ।

बूड़ा वायक

भड़ भागेय ओसर वाद भड़ै । कमठा हथ पाल रह्या कनड़ै ॥ १ ॥
रहियौ पण सावत नेतरती । जुध घात विभासत पाल जती ।

॥ रावणै रा वायक ॥

किम जांणत बूड़ाय राव कहै । विमुहौ रण मारग पाल वहै ॥ २ ॥
सत छोड़य सीताय कूंत सती । जिणवार टळै जुध पाल जती ।
परचौ यह राव छत्नौ पड़ियौ । अजयां जत रावण आपड़ियौ ॥ ३ ॥
अरयां सुंग्र पावुग्र आपड़सी । रह सीस रवां रथ नां खड़सी ।
भुरजाळोय जाय खळां भळसी । हिकवार यळा पुर घोर वसी ॥ ४ ॥
लखवार बंदुकांय लुंग लिया । करि अंग भालोड़ दुमार किया ।
घाहसाहर ऊपर घोर घलै । सत विसांय नाहर ठोर सलै ॥ ५ ॥
काळवीं पर धांधळ पूत किसौ । जड़वा रण सौ जमदूत जिसौ ।
घोअराग्व आज अड़ां घळसी । हाकड़ौ सिंध पावुग्र हाकलसी ॥ ६ ॥
सांवळी हुय देवळ आभ चढी । महि ऊड रजी पुड़ गैण मढी ।
डहडाकांय अंबर भोम डगै । यम ऊड़त पायक पाल अगै ॥ ७ ॥
हुय देवकळा मन सिद्ध हियौ । कत सूरिय ऊपर कूंत कियौ ।
जुध ऊडांय रोप तुपक्ख भळी । अरियां दळ आवृतियो अमली ॥ ८ ॥
वक होयय उवड़ाय पंथवरा । चढिया सह अम्वर मांच सरा ।
भुज भाथाय जोर सरां भरिया । जगजेठिय पायक झुंसरिहा ॥ ९ ॥
वदवा कज पावुग्र माग वहै । ढल धूपर ढंपेय व्योम ढहै ।
खित ताताय पायक पाल खड़ै । पुरवंष बंदूकांय धीव पड़ै ॥ १० ॥

गिर श्रांग नजे अड़ माग ग्रही । रतनांछिग अम्बर लाग रही ।
धुर येनांत श्रोद्रक श्राय धके । हकवाक अचांणक होय हके ॥ ११ ॥
पमंगां फिर पूठिय चाल पड़ी । जण ताळ पयांळेय नाळ झरी ।
कर हाकळ जींदोय राव कहै । वाळवो श्रस फेरेय वित्त वहै ॥ १२ ॥
मन धांहूग्र साथ हुवां सुमना । वढसे रावरी धिय पाल विना ।
कायरां फिट भीलांय वाद क्रमा । सह है कुण पाबुग्र वेढ समा ॥ १३ ॥
भिड़जां फिर न्हांखोय सीस भड़ां । ग्रत घालिय आगळ भील श्रड़ां ।
धेयनां सुमती कर हेक घड़े । कर पैदल पीठ रखी कनले ॥ १४ ॥
दहुं कोर अतालेय सीस दयो । लेय हेट रकेवांय कूंत लयो ।
धुरजां उर पाड़ोय फेट धके । रजपूतां रा मारग भील रुके ॥ १५ ॥

यण में संभावना और दीपक

धट रुधाय भीलरण चूरंग थर्णां । तेड़ पूत वजे रजपूत तणां ।
खत्रियां पण राखोय सीस खवां । तन धाधांय हार धकेल तवां ॥ १६ ॥
उर जेवर श्रंग ढकै जणियां । भर पीतळ भूखरण भीलणियां ।
तन धांयाय ठेळ चहोट त्रियां । श्रड़ धालेत अग्र ग्रही अणियां ॥ १७ ॥

॥ ऐ समाचार जींदराव अचलावत मेलावतां नै कह्या ॥

॥ श्रोटक ॥

गज घेर किलायक घाव घलो । हय न्हांक भिलां धड़ खूंध हलो ।
लख पायक पाधर मांझ लड़े । पमंगां उर फेट सफोल पड़े ॥ १८ ॥
सांवळां नृप वायक सांभळिया । विप वांधत गाढ विलखकुळिया ।

ढेवे वायक

श्रम वाग उठावोय राव अखे । पायकां भिड़ दंधेहै पाल पखे ॥ १९ ॥
मोरचा हय नाटोय खूंद मरो । कर तुंग वंदूकांय वंद करो ।
अरदांळाय पाखर धान जड़ें । मोरचे विण पाधर पांव मुड़ें ॥ २० ॥

रण रा हाका वायक

अस तूंग वळावळ दोट उठै । कजियो कर मांडाय पांघ कठै ।
अस झंपत खाग ग्रहै अरवा । भड़ दूजिय नांह दई घरवा ।। २१ ।।
हुए विग्रह भीड़ सवें हरही । कमधेसर पाल फतै करही ।

ढेबे वायक

कायरां किम आगुअ भीत कपो । जत रात्र तणो मुख नांम जपो ।। २२ ।।
वढवा कज गाव दळां वळगो । अमरांण है पाल घणो अळगो ।
कुण मार सकै मुख मूंछ कणो ।धुणियांळां रो ठाकुर पाल धणी ।। २३ ।।
हथवाह सवार न होय हुडी । गत बीज मवालुक मांन घड़ी ।
भर राखीय त्यार वंदूक भड़ां । अस वाग उठंतीय झाळ अड़ां ।। २४ ।।
मझ माखिय मेल न मींट मंडे । अण कारज गोळिय सोर उडै ।
विडंगां सिर हेकण ताल वळो । लड़वां कळ झंपेय मूंठ लुळो ।। २५ ।।
धर ऊपर थंभ नहीं धमरो । सांवळां हव पाल धणी समरो ।
वरियांग हजारां सूं हेक वढो । पोरसातन आवेय पाल पढो ।। २६ ।।
उड़तांण ग्रहे कर मूंठ अड़ां । भड़ धीवांय लोहड़ियाळ भड़ां ।
भुरजाळांय जोर रखो भुज रो । घण घोड़ांय सीस धलां गजरो ।। २७ ।।
कजियो कर नांम अखी करणो । मांझियां दन एक सवैं मरणो ।
फरका असमान सवार फरै । केइ पायक कांठिय सीस करै ।। २८ ।।
गघ घोड़ाय भांगोय वाद घणा । तद वाजांय चाकर पाल तणा ।
पायकां दिन आज वडे प्रव रो । जिंदराव सां जंग करां जवरो ।। २९ ।।
रज ऊपड धूंहर बंध रही । गज ठोर वंदूकांय हाथ ग्रही ।
भूरजांळाय कोट कियो भमंगां । पखरालळांय दोट दखै पमंगां ।। ३० ।।

।। वारता ।।

हमें पाबूजी फाटै पल कवै माया । ढेबो खीचियां रा कटकनै मामा सैहेत रोहियां ऊभो है, बीसल विण ।

॥ कवित्त ॥

कोसल गोर्जा विडंग खैंग हीरावळ खाग्णू ।
कैवन कपारेल भमर अरिणयां चढ भाखूं ।
नहियो सिगालिये भिड़ज ठांहियो वड़ो भड़ ।
पेमो हरड़ै पमंग कमै हठियो कंध कूकड़ ।
छोगा पीठ ऊँसळ चढे काळरूप सभ क्रोधरा ।
भड़ पाल तणा पूया खळां अस चढणे अण ओन रा ॥ ३१ ॥

॥ दोहा सोरठा ॥

अन कज मीस वरीस बाहड़दे नीचो बहू ॥
आया मरण इकीस चढ घोड़ा धांधळ सुतन ॥

॥ छन्द ॥

सुर पाल वंदूक नगं गुणियो । माँझियां कुण वाद करे मुणियो ।

चाँदै वायक

कर कोमन पायक बात कही । परठे जिंदराव निसांण पही ॥ ३३ ॥
हड़वे भड़ ठांमिय कूट हियै । काळवीं अस बावळ रूप कियै ।
तसलीमिय सांकड़ नाग नड़ै । पड़ साज प्रसेणिये फीण पड़ै ॥ ३४ ॥
काळवीं अस नौवड़ लूंब करै । चढिया सांवळा भड़ थूंब सरै ।

सांवलां रौ साद

सोढ्लां नाम वेचिय दूर घणी । धन बाहर पूंगोय पाल धणी ॥ ३५ ॥

॥ रावनां रा वचन सींचियां मूं ॥

अह बाटाय मारग वंध घणा । तेह चाकर रावन पाल तणा ।
नाळवै चिन पोड़ाय तूंग वणी । अरियाँ अस आगळ भील अणी ॥ ३६ ॥
दोनां सांवळां रण राग दूहो । हिकवार पाबू मन मोद हुवो ॥
जिन आगोड़ धाट धरा खड़ियां। अलंगां सुंग्र पावृग्र आपड़ियां ॥ ३७ ॥

जतराव सुं बाहर वेढ जुई । हव जायळ लाखांय कोस हुई ।
पुरबंध बंदूकांय राड़ गली । जिण ताळ उठंतिय वाग भली ॥ ३८ ॥

होय हाक खंहारव दूर हुओ । जांणियां सांवळां फिर साथ जुओ ।
रज डोरण धूंहर बंध रही । गिर धूंधळ पाबुअ वाग ग्रही ॥ ३९ ॥

सुज पूगोय खळांय सा सबळौ । उतराद सुं राव क्रमै अवळौ ।
वज सा सत्र खाट खड़ां वयंगां ।खेहड़ौ तज भाट किया खयंगां ॥ ४० ॥

जिण वार रजी गयणाग जप्यौ । कवलूपत मारग भूल क्रम्यौ ।
वैहळा वैहळा मुख वांण वळै । पौहचाळ उड़ात्रत ढेल पुळै ॥ ४१ ॥

धर सीस फुणां हय पौड़ ध्रमै । कुंदियल्ल कळायांय सोस क्रमै ।
फरियै दन काळ तवो फरियौ । अस छाड़व जींदह ऊतरियौ ॥ ४२ ॥

महि मीत खळां जिय मोचन लै । लख लोचन तेज विरोचन लै ।
सत्र तेज क्रमंद मरीच सिवा । चहुंआंण कटक्क लखो चकवा ॥ ४३ ॥

जींदराव वायक

दखसी कुण जायल ठीक हुओ । हाय आज वडौ अनियाव हुओ ।
लगती कळ आगम जांण लिया। कमधां दोय बाहर तूंग किया ॥ ४४ ॥

सत्रुआं मन वंछत मेळ सहै । रखवै तोह गोरख लाज रहै :
किय बूड़य मेळ वडै क्रत रौ । अमराणै सूं वेग वळै अत रौ ॥ ४५ ॥

हुय हेत हरोळिय पाल हुओ । वडवा कज बूड़ोय अग्र बुहो ।
धर खोस होसी यळ लूट घणी । अगळीं आज आंपांय नेस अणी ॥ ४६ ॥

चित ठाहेय वात अमां छळियौ । मरदां आज पाल बुरौ मळियौ ।
सह देखत पाबूअ थूंब सरै । काळवी मुख पायक नाच करै ॥ ४७ ॥

धूंधळी मळ पाल जतंद्र धकै । विजड़ाहत सातुअ वीस वकै ।
कोय कोढोय मैंदर भेद करणी । वाद री पुल खोटिय वार वणी ॥ ४८ ॥

कुसळै घर जावत पाल कसै । वसुधा पर खीचिय नांह वसै ।
फिरवै अस साज वराव फरै । पग रोप खरावोय पाल करै ॥ ४९ ॥

नह जीतांय वाद घणां नड़ियां । पिड़ जीतांय पाल धरा पड़ियां ।
नर हूंत सदा नर वेढ नड़ै । वढवा किम मांनव देव वड़ै ॥ ५० ॥

मुन धांधळ जीवत पीर सकी । धुरहे आज देवत हैंत धकी ।
काळवी कळळाहट हींस कियूं । लख ओळख ढेबेय पाल लीयूं ॥ ५१ ॥
धुर उभाय पायक राड़ धकै । विजड़ाहत ढेब दुगाळ वकै ।

ढेबै वायक

अग्णियाळांय टौर हुवा उमंगां । पखराळांय दोट न्हखै पमंगां ॥ ५२ ॥
गम राख जिदे मुख मून ग्रही । सतवीसांहूं पूगी है पाल सही ।
टग्गका मृत दीह घणां टळियौ ।मारका आज पाल धणी मिळियौ॥ ५३ ॥
खित मारग जींदोय राव खड़ो । पह पावुअ बांम चढै पगड़ो ।
कस ऊभोय जेठोय त्यार कियौ । दवढौ विरदावेय पाल दियौ ॥ ५४ ॥
घळ वाढ जींदौ अह फीण गळै । वरियां मांनै हाकळ पाण वळै ।
गढ राव अनै दळ भांह गनै । वहनोइय साळेय और विनै ॥ ५५ ॥
किय राव गंगाजळ सूं कुरळां । खर हूंड उठाय लई खरळां ।
दिन राव हरीहर रंग दिया । लंगरी आतताइय नांम लिया ॥ ५६ ॥
सिव सेवत पाल नवै सगती । जिदराव रै गोरखनाथ जती ।
कमठा गुण खाग खरा कसिया । अमलां छक पायक ऊससिया ॥ ५७ ॥
लड़वा भुज अंबर जाय लगा । जिणवार फुणावण सेस जगा ।
सुरखी मुख मूंछ अहार चली । किर दंत वराह खड़ी कंवळी ॥ ५८ ॥
मअुवां दन मांन वणौ सजियौ । करसां आज पाल अमै कजियौ ।

खट मांझी वायक

घग्णियापण सीस यती धरज्यौ । कर रास ताकीद मती करज्यौ ॥ ५९ ॥
यण ताळ विरोळांय जींद अणी। धन लावाय पाबर देख धणी ।
घऊडां वाग दौय हजार ग्रही । सतवीमत पावर देख सही ॥ ६० ॥
पायकां वन संधिय जोस परां । नायकां पर वंधिय नेत नरां ।
करवा जुध घोड़ांय तूंग करै । भड़वां रिण भील वंदूक भरै ॥ ६१ ॥
लग सीस गजां बळ पांण लसै । कमठां गुणले जमतांण कसै ।

अंवळा सिरपेच लियां अंबुवा । डाढियां गळबंध बुकांन दुवा ॥ ६२ ॥
सजिया प लवींट घले छुरियां । गुण चाढ कसी तन गातरियां ।
कुंदियल्ल कड़ां जड़ खाग कठी । पंखवाहर लागत तेल पटी ॥ ६३ ॥

पारधी वायक

धणियापण पाबुअ सीस धरां । कड़ भीड़य लाखह एक करां ।
असरेरिय चाळव सीस अणी । तद आंण तुमी नवलाख तणी ॥ ६४ ॥
दोयणां कुळ काढण चित्त दियूं । उर जोन प्रभाकर वंस इयूं ।
काळवीं चढ पाबुअ हाक कियूं । लड़वा प्रब धांधळ ऊंत लियूं ॥ ६५ ॥
जत रावजणी पुळ वाग भळै । हय थाट विरोलण भील हलै ।
कळचाळ रोसाळ वुहा कड़चै । यण ताळ वेनांल लयां अड़चै ॥ ६६ ॥
लुळ वाळ करां पुळ चाल कियूं । कर क्रोध कवांण कुंडाळ कियूं ।
धुरजाळ कुंदाळ अंताळ ध्रसै । हटियाळ कांघाळ कराळ हँसै ॥ ६७ ॥
धुरजाळ उलाळ अंगार धखै । नहठाल भिलाळ भालोड़ नखै ।
वळिया दळ दोय वजै वगड़ो । जिंदराव सौ पाल सजै भगड़ो ॥ ६८ ॥
गातरी बंध पाल तणा गणियां। जिंदराव तणा भड़ भूंसणिया ।
घूमरा कर पाधर दौड़ घलै । सांवळां पर जींदल जोड़ सळै ॥ ६९ ॥
उतामंगिय नाळउपाड़ियतां । धन वारुअ नै धाड़ैतियतां ।
रजवाड़िय जोध खगां रसिया । नह ठाळ वड़ा भड़ निधसिया ॥ ७० ॥

सांवळां रौ अग्रज

कदई नह नास चढां कनड़ां । भिड़जाळांय वंधत सीस भड़ां ।
डरणै पग पाछाय नांह डगै । असमांन उठावांय पाल अगै ॥ ७१ ॥
डस खावांय दांतांय डायळियाँ । जुध जोवोय भीलांय जायळियां ।
दळ थंभ तुंकार पुकार दोए । हिक साथ हुँकार फुंकार होए ॥ ७२ ॥
पड़गा हठ त्रापड़ वाग फरै । कळ झंप तुरंग छुकार करै ।
नायकां नर जींदोय वाद नड़ै । पायकां सिर ऊपर धीव पड़ै ॥ ७३ ॥

नेय पावत धेर नवै लख रो । सांवळां पर रूप बंधै सख रो ।
बिजड़ी हुय खांपांय चींह वकी । भिड़जां चढ टोप कटै भभकी ॥ ७४ ॥
गुण सीघ्र टणंक ठणंक गजै । विप छेद खणंक छणंक वजै ।
भुरजाळ रोसाळ उड़ार भरै । कर तीर विवार बंभार करै ॥ ७५ ॥
जिणवार भड़ै हथनाळ भड़ै । पखराळ तुरंग सैलाड़ पड़ै ।
भिड़जां पर खाळव फेर भरै । कमठाळाय पायक तूंग करै ॥ ७६ ॥
भिड़ंगाळ ससंकार मग्ग पुळै । लोहचाळ निसंक निसंक लुळै ।
धक धक्क रधक्क खलंक धुओं । हक वक्क जिदौडक चूक हुओ ॥ ७७ ॥
नहुंआंण कमंध ज भूठ छुटै । करवांण वहै तन आंण कटै ।
फुरणां वज सीकर ऊभ फरै । कयकांण किता सुर ध्रोण करै ॥ ७८ ॥
जिण वार नरां नर भील जुड़ै । पुळ धूज वड़ा असवार पड़ै ।
हय तांण वालूचोय ठांभ हलै । सिरदारांय ऊपर पांण चलै ॥ ७९ ॥
रजवींट पळेटिय बंध रखी । भिड़जां पर छूटत सोरभखी ।
लुळता सरपेच भुजां लटकै । पागड़ां पगतांण धरा पटकै ॥ ८० ॥
फटकार भड़ां नह थेन फरै । किळकार चांदो हलकार करै ।
धुणियाळ धुंकार टंकार धड़ै । पिज वारुअ पींजण घोट पड़ै ॥ ८१ ॥
भिड़जाळ लुळै कळ एम भगै । वहियां छट ऊपर आट वगै ।
नहठा दनवाद किला नड़िया । भुरजाळांय भींच भला भिड़िया ॥ ८२ ॥
मांभियां भुज ऊपर नेत मंडे । असवारां रा भू पर स्वेत उडै ।
फुरणांवज वाह हिहाड़ फरै । कळ गाय हांभाड़ त्राभाड़ करै ॥ ८३ ॥
पर बंधिय हेंवेय चांद परै । कण एठिय जेठिय वाद करै ।
कर सीस छणंक छणंक कटै । तरुआर खणंक खणंक तुटै ॥ ८४ ॥
विच ऊमोय मैंदर मेर वड़ै । पुरवायण पिच्छम वीव पड़ै ।
मारका भड़ पाघर पांव मंडै । घट कूंत कितां चढ भाज घड़ै ॥ ८५ ॥
हायुवां चढ भाळत वाग हयां । विडंगां असवारांय लूंथ वथां ।
फरड़ाहक बोलत फींफरियूं । छेकियुं घट घाव करै छुरियुं ॥ ८६ ॥
विप श्रोण खळक्क खळक्क वहै । धर लोय ढळक्क ढळक्क ढहै ।
मन सौंकन राछत आप मना । अजड़ाहत नाचत पाल तणा ॥ ८७ ॥

खुलियातन धारांय खार कंधां। कमठाकर घूमत नाह कंधां।
घर पाँण कवाँण आपाँण खरै। कयकाँण में वांण दुसार करै ॥ ८८ ॥
लोह चाळा रोसाल लंकाल लडै। काळ जाळ चुनाळ विचाळ करै।
खहै ऊठ वलावळ कूंत खवै। नड़ियौ पिड वाद जवाँन नवै ॥ ८९ ॥
धुरजां विच जायळ नाथ धरै। कठओति रौ सायव वाद करै।
वळवाग जणै जण सीस वलै। मांभियां पर मैंदर लोह मळ ॥ ९० ॥
धुरजां रज ऊपड़ सोर धूंओं। हळकार अंधारोय घोर हुआ।
जग जेठिय पायक चाँद जपै। यण वेला में सहस पाल अपै ॥ ९१ ॥
रण भोम न सूझत घूम रुके। धुर काँठळ वावळ जेम धुकै।
घट खंड किया भड़ वाज घणा। तन रै खत पूर दुगाळ तणा ॥ ९२ ॥
जंग पंग विढंग कृपांण झळी। अंग रंग वरंग किया असळी।
मन राखोय ऊजळ आप मणौ। तिम आवत पारस पाळ तणौ ॥ ९३ ॥
पायकां पर खाग घणू पळकी। हव लागत पाल तणी हळकी।
दोयंणां सिर वाढण आन दुओ। हरणां खुर ढेब सवार हुओ ॥ ९४ ॥
फरकी असलां सांय झांप करै। कळपांण अठीरिय ओफ करै।
जिणवार वळांराय तौर जड़ै। अस जांण कळां राय मोर उडै ॥ ९५ ॥
वंसळी सुर पंचम भेद वजी। धुरनाळ निखादुअ नाद गजी।
क्रमती सहनाय वजै कुरजी। खित बोलत मोर घणु खुरजी ॥ ९६ ॥
कायरां महराय गंधार कियौ। दुखतै सुर धेनांय त्रांभजियौ।
जिण वेळारौ देखण काज जुओ। हय कंठ धईवत नाद हुओ ॥ ९७ ॥
धर भार उतारण काज धुरै। सुर वंधे हैं सावत सात सुरै।
धुरजां भड़ लागत सोर धुओ। हव जंग संपूरण रूप हुओ ॥ ९८ ॥
धर सीस घणू पय पौड भ्रमै। काळवी कर हूंकळ खूंद क्रमै।
विध वागेय सावछ आय वळै। भुरजाळां री टावळ लाय भळै ॥ ९९ ॥
फिरजाय नमंनम लेफररी। धमकाय रमंझम गृघरही।

॥ दोहा ॥

नम नम धम धम नाचती रमझम अपछर रीत।
तिम तिम यम पावू तवै वालां खम खम वीत ॥ १०० ॥

कळहळ करती काळवी वळवळ फरती वाज ।
खळदळ धरती खूंदती जळ मिळ तिरती जाज ॥१०१ ॥
रमझम पाखर रोळती धम धम पौड़ाँ धम्म ।
धम धम पाबू धीरपैं खम खम घोड़ी खम्म ॥१०२ ॥
कांछां तोनैं काळवी आंछौ मत कर आज ।
वाछौ मन रायां वधै पीछां समंदां पाज ॥१०३ ॥
भांण तमासौ भाळवी मेस टाळवी माळ ।
करूं गरक रण काळवी जांण चाळवी झाळ ॥१०४ ॥

पाबू वायक

धुवई सगळे अम आज धरै । काळवी किम वाज ताकीद करै ।
धमए तोहि धीरप वैण धरूं । काळवी खिमए गरकाव करूं ॥१०५ ॥
रुंडमाळ घलूं गल मैसरए । किम आंपत झांपत केसरए ।
धुर चेतन जोत मई धरणी । काळवी मम नांम अखी करणी ॥१०६ ॥

॥ दोहा ॥

भुज भळ हळ भालोह । खग जळ हळ खांयां खवै ।
वीसोतर वालोह । दोयणा उर सालौ दुलह ॥१०७ ॥
इहगां धन आडोह । पग गाढौ गिर मेर रुख ।
लोहां बळ लाडोह । कवियां जड काढौ कळह ॥१०८ ॥
हरखै अपछर हूर । वीर वकै जस वांणियां ।
सारा है मुख सूर । पाबू री पोरस पणौ ॥१०९ ॥
भाळै कोतक भांण । वावन चौसट जस वकै ।
रंग है पाबू रांण । वनड़ा गायां वाहरू ॥११० ॥
सोवन भळहळ मेल । कह वाजी हुंकळ कळळ ।
जिण पुळ सावळ झेल । घोड़ा मिळ मैदर घलै ॥१११ ॥

मेदररी आतवी दाकल

॥ दोहा सोरठा ॥

अम नावै धररांह । लागां खग पाछा लयै ।
अइयों असवारांह । पाछा नह फेटा पड़ै ॥११२ ॥

कर फेरव कूंतांह । गाढे वळ मूठाँ ग्रहौ ।
रे फिट रजपूतांह । वागां भल पाछा वळौ ॥११३ ॥

तुरंगाँ आता लेह । रानां वळ गाढा रखौ ।
वाळा पधरा लेह । ऊठै नह आठूं अगे ॥११४ ॥

पुणचां अज पंखार । लुळता सर मूठी लगै ।
ते वाजै टंकार । पाराधी डोढा पुळै ॥११५ ॥

पाळां ऊपर पात । वाढ झड़ै वीजू झळां ।
हेड़वीयां खड़ हाथ । धुरजाळां धोरां धकै ॥११६ ॥

साँवलाँ रौ समरण

लीनो चढ लारौह । भूलां वंध खागाँ झड़ै ॥
खळ लागौ खारौह । आवै धाँधळ राव उत ॥११७ ॥

आड़ीला असवार । गुणचाळौ नाँही गुणं ।
पाबू वेग पधार । वेळा तौ जेड़ी वणी ॥११८ ॥

मेंहदर तणी मणीह । माथै सूं खंचणी मुकर ।
ढाळौ भंवर धणीह । धोरां सूं घोड़ाँ धकै ॥११९ ॥

छन्द भुजंग प्रयात

झली वाग पाबू रहे नांहझालो । करै खूद मादी थई वाद काळी ।
कड़ी भीड़ लग्गाम जंजीर कूंची। उड़ै तो बुरच्छी दसै वीस ऊंची ॥१२० ॥

फरै पाखरी जो पराँ लागफीली । ठहैं फ़ेट दंती करी माग ढीली ।
यसी ताल में पालरी वाग ऊठी खळाँ सीस अणगाळ री वीज खूटी ॥१२१ ॥

करै वाद ओजींद हंदौ कणौठी । जणी धूपरै आवियौ पाल जेठी ।
घळै खाग रीठौ हुओ ओणगारौ। खळू मंदरी सांवळां लाग खारौ॥१२२ ॥

वळे साँवळाँ भूवलाँ घीव वाजै। गुड़ै भींच ढैबै तणा व्योम गाजै ।
धणी सेवगाँ भीड़ में वेल धायौ। उठी वाग यूं तेज रौ पुंज आयौ।।१२३ ॥

विछुटौ रवि कोट ज्यूं वादळाँरौ।सत्रां सीस आयौ धणी साँवळाँरौ।
चढाँळौ भुजाँजोर सूं आभ छायौ।उणी वारमें पाथ सौ पालआयौ॥१२४॥

दिठोडा रचौ मोज को भोज दोड़ी। मळौ पाल जाडा दलांसीस घोड़ी।
वरै हाकळै पाल भो गोळ कूटैं। असव्वार फ़ेटाँ धकै धूज ऊडै ॥१२५ ॥

वंधाथोर वंधे छुटै नाल घोरे । कड़क्कै मनां बीजळी च्यार कोरे ।
पटो गोर उठै छुट्टो हाथ पारो । तुटो रात आधी विखै गैण तारौ॥१२६ ॥

धपावै नरांसूं परी दूध धायो ।अणंकाळरी मीच ज्यूं पाल आयौ।
पमंगां उनेळै मनां फील पूळै । वमै पांन छोगेल दोटै वघूळै ।१२७ ॥

केई धूमरा फांठदे पीठ कावै ।अखी हाक ओपाल औ पाल आवै ।
तुरंगां चढ़ाँ पाल मींचांण तूटै । चलै पांण न वांण वंदूक छूटै । १२८ ॥

वनै फेट ओ ओणसू सेल धोवै । जठी वाग वाळै तठी पाल जोवै ।
विडंगाळ झांकै करै आठ वाटाँ। चलै वायरै दोट सूं मेघ छांटाँ । १२९ ॥

भयंकार पाबू खळाँ एम भायो । अगे लाय लागी परे वाय आयो ।
करे खाग झाळै समौ वाद केहो।जिणी वार ओ वज्जरी आग जेहो॥१३० ॥

भनै भींच केता कडे खेंग झोला। टळै ऊंछकै भूपड़ै भद्र टोळा ।
जिणीवार वूड़ा लगू पाय जेठो । घणूं घुंमराँ फाड़ मानो गहेठो ।।१३१ ॥

तिके ओ विहंगो खळाँ चीलतावुं।परैहै लगी काळवी रांन पाबू ।
नमू हाकळै कांकड़ाँ पाल छाडी।करे गोट पाराधियाँ वेन काढी ।।१३२ ॥

पड़ा मेळवै ओवड़ो वूह गाडो । यतै पाविथो मैंदरो फेर आडो ।

मैंदर वायक

करो गोळ कूंडे दये देट कावै ।जो ओ कायरां भील लो वित्त जावै ।।१३३॥

निगे वूंद कांटा करो त्यार नोड़ा। घलो घाव आडा नखो फेर घोड़ा।
फरां खापटाँ पाखरां खील फूटै । चलै देर पाराधियां तीर छूटै ।।१३४ ॥

वळे पांण मूठां अहे पाल वाळा। करां ओंण धूंकार हूंकार काला ।
पन्नी मान दीपां नवेखंड पायो । यतै वाग वाळै धणी पाल आयो ।।१३५ ॥

वळे वागज्यूं राग चीनै विचारै। धरै नांम ज्यूं कालवी माम धारै।
भनो वाग पाबू मणू जोग भूठी। मनूं वाय गंठी छुटी हाथ मूंठी ।।१३६ ॥

पमंगां परै पाल जंपाल पाळो । सही देव भूटै कनां वीर चाळो ।

वगड़ै प्रधान वायक

सगा पाँण राखौ रखै भीळ सौदे।खळाँ वीज काढै भुजाँ सेल खौदे ॥१३७ ॥

वसूधा उखेड़ै जड़ां सीध बूंटी ।जती आजकी पाल री द्रल्ल भूठो ।
मरै राव जींदो होवे वात मोटी।खळां आजकी पाल री मींट खोटी॥१३८ ॥

थटी आय सारां भड़ां मौत थांरी। खुटै आज तीनू तड़ो खीचियांरी।
भलो जीव चाहो तजे खेत भागौ। रंडे गागराणौ अनै कोट रागौ ॥१३९ ॥

वचे राव जो औ भलो है बुरां में। घलौ दाव जींदौ घणू घूमरा में।
खही आव सारां अणी सात खूटो। छुटे घेन तौ जीवतां जीव छूटो ॥१४० ॥

अखै दीह केता कहैके अंधारौ । कहै रात केता हुओ सोर कारौ ।
कियौ खेह कूंडौ बंधी ज्यूं कनारी।भड़ां सूर सूंणे पाल रौ तेज भारी।१४१ ॥

वंचे राग स्वारौ लगै एक वेकी । चलै काक केकी भळे वाग छेकी ।
मिल्यौ ब्रह्म सूं ब्रह्म सौ ध्यान मायौ।पमंगेस देवेस रौ तंत पायौ ॥१४२ ॥

दई जुद्ध संध्या भड़ांजस्य देखी। करी अस्थ विद्या मणां एक मेकी।
पिले रान लागां तिगै ठेक पेरै । फरे बाज चक्री रसी बाल फेरै ॥१४३ ॥

हुवो पाल आभास जंगो हिया में। पड़्यो जूंभ आंटै भुजंगी प्रिया में।
वजी वादरी काव लीनी न देरी। फिरे थाट पाराधियां वेन फेरी॥१४४ ॥

सजे घेन दोळी हुआ आप सारा। तथा चक्र विध्या भ्रमे जांण तारा।

पाल रिण जूंझ वायक

करै खेडछांनी सला लाग क्यारी। इयां घेन लीजे भड़ां इहगां री ॥१४५ ॥

रुपे राड़ चौड़ै हणू मेंदरा नै । रखूं खेम पेमांग ने जींदरा नै ।
मिळी जावती अंग है भोम माहे।ढळी गंगज्यूं हेम रा स्रींग ढाहे॥१४६ ॥

॥ दूहा ॥

कटे टोप वगतर कटे, पाखर कटे पिलांण ।
धाड़ो कट धरती गई, पावू री केवाण ॥१४७ ॥

॥ छन्द ॥

फळां वुद्ध के सावळां फोड़ कीलां। भड़ां घेन काढौ हमें वेग भीलां ।

नगे नाग छोटो विने क्रन लीधूं। दिगे रोस मूठां परो हाथ दीधूं ॥१४८ ॥

॥ दूहा ॥

जैदरथी माथो जुई । अई भुकाओ आंण ।
आयो मंदर ऊपरै । पाबू इण परमाण ॥१४६ ॥

॥ छन्द ॥

भलोळी भली रान सूं खेग माती।भली तेग पाबू तणी सीस जाती ।

असवारां ने नायकां वचन

घलो सीस घोड़ां कळा भंप गोती।करै काळ री भेट वाजे कठोती॥१५० ॥

वुही खाग पाबू तणी टोप वाढै ।कड़ी टूट कांधै चली काठ काढे ।
करी टूक दोये वडो टूक काठी ।पड़ी तेग जाती घली हाथ आठी॥१५१ ॥

॥ दूहा ॥

जींदो जोवंतोह । पाबू बोवतो प्रसण ।
रटनो रोवंतोह । वीर मूवो भारत विचै ॥१५२ ॥

लड़ लोहां लोडीह । तोड़ी जड़ खींचीतणी ।
माती वड़ मोड़ीह । पाबू घोड़ी पेलतै ॥१५३ ॥

॥ छन्द ॥

हुई जीत पाबू हण्या जोध हाथं । पड़े वीर जूंभै महा चोळ प्राचं ।
उड़ै काळवी वाज संवेग आगै । लड़ै वीर पाबू भुजां गैण लागै ॥१५४ ॥

कड़ां भाड़ खीची हुवा एक कांनै। मुड़ै राव जींदो वडो सोक मांने ।
अड़ां छाड़ पाराधियां साथ आयो।भड़ां वाग ऊठी महा क्रोध भायो॥१५५॥

दिगे नाळ तोड़ा धुवै वाद दोढो। पड़ै जूंभ ढैवो वड़ो भींच प्रौढो ।
करै गोट घोड़ां वधै घूम कोरै । फरै थेन पाराधियां पाल फौरै ॥१५६॥

नड़ै वाद खूंदै घणो सीस नाळै। वळी काळवी पाल रा वैण वाळै ।
दये फेट थेनां थकै आय दोड़ै । भुगै सांवळा पाल रा पाल जोड़ै॥१५७ ॥

वुआ धूंवळा चीट सूं नेह वाळा । क्रमै भींच पाबू तणा कांग काळा।
नड़ै नेस पाराधियां थेन लीधूं । क्रमै काळवी धूंवळी रंग कीधूं ॥१५८ ॥

जती एक नखत्र में पाल जायौ। यळा फेर वो नखत्र नांह आयो।
जगं पाल अंगै महा सूर जोती। कियौ कूंत जौ ऊपरै ठोक नोती।
वहै माग वोलै सदा बैण वाई। भले पाल थूं लोवड़ीयाळ भाई ॥१५९ ॥

॥ कवित्त ।

वे भाथा वंधिया रजी पींजियाँ न हेटां।
कड़ भीड़ियां कटार मार गातरी कंठ रेठाँ।
धेनां रज धूंधळी उड़ै आगे अणियाळा।
भुगँ केक भाळियां भींण पोसी लूंबाळा।
सांवळां भीत्र अणियां भंवर काळरूप भूसण कियां।
काळवी पाल आगे क्रमै लगा पूठ धेनां लियां ॥१६० ॥

केई घायल कणणाता पटा भरता विण पारां।
दीसै वसिडोलियां लार लीधां जूंभारा।
कहता वातां कळह वुवा खाली भूथारण।
कई तूटा कामठा करी खागाँ धारांकण।
वंदुकाँ सीग खाली हुवा गण त्रण पौछै गोळियाँ।
कळ धाव दाव कहता कथन दौड़ै पावू दोळियाँ ॥१६१ ॥

पाल छाड़ पागड़ौ वाग सांवळां भलावै।
कर सावळ सिग्रही बुकांनी वंध छुड़ावै।
मींह हाल संक्रमै आप वहै पाळौ आवै।
करै धेन एक कोर वीट साँवळाँ वळावै।
वाड्या ज्यार देऊ सवां कर सलाम पायक नमौ।
रहे वीर कुसळ अर जीत रण अखी अमर पालक अमौ ॥१६२ ॥

आवड़ मांमडियाळ खोड़िया रह खेत्राही।
वूट अनै वैचराय उभै मांणच री जाई।
धूवड़ मादाईह राजवाई गींगाई।
वैहरी डहरी वून अखै देवळ अणदाई।
जोगणी जूझ ऊठौ जंमै वित्त नवै मंढवाळियाँ।
वधावौ वीर पावू मिळै धावौ वावळियाळियाँ ॥१६३ ॥

देवल वायक

भर मुगताफळ थाळ सगत गांमी संह जावै ।
कर कुमकुम रो तिलक पाल मोतियां वधावै ।
उतारो आरती ढोल वाज नै त्रिधाई ।
गावो मंगल गीत पाल सांचो मो भाई ।
लावियां धेन जीतो लड़ै विरदावो हव वाइयां ।
सिद्ध यळ सगत वावीय सरव पाल वधावो आइयां ॥१६४ ॥

देवल री आसीस

पाल वरन प्रतपाल पाल वंधव विसोतर ।
पाल प्रवाड़ा पूर पाल एकोतर उद्धर ।
पाल प्रथी प्रतपाळ पाल गउ ब्राह्मण पालण ।
पाल वडो सत पुरुप पाल निज वंस उजालण ।
सूरमा पाल जतराव सिव ओध कूंत आछेलियां ।
रह पाल अजर अणभंग अमर कहै वैण काछेलियां ॥१६५ ॥
पालह पीरां पीर पाल अण वंधवां वंधव ।
पाल अभीरां भीर पाल पित माता संधव ।
पाल अवेलां वेल पाल अपखां पख पालण ।
पाल वरन प्रतपाल पाल गमिया वित वालण ।
सगत रा वीर धांधळ सुतन सूर धीर जीतण समर ।
नांनहीं सगत लूहर लये अखै पाल अजरां अमर ॥१६६ ॥
करण धावळीवार पाल धांधळ पौंहोचाळो ।
सूरवीर सापुरप भांणवंसी भालाळो ।
वरदायक वेगड़ो धमळ जस रथ कांवोधर ।
लिछमण रो अवतार कमंध हिदवांण विभाकर ।
सिध मरद करण वाहर सुरेह सुन धांधळ सुपखाळ नै ।
जल मांझ विरद लागै जतां भला सरव भालाळ नै ॥१६७ ॥

पाल वायक

पाल तुमां रजपूत पाल तुम नांना भाई ।
पाल भीड़ दुख पीड़ वेल कर टाळौ वाई ।
सात वीस साँवळाँ सगत सैंह रावळा चाकर ।
हूं बांधव रावळो कहै पाबू जोड़ै कर ।
नवलाख सगत पायै नमां तिम देवळ अणदायतण ।
सतवंत जती हुवजाव सिध मिटै तुज्ज जामण मरण ॥१६८ ॥

खित खौखर खेजड़ा नील रंग नीलां नीमां ।
घर धोरां धूंधळाँ सीमरन भंगर सीमां ।
खह परवन खागळतां नीर भरपूर निवाणां ।
वजी सोक गयणाग आव आई ऊडाणाँ ।
संप्रात हुवौ अंबर सुबध किर पाखाँ घर कंवळियाँ ।
देखवा पाल देवल दरस सगत हुई सह सांवळियां ॥१६९ ॥

पांबू वायक

घेनां लयौ संभाळ जोय मींटै जण जण री ।
टळो होय केरड़ी दांम भरदेयूं दुगण री ।
जाखी कुसळां गयौ कांण राखी पेमल री ।
जड़ काढू खोद नै लये गायां देवल री ।
ग्वाळियां वित्त वांसे घलौ सखरां देख संभाळियाँ ।
तारवै मींट आछो तरां लेवोय लोवड़ियाळियां ॥१७० ॥

देवल वायक

वीर अमां वतवाळ केत वंधी केवढ कढ ।
गढवाळां रखवाळ वार जीतौ तेगां वढ ।
त्रण दन री तरसाळ हुई थाकी घोड़ां हड़ ।
वछ ओडी वाछड़ां त्रंव नह पूग सकै तड़ ।

गूंदुवो जोन पावो गायां पूरो थाळ भराय जळ ।
गळ सूर चंद ज्यां लग अमर करूं पीर सिघ राव कळ ॥१७१ ॥

॥ प्राचीन दोहा ॥

सो गायां नरसीह सुण । पाबू आगै सगत ।
अण दन री नरसीह । गोभै बांधळ राव उत ॥१७२ ॥
रैणा कमधज राव । मणधारी रहजै अमर ।
वाळी ज्योंही पाव । तरी न झेलै टोगड़ा ॥१७३ ॥
पायां जळ पीसीह । खळ गायां खीजाड़ियां ।
कांकड़ कोळू सींव । नरजळ रीती नींवळों ॥१७४ ॥

॥ कवित्त ॥

पाल झंख गूंजुवो तोय कम दीठ त्रभै तण ।
कर धानुख टंकार मही रेली कमधां मण ।
पंडूरजळ प्रगळी खीरसागर गंगारुण ।
वळोवळी वीछड़ी पीये धेनां आपोपण ।
सिगाळ धवळ मोड़ी मुरह केई पीळी अंभाड़ कर ।
वाछड़ा झेल सांमी वळी ग्वाळ हकाई टोळ घर ॥१७५ ॥

॥ दोहा ॥

मगर खिणायो नागरी । पय बंधायो पाल ।
वित्त पायो नर वेगड़ै । देवल तणी दुझाल ॥१७६ ॥
पाबू गायां पाय । चाराणियां नै चांदिये ।
बगसी वेग बुलाय । धेन वळी सह धीवड़ी ॥१७७ ॥
नाव वाहा बैठा नडर । चौंडै गढवा साथ ।
कळ उकटवाळो करै । त्रेड वदी जिम वात ॥१७८ ॥

॥ कवित्त ॥

ठहियै ग दस टीक आठसां पैमां अवखां ।
नार थींन चंदरा पूरवळ दील सपवखां ।

वीस हूंत वीसळौ वड़ौ रिण जूझव जाँणाँ ।
दस सूं खाखूं दुभ्भळ कळह जमदूत कहाणाँ ।
पिड सात हूंत ढैबौ पड़ै ग्राग छड़ौ उवावरौ ।
पाल रौ भोच वाह्याँ प्रलंब साताँ वीसाँ रौ सिरी ॥१७९ ॥

॥ दोहा ॥

रगत ध्रपी रतनाळियाँ । प्रल ध्रपिया पंखाळ ।
ग्रसण घणा ले पौढियौ । ग्रड़ा परे ग्रेबुवाळ ॥१८० ॥

॥ कवित्त छपै ॥

जाँमकियाँ जगती पूठ भाथा ऊलळता ।
बंदूकाँ डावियाँ मूंठ त्राड़ी कड़ मिळता ।
घायल मघ घूमता फेर भोळी घर फिरता ।
निध्रसता कूदता गया ठेलाहूं करता ।
भरसौ कट हुंकै भीलड़ी जूंभ वधारचौ भागड़ै ।
काळत्री कंध थापोट कर पाल उछाड़चौ पागड़ै ॥१८१ ॥
ढाल डाव खूटिये पाल चकड़ा वळ खोले ।
साँवळाँ खग साँकळी कड़ाँ नागलेस सजोळै ।
हलकारे पायकाँ राव पोहरै दर रक्खे ।
सूर पार संक्रमो थयौ निन्द्राळु चक्खे ।
पोढियौ पाल नाहर पिलंग मिळिय जोत सूख चैनमय ।
पहरात चंद हाका करै सिंह ग्रग्राजै टूंकपय ॥१८२ ॥

॥ दोहा ॥

हींच मही घायल हुग्रा । जोया जखम जेताह ।
फिर श्रीमुख फुरमावियौ । रैवत वाधरताह ॥१८३ ॥
जीतो हूं राड़ाँ जवर । परवाड़ाँ उण पास ।
कवळी उजवाळी कळह । ग्रमळी भड़ाँ उजास ॥१८४ ॥

॥ कवित्त ॥

ग्ररक देख ग्राथम्यौ चाँद भुरजाँ पर चढियौ ।
निरख निजर ज्वाळनळ पैख मन संभ्रम पड़ियौ ।

बाग नणी यह वीच अठे निण कीध अखाड़ो ।
जिम आवा बान रा लूम लेसी खग लाडो ।
सगतां नै सूंपी सुरेहियां वह आयो उण वार थी ।
कैन्ते वीर आएण कियो सांमी समरू भारथी ॥१८५ ॥

अन्ध गयण अरक्क वाय वज विख्रम चहुँ वळ ।
कानेरे कूकंत करे केकी कोलाहळ ।
खग्ग दिना खांखळी तवै तीतर दिस उत्तर ।
गीधण करै गलार चील चोहंत वड़ां सिर ।
इळ चक्क लगे उदियावणो महा सूर भैचग मणां ।
भयंकर रूप लागै भुरज दतन कोट भूरे तणां ॥१८६ ॥

मुरधी दिसां धूंधळी रयण धूंधळी भयंकर ।
चडी रूपदे सबद तरळ भुरजाळ सहोतर ।
रतवर खावद रूप वली खांखळी वळोवळ ।
बोलै तीतर बोल अरण उदराद दिसी हल ।
अन पूरव ईसांन बुरा सिज्या वेळा वस ।
पंचादियो त्रिदोप तवै तसकर हूकै तिस ।
गोमाय जरख वक गूघ्रवां सिस कस वद आवत सुणी ।
मुख रयण लगै अन्तस मही आज वणू उदियामणी ॥१८७ ॥

॥ सोरठा ॥

सूंडाळी चहकेह । वक गोमम वीटो वहे ।
पीहरात आप खेह । भूरा रोळू भांमणा ॥१८८ ॥
दीसो नरवत वार । तूं भूठी अरजुण तरैह ।
अरजण गो अवतार । साचो धांधळ राव सुत ॥१८९ ॥
खीची खवबट सूं अलग । नवड़ा धांधळ न्याय ।
जींद ग्रही सुरही जिका । पाल दई छोड़ाय ॥१९० ॥

॥इति श्री पान पारमातने कव मोड़जी विरचिते उत्तरायण सम्प्रहार रो सर्गो सम्पूर्ण॥

—

॥ अथ बूढा रो समो लिखतै ॥

॥ कवित्त ॥

धुर जाळाँ ध्रसळताँ पुळे पाटले पुळाताँ ।
मळफंतौ पागड़ाँ अगे असवाराँ ताताँ ।
हाकळतौ साथराँ चा हत्र सलेवळ चड़ियौ ।
ताल छूट त्रापड़े आय बूढौ आपड़ियौ ।
विड़गाळ झाँफ आडावळै करपावे अंगार वळ ।
करोठौ पाल ऊपर करण आयौ जेठी आप वळ ॥ १ ॥

॥ दूहा बूढा रो बोल ॥

कर मुंहड़ो काळोह । किम जाउं कोळू कहंण ।
भाई भालाळोह । जो म्हाँनूं नाहीं जुड़ै ॥ २ ॥

॥ छन्द मोतोदाँम ॥

विछूटोय आवत बूढौय वार । हमैं ठंभ पाल तणा हथमार ।
नृभै घर जाय हणौं सिध नांज । हूं ऊभोय बूढौय बन्धु हनाँज ॥ ३ ॥
मिळे नह पाल म्हनैं जग मांझ । उखेडुह बूंट तुहाळोय आज ।
हणै मुझ बन्धव पावुह हाथ । न जासिय जायल जायलनाथ ॥ ४ ॥

कव वायक

जगै यळ मैंहदर खेत जिरांण । सुजांणत पाल धिखै समसांण ।
उठी लख राव तणै उर आग । दुरी हण पाल दए किर दाग ॥ ५ ॥
आयौ परणै धन दैर उभेल । पणूं पख हेकण मैंदर पैल ।
वरी धण पाल जती जिण वार ।चखाँ लख व्याव तणां सिणगार ॥ ६ ॥
चवैरत अम्बर पैं त्रक साख । पड़ी घर पाल तणी पवसाख ।
महावर वीर तणी हुय मीच । धखै सवळा अबुआळ रा भींच ॥ ७ ॥
पछांण्यांय जींद बूढौ पौंहचाळ । बूहो राव हेकळ काढ वेगाळ ।
हवो वित लाग घणूं हवणार । वुरै मुख कीनव जींद जवार ॥ ८ ॥

बूढा वायक

दये मन नीच म्हनें दिसटाल । कियो किर बांधव पाबु अकाळ ।
अणीयल आद अनाद उखांण । जमाइय जींद हुवो जमरांण ॥ ९ ॥
धकै मत आव न होवत धीर । बुहो विवनो आज पाबुअ वीर ।
कहे उर धीव दुसारण कूंत । परो खह घूरत सारंग पूत ॥ १० ॥

बूढै राव रा भुरणा

गिरै नभ खंग नटूटोय गोम । जती तुव अंजस खूटोय जोम ।
हुवै गन सम्भ्रम पेख हवाल । पड़े समरांगण हैकळ पाल ॥ ११ ॥

॥ परगैरा वैण ॥

कहे भड़ तोल मुजां पर कूंत । पड़ै नह भील पड़ै रजपूत ।

बूढै वायक

परगह हूंत कहे मुपखाल । यळा पिड़ ढंव गुड्यो अम्ववाळ ॥ १२ ॥
दियो मन बांधव कांसु अदाव । बुहो खग जूभ रह्यो जिदराव ।
महावर विर तणी हुव मींच । अखँ सांवळा अहफीणि रा भीच॥ १३ ॥
ठहोर ठहो सु गया पिड़ ठेल । हठोर पठोजु नठा जुध हेल ।
वढयो नह उजळ वीजळ वाद । छप्यो चंद्र भांण अमावस चांद ॥ १४ ॥
भले गत ईश्वर वीर भालाळ । कणेठिय एम हुवै तुभ काळ ।
वतावोय नाम न होवत वार । हुवो कुण पाल तणो हथमार ॥ १५ ॥

जींदराव वायक

अगै मुख जींदोय सारंग आंण । गयो घर पाल अमां दिय घांण ।
रटै कट सोगन जायळ राव । अनाहक आप वको अनियाव ॥ १६ ॥

बूढा वायक

नवै मत कै मुंह वोल त्रिजात । वहूं नह तुज्ज तणी सत वात ।
अज्ञानाय नांगुअ तेगांय भूड़ । कहूं मत वोल मुखांमुख कूड़ ॥ १७ ॥

जींदराव वायक

बकू नह कूड़ कहूं सत वात । सिधायोय पाल घरां इण सात ।
छुड़ावेय धेन लीयां सथ संग । खड़ंतोय तातिय केसर खंग ।। १८ ।।
मरै मम बंधव जे हथ मीच । सजीत गयौ जुध कोहर सीस ।

बूढै वायक

चवै किय जायलिया सरदार । लगी नह जांण गयो रैह लार ।। १६ ।।
हणैं मुझ ऊभांय बंधव हाथ । सिधावत ठाकुर ता खग साथ ।
रह्यौ जुध अन्तर भूलत राह । वचै नह पाल परै खह वाह ।। २० ।।
यळा घन पाल तणी गत एह । दखूं किय अंजस मांनव देह ।

जींदराव वायक

नड़ै जुध पावुअ खेम निपात । भड़ै रण मारयोय मैंदर भ्रात ।। २१ ।।

बूढै वायक

क्रमांयल जीव मरै इक कोड़ । जन्मै नह कोड़य मैंहदर जोड़ ।
कठोती विभै दिस राखम कोड़। हवै नह देव तणी नर होड़ ।। २२ ।।

जींदराव वायक

कहै तुज राव कियो सह कांम । न भूलोय बूढा हूं सारंग नांम ।

बूढा वायक

जणावत वैर तणी हव जोर ।न्हाठौ किम तात हणंत लंगोर ।। २३ ।।

जींदराव वायक

मुणै वड़ बोल करौ मत मौल । कहूं मत बोल व बोल कुबोल ।
यळा मुज बूठ उखेड़ेय आज । रया कुसळै कुळ सावत राज ।। २४ ।।
सहोदर पाल हण्यौ अण सात ।पिता मम आप कियो जुध पात ।
गुनै विण आप म बोलोय गैर । वीमांगत मुज्झ तणा दोय वैर ।। २५ ।।

मुणी गल एह बुहै सुपखाल । भिड़जां री वाग ग्रही भुरजाळ ।
आया हय जींद तणा खड़ एम । जलद्द घटा रवि ओठव जेम ॥ २६ ॥
दगै कर हाक सबै सिरदार । अवप्पत अग्र ग्रहो असवार ।

वूढा वायक

रह्यो मन सम्भ्रम सांनुज रांण । भरै जिण साख अथंतांय भांण ॥ २७ ॥
कहै दसमी सिस रोज निकन्द । वढ्यो तुज अग्रज वैर विलन्द ।
डगै न भगो मत्र जेहक डाक । उपाड़िये वाग यसी अयराक ॥ २८ ॥
तुलां थट संफळियो खताळ । नगो नग सीस घुरी हयनाळ ।
वजी हक गूंभ उठी सहवेड़ । खगां मुंह झूटत सैंभर खेड़ ॥ २९ ॥
हुवा रण छेह हठै न हनीज । कटै हथणापुर ओर कनोज ।
अणी सिर नांखत खेंग अमीर । वरा चख जूंझत पावूअ वीर ॥ ३० ॥
सरूठोय वन्धव जावन सार । जठै कुण मांडत पाव जूंझार ।
दुरी रिण ताल लखै जमदूत । पमंगांय छेळत धांधल पूत ॥ ३१ ॥
झड़ै वह वाट अणी मुख झेल । ढहै गज ढाल खड़ै पह ढेल ।
करीटिय रूप हुवो खळ काळ । वळीठाय सेल उड़ै विडंगाळ ॥ ३२ ॥
परोपर मानुज बांवव पीड़ । घमा घम सावळ वाज घमीड़ ।
भड़ांभुज सीस वन्धै भर भार । तुरां थट चाल वहै तरवार ॥ ३३ ॥
वलक्कत पूठ घण गज वेल । ढळक्कत ढाल पळक्कत ढेल ।
जुड़ै अस तांण रकेवांय जोड़ । रुड़ो रण जूंझत राव राठोड़ ॥ ३४ ॥

वूढा वायक

दयो उर बांधव पावूअ दाव । रवै जुध खेम रहै जिदराव ।
उभै गिर वैर रही यण एव । प्रयामण नीवांय वाहड़देव ॥ ३५ ॥
उठावांय कंन वकै असवार । नतोलांय जींद मथै तरवार ।
धरा पर जींद दहै खग थंण । चढै हय फ़ेट हणामत चूंण ॥ ३६ ॥
मुगो हक एम पनंगह मार । अगी थट मींच दयो मुख आर ।
तुरां थट वाग झली तिण ताळ । रकेवांय ऊतरिया रव ताल ॥ ३७ ॥

चलै रज घेर धूंग्रौ तम चूक । वड़क्रिम धू पर ग्रांण वंदूक ।
रही मन साजण जींद हरीस । ग्रकै वप तीर लगा इकवीस ॥ ३८ ॥
रतंवर धार वहै तन रोस । कमद्धज खाग करी विण कोस ।
ग्रखू सगती री मया हंस वेव । दल्यौ इणही खग सारंग देव ॥ ३९ ॥
हणू हव पाल तणौ हथमार । तही खिण चूकवियू तरग्रार ।
गरद्द मझार कियौ रिम घाव । पड़े धर सीस चलै नह पाव ॥ ४० ॥
रह्यौ विण सीस खड़ौ रिम राह। उड़ायांय ढाल ग्रहां हथवाह ।
उवारचौय जींदह ढालांय ग्रोट । मारू विण सीस थयौ मन मोट ॥ ४१ ॥
ग्रणी चकचूर थयो तन ग्रंध । कमद्धज घूमत होय कमंध ।
पखां दोय वंस तणी पर पाल । भालाळ री वांह वड़ो भुरजाळ ॥ ४२ ॥
वरूथोय जोमग ग्रंवर वाथ । हुवो हव पावुए एकण हाथ ।
वरा चक ढाकिय कोट वळीट । परां थट दीठ उगाड़िय पीठ ॥ ४३ ॥
वूहा खग जींद तणा खटवीस । वडे भड़ राव तणा इकवीस ।
भयंकर रूप गुड़ै नृप भूम । डरै खग झाट भगौ इक डुम ॥ ४४ ॥
हुवौ जिण ठौर वडौ घमसांण । नठौ तज डूमळ वाज निसांण ।
हणै सत्र तीस दसां निज हाथ । पड़ै चवरासिय घाव निपात ॥ ४५ ॥
वड़े प्रव नांज टळै विमुहाल । सहोदर न्याय वजै सुपखाल ।
वधी खग विखपै दीवा वलीस । चली गत देखल पंच चळीस ॥ ४६ ॥
कंठीरव वंस वधारय कूंत । पड़्यो समरांगण धांधळ पूत ।
कियौ वरवीर दळांरोय काळ । ढह्यौ नृप सात्रव वाळद ढाळ ॥ ४७ ॥
हणू जत जींद रही मन हांम । कणेठिय जेठिय ग्रायाह कांम ।

जींदराव वायक

धनो सिध वंस नमो चित धाव। रयौ मन चींतव जींदोय राव ॥ ४८ ॥
यळा पुड़ न्याय वजै ग्रवितंस । वड़ौ पौहचाळ सिवांरोह वंस ।
साळो ग्रर भ्रात विनै कुळ सोह । मिळै नह वूढोय मैंहदर मोह ॥ ४९ ॥
हुवा भड़ भेळाय होवण हार ।विड़ांगाय डोर झलै जिण वार ।
कटक्किय ऊठ ग्रथै किरणाळ । महा डिग संनर तुङ्ग कपाळ ॥ ५० ॥

बड़ा थळ लंघ महा बळवीर । भली पुळ आयोह जादव भीर ।
नवे नृप जायल व्याकुळ साज । रह्यौ रण मैंदर मातुल राज ।। ५१ ।।
अहाणांय सोक तणौ छप घेर । फवे अवसांण दियौ बुध फेर ।

मांमैं जादव वायक

हुवी कळपंत म राखव हेज । भणै गल मीमांय दक्ख भणैज ।। ५२ ।।
धुखी कळ राज करौ भुज ठाह । न होवत पाल अजे नरनांह ।
रहे गिर वैरन जोगांए रूठ । पाबु सह साम्रथ ऊभीए पूठ ।। ५३ ।।
सुणी गल पाल वडौ जुध सार । धरी अरिअंस कहे सहधार ।
भुजाळोए बांधव री पख भीन। तड़ांयळ पाल न राखैय तीन ।। ५४ ।।
लछम्मण ऊभोय पाबुए लार। करै कुण बुढोय जीम डकार ।
जरै कुण पारद काचोय जेठ । पचेजै राव बुढौ किण पेट ।। ५५ ।।
हुवो विण पाल बूहां अरि अंस। वसू पर मेटेय खीचिय वंस ।

जींदराव वायक

नारायण वाद रही यळ नांम। कहो कर तोल करां सोई कांम ।। ५६ ।।
पाबू सिध वीर वडौ पौहचाल । न सूझत मोहि होसी किम नाळ ।

कव वायक

भयंकर आथमियौ नभ भांण । जगी यळ आग बुखंत जिरांण ।। ५७ ।।
मणी चख भींच मटी मरजाद । चवै दिस तीतर चींगण साद ।
क्रमै घड़ ग्रीधण चील सकाम । यळा रवि झंफ हुवंत उनाम ।। ५८ ।।
करूर जूंभार फटी चख कंत । दवी रसणाय भवूकत दंत ।
रुनी किण ही विध होसिय रात।न जांणू हूं जांणै थूं गोरखनाथ।। ५९ ।।
उदै नभ सीस थयौ सिस आंण। विजांणूंय होसिय केम विहांण ।

प्रधानां वायक

पयेपत बैण सबै परधांन । जपै मुख कायर फोट जबांन ।। ६० ।।

दुरी सिर डील दयां जुधराव । घलाँ अधरात पवै परघाव ।
वूग्रो इसड़ो किसड़ो इक वाप । न छोड़ांय पूंछ वढो हव नाग ।। ६१ ।।

दमंगळ धूंधळ वेळ दुवाह । वचाळत पाल परै रस वाह ।
ढळां नख भूसण बैठाय ठाम । वचारत वाद तणी वरियांम ।। ६२ ।।

मजै भड़ खाग करी फिर म्यान। धरै उर जींदोय गोरख ध्यांन ।

परधांनां री मिसल

जुड़ै जुथ पाल थयो रह जीत । उभै मण कोहर पौढ़ नचीत ।। ६३ ।।

चवै तन कायल लोह सरीर । क्रमै भड़ सूताय जाय कठीर ।
थकेलोय ग्रौजग ग्राळस थोक । रह्या पड़ भील न राखिय रोक ।। ६४ ।।

प्रमेसर हाथ वड़ी परभात । ग्ररी पर घाव घलां ग्रधरात ।
रकेवांय खांच जमै दृढ रांन । जती सिर जावत जूंझ जवांन ।। ६५ ।।

रुपां सिर जाय खड़ाँ खग रीस । उडै झटका वटका हुय ईस ।
धुखै उर वैर न होवत धीर । कठठुत पावुग्र सीस कंठीर ।। ६६ ।।

जरद्दांए भीड़ कड़ी जमजाळ । पवै पर भींच खंचै पौहचाळ ।
ढळां वंध पीठ चढे तवे ढंग । खैरावेय खैंगांय तंग खतँग ।। ६७ ।।

होवे भड़ हाकळ हैवर हींस । चढै मारका भड़ पावुग्र सीस ।
मिळी ग्ररिग्रयां मन रंभ मजाक। कटठुत काळ सरूप कजाक ।
तोड़ा धुक वीड़ वंधै तरवार । चढै फिर जायळियो सिरदार ।। ६८ ।।

।। इति श्री पाल पोरसातने ग्रासिया मोडजी कृत उतराण वूढै री समयो सम्पूर्ण ।।

।। ग्रथ राती वाहौ ।।

।। दोहा ।।

टोप रंगावळ मारकां । भिड़जां रज भरियांह ।
राव पधारे पाल पर । पिड़ वज पाखरियांह ।। १ ।।

॥ [illegible] ॥

[illegible] नटोना दंग कुपा कड़ी टूपा करसए ।
[illegible] आलोजा मूठ नोजा घल्ल मोजा तस्सए ।
निळ [illegible] मेळा प्रेन वेळा गेत मेळा नच्चए ।
जिदराव मत्थं बांध जत्थं पाल मत्थं खंचए ॥ २ ॥

[illegible] मोरं मूठ श्रोरं गज्ज ठोरं वंधए ।
[illegible] घमोरं दंग नोरं नडा ठोरं संधए ।
[illegible] वायं थाळ नायं कान नायं खंचए ।
जिदराव मत्थं वांध जत्थं पाल मत्थं खंचए ॥ ३ ॥

[illegible] तोड़ा गज्ज प्रोड़ा जल्ल घोड़ा हत्थए ।
[illegible] तोरं कंध श्रोरं सार तोरं मत्थए ।
[illegible] [illegible] सोर भक्खं सिग्र वंकं श्रच्छए ।
जिदराव मत्थं वांध जत्थं पाल मत्थं खंचए ॥ ४ ॥

पंगू पयादं मूक सादं [illegible] मादं कद्दुए ।
[illegible] तामं वेग कामं नीस लामं वद्दुए ।
[illegible] गाटं वाज झाटं लोह लाटं लच्छए ।
जिदराव मत्थं वांध जत्थं पाल मत्थं खंचए ॥ ५ ॥

अंगं वलीठं रोस धीठं नेत्र दीठं नैणए ।
[illegible] करीठं ढाल पीठं खाग रीठं दैणए ।
मुच्छाळ अल्लं क्रोध मल्लं गल्ल वल्लं मच्चए ।
जिदराव मत्थं वांध जत्थं पाल मत्थं खंचए ॥ ६ ॥

[illegible] कुकानं पेच नानं जोज वांनं चंगए ।
[illegible] कुच्छी वाग गच्छी खूब अच्छी पग्गए ।
[illegible] गीमं [illegible] दोमं श्राप ईसं इच्छए ।
जिदराव मत्थं वांध जत्थं पाल मत्थं खंचए ॥ ७ ॥

[illegible] नायं [illegible] वायं सो सिवायं सद्दए ।
[illegible] वीरं [illegible] धीरं सिद्ध पीरं वद्दए ।
[illegible] तुरंगी [illegible] अगी [illegible] तुंगी मच्चए ।
जिदराव मत्थं वांध जत्थं पाल मत्थं खंचए ॥ ८ ॥

संज्जू घटांना रातवांना खूविडांना अंगए ।
जोगिन्द्र जूना गल्हूना क्या निमूना जंगए ।
द्वै जुद्ध लग्गा बांह भग्गा प्राण सग्गा पंचए ।
जिंदराव सत्थं बांध जत्थं पाल मत्थं खंचए ।। ९ ।।

।। कवित्त ।।

डावी भैरव चहक वाम गूघू घोरारव ।
है नाहर सावडू वाम जाम्बक बोले तव ।
फरक दिसा हव दंत फेर फोई धोमाजळ ।
सत नारी ईसांन भई धापंथ अखै पळ ।
सतसौ सिलहदारां सहित भेस पराक्रम लाजमय ।
जिंदराव नाम गौरख जपै मोर पीठ असवार हुय ।। १० ।।

।। छन्द त्रोटक ।।

चढ राव सबै भड़ खेंग चढै । करहा अस कोहर माग कढै ।
कळ चालण जायळ-नाथ क्रमै। चह बंध धुखै अधरात समै ।। ११ ।।
पमंगां खड़ सैल भुजां पळकै । ढहचाळांय पीठ ढळां ढळकै ।
दळथम्भ बुकांनिय बंध दियां। केइ भींच वंदूकांए डाव कियां ।। १२ ।।
भुइयाळ धकै खड़ पीठ भड़ौ । कर ठोरत पाथर सीस कड़ौ ।
विजड़ाहथ बांधव लाय वळै । पाटळै अस एविय माग पुळै ।। १३ ।।

जींदा वायक

धुकती चह भ्रात क्रमू घर सूं । मिळसूं कद बांधव मैंदर सूं ।
जरदाळ बंधावत गाढ जठै । उर में धिक काळज भाळे उठै ।। १४ ।।
अर मेलूंअ आविय रात उरा । सरगां मग धीरेए सारंगरा ।
जुड़सी जम सादन पाल जमैं। हयमार मिळावूंअ वेग हमैं ।। १५ ।।
खळ काळ माथाळ खाथाळ खड़ां।भिडजाळ आताळ तानाळ भड़ां ।
जुड़सी भड़ ग्रीध अघी सांवळी । हिय मांभळ पैख उठी हवळी ।। १६ ।।
पंथ छांडिय ऊजळ वीर प्रलै । हरि जोगण प्रेतण भूत हलै ।

निण हत भयंकर व्याळ तिसौ। जिण वेळा रो जींदोय काळ जिसौ॥ १७ ॥
नड़या नर धांधल दाव लग्यौ । सड़ आवत सीनिय सार खंधौ ।
जतराव नर्मै सिर वंध भलौ । भड़ आवत आधिय रात भलौ ॥ १८ ॥
कळनाळ उड़ावत सूर कियां । नर पूठल दोय हजार लियां ।
धरनी हय पांचाय नान्ह धम्रू । गज हालिय वावव कोण चमू ॥ १९ ॥
धमकार भयंकर योप धमा । ततकार चडै जमदूत तिसा ।
नर नाहर कूट हणै नृपति । अवगत रि वाट ग्रही अपती ॥ २० ॥
गम जामात चायक गोरख री। निस घोर में खैंग खड़े नुगरी ।
रतवाह नजावण नागरणी । तेउ वाजन सूरांय वाज तणी ॥ २१ ॥
धन ताक निसाण जगी घुरिया। पींजिया रज धूंधळ पाखरिया ।
सयणां पर घालण घाव सही । जिदराव खड़े जमराव जही ॥ २२ ॥

निस देवतियां चायक

अर जागिय आधिय रात डरां । कमधां पर घालण घाव करां ।
अणचेतन घेर लई अणियां । जतराव जगावोय जोगणियां ॥ २३ ॥
गिधियां तन सींनजती जतियां। देयवो कळ पावू नै देवतियां ।
पुर साय भोकायव पेम पतां । जिण लीधोय आसंग पाल जती ॥ २४ ॥
मत ताराय गंगा मथै समयौ । अज नाह प्रभात्योइ ऊगमियौ ।
घड़िया अत ऊंठ अनन्त खयै । मझ रैण अजां लग दात मथै ॥ २५ ॥
पुर वंधरजी पड़ नाद पड़ै । खित खीमर हूत विडंग खड़े ।
कळचाळ पुळै नृप तूंग किए । नव लाख रो वंधव नींद लिये ॥ २६ ॥
विहंगां खड़ तारव आय वगौ । निस्रद्राळुअ नाहर नींद लगौ ।
दनमी दन जींदय दाव दियौ । अव रैणि रो चांदोई आथमियौ॥ २७ ॥
हय कोहर जोगण ऊमहड़ौ । खित पीहर खागुअ भींच खड़ौ ।

सूईयै चायक

भड़चाळ पलादांय हूंत भणै । गोळियौ भड़ आविय कूंठ गणै ॥ २८ ॥
जगराय भलांणांय आथमणौ । नग दीखत कोहर सांमहणौ ।

हूर भाल कहूं सुध राख हियै । दिस वायव कोळूग्र रूंख दियै ।। २६ ।।
केयियां सुर घोर सुं ग्रोर कणी। तेइ तीर सरोवर पाल तणी ।
भल वाग प्रधान कहै जव ही । सिरदारांय पाव ठंभौ सब ही ।। ३० ।।
धग पालाय मांड ठंभौ परियां। पागड़ा हव छांडोय पाखरियाँ ।
गध घोड़ाय राखांय दूर घणी । तस वाग भली तद मोर तणी ।। ३१ ।।

प्रधान वायक

छळ सूं वळ दाख गढी चढणौ। वरदायक रात थकां वढणौ ।
रण रोपय पाव खरौ रहणौ । ढळती निस पाल खगां ढैहणौ ।। ३२ ।।
ग्रस ठांभेय कोहर सूं उरिया । ग्रधकोस वड़ा भड़ ऊतरिया ।
जुध काचांय घोड़ांय डोर भली। गिड़ कंध हथाळिय फीण घली ।। ३३ ।।
कोग्ररौ मल वाढ नसै कळियौ। गिड़ कंध नै फीण दियौ गळियौ ।
मरदां सिर माप भके मणियां । जमकी कळ पावत भूसणियां ।। ३४ ।।
तस मूठ ग्रहे धखधूण तळै । खरहंड खड़ग्गांय बीड खुलै ।
चढ सावज देवळ सांमहणी । तद वींट वळी नवळाख तणी ।। ३५ ।।

गेबाऊ हेलो

गूंजुए पर बोलत मोर घणा । मांभियां सह रैजोड़ ग्रापमणा ।
खर री कठ घालत खार खंधी। ग्रणियाळिय सादत रात ग्रधी ।। ३६ ।।
चंवरी चरराहट चांसरियां । हुड बोलत गूघुड़ हालरियां ।
भुरजाळोय सूतोय नींद भरै । काळवीं पय उक्रम हींस करै ।। ३७ ।।
लुळ खाखुय सायक वैण लगै । परधांन जगायौ दे हाथ पगै ।

खाखू वायक

भ्रख बोलत भूखिय स्याल भुग्रा। वरजातां ऐ मारग नार वुवा ।। ३८ ।।
सुध राखेय चांदेय कान सुणी । भड़ भालेय खाखुग्र हुंत भणी ।

चंद्रभाण वायक

दौड़ो काळवीं पर संज करो । किम पाल जगावण जेज करो ।। ३९ ।।

वद आपांय सीस कळंक बुरौ । कुलवै मिळ सांमळ पाल करौ ।
गम राखिय आंगुळ बार घणी । तिम बोलत सांमुह काळ तणी ॥ ४० ॥

सुण खाखुअ सांवण तंत सवै । यळ छोड़ोय कोहर वेग अवै ।
रज सूं पळ वींट बंधी रखियां । जग मूठिय आरुण जांमकियां ॥ ४१ ॥

जरदाळां रै आगळ आग जगै । तारायण जांणक भूम तिगै ।
रण सालुळ पैदल भूप रसा । कर डाविअ ढालांय खोल कसा ॥ ४२ ॥

अधरात अंधारिय वांट अणी । रावणां हलकारचौ क जागिरणी।
लोहचाळ ढालाळ नृपाळ लियां। कर माल कुंदाळ दु तूंग कियां ॥ ४३ ॥

वेगड़ी सत वीसत हूंत बूवौ । गुंजुए लग कोळूअ माग हुवौ ।
जिंदराव लयै दळ जूह जुदौ । मुणियै जिण कोहर वैर मुदौ ॥ ४४ ॥

तित तोड़ाय तूट पड़ै तिगता । हव हालत नाखत्र हींडळता ।
कमदां खिचियां कुल हांण करौ। अर आयौइ जींद अचांणकरौ ॥ ४५ ॥

घर मंडण भ्रात रनै गमियौ । काळजै भड़ ऊकळतै क्रमियौ ।
लपता छिपता सैह जांण लिया। अतरै सम रूखळ ओळखिया ॥ ४६ ॥

रजनी गत जोवण मींट रही । महाराज विराजत जाव मही ।
भगा नांम अळक्ख बभूत भड़ी । दसनांमिय रूप ग्रही दुजड़ी ॥ ४७ ॥

हतवाह ग्रही खग ढाल हठी । सिधराज लराणांय पाल चठी ।
कर ढाल कराव जळद् कळा । सिधराव री तेग खवै चपळा ॥ ४८ ॥

क्रम लोह पटेत भुटै कळतौ । अरियां सिर वाढत ऊछळतौ ।
भुज ढाल फिरावत ले भड़ता । तरवार सळाव लये तड़ता ॥ ४९ ॥

चांदे वायक

गुरु लीनाय ठांभ कटक्क घणा । ततकार वलोच भड़ोच तणा ।
अजरायळ जोगिअ खेत अड़ै । प्रिड़ खागांय रीठन त्रीठ पड़ै ॥ ५० ॥

सव दौड़ाय ऊपर काज सरूं । सिधराव संग्राम करै समरूं ।
हव आवत वींट मुरज्ज हली । यक साद उचारत वाद अली ॥ ५१ ॥

भुरजे चढ चांद गोळी भर में । पसणां दळ दीठाय पाघर में ।
खाखुअ कर हाकळ वेग खरी । यत आयोय ऊपर जींद अरी ॥ ५२ ॥

कण मोटेय जोखम धीर कलौ । फूरती कर ढावोय वेग फलौं ।
हणजो मत सांमीय राव हकै । समरूं पर खाग घणी चमकै ।। ५३ ।।

सब चाकर ठाकर एक सही । मिळिया सोय खींमर सीम मही ।
तन जोत पराक्रम दीह तणौ । घट आवत रात अपांण घणी ।। ५४ ।।

खिज आखब खाखुअ दौड़ खतै। मांझियाँ उठ आयीह साथ मथै ।
असणां घर जाग थई पळिया । हब वेगावो जींदोय हाकळिया ।। ५५ ।।

फुरती कर राव री बोल फतै। उरडै फळसै पर भींच यतै ।
ढोलियै रखवालण काज ढळै । पाआराधिय चांदोय दौड़ पुळै ।। ५६ ।।

दनरा भड़िया नह देख दवौ । अप साथ लखीजै है साथ नवौ ।
लोहलाठ हतावेय ढाल लियां । कर दूजेय खाग अम्यान कियाँ ।। ५७ ।।

सत वीस सिधावण पाल सथे । जोगणी छळ कीनीय होय जथै ।
गिड़ कंध कबांणांय दौड़ ग्रही । नहराळांरै धांनंक नोद नहीं ।। ५८ ।।

फरिये दन आवध सैण फरै । जळ धार बन्दूकांय कांन भरै ।
ताइयां वज हाक पुळी तरिया । कमठाळ मनो भ्रम कांजरिया ।। ५९ ।।

धड़ ओद्रक ऊभ्रम रोम धकै । मभ बोलिय मालण पेम मुखै ।
सत वीस कळा विप देव सही । हिक गैव घराघर हाक हुई ।। ६० ।।

अम्बर ग्राज

अणपाण अधीर लड़ै असत्रां । सबळां तन पाण लड़ो ससत्रां ।
विर हाक वळावळ डाक बजी । गळ आग्रज भीलांय आभ गजी ।। ६१ ।।

ढाळेतिय ठेलांय हूंत ढळै । प्रतखाग अम्यांनिय दौड़ पुळै ।
सांबळां पर आधिय रात सरै । गळियां अड़ घाल बंदूक घुरै ।। ६२ ।।

मग माभिय थाट ठम्भै मंड रौं। चित ओछट चांदेय चामंड री ।
मण धारण चेतिय ध्यान मगै । जिण वार पाबू सिधराव जगै ।। ६३ ।।

दहुँ वंस उजाळण सींह हुवो । हेक सांभळ सूरज रूप हुवौ ।
किरती मुख भाखुअ जोड़ किती। जिण वेळाए जोवण जोग जती ।। ६४ ।।

घट व्यापेअ पोरस जोस घणौ । तिणवार धणी कव मोड तणौ ।
हव पूरूंअ हांम मनै हंसियो । अपजोस वडो कण ऊससियो ।। ६५ ।।

लग आभ भुजां खग ढाल लियूं। कमठाळोय हाकल धाक कियूं ।
कर डाब अलो वंध फौर कळै । प्रत खाग अम्यांनिय दौड़ पुळै ।। ६६ ।।
सयना वळ सेनपती सुधरै । खग वाहण पाल क्रमै खुद रै ।
हव आवत वींट भुरज्ज हली । यक साद ऊचारत वाद अली ।। ६७ ।।
समसेर रकाव वगों सधरा । रुध आगळ रौद फवे वुध रा ।
पायकां जुधराज थकां पड़िया । हव आयाइ भील तुटा हुडिया ।। ६८ ।।

सांवलां रो अग्राज

उरड़ै मत एकल वाद अणी । धीरयै मम आवदि पाल वणी ।
लिय ढाल हती वेय आग लगै। यण सात हुड़ावांव खाग अगै ।। ६६ ।।
गज हेड़व सींग घलै गिर में । प्रसणां दल ठेळांय पाधर में ।
गुड़सी पिड़ ठाकुर आज घणा । तुळ आयाइ चाकर तुज्ज तणा ।। ७० ।।
प्रसणां सिर हाथ घलां प्रवड़ै। चवरासि छतीस लखै चवड़ै ।
खळ जांणन दीधोय प्राण खरू। चन्द्रभांण जौजांण कटै समरू ।। ७१ ।।
थट अग्र अरां मुह मेज थयौ । गुर तोरण जूंझ सरग्ग गयौ ।
दळ अग्र अरां सिर ईस दियो । कयळास जाय सुवास में कियौ ।। ७२ ।।

कव वायक

मंड पाव वळावळ आप मणां । तेय तूटत नखत्र रात तणा ।
वड़ वूढोय बंध खगां वहियौ । गूंजुओ खळ चार दिसां ग्रहियौ ।। ७३ ।।
मच कूक मथाणेय पाल मरै । कछ देसिय सावळ चीह करै ।
जिण वार जती रण घात जुवौ। हेक साथ अड़ां पर घोर हुवौ ।। ७४ ।।
मोटवी आज चारण पाल मटै । सगतां सह वूंव करै त्रौवटै ।
लग वाद जिंदै अवसांण लयूं । दोहुं कोर तै कोहर लाय दियूं ।। ७५ ।।
मण मांभिय काळ थिया मरणै। सत्र दीसत पाधर चांदरणै ।
सगतां केय मेड़िय सीस चढी । गढवा चढ ऊभाये पूठ गढी ।। ७६ ।।
वज हाक वळावळ भींच वळै । कमलादेय पूत नहीं कुसळै ।
सत्र आढाय भूसण खूर सळै । गूंजुए पर खागांय रीठ घळै ।। ७७ ।।

॥ दोहा ॥

वींसोतर वालोह । मोद हतौ थांरै मनां ।
भाई भुरजाळोह । रात पड़ै ग्रहियौ रिमां ॥ ७८ ॥

जुध गूंजवड़ै जांण । रहिया नह अंवारथां ।
पीथळ सोम प्रमांण । वीर भांण आया वढण ॥ ७९ ॥

डाक वजै अंवर डगै । भगै प्रेत जुध भाळ ।
लड़ण जींद पाबू लगै । भगै वीर वैताळ ॥ ८० ॥

॥ छन्द डण्ड मण्डली ॥

जिण वार बावन जागयूं । अत हरख चौंसठ आगयूं ।
तरवार चन्द्र त्रिकाळ यूं । ढैह पड़्यौ ढैंध ढैंचाळयूं ॥ ८१ ॥

ठह तेग ठाठर ठाइयूं । तिण वार ऊसस टाहियूं ।
खग झाल खींवर खोखरं । डाढाळ वीसळ डोकरं ॥ ८२ ॥

कर तरिय पेम पड़ा कड़ं । भड़ मूंछ व्रूह भड़ा भड़ं ।
खळ थाट खाकुअ खायकं । पग रोप पाधर पायकं ॥ ८३ ॥

भुरजाळ भाकुअ भाळयूं । मचराळ ग्रीठ मुछाळयूं ।
वेढाक नायक वेगड़ं । तिजड़न्त सायक त्रेघड़ं ॥ ८४ ॥

विरदेत नायक भूवळा । सदवीस ऊसस सांवळा ।
रतवाह पाबू पर रटै । चवरास ध्रीगड़ चौवटै ॥ ८५ ॥

वरियांम जींद वकारियूं । हड़ूमान रांम हकारियूं ।
दळथम्भ ठीगण देवड़ं । बाथोट समहर वेवड़ं ॥ ८६ ॥

जगजैठ खत्र गुर जोट युं । करू अंस भालम कोटयूं ।
रण वार वेगड़ मन रळी । चहुंआंण सांमत सींघळी ॥ ८७ ॥

अणवीह आहव और यूं । घुरनाळ वंधिय घोर यूं ।
सोय हाक माइवळ न सुणै । भुरजाळ भाइयळ सूं भणै ॥ ८८ ॥

कमळाय दोढी दिस भ्रमी । भंय रोम ऊभ्रम मन भ्रमी ।

कमलादे वायक

नह वूढ वूढौ जुध नड़ै । होहाळ वांधव नीवड़ै ॥ ८९ ॥

घढवणां दौड़ी पड़ गळी । मझरात मांभिय आ मिळी ।
भयराव मा भायां भणी । तायगम तूं छै बूढै तणी ॥ ६० ॥

वात– गढवणां गोलियैं सूं दौड़ देवल सैंहात कोळू में आय खबर दीनी ॥

॥ छन्द ॥

अर आवि त्योर अंग अणी । धुर वांछतौ म्हारौ घणी ।
गर ढेरौ वुढौ स्यांगयौ । अर पाल मथै आवियौ । ६१ ॥
पर भरगै मात पिछाणियौ । जद वुहौ बूढौ जांणियी ।
रणवास सादव सुण रोए । हव सोच कीनां स्यूं हुए ॥ ६२ ॥
दळ मेल सगतां दासियां । घर फेर हाकळ आसियां ।

कव वायक

रण साद भूसर सव रहा । गांमेल मोरचा चढ आहा ॥ ६३ ॥
अतरै तौ आइयल आवियूं । वक वैण भड़ विरदा वियूं ।

माजी कमलादेजी वायक

सैंहड़ां थे देखौ सांघणा । तायै सरग घर बूढै तणा ॥ ६४ ॥
पड़ साद पावुअ पर पड़ै । सह लखौ तुभ भुरजां चढै ।
अर सीस नेसां आवियौ । थह पाल घेरौ थावियो ॥ ६५ ॥
वड काल वांधव रिए बुओ । ग्रै है चाल घेरचो गूंजुओ ।
अघरात पावुअ पर रणी । तायवणी पुळ भाइयां तणी ॥ ६६ ॥
लोह आंच कैणठी पर लगै । भय मांन जैठी स्यां भगै ।
किय तुंग फव्वे वुध करा । भड़ म्लेच्छ सखरै भखर रा ॥ ६७ ॥
जन अन्त तू दिअ भज्जळै । काळ जाळ वीटण कावलै ।
भड़ साथ आवध ग्रह भलां । होय आज राती वेहलां ॥ ६८ ॥

॥ कवित्त ॥

कळ वीडै जांमकी करै हथ लाल अडीकळ ।
लै दन्ता तरवार पळकै धारू जल ।

फिर भुजां फरहरै आग मोरचा उलाळै ।
हय फेटां हड़वडै अड़ा ऊपरै अताळै ।
बरियाम हाक करता विडर विभ्रमता वकता वयण ।
आविया पाल ऊपर करण लोह वोह अंगां लयण ॥ ९९ ॥

॥ छन्द पद्धरी ॥

रोधियो जांण बूढो रंढाळ । भड़ वेळ करण तूठा भुजाळ ।

रजपूतां वायक

धिष लयां सेस यण ताल धाय । मन रखै सोच मत डरो माय ॥१०० ॥
भुर लड़ां अमे भुज भारधार । कळ लावां पाबू पोतकार ।
अरि काळ पाल रख नाल ओट । कर माळ चाळ कर ढाल कोट ॥१०१ ॥
जतळावां कुसळै समर जाय । कै मारां जींदो अमर काय ।
कह वात सनढ भीड़ै कड़ांह । हयग्रीव रूप कीनी हुड़ांह ॥१०२ ॥
सांमळा समर से मुहासींह । आविया सहड़ पूठै अवीह ।
कळचाळ जींद जुध दाव कीध । दावो जिण आगू जाय दीध ॥१०३ ॥
अणजांण विगत ऊपर अड़ांह। संक्रमण प्रबळ किय सोहड़ांह ।
ग्रह ओट तिमर अंगुल गुडंब । धुख तीर समर छूटी प्रडंब ॥१०४ ॥
कळ लगा तीर भुरजाळ केक । हथनाळ गजी सुरबंध हेक ।
अणघाव रह्या केई खेम अंग । रजपूत हुआ केई चौळ रंग ॥१०५ ॥
तेजियो रजक तीसरी ताळ । भड़ भूठा खाग हूता भुजाळ ।
कळ सोहड़ फेट दे तुरत कीध । दूसरी फ़ेर नह मरण दीध ॥१०६ ॥
सुण हाक समर पड़साद सार । जांणियो पाल बूढो जोधार ।
सत्रवां वैहैण मन मोह साज । रण आयोइ अग्रज भ्रात राज ॥१०७ ॥
वण ताल भड़ै हथनाळ वाळ । सांवळां हूंत ढळियो सिघाळ ।

कमळादे वायक

पाल री पीठ जोगन्द्र पीर । वींटियो सांवळां हूंत वीर ॥१०८ ॥
सिहाण चढै करवी सहाय । राखजे पीठ नागोंण राय ।

सुपियार तणा सायब सधीर । ग्रन पाल करण नव लाख वीर ॥१०६ ॥

जिण काज पाल रिणराज जाय। आरंब राय कर वेल आय ।
भालाळ पीठ रछपाल भाळ । पेमड़ा राय तीसरी ताल ॥११० ॥

सुत पाल तणौ रख पीठ साथ । हाथियां गिडारी राय हाथ ।
सेव गिर पाल राखे सचाळ । कांगड़ां दुरंग री महंकाळ ॥१११ ॥

सांमहो लखै प्रतिव्यम्ब सार । कमळा तद ये रिछया कंवार ।
थित एक रखै मुझ सोक थाय। जाखी कण जोखम कुसळ जाय ॥११२ ॥

निस जुद्ध आज होवै अनाथ । सुपियारी पेमल हेक साथ ।
कुसळात उदय किण विध कहाय। जिण सदन जंवाई जींद राय ॥११३ ॥

किरणाळ वधारण वंस कूंत । प्रब मोटे जायौ पाल पूत ।
सालुळै मूज उर अमर सोर । काळजै तणी वढ पाल कोर ॥११४ ॥

कै हुवै खींचियां सदन काळ । जुड़सी भटियांणी उग्रर झाळ ।
ध्रोहां निस उड़ी दीध धाव । जम लीना जाखी जींदराव ॥११५ ॥

यळ गमू तमीणी जात ऊध । दध हुवो सही मन्दार दूध ।
को छळी इच्छ सगत कार । हुव मिटे कदे नह होणहार ॥११६ ॥

दोउ घरां गमण पुळ आव दीध । कमळाय पीठ हलकार कीध ।
लागी कळाय भुतोळ लोट । दीधूं कलाळ आडी ददोट ॥ ११७ ॥

तूटीक मूंठ झंफीक ताळ । छूटीक मुंठ नय सीखराळ ।
सैमुहा नजर दीठो सळाय । हुळ सीस जांण झंपो हुळाय ॥ ११८ ॥

भालाळ तणा भुरजाळ भाळ । कमठाळ खीचियां तणा काळ ।
आहेड़ भमर मजबूत अंग । रजपूत समर जमदूत रंग ॥११९ ॥
सामळा भींच ऊंतोळ सार । पाल रा पाल आडा प्रकार ।
दोहतां भुजां सांमुद्र डंड । पाल री वेळ आया प्रचण्ड ॥१२० ॥

सांमुग्रां भींच भूठा सभाह । रोधियां खीचियां घणां राह ।

कव वायक

वापरी वीरहक तणी वाक । हळकार पाल पायकां हाक ॥१२१ ॥

पावू वायक

रोधियो खळां बुढा रंढाळ । चापड़े लये जुध हेक चाळ ।
घण फुरत करो खग घलो घाव। रोकियो कमधजां तणो राव ॥१२२ ॥

केय कहै भिड़ आयो कण्ठीर । विसटाळ कहै कोय वडो वीर ।
जिण वार तमंक पावु जवान । विसताळ भड़े खग रीठवान ॥१२३ ॥

ह्रिण कहै समर दोहुँ तरफ हाथ। नैहाद मजे ढाला निपाथ ।
जरदाळ तिमर तोड़ौ जंजीर । वढ खगां ऊवळै वडो वीर ॥१२४ ॥

कणएठी जांणै भिड़त काळ । जिण जेठी छूटो जगत जाळ ।
पिड़ियाळ पखे ऊड़े पळाह । विधु वीज कनांह वीजुभळांह ॥१२५ ॥

जड़लगां वेहत फिर वज्यो भीक।लूणकां अगै सिर मिळी लीक ।
सांवळां हाथ तेगां सळाव । गिर सीस वीज वह रतां ग्राव ॥१२६ ॥

जिण वार पाल जम रूप जांण । भळकन्त जेठ मध्यांन भांण ।
जूंभार वीर तोले जवांन । भयरवी सबद बोलै भयांन ॥१२७ ॥

ऊतावळ ऊड़े समर आळ । भूतावळ फेटां हूंत भाळ ।
ढंडूळ वाय नभ धार देह । मैहरांण सीस गैहराय मेह ॥१२८ ॥

अगडाय सीस खुल वाय आंन । पह पाय दूपैरण सुरा पांन ।
यण भांत खीचियां हूंत आड़ । पिड़ भोम भुटै काळा पहाड ॥१२९ ॥

जिण वार उभै दळ जोय जोय। हिक पावू पावू सबद होय ।
तरवार उडै हुय टूक ताळ । खांडेळ रमै किर वंध खाल ॥१३० ॥

साकणी मढी हूंकार सींह । खोखरां वडां हींडै खवीह ।
ढळिया क गूंजुए रुघर ढांण । जोगन्द्र कोयळे धूंघ जांण ॥१३१ ॥

वळ कांम खगां घर सीस वाद। संपात हुओ गैणाग साद ।
दीठा दळ मांभी दोहुं दळांह । चहुआंणो कमधां सींफलांह ॥१३२ ॥

ऊछळै समर धाराळ आग । खीचिया परै टूटंत खाग ।
पे लड़त समर दोनूं पड़ांह । दुजड़ां मुंह ऊंड़े सर दड़ांह ॥१३३ ॥

घण कटै समर कड़ियाळ थांण । पड़ियाळ पखे पांडीस पांण ।
अड़ियाळ लये केइ तुरस ओट । चड़ियाळ करै केइ ध्रंखळ चोट ॥१३४ ॥

जूटै इम पावू जींद जंग । नाखत्र माळ तूटै निहंग ।

दळ नेत भड़ै जुध देव देत । पिड़ खेत लड़ै कन भूत प्रेत ।।१३५ ।।
मेहरांण प्रबल जिम लोप मांम । सांवळां सबळ वविया संग्राम ।
घट कटा नायकां तणै घाव । पिड़ छूटा खीचियां तणा पांव ।।१३६ ।।
जिम चलै ऊप्र वर जळद जाळ। पिड़ ताळ वरण सरतोड़ पाल ।
गज–घड़ा पीठ कंठीर घाव । वादळां लगै जिम दिखण वाव । १३७ ।।

श्री मुख सूं कहै

नायकां हाक लव पाळ नाह ! रतवाह खीचियां तणा राह ।
एकलो मुझ जांणै उजेड़ । चढ आयौ खीची करे चेड ।।१३८ ।।

सांवळां वायक

चवड़ै दोटां कर कटक सीस । विप आडा चाकर सातवीस ।
मांझियां समर उच्छव मिळेह। विखवांण पाल हाकल वळेह ।।१३९ ।।

सत्रवां सूं सांवळां रा वचन

चापड़ै लड़ौ जिय मोह छांड । मारकां पाधरै पांव मांड ।
सिरदारां पाछौ फेर साथ । हव देखो भीलां तणा हाथ ।।१४० ।।
रुपिया जो कौळू माग राड़ । ते हुआ अफूटी आग त्राड़ ।
पग कटा स्रवण सुण सवद पंग। जे करता कोळू माग जंग ।।१४१ ।।
ऋण चौड़े विमुहा बुआ राह । वरियांमा वांसै लीध वाह ।
दुजड़ां मुंह पीठे घाव देर । घांसाहर एकट करी घेर ।।१४२ ।।

राव वायक

अै लगा मोर तेगां ऊभोय । जायल नह जावा दये जोय ।
पुळती कर हाकल मांड पांव । रजपूतां दाकल जींदराव ।।१४३ ।।
पूठै लग भीलां हूंत पाळ । भागां वह भाळै दूर भाल ।
न्ने आडी ढालां हाथ नाळ । रण वळिया सांमा रावताल ।।१४४ ।।
मांझी भड़ पायक एकमेक । उण वार पळापळ दीठ एक ।
उड़ै सिर हेकां आसमान । जाडी पड़ केकां मुंह जवांन ।।१४५ ।।

जिण वार वहै वहुं घाल जोम । गिर पड़ै भुजां खग सहत गोम ।
आफळै चापड़ै खेत आय । खग झाट पड़ै केय फेर खाय ॥१४६ ॥

झख झुरै गिरै गळ झूम झूम । घायल धर पौढै घूम घूम ।
जडलगां अंग कीना झराह । फरडाक करै धड़ फींफराह ॥१४७ ॥

वाजियौ प्रवळ रण भोम वींद । जरदाळ उड़ै त्रण जेम जींद ।
देखै चख देवल स्रोण दीठ । रती जुध कोहर उड़ै रीठ ॥१४८ ॥

भूतावळ दौड़ै भाळ भाळ । मिळ जोगण कीन्ही दीपमाळ ।
झूंझार लड़ै खग पड़ै झाल । ढेंचाळ गुड़ै हिय हुड़ै ढाल ॥१४९ ॥

आछटै तणछ पग हाथ आळ । खळकै रंगावल रुधर खाळ ।
चवड़ै खगधारां धकै चाढ । विप किया खंड वेहंड वाढ ॥१५० ॥

मांझी मुख वौलै मार मार । पंजार पड़ै धर वनां पार ।
झखभूर हुवा घावां झिलेह । लोथां पर लोथां भूमि लेह ॥१५१ ॥

सींहा हर चाढे वंस सोह । लागुआं दए परिहंस लोह ।
धजवडै चड़ै अविया सधीर । नव कोटां चाढै पाल नीर ॥१५२ ॥

वाथटै चटै भूठा जुवांण । पलवटै पेट पड़ कटै प्रांण ।
पांडीस वहत कर दष्ट पाळ । विदुतीय तरक वादळ विचाळ ॥१५३ ॥

लोहचक्क समर हूंकर वलाच । मतवाळ कलाळां हाट माच ।
फोड़े घर डाडर उवर फाड़ । ऊससै सुभट सावळ उपाड़ ॥१५४ ॥

इण भांत लड़ै समअर अभंग । राठोवड़ खीची रुद्र रंग ।
झिलमां सिर वीजा वाढ भार । उभझड़ै जरदाळां सिर अंगार ॥१५५ ॥

सांवळा हुवा चहुंआंण संग । राठोड़ तणा चखचोळ रंग ।
भारात हाथ वावंत भील । फाटकां कटै दंठेल फील ॥१५६ ॥

मृगअंक थया उड अस्तमांण । भूंकियौ ताम परकास भांण ।
धजवड़ै चडै. आवटै धार । भड़ गुड़ै पाल सिर पड़ै भार । १५७ ॥

मंडल अरणोदय राग मंड । पाल सिर भारथ मेयौ प्रचंड ।
सांवळा सुभठ धारा चडेह । पाल रा पाल आगे पड़ैह ॥१५८ ॥

॥ कवित्त ॥

आफळता आवधै पूर घावां धर पड़ता ।

सारवता संफळे तूट आगां लड़थड़ता ।
चौळ अंग चाचरै जींह लारै जव्वांना ।
कुसळ पाल काढवा भड़ां सूंपिया भवांनां ।
काढेल वेध वढिया कळह ग्रहण पाल पूरी गरत ।
वेठिया हुता वूढै विवध आया जे पाबू अरथ ॥१५९ ॥

सवळ अगे सांवळां लार पाबू ललकारै ।
रिण भेळा रजपूत वळे कंवळाथ वकारै ।
जिण वेळा जिंदराव वढे तेथां दळ वाळे ।
पर भोमी पाछांण विरद सांवता उजाळै ।
सुज पाव रो पंहराव सिर ग्रहण पाल वागौ गजर ।
तिणवार हुवा जींदै तणा वजर अंग वाघू वजर ॥१६० ॥

॥ दोहा ॥

ढाल हुवै जींदै धकै लाखौ लोह लियांह ।
जाभा रंग तोनूं सदा जूंभा जायलियांह ॥१६१ ॥

अजड़ाहथ कोळू तणा आया वळती आग ।
तद जूटा जायल तणा वीर हुवै वडवाग ॥१६२ ॥

पड़िया होय पतंगिया कोळू सूं खग काढ ।
हूतासण जींदै हुवै वेढ लिया दळ वाढ । १६३ ॥

कोळू सूं आया कड़च रूंक वजावण राड़ ।
तूटा सांवत तीन सौ ओला पैला आड़ ॥१६४ ॥

ऊपर करवा आविया जै कोळू भड़ जोय ।
वहिया पिड़ धारां विचौ कुसळै गयो न कोय ॥१६५ ॥

पाबू रा पाराधियां कीनौ आवट कूट ।
पड़िया पूरा पांचसौ खीची रण में खूट ॥१६६ ॥

तिमिर मिटै पावक तुटै पाबू भांण प्रकास ।
अइयां चन्द्र अथामियां अइयां चंद उजास ॥१६७ ॥

॥ छन्द त्रोटक ॥

दुरियो दसमी नभ चंद दुओ । हव पायक चंद उजास हुओ ।

तद खीचिय साथ फटै तम रो । मुणियै ससि नायक पूनम रो ॥१६८ ॥
लेय ढाल हथा वेय लोह लगै । अणियां तुल पायक पाल अगै ।
सज ऊभोय पैदल साम हणी । परधान उजाळत लूणपणी ॥१६९ ॥
वदळायत नायक अंग वजे । भय आंणव पायक नोज भजै ।
चोहचाळ भालाळ विचाळलियौ।किरणाळर भाळ कुंडाळ कियौ॥१७० ॥
वळ पाल परे पड़ियाळ वना । किर कीध जळेरिय चंद कना ।
उदियाचळ सूरज भास उठै । जिंदराव हकारिय सेन जठै ॥१७१ ॥
फुरती कर मंडळ ढाल फरी । किरवांणिय वीज सळाव करी ।
घड़ियाळ अजे गढवंध घणी । तरवार वजे पिड़ पाल तणी ॥१७२ ॥
पिड़ आंगण ढाल समेत पड़ै । खळ धूपट धांधल तेग खड़ै ।
जरदाळ होवे दोय टूक जिता । कैह मोड वखांणत हाथ किता ॥१७३ ॥
पायकां भिलमां पर तेग पड़ै । भलहो दुरियाँ जड़ मूळ गडै ।
दुलहो फरकी चख दूति फिरै । विजड़ी रत चाकिय पाल वरै ॥१७४ ॥
विजड़ाहत धांधळ पूत वकै । सत्र कौण धकै पग मांड सकै ।
घट सूर ढहै विप खंड घणा । तत चक्र वहै नव लाख तणा ॥१७५ ॥
भड़ वाढत धांधळ खाग भला । चित तूटत जोगण थाँन चला ।
वळतो कर हाकल हाथ वळै । ताइय धर बोलत धार तळै ॥१७६ ॥
लखतो रंग धांधळ पाल लगे । अन एकहु आया एक अगे ।
दिन पूगोय तंतर वोध दियौ । लोहचाळ खळां दळ टोळ लियौ॥१७७ ॥
लख घाव लगां सिरदार लड़ै । परधान परै खग भूल पड़ै ।
अणभग हुओ चखचूर अणी । धिप तोरण जूंभै है पाल धणी ॥१७८ ॥
सुपियार तणो भरतार सहू । कव मोड तणो सिरदार कहूं ।
रिणपाल लगीजत चंद रुकै । पिड चंद लगीजत पाल पखै ॥१७९ ॥
मिळियौ खग धाराँए सूं धमणो। तिणवार पखायत मुज्झ तणो ।
वेहतो रत धांधळ घाव वकै । घुर जींद चढै खगमेळ धकै ॥१८० ॥
दळ ठेल वळो पवसाख दुवो । हव राव जती मुहमेज हुवो ।
चढ रोस उपाड़िय सिहचरा । कर जोस उतोळिय तेग करा ॥१८१ ॥
जरतार बुकानिय वंध जड़ी । चख सोनहरी चकडाल चड़ी ।

झळकी मुगताफळ गंठ भरी । सुज कंठ लखी जत कंठसरी ॥१८२ ॥
तरवार उतोल ग्रही तव ही । जिदराव पिछांण लियौ जब ही ।

पाबू वायक

धर जोस कहै सिध धीर धरै । कह थूं कुण बोल पछांण करै ॥१८३ ॥
लुळियौ करतौ जग लोक लहै । वध दाखन तो तरवार वहै ।

जींदराव वायक

तरसौ मत एकल देख तुमै । अखवूं कुळ खीचिय जींद अमै ॥१८४ ॥
मुहमेज कियौ दृढ राख मणां । पिड़ खेत दिखावण सूर पणो ।
जग मांझ अमां नह मूंह जोए। हथ तुज्झ रहूं मुझ मोख होए ॥१८५ ॥
दरसाव थियौ जतराव दनं । धन धन्न अमां मृत भाग धनं ।
लख तेज अनोपम रूप लियौ । दुति जोत प्रभाकर मींढ दियौ ॥१८६ ॥
रहसौ जस नां धर देह रही । सिध देव सगा कर देव सही ।
वरदायक वायक दाख वनै । मुंहमेज हुवो कर लोह मनै ॥१८७ ॥
कुळ ऊंच वड़ौ कण जींद कहै । विप आय अमां किम हाथ वहै ।
धण मुज्झ सगा लघुबंधु धरूं ।कर मुज्झ खगां किम चोह करूं ॥१८८ ॥
धर दोय मिटै दुख वाद घणो। हव आप अमां सिर घाव हणो ।
क्रम ऊसस तांम जतेंद्र कहै । वळ हाथ अमां तुझ हंस वहै ॥१८९ ॥
घट लोह हुवो चकचूर घणो । तद घूमत धांधळ राव तणो ।
यतहूं परहौ खेंह मुज्झ अगे । लघु बैन तणौ दुख ताय लगै ॥१९० ॥
निज हाथ करूं तुज लोह नहूं । हण स्वाहण लोकपवाद सहूं ।
ग्रहियै घट वेग खगां घळ नूं । पिड़ जूंझ रंडू किम पेमल नूं ॥१९१ ॥
नवलाख दिखाळत दीह नवा । वड हूं किम पेम करूं विधवा ।
मुंह ठींगण सामत सींह मिळै । कळ वेगड़ तांम चढै कनळै ॥१९२ ॥
सगती सुत आतुर पीठ भयौ । गह पूरत मातुल आय गयौ ।
जुध जींदोय पाल मिळै जबही । परसोंपर तोल रह्या प्रवही ॥१९३ ॥
गिरवांण महा सिध तेग ग्रही । दळथंभ फबै बुध आख दई ।

अंवळो फिर टाळ वढाळ अणी । तरवार वुही जुध जींद तणी ॥१९४ ॥
तिणवार खळां चख जोत तकै । घरहूंत पड़ै सर जाय धकै ।
जुध जूंभ हुवौ धड़ सीस जुओ । हव पाल कमंधज रूगहुओ ॥१९५ ॥
रज रूप कियौ ग्रन सीस रणौ । ग्रन तेण करी कद सीलवणौ ।
धावळी प्रतपालण जूंभ धरे । कूंण पाल जती ग्रन पाल करै ॥१९६ ॥
मन राख सुधी रिण छंद मुणां । सिध पाल तणौ हव जूंभ सुणां ।
लधर ज घणौ नह जंग लियौ । कळमें हिव कंठ ठकाव कियौ ॥१९७ ॥
भणियौ ग्रव ऊसस जोस भलं । कव मौड वखांणत कंठ कलं ।
खग झाट निळाट पछाट खळां । दियै काट निराट अराट दळां ॥१९८ ॥
रजवाट कमंद भुजाट रखै । दहवाट हूवा सत्र थट धखै ।
ग्रैहै राट उदंत तुराट ग्रह्यौ । रिपु थाट कमंधज झाट रह्यौ ॥१९९ ॥
कर माल फुनाण मणाळ कळी । रूहराळ हुई कर पाल रळी ।
वढ हड्ड कड़क्क वड़क्क वजै । भड़ थाट भड़क्क धड़क्क भजै ॥२०० ॥
हव पंड लड़क्क थड़क्क हलै । खग भल्ल कड़क्क तड़क्क खुलै ।
भक भक्क रुधक्क खळक्क भलं । दक दक्क बकै जव थक्क दलं ॥२०१ ॥
हव मुक्ख लळक्क कळक्क हळी । नव लक्ख थई चख लक्ख लळी ।
भड़ खल्ल कगल्ल वगल्ल भडं । धड़ लल्ल पगल्ल नहल्ल धड़ं ॥२०२ ॥
भल भल्ल नरं खग भल्ल भलं । टल टल्ल गया खग भल्ल टलं ।
कमधज्ज हुवौ दळ जूंभ कटै । रख गोरख गोरख जींद रटै ॥२०३ ॥

जींदराव वायक

विर वाद करै धड़ सीस वणो । हव पाल कहो किण रीत हणो ।
दल सींच चढै कुण मुंह दुओ । हव पाल विनां सिर सूर हुओ ॥२०४ ॥
जड़लग्ग प्रलग्ग अलग्ग भळै । मगधग्ग वळै पग डग्ग मिळै ।
खग हत्त खड़त्त सजोस खिजै । उयडत्त पडत्त सधीर अजै ॥२०५ ॥
जुध भांण लखै नभ माग जुओ । हव जंग खड़ो घमसांण हुवो ।
कमधज्ज वखांण खळां कहियो । गिरवांण विमांण रहा गहियां ॥२०६ ॥

जत खंभ काना जस थंभ जिपं । घड़ जूटत ऊभीय संभ धिपं ।
पह पाल उजाळत भूंज पखा । मर भार बकै पिड़ खेत मुखा ॥२०७ ॥
धुर साख जका लधराज धरी । किळकार विना धड़ पाल करी ।
कळ देख नवी गत राव कपै । उणवार नवें सिध नाम अखै ॥२०८ ॥
अदभूत कियौ रसरोद्र अंड़ै । लख पाल अनोपम रूप लड़ै ।
दुरगा नव चौसट वंध दळां । कळ पाल दिखावत देवकळां ॥२०९ ॥
हुय चौपन कोड़ चमंड हथं । कर कोड़ नवे कनियांण कथं ।
खट कोड लखै ब्रहमाण खड़ी । नव लाखइ लोवड़ियाल लड़ी ॥२१० ॥
पड़िय सिर पाल धरा न पड़ै । हथवा हथ सात्रव सैन हुड़ै ।
लग आभ भुजा धड़ जंग लहै । मुख मार वकै पिड़ खेत मंहै ॥२११ ॥
धड़ सूं खग धारांए जूंझ धणीं। अर खाधाए संतर जींद अणी ।
घट खेम जकै नर भाग गया । रुपिया भड़ पाबुअ हाथ रया ॥२१२ ॥
कर माल ग्रहै जुध आर किया । सत्र साठ अने दस सारविया ।
घट पाल रह्यौ कर लोह घणा । तद छूटाय पांव कटक तणा ॥२१३ ॥
भुरजाल सचेत हुई भुंहरै । मुंह फेर ऊलाळ दई मुंहरै ।
हव ऊसस धूम घणू हणणी । धरधीर कह्यौ नह वैण धणी ॥२१४ ॥
कढ टाप पछाड़िय टूक कई । दोहूं वागांए सांकळ तोड़ दई ।
उर चाट कपाड़ पछाड़ अवौ । तिण ताल हुवौ चखचोळ तवौ ॥२१५ ॥
अळगो डर ऊभोए जूथ अरी । काळवी हणणाहट हींस करी ।
तिण तोड़िय सांकळ लोह तणी। चपळागत आवत सीस सुणी ॥२१६ ॥
चंहु कांनिय वाजत भाट सिरै । फिर आवत लंगर मेख फरै ।
चित तूटोए अंवर लाय चडौ । दुर जींद गयौ पिड़ वाज दड़ौ ॥२१७ ॥
हव पाल विनां विणवाळ हुई । वरदायक ताजण सीक वुई ।
धड़ ऊपर आवत धीर धरी । कनसूरिय कंध उठाव करी ॥२१८ ॥
लुळ वाज गई धरजाय लगी । डगमंड कमंधज देह लगी ।
कंध थापल हाकल पाल कह्यौ । हय राज अमां घट वेग हह्यौ ॥२१९ ॥

अन्तरो हुकम

काळवी तन चेतन जोत कढै । विप खंड करै अरि भुंड वढै ।
नवणौ जळ सास उसास नखै । धजराज उडी अर सेन धखै ॥२२० ॥

कर डंबर वाळ सळाव कियौ । हव जींद थरत्थर कंप हियौ ।
जद राव गयौ विच वंध जुथै । मळफी चढ केसर सेन मथै ॥२२१ ॥

दळ तार लई डर जींद दुरी । कमधज्ज तणौ सिर हाक करी ।
सुण वैण सवै गत ठंभ सही । कळ जींद विनां भड़ मार सही ॥२२२ ॥

हिय चाड़ पछाड़ सराड़ हुड़ी । भड़ पाड़ उडाड़ चुंहाड़ भड़ी ।
असवार विनां अस जूंभ इसी । रुहराळ हुई रण रंग रसी ॥२२३ ॥

हणणाहट आवट कूट होऐ । जिण वार वडा भड़ नाळ जोए ।
जुद राव कहै विच वंध जमै । हथनाळ भरौ भड़ वेग हमै ॥२२४ ॥

घट खूंदत केसर पौड़ घणा । तत वाढ वजै तरवार तणा ।
अतरै करती रम वंध अरै । भड़ तूटाए तांम बंदूक भरै । २२५ ॥

वढती घल घूमर खैंग वळी । जिण ताल पंयाळेय नाळ झली ।
घुरनाळ हड़ंब धड़ंब गजी । विप खेंग सडंब सडंब वजी ॥२२६ ॥

हवरंभ भळंब प्रलंब हुई । थित खेंग लए नट रंभ थई ।
सिध ताजण धांधळरी समरी । अख लेंवण काज उड़ै भंवरी ॥२२७ ॥

धम धम्म कलां नमनाळ धमी। कम कम्म पमंग सळम्व कमी ।
धम धम्म वजे पिड़ पौड़ घणा । तिम काठ भड़ै हथनाळ तणा ॥२२८ ॥

हिय फेट लपेट पगेट हुड़ा । दिय रेट फगेट कुदेट दड़ा ।
यळ मेट दिया जम भेट अरी । कथ थेट महोदध भेट करी ।।२२९ ॥

फट थट्ट गयौ खग भट्ट कहै । रण थट्ट घणा भट पास रहै ।
घर वट्ट पहट्ट गहट्ट घड़ै । पिड़ खंड विहंड़ पमंग पड़ै ॥२३० ॥

गि'तै सिर जंग धणी ग्रहियौ । रवि मोद विमोद छकै रहियौ ।
असवार विनां अस जूंभ अही । सपतास कियो मन मोद सही ॥२३१ ॥

तुळ केसर नाम तुरंग तणौ । पुर वारत कन्न तुरी पठणौ ।
काळवी कियौ पाल विनौ कजियौ।वसुधा पर नाम घणौ वजियौ ॥२३२ ॥
चपळा गत जोत उदोत सथै । मिळ रभ चढी सुविमांण मथै ।

धुररूप तुरंगण देह धरी । फिर वींट कमंधज आंग फरी ॥२३३ ॥
हिय पंड मुआ वळ सूं हणियां । गुणतीस रह्या वह नागुणियां ।
चिर लोक चहूं वळ माग ग्रह्यो। रिणचोक कमंधज ठेल रह्यो ॥२३४ ॥
दळ वाय महा सिध पाव दिया। हव सेन थरत्थर कंप हिया ।
नह धापेय लोह अजे लड़तो । थित धावत वीर लड़त्थडतो ॥२३५ ॥
चलतो दळ दीठीय राव चखो । मन व्यापक गोरख बोल मुखो ।
कुळ खत्र तणीं बुध ओठ कही। सत दीठोय नालक वैण सही ॥२३६ ॥
पल तोकर हाकल मांड पगं । विण छोत मिटै नह सूर वगं ।
सुप्रवीत महाजत धूर सरो । कमवेस पड़ै अप्रवीत करो ॥२३७ ॥
मळियेच सुणी यम सूर मटो । तिण धूपर वाळ दियो त्रवटो ।
मिट जोत प्रभाकर भंखमणी । तन आंच लगी गुळियल्ल तणी ॥२३८ ॥
जभक्यो धड धूंणव खाय भकी। तद गोडिय भूम प्रभंक टकी ।
तस कोध वढाव तणोत कियो । किरणाळ नुं पाल प्रणाम कियो ॥२३९ ॥
सिविता रवि सूर पतंग सही । रकतम्वर अम्बर ज्योत रही ।
किरणाळ प्रभाकर भांण कहं । रयणोहत मित्र सुचित्र रहं ॥२४० ॥
पिड आंगण धांधळ देह परवं । मुणिया श्रक द्वादस पाल मुखं ।
सिध आसण नाम जतंद्र सजै । तरवार दई कर आर तजै ॥२४१ ॥
कर चोड अळीवंध खोल कणो। तत रूप हुवो तन तेज तणो ।
सळुभाय खळां अळुजाड़ सुणी। तद आवण मो परधांन तणी ॥२४२ ॥
रज पत्र दळां खात कातण रा। ग्रहणा रथ संघट ठेल घणा ।
प्रसणां मरजाद मिटी पंड री। सुण आगम हाकल चांवंड री ॥२४३ ॥
तरछो तक सूरत पाल तणो । धर सीस लुटै दिण सीस घणो ।
मणियक्क सलोह लियां धड़ में। पंडग्क्क फरक्क खरी पिड़ में ।२४४ ॥
लख नैण उभै जळ पूर लियो । कमठा'ळ धणी परणाम कियो ।
पर धंड प्रचंड संभुंड पड़ै । खरहंड विहंड खड़ग्ग खड़ै ॥२४५ ॥
मुण वायक नायक जूंभ मही । गैहवंत धिपं पळवट्ट ग्रही ।

चांदे वायक

मनमें मत जींदाय मोद मनै । तजियो जित पेमल लार तनै ॥२४६ ॥

दियं जीवत दांन उभै दिल रौ । परताप गिणै सह पेमळ रौ ।
घर जाय जिदा दन तुझ घणा । तूंग्र कीधळ ग्रम्मर पाल तणा ॥२४७ ॥
सांवळां खग झाट नही सभियौ। तिण पैमल लार थनै तजियौ ।
ततकाळ करूं दीय टूक तुमै । हुंइ छोडूंग्र पेमल लार हमै । २४८ ॥
करचाळ तजै फिर मंड कळौ । वरदायक नायक ग्राप वळौ ।
टणको जुध राव तजै टळियौ । मारको भड़ लोह चमू मिळियौ ॥२४९ ॥
खित ग्रंग ढह्यो खग झाट खरै। कमठाळ घणांरोय काळ करै ।
गिरतौ सिर ईस कर ग्रहियौ । वरदायक चांवंड रौ वहियौ ॥२५० ॥
पिड़ खीचिय साथ घणूं पडियूं। वढ पाल पड़ै जुध नींवड़ियू ।
वियसोतर बंध खळां वहियूं । रवि ग्रंसिय पाल कटै रहियूं ॥२५१ ॥

॥ दोहा ॥

पाल पड़ै जुध नीमड़ै सूर चढै नभ सीस ।
जींद खड़ो जायल दिसा साथ भड़ै दस वीस ॥२५२ ॥
ले कोळू घोड़ां लगे खीचीड़ा खड़ियाह ।
समहर मांहै सांमळा पग पग पाथरियाह ॥२५३ ॥

॥ कवित्त ॥

ऊगो दणियर ग्रवन राव पूगो पुरणा लग ।
साथ तणा सह सुभट रह्य सांवळां कनै लग ।
वांणावळी बुड़ा जिके लीना सैह जाखी ।
मार धाड़ माचतौ गयौ ग्रजरावळ डाकी ।
सज खाग सवैई सासरौ ग्राप हुवौ ग्रद्रियावणौ ।
तोड़ जड़ राव घांघळ तणौ पूगो जायल पांमणौ ॥२५४ ॥

॥ दोहा ॥

हव रांणी व्याकुळ हुई बुहा सरग सोह वीर ।
धोक घरे दुसमण धणी पूरो कीनौ पीर ॥२५५ ॥

॥ इति जध संपुरण ॥

देवल वायक सगतां सूं

॥ दोहा ॥

खीचोड़ो खड़ियोह गंगाजळ हय दस घरां ।
पाबू घर पड़ियोह सो दीठौ देवळ सगत ॥२५६ ॥

वढियो गायां वाहरू गढां गुरू गंगेव ।
हव सगतां हाल नै देखो लछमण देव ॥२५७ ॥

भालाळो भड़ियोह काछेलां वित कारणै ।
पाबू धर पड़ियोह सह धावौ हव सिद्धियां ॥२५८ ॥

सरणायां साधार के वायां मुजरा करण ।
सिध खत्री संसार आवै धांधळ राव उत ॥२५९ ॥

वालै वत राखी वनै लोवड़ियाळां लाज ।
सरव करो मिळ सगतियां अमर कमध नै आज ॥२६० ॥

इयूं कहती आईह चारणियां सारी चलै ।
मुरजाळो भाईह पाल धरा पर पौढियो ॥२६१ ॥

देवल वायक

अळगो पड़ उतमंग धड़ अळगो पड़ियो धरण ।
नवरो कीन्हो जग भालाळा ल्यूं भामणा ॥२६२ ॥

घट वंहे रुधर घणोह पिंड पुरा धावां पड़ै ।
ओ बांधव अमणोह सूतो वरदायक समर ॥२६३ ॥

सूरापण चडियोह कूक तणा सांभळ कथन ।
वीरा थूं वढियोह मो गायां कज राठवड़ ॥२६४ ॥

जिसो भरोसो जांणता पर देता प्रतमाद ।
तैं तिसड़ो धांधळ तणा वीरा कीन्हो वाद ॥२६५ ॥

तस दीठा कमधज तणा प्रसणां न दीठी पूठ ।
काछेलां वित कारणै कीन्हो आवट कूट ॥२६६ ॥

सव दन हता चकार सींगाळा धांधळ सुतन ।
जुध पडतां जूंभार कमधज मोडलिया क्रिया ॥२६७ ॥

क्रू खत्रिय म्हांनै कह्या वायक वाढाळाह ।

आभ धुंवां ज्यां मेलिया भाई भालाळाह ॥२६८ ॥

कहतौ थूं आगू कथन पाल अमीणा पीर ।
सुरही जासी सर सटै वचन निभाया वीर ॥२६९ ॥

तैं चोळी दांवण तणी पाळी आछी प्रीत ।
राखी धांधळ राव वत रजपूती री रीत ॥२७० ॥

मो सारू दीधो मरण जस लीधौ जुध जीत ।
पग पग ऊपर पीढ़िया धेनां रा धाड़ीत ॥२७१ ॥

अंब वळे देवळ तणी जाखी कुसळां जाय ।
जुध यम जांणै जूटियौ अमरांणै सूं आय ।२७२ ॥

कूकी हूं बूढ़ा कनै वीर न कीनी वार ।
तैं कीनी धांधळ तणा साख भरी संसार ॥२७३ ॥

वित लेनै वाईह केवी नह जासी कुसळ ।
भालाळा भाईह ऐ सांचा कीन्हा अखर ॥२७४ ॥

सबळ तणी पख है सदा खळक तणौ औ खेल ।
तैं कीधी धांधळ तणा वीर गरीबां वेल ॥२७५ ॥

कमधज लीनी काळवी जपिया वयण जठेह ।
वायक तैं नर वाहिया एवे पाल अठेह ॥२७६ ॥

पीहर पेमलरोह गणत दुआं जूं तूं गनौ ।
दूजो देवलरोह वित वीरा कुण वाळतौ ॥२७७ ॥

समप्यौ मौनूं सीस तैं पाबू धांधळ तणा ।
वसुधा कोड़ वरीस कुण धारी समवड़ करै ॥२७८ ॥

सगत तणा हुकमी सुपह व्रन रा ओठंभ वीर ।
यळ ऊपर रहिजो अमर पाल अमीणा पीर ॥२७९ ॥

वीरा मो वाळीह सेवी नवलख सिद्धियां ।
औ धावळियालीह आज तनै करसी अमर ॥२८० ॥

उड़ जासी आबूह गिरनारी धासी गरक ।
प्रथमी पर पाबूह मणवारी रहसी अमर ॥२८१ ॥

वीरा तूं वेह लेह कमध अमां कज मरण कर ।

सारो जुग चेहरेह सगतां में नांही सकौ ॥२८२ ॥
कायर नर मग्सी किता कोय न नांम कहंत ।
वो गायां रो वाहरू पाबू नोज मरंत ॥२८३ ॥
वीर हमैं वैठो हुए क्रीत सुणै किरणाळ ।
ऊभी पूठै आय नै नव लख लोवड़ियाळ ॥२८४ ॥
सिर धड़ भेळा सांध नै सगतपणा तत सांच ।
ले देहुंए कर लोवड़ी ऊपर दीनी आंच ॥२८५ ॥
जोधारत जतसूह प्रगट्यो फिर देवत पणौ ।
सगत तणै सत सूंह हव कमधज वैठो हुवौ ॥२८६ ॥
गढवण लीनौ गोद तैं रज झाड़ै सिर तणी ।
वीरा समर विनोद तैं कीन्हौ धांधळ तणा ॥२८७ ॥
विप सह खंड विहंड वळ लौही धारां वहै ।
पाबू पौरस पंड मार मार बौलै मुखां ॥२८८ ॥

देवल वायक

वीरा मत वजरेह वयूं मारो मारो करै ।
हव चारणियां देह खीची घर पूगो खड़ै ॥२८९ ॥
केवौ घर पूगौ कुसळ जुधकर जायल राव ।
वीर अमैं तूं मत बजर घट रै लागा घाव ॥२९० ॥

पाबू वायक

पिड म्हारै न्है पीड़ घावां री देवल घणी ।
भांगे संगट भीड़ सगती गत मोनूं समप ॥२९१ ॥
उर अंजस आयौह पह सिध छत्री पाल नैं ।
देवल विरदायोह पीड़ निटी घावां तणी ॥२९२ ।
घूणै भुज खगा धोड़ पांण दये मूंछों परै ।
रण जूंझो राठोड़ विजड़ हथी फिर बोलियो ॥२९३ ॥

द्वितिये पाबू वायक

खीची खागां खेल घण रण जूंझे कित गयो ।

म्हनै अकेलो मेल सिरक कठी गया सांवळा ॥२६४ ॥

देवल वायक

खोची तो हैवर खड़े ओ पूगो ऐहवास ।
सातूं वीसा सांवळा पड़िया थारै पास ॥२६५ ॥

पाबू वायक

घर जींदो कुसळै गयो देवल इण विध देख ।
म्हैं जुध में नहि मारियो पेमा रो वर पेख ॥२६६ ॥

जायळ पुगो जींदरो ताता खड़ तोखार ।
उण नूं झरड़ो मारसी मैहलां में वोकार ॥२६७ ॥

वहै रुधर अंग सांवळां धड़ सूं छूटी धार ।
रळकै पावू रो रुधर मिळियो जिकण मंझार ॥२६८ ॥

कूकी सह काछेळियां रुधर वहै राठोड़ ।
भीलां रो लोही भिळै देवळ वेगी दौड़ ॥२६६ ॥

देवी देवळ दौड़ नै पिड़ में कीधी पाल ।
रुधर रहै नहि रोड़ियो खळक वळोवळ खाळ ॥३०० ॥

भालाळो भाखेह सांभळ देवळदे सगत ।
रुधर मती राखेह मिळवादै भीलां मंही ॥३०१ ॥

सिर पर गिणियो सांवळां अडग म्हनै नृप एक ।
जुध में वैह लोही जको मिळवादे इकमेक ॥३०२ ॥

दोमा नह दीधाह कीछा पारधियां कठै ।
सत वीसां सीधाह मो साथै कीधा मरण ॥३०३ ॥

परवाड़ा कीधा प्रथी आखाडा अवनींप ।
आहेड़ी रहिया अगे जवरा राड़ा जीत ॥३०४ ॥

मो वाळा पाराधियां लीनी दिस दिस लूंठ ।
पड़िया धारां ऊपरै तारां ज्यूं हिज तूट ॥३०५ ॥

धरपत दस दिस धूजिया पावू खळां पड़ताप ।

लाखां रा धन लूंटिया पाराधियां परताप ॥३०६ ॥
मोन आय मांनव मरै नीच ऊंच मत नेक ।
पिड़ आंगण जूंजै पड़ै उण में छोत न एक ॥३०७ ॥
हूंतासण में होमिया वसत हुवै सुप्रवीत ।
जूंझ मुंवा जुध में जके पायक सदा प्रवीत ॥३०८ ॥
सगत कहै तो चारणी केसर नूं केकांण ।
कमधज जग मोनूं कहै ज्यू पाराधियां जांण ॥३०९ ॥
अै रहिया म्हारै अगै सगती सुभट सदाय ।
चोटी छेली सावळां काढी कसर न काय ॥३१० ॥
ऊभी धावळियाळ पह विरदावै पाल नै ।
चिरंजीवो सूपखाल लजधारी मो लज रखी ॥३११ ॥
साळ खला धांधळ सुतन कळह झाळ जत कूंज ।
घनो ढाल घर धावळी पाल तेज रा पूंज ॥३१२ ॥
छत्रधारी धांधळ सुतन मणधारी कुळ मौड़ ।
अवतारी पावू अमर रजधारी राठोड़ ॥३१३ ॥

कवित्त आसोसरौ

पाल बरन री ढाल पाल हुकमी सगती री ।
तूं वीरा भोपाल पाल थळवट धरती री ।
है सूरज हिन्दवांण पाल जीवो धांधळ री ।
भुज लग हथ भालाळ पाल बांधव देवळ री ।
जूंझार पाल पूजे जगत संत सूरपण लियां सरू ।
सासरणां वंगस जाहर सुपद पाल सुरह री वाहरू ॥३१४ ॥
भळै तेज रा पुंज भळै साहसी साहस बळ ।
भळे सेस अवतार भळे क्रोधी दावानळ ।
भळे सग्गतां वीर, भळे सूरा भालाळा ।
भळे गायां वाहरू, भळे ब्रन रा रखवाळा ।
भळ पाल सिद्ध छत्री भवण गिरतो नभ कर पर ग्रहण ।
सुज पाल भलो आखाड़सिध वरदायक कुळवट वहण ॥३१५ ॥

वीर गायां वाहरू वीर आठम खटव्रन रो ।
काछ पाछ निकळंक वीर गोरख सिध मनरो ।
वीर वडो समराथ वीर साचो वरदाई ।
वीर खाग सिर वहत वीर चारणियां भाई ।
वीर रो सुजस वधियो वसू जातां जुगां न जावसी ।
पूजसी पीर सारी प्रथी थांन इळी पर थावसी ॥३१६ ॥

चार असी चारणी आज तूठी तो ऊपर ।
आज सगत आवड़ा आच दीधा तो ऊपर ।
सात वीस सांवळां करूं पाछा सरजीवत ।
तोनूं केसर चाढ देवूं रिध सिध दोनूं दत ।
मुंड अर चंड जुध मारणी तूठी आज सगती तिका ।
नवदुरग तणें पांवे नमें मांग पाल हेकण मुखां ॥३१७ ॥

म्हे दांणव मारिया म्हेई ब्रहमंड उपायो ।
हूं सांवळ दे सगत् जगत सारो म्हैं जायो ।
म्है सोखे हाकड़ो नीर घालियो पयाळे ।
म्हे सूरज ठांभियो अमी लायो उताळे ।
पावहियो करे गिरनार पत नाचवियो घर घर तिकां ।
खरार वंचि मैहर किया मांग पाल हेकण मुखां ॥३१८ ॥

हूं इज आसापुरा हुई पावही कहीजूं ।
हूं देवी हिंगलाज रेण डूंगरे रहीजूं ।
जळे थळे प्रगळे डरे डूंगरे डमंगळ ।
मोडी रव गडगडे मिळे रन मांझळ मंगळ ।
हूं इज वूंठ वेछरा वीस हत्थी हूं वाजूं ।
वळ पूरण वरवडी हूं इज सिंह वण अग्राजूं ।
पंड हु लियां देवत पणां हूं महिषासुर मारणी ।
विण सकै सगत साहंस वना तूं मत जांणे चारणी ॥३१९ ॥

पाबू वायक

हूं तो जांणूं सगत गढां जड़ मूळ उखेलण ।

हूं तो जांणू सगत वड़ा असुरां सिर वेडण ।
हूं तो जांणू सगत क्रोध रूपी महिकाळी ।
हूं तो जांणू सगत देव चंड़ी डाढाळी ।
भव बांम भवांनी भैंरवी नमो देव नारायणी ।
अय सगत नवेंदुरगा तुंई हूं तो जांणू चारणी ॥३२० ॥

आखै पाबू अरज सुणो देवळदे सगती ।
मेटो जीवण मरण मुज्ज री कर हव मुगती ।
वसूं अमरपुर वास थांन प्रथवी पर थावें ।
नृपत वडां मो नमें धूप ध्यानहि कर ध्यावें ।
सांवळा रहै साथे सदा कहूं चढण ने काळवी ।
यण रीत म्हने कीजै अमर आप ग्रहूं दुख टाळवी ॥३२१ ॥

हूं देखूं सह जगत मनै नह देखे कोई ।
इल पर रहूं अलोप जोत थानक पर जोई ।
सेवक समरै सदा समरियां आवूं सादो ।
करूं जकांरी सहाय भीड़ भांगू असमादां ।
अतलोक अनै सुरलोक मंहि ऊभै गवण है मांह री ।
इण रीत म्हने कीजे अमर तवूं दवा सिघ ताहरी ॥३२२ ॥

देवळ वायक

जितै चन्द अर सूर जितै तारायण घू पर ।
जितै अवन आकाश जितै दरियाव प्रथी पर ।
जितै ब्रह्म शिव सगत जितै जोगी जालंघर ।
जितै गोरख जती जितै हडुमान मेर गिर ।
सीधियळ तिलक देवळ सगत यम आसीस मुण ऊचरै ।
तूं रहिजे घांधळ तणा अमर पाल यळ ऊपरै ॥३२३ ॥

साधे थारै सदा पाल नव ही जोगेस्वर ।
साधे थारै सदा चार अस्सी सिद्धेस्वर ।
सात सती खट जती रही वीरा तो भेळा ।
रामदेव जसराज गोग सम्मरी समेळा ।

सुपियार रही साथे सदा करू पाल देवत कळा ।
काळवीं सहत साथे कमंध सातूं वीसां सांवळा ॥३२४ ॥

पावू आवू परें पाल गिरनारे टूंकां ।
पाल थळां धूंधळां पाल सभाड़ां रूंखां ।
पाल जळां प्रगळां पाल हेम रा बरफां ।
पाल मेर गिर परे पाल सिध जम्बू द्वीपां ।
रमणीक दीप पावू रही सिध अगमागम सूभसी ।
थान नें पान तो थापना पाल पृथी सह पूज सी ॥३२५ ॥

॥ दोहा ॥

वीग अमर हुवोह सात दीप नव खण्ड सिर ।
होयें न कोन हुवोह तो जोड़े धांधळ तणा ॥३२६ ॥

कव वायक

दौड़ै आगे दासियां लारे लोवळियाल ।
कमळादे आगे क्रमि पूत सम्भालण पाल ॥३२७ ॥
आवै मात उतावळी महा दुखी मनमेव ।
सुत दोनूं वढिया समर नींवौ दाहड़देव ॥३२८ ॥

देवळ वायक

लारे लोकाईह सह कोळू री सालुळी ।
आजो आ आईह वीरा कमळादे वही ॥३२९ ॥

पाबू वायक

देवळ सूं पावू दखै कमधज कय करड़ीह ।
राख प्राण म्हारो हमैं घट में दोय घड़ीह ॥३३० ॥
आई यण तन री अवध कमध कहै कर कोप ।
पांच तंत पायां पछै औ तन रहे अलोप ॥३३१ ॥

देवळ वायक

देह जयेस्तुत देयेहुत तेज पूझ ततलीध ।
तुझ्न कृतारत पालजत सरवसा तीरथ सीध ॥३३२ ॥

कमळादे वायक

गळ राखण निज जड़ गमण कुळां वधारण कूंत ।
पिड़ आंगमण में पौंढियौ तेवा पूत सपूत ॥३३३ ॥

मिट जासी मायाह जग में जळ दीसै जतौ ।
जासी नह जायाह नांम अमर रहसी नवौ ॥३३४ ।

सिर तौ दादे समपियौ कह पाली द्वाज काज ।
तेही नौ सरता कुवां अचरज का सूं आज ॥३३५ ॥

पाबूसर री पाळ लेताड़ो कोहर लगै ।
प्रवल ढळाई पाल तें बादळ खीची तणी ॥३३६ ॥

जगत तनै सह जांणता देसां कोटां दूर ।
यम हिज सुत रहसी अमर सिधां तणौ कुळ सूर ॥३३७ ॥

कमळादे वायक देवळ सूं

तूं आयड़ अवतार समंद महाजळ सोखणी ।
कियो न खळ खयकार काछेळी अनरथ कियौ ॥३३८ ।

घायल रो सांसो नहीं औ लिछमण अवतार ।
जगजांणी मारे गयो जायळ रो जूंझार ॥३३९ ॥

कमळादे वायक

धायो हार धकेल थूं पाबू म्हारे थणां ।
खग भट वैरी खेल गैरी किम कुसळे गयो ॥३४० ॥

वध बूढो कुसळे बुहो नर तन वातो न्याय ।
केवो किम पूगो कुसळ पाल थनै पीढाय ॥३४१ ॥

वहियो बूढो पिड़ विचै दोयण जुध दामेह ।

मन में भ्रम राखे मती पावू गत पामेह ॥३४२ ॥

वाहड़दे मजबूत पाल रखण घायौ पगां ।
पड़ियौ नांना पूत फूटै घट थारै फळै ॥३४३ ॥

विध विध सूं वरियांम बूढ़ै तो वित वेठियौ ।
कोळू वाळा कांम आया भड़ थारै अगे ॥३४४ ॥

कणएटी कारण कियौ जेठी जुध जमजाळ ।
तो पहली तरवारियौ भिळियौ जाय भोपाळ ॥३४५ ॥

मोनूं जुध माराय राव घरां कुसळे रयौ ।
मत जांणै मन मांय सुत बूढ़ौ वहियौ समर ॥३४६ ॥

ले भड़ तो लारेह सुण विवनौ चढियौ सुपह ।
बूढ़ौ वेफारेह केवे सारवियौ कळह ॥३४७ ॥

कमळादे वायक देवळ सूं

थित अनरथ थायौह पिड़ बूढ़ौ पावू पड़ै ।
एक न उगरायौह रे दावौ वांसे रयौ ॥३४८ ॥

वैर घणां रा वाळता आयां सरण अनेर ।
हाय दई आछी हुई वळै न म्हारो वैर ॥३४९ ॥

पावू प्रतै

अघरत री आलूज कीधौ नह वहुआं कनै ।
जुध में ढहियौ जूंझ वाहड़दे नींवौ विनै ॥३५० ॥

जुध कुंजवड़ै जांण रहिया नह अंवारथां ।
पीथल सोम प्रमांण वीरभांण आया वढण ॥३५१ ॥

सुत दसमी री सांझ गूंजवड़ै मचियौ ग्रहण ।
मुज्झ तणा पिड़ मांज पाल तुज्ज कज पोढिया ॥३५२ ॥

घूमे घायळियाह घण रण जूंझे गूंजवौ ।
जाखी जायळियाह पह आछौ कियौ पांणगौ ॥३५३ ॥
सदन सदन में सोकरां गोरी गावे गीत ।

भळे जमायां रा तिलक करूं कठा लग क्रीत ॥३५४ ॥

पाबू वायक माता सूँ

सुन माता मिळ कर सला धेंचाई सहगाय ।
प्रसण तणा रजपाड़ नै सुरही ली छो गाय ॥३५५ ॥

समहर मैंहदर साजियौ ऊबरियौ नह एक ।
जीवत छोड्यौ ज़ींद रो पेमां रौ वर पेख ॥३५६ ॥

मादळ जिण मांड्योह मो मारण कढियौ मनख ।
बूढ़ो जुध वढियोह श्रौ किण तक पढियौ अरथ । ३५७ ।

इळ सारी कीन्हौ अमर दूर किया खळदाप ।
नवगढ पावे नांमियां पाबू रौ परताप ॥३५८ ॥

सांगरोट वाळी सबै खावड़ कोटड़ खंड ।
ऊभछड़ां वाली अवन दे काळू नै डंड ॥३५९ ॥

दूजा तो दाईह आज तणा कहिजे अवन ।
भळ ज्यां सूं भाईह मोन कळह मरावियौ ॥३६० ॥

पेमां नै परणाय बूढ़ै कुळ जळ बौडियौ ।
वैरी घर बोळाय बाजी सह कीन्हीं बुड़द ॥३६१ ॥

पोरस रौ पाराथ पाबू आई नै पुणै ।
म्हूं नह छोड़त मात खीची नै ढाहत खगां ॥३६२ ॥

जुग दीसै जाताह रहतौ नह दीसै रिधू ।
मरण तणौ माताह निमख जितो धोखौ नहीं ॥३६३ ॥

पिड़ आंगण में तड़फड़त लोहाथां यळियोह ।
जो नांहीं होवत गनौ जीवत जायळियोह ॥३६४ ॥

दोखी नूं दीधोह जस जूध रौ सारौ जगत ।
केवी कर कीधोह मांझी किण तक सूं मरण ॥३६५ ॥

बूढो म्हारौ वीर खळ खीची ढहियौ खगां ।
धांधळ सूतन सधीर पोरस घर हुयगौ पगां ॥३६६ ॥

कमळादे री कूक कांनां सुण लछमण कंवर ।

रण जूझो ग्रहै रूप पाबू पोरसियो पौहव ॥३६७ ॥

खीचीड़ो खारोह पाल म्हनै लागो प्रथम ।
बेटा बूडारोह वैर हमें कुळ वाळसी ॥३६८ ॥

भाखै भालाळोह आज अळो करदूं अवन ।
वीरो मोवाळोह रण जायल वाळो रखै ॥३६९ ॥

जायल पत नूं जाय हूं पूछूं ततखिण हमै ।
मत कळपो मासाव पाल सुतन ऊभो पगां ॥३७० ॥

करण खळां रो काळ रुघर प्रळय रो राठवड़ ।
विण दिन रो भालाळ वायक दीठांहिज वणै ॥३७१ ॥

सुपह हतो सूरोह अर देवळ कीधो अमर ।
भुज लग हथ भूरोह आज गणै कण नै अनंत ॥३७२ ॥

दुतिय पाबू वायक

खळ कुळ राखूं खाय काढे खग वासो करूं ।
मुझ तणो माताह हाथ देख ऊभो हमैं ॥३७३ ॥

मैं तजियो ध्रम धार नह हणियो पेमांग नै ।
जायलियो जोधार किण विध सूं जावत कुसळ ॥३७४ ॥

वड़तां समर विचाळ चांदै पकड़े छोड़ियो ।
करै घणै रो काळ मांझी भड़ियो मांभिया ॥३७५ ॥

॥ कवित्त ॥

जद पाबू जांणियो मुवो बूढो मो कारण ।
यम विचार उर अधक मोह रूढो खळ मारण ।
सुण मो विवनी समर राव वांसै नह रहियो ।
वड़पह साचो वीर लड़ै धारां जस लहियो ।
विदवंत सुणे माता वचन पाल घणो पौरस्सियो ।
कर झाल खड़ग लछमण कमंध आज पाल उसस्सियो ॥३७६ ॥

॥ दोहा ॥

देवळ वायक कमळादेजी सूं

आगेई यण अकळ सूं माराणो घर माय ।
सोभा हव कासूं चढी धी पेमा रंडाय ॥३७७ ॥

कमळादे सूं कोप कर देवळ ततखिण कहे ।
लोक म्रजादा लोप क्यूं रांणी अनरथ करै ॥३७८ ॥

सारी सिष्ट सिगारसी भड़ पाबू भूतेस ।
प्रथमी पर करसी प्रळौ सबळपणा सूं सैस ॥३७६ ॥

है नह पाबू हाथ ताव अवध जींदै तणी ।
वेध विरोधक वात कर कोय विघन करावसी ॥३८० ॥

पाबू पूतारेह हवळे हालो गूंजुए ।
लोहां चक लारेह घायल पूगावो घरां ॥३८१ ॥

आवै डूब कह्यौ अठै ग्रह थांनक रनरौह ।
पड़ियो धांधळ पाटवी डूबंतै दिनरौह ॥३८२ ॥

त्रण ओठी चाढो तुरत एक जावो अमरांण ।
दोय मेलो बुढै दसी रण संभाळै रांण ॥३८३ ॥

माय रोवे पिड़ मांय आंख हियै जळ ऊवकै ।
देवळ लीन दवाय हव धीरज धारो हियै ॥३८४ ॥

कमळादे वायक पाबू सूं

वैर सवेखा वाळसी सुत तन रहो सधीर ।
हर्मे पधारों गूंजूए पाल अमीणा पीर ॥३८५ ॥

लोक सवै लारेह करग अधारे तन कियां ।
वर दसमी वारेह पाल पधारे गूंजूए ॥३८६ ॥

॥ कवित्त ॥

कमळादे कूकती वहैं मिळ वींटी वांमां ।
देवळ दे आसीस नृपत घर रहसी नांमां ।
ऊड सांवळो घसमांन ग्रीघ गरटां गणणावै ।

सह रोवे सांवळी घणा घायल किरणावें ।
विप आय खंड विहंड बुहीं सबद न हतो सुहावणो ।
गूंजूए पाल लागे जको आज घणो उद्रावणो ॥३८७ ।

। दोहा ॥

पिड़ अस्सी धांधळ पड़े गुड़ सत्तर गहलोत ।
सतरे पड़िया चावड़ा जे मिळिया रविजोत ॥३८८ ॥

खींया आवळ खर खगां वढवा वाळे चाह ।
जुध रहिया जैवूंग जिम खरा भड़ खेचाह ॥३८९ ॥

घोटो हद घूमावियो दे डमरू पिड़ डाक ।
भड़ियो समहर भारथी समरू सूरज साख ॥३९० ॥

चित्रांणो चित्राळ वढ खागां वढ देवळी ।
पाल चाड सुपखाल मिळियो धारीं भड़ कमळ ॥३९१ ॥

तीनू झगड़ां में पुरणांरी विगत

तवो सहंस तोखार सात करि गैंवर सत्थे ।
आठवीस वढ ऊंठ कहूं भारथ जिम कत्थे ।
सितर मोहर निसांण वाज टंकार धनंखां ।
पारध पारध रूप सजे सतवीस निसंकां ।
दहुंओ लछमण रावण दुजल धरसिस अंबर धरहड़े ।
सावण मास पर्यो सुकळ ग्रहण पाल अतरा गुड़े ॥३९२ ॥

औ प्राचीन कवत्त

पड़े चंद वळपूर पड़े पेमो परिघी ।
पायक खाखू पड़े सवळ यळ कीरत सिद्धी
ईसल वीसल पड़े पड़े देसळ नेसळ पिड़ ।
पठियो हठियो पड़े पड़े ठाहीयो वड़ो भिड़ ।
सांवळां अमर कीन्हो सुजस वसू उवारी वात ही ।
पाल रे धके समहर पड़े सीधा वीसा सात ही ॥३९३ ॥

वारे मीसण वढे सुकव रहिया समरांगण ।
गढवी तेरह गुड़ै भार पड़ियां खळ भांगण ।
कमळ देग्रा कस कमर समर एक रहियौ सांमो ।
लोह राव दळ लड़ै पड़ै एक जूझ दमामी ।
राईको समर हरियौ रह्यौ अर फिरियो सिर ऊपरे ।
एतळा सुभट रहिया अगे पाल पड़े तो धर परै ॥३९४ ।
असी भाटी सिरदार चारदस भड़ सोलंकी ।
पड़ पनरे पिड़ियार निपट कथ राखी नेकी ।
वूढै सत वावीस करे वहिया भड़ कजियो ।
पड़ दोयण पांचसै वसूहा को वजवजियो ।
ओठियां चडै पूगी अवन भोम गळां दस दस भळां ।
थापसी हमैं जग सिर थिरू धांम गढां मंड धांवळां । ३९५ ॥

कमळादे वायक

भड वच वाळी भींत घरा ढहियौ पाटोधर ।
नीवौ वाहड़देव सरग पोहता कर संमर ।
हुवो तुज्ज हेत सूं यळा धांधळ कुळ ऊजड़ ।
पड़ी खांप पातळी यळा जिम सींधळ ऊहड़ ।
घर गई सरब घर धूंहड़ां ते दावी ताता तनै ।
वैरियां विहंडण वेगडा मुणै किसूं हव मात नै । ३९६ ॥

चौसर गाहो पाबू वायक

सुत माता कर मेळ सवायौं, पाटोधर खीची परणायौ ।
होसी मात हमें की होवण' अव द्वादस कोसां लग ओवण ॥३९७ ॥

॥ दोहा ॥

जस रो रथ जूपोह वरदायक आखै वनौं ।
सोढी नै सूंपोह मन सुध म्हारी मौळियो ॥३९८ ॥
मोनूं जुद्ध मराड़ियो भकर तणै भोपाळ ।

उणरो देसी ओलभौ पाल कहै रावपाळ ॥३९९ ॥

वण सोढी दीधा वचन भल लेवण सोभाग ।
आवूं जळण उतावळी पूगां थांरी पाग ॥४०० ॥

जांमण मरणौ जगत में सवदन तणौ सुभाव ।
अमरांणे दिस यण घड़ी ओठीड़ौ ऊडाव ॥४०१ ॥

नह गुड़ियो जस गुदळियो भिड़ियौ रण अदभूत ।
लड़ियौ जस प्रथमी लगै पड़ियौ धांधळ पूत ॥४०२ ॥

पावू पूगौ देवदूत जग सूं पंथ जुवोह ।
घर घर ऊपर गूंजूए हर हर सबद हुवोह ॥४०३ ॥

तेरह री तेवीसियौ सांवण दसमी स्वेत ।
पाल समर पड़ियो प्रसिद्ध हटी वरन रै हेत ॥४०४ ॥

अतरै वूढौ आवियौ आडै ऊठ अचूक ।
लोथां लागो मेळवा कोळू ऊठी कूक ॥४०५ ॥

ले पावू री मोळियो विलखै मुख मुधवंत ।
ओठिड़ौ ऊडावियौ अमरांणे रै पंथ ॥४०६ ॥

रातीवाहै रात री वरणी तीनूं वात ।
खीची आवण जुध भिड़ण पाल देवगत प्रात ॥४०७ ॥

कथ इण नूं म्हारी कहै भाखै केई भारात ।
रैणां कथ आ कै रही सो अमर समरात ॥४०८ ॥

इति श्री पाल पोरसातनै आसिया मोडजी कृत तन मुरधर भाषा पूरपारध प्रसाद वार में प्रवाड़ौ रातीवासै रो सम्पूर्ण

॥ अथ सती रौ प्रवाड़ौ लिख्यंते १० मौ ॥

॥ चौपाई ।

करणी कृपा मुझ पर कीजै देवी वचन वड़ाला दीजै ।
घण ऊकता थळ समय घंटाळी लाज धूंजाळी लोवड़ियाळी ।

॥ दोहा ॥

समयो करणाद सगत उकत दड़ी -थळ आंण ।
परवाड़ा सतियां तणा वरणूं सरब वखांण ॥ १ ॥
ओढी सेज संवार पौढी सुपियारी पिलंग ।
वांसुर मध वेफार चित दारुण लाभो सुपन ॥ २ ॥
आंसू धार अपार नैणां नभ खंडै नहीं ।
व्याकुळ राज कुंवार घण जोखम दीठो धणी ॥ ३ ॥
हळफळ आछट हाथ सुपियारी ऊठी चमक ।
नाथ अमी अणनाथ किम कीधी होसी किसूं ॥ ४ ॥
सुपियारी मुंहगी सदा नायक थारै नांम ।
अब सूरजमल आंगणै रखै न सूंगो राम ॥ ५ ॥
दासी वोल दवार हाथ जोड़ हाजर हुई ।
क्यूं महाराज कुंवार किण कारण अत दुख करौ ॥ ६ ॥

दासी वायक

वाईसा भोळा वोहत क्यूं थे रुदन करोह ।
फोळू सरखौ सासरौ पीहर अमरपुरोह ॥ ७ ॥
रायआंगण चौपड़ रमौ महिलां सरव सुदाह ।
रखसी वाकळ राज री चूड़ौ अमर सदाह ॥ ८ ॥

फुलवंती वायक

गोली नह जांणै गमत वोलै विण वोलीह ।
पीहरां में जासी परी मझरत घण मोलीह ॥ ९ ॥
दासी मो कीन्हीं दुखी मन भ्रम सुपना मांह ।
धण सुपियारी रो धणी निसचै कुसळै नांह ॥ १० ॥

कव वायक

दासी दौड़ी वेग द्रुत पोथी रांणी पास ।

कंवरी सुपियारी करै आंसूं न्हांक उदास ॥ ११ ॥
तद रांणी धाई तुरत लाड करै उर लाग ।
कळपै सुपियारी कंवर भळै अमीणा भाग ॥ १२ ॥

॥ कवित्त ॥

चख काजळ जळचळे रारडासिया रतंबर ।
अंग तणांच आछटै ओढ न्हाखे सिर अम्बर ।
तन मूकत तड़फड़ै पड़ै ऊठै पिलंग पर ।
राय कंवरी रुदनंत हुआ भेळा अम्बर घर ।
विलखाय थियो आरुण वदन सुमन वात धारण सती ।
सुपियार कंवर चोड़े सदन पड़ आंगण विच मलफती ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥ राणी वायक ।

गेली थई गंवार क्यूं कंवरी अत दुख करै ।
वदन तणै परवार पीवां जळ माता पिता ॥ १४ ॥
दीठ गळगळी दीठ अंवा लपटांणी उवर ।
निज गळ भीड़व नींठ दिल अंतर धीरज दई ॥ १५ ॥

सुपियारी वायक

सारो जावै साषवी अध खिण मांजळ ऊठ ।
कर सुपियारी रौ कथन पत धण दीनी पूठ ॥ १६ ॥
इतरा दिनरी अंतरो हुओज भावी हत्त ।
अब अंतर मेटण अवन सुपियारी समरत्थ ॥ १७ ॥
भांगूं छेटी वरस भर लेंवूं जोत ने काळ ।
पोहरा री छेटी पड़ी कद भांगूं ततकाळ ॥ १८ ॥

कव वायक कलपित

आप करेसी यळ अमर नवखंड मांझळ नांम ।
भालाळा री भांमणी रखै न वांसै राम ॥ १९ ॥

वड खांमद अंतर वुओ जीवण नहीं जीयाह ।
वसुधा मंडळ वेलियां धाटेचियां धियाह ॥ २० ॥
कर होकस त्यारी करो मनसुध सांभळ माय ।
घड़ियां में गढ गूंजूए पत गोडे पौहचाय ॥ २१ ॥

रांणी वायक

कालो मत दाखव कुवच वोल विचार अबूझ ।
नींज दिखावै नारियळ महिपुळ वो दन मूझ ॥ २२ ॥
कांधे सूं काढ़ी परी खळ पापण खारीह ।
मैं नह वांमण मारिया सांभळ सुपियारीह ॥ २३ ॥
कुंवरी मत दाखव कुवच सुवचन वोल सम्भाळ ।
सुपियारी आवै सदा झूठा सरव जंजाळ ॥ २४ ॥

सुपियारी वायक

दिन रो सुपनो देखियो हुवो न झुटो हेक ।
मारग मांझळ मोळियो खतरो आवै खेंक ॥ २५ ॥
सुंण वांधव विवनो समर राव विया कर रेठ ।
दन हूतो नभ दुघड़ियो जूंझ रह्यो पिड़ जेठ ॥ २६ ॥
कनले अर फरियो कटक रैंण हूती अधरात ।
भाख होवंतै भांण रे पिव हूवो खगपात ॥ २७ ॥
सुपनो झूठो सरवथा मुज्झ तणां नह मात ।
मारग आवै मोळियो पावू रो परमात ॥ २८ ॥
अमरांणो लागै अवै जणणी खारो जेर ।
राख हुंऊ जमहर चडूं जावूं खांमद लेर ॥ २९ ॥

रांणी वायक

सुपियारी मोटा वचन कंवरी काढे कांय ।
कात हाथ सह विसन रैं नभै जगत में नांह ॥ ३० ॥

नोज दिखावे नारियळ ओदन वादल ओळ ।
कथ सारै किरतार रै वेटा पहल म बोल ।। ३१ ।।

सुपियारी वायक

कासूं मां भोळप करै हूं वाजूं सुरतांण ।
सूरजमल री सारधू मो पूठै अमरांण ।। ३२ ।।

पीहर लाजै घाट पत लाजै ऊमरकोट ।
कोळू लाजै सासरो हूं लेऊ जिय ओट ।। ३३ ।।

खांवद सरगापुर खड़ै पड़ै सरव सुख पार ।
तिय काठै जद नां चड़ै लांनत धड़ै लखार ।। ३४ ।।

रांडी ह्वै ऊमर रोए लाज मिटै कुळ लाज ।
कंत विहूंणी कांमणी कै जीवै किण काज ।। ३५ ।।

एकल पंथ अतीत को विण जोड़ी वस ओज ।
सोढी धण रो साहिबो जावै एकल नोज ।। ३६ ।।

एकल जावै आदमी रांडां में नहिं राम ।
एकल नहिं जासी अली सुपियारी रो सांम ।। ३७ ।।

जोखमियो जुध जींद रै मौतन हंदो मांड ।
हूतासण में होम सूं पावू भेळो पांड ।। ३८ ।।

दासी काकी दादियां भूवा भोजाईह ।
जणणी चख पूछै जपै वोली रह वाईह ।। ३९ ।।

सुपियारी वैठी सदन आथण हुवो अवेर ।
अंत्रा दिप नें सोक उर घणौ कुळंवै घेर ।। ४० ।।

सूरजमल कांनै सुणी व्याकुळ तन मन वीर ।
अन्त समझ दुख ऊपनो आयो तुरत अधीर ।। ४१ ।।

रांणा वायक

कर मत सुपियारी कंवर काली कळह अकांम ।
सूरजमल री सरम री रख सी वाजी रांम ।। ४२ ।।

रांणै री बाजी रहै जद भव जीतो जांण ।
घोळां री रखसी धरम सचियादे सुरांण ।। ४३ ।।

बैटा कुण गांजे सबळ पाल बली पाराथ ।
सूरजमल री सरम री नाव राख सी नाथ ।। ४४ ।।

बतळावो कुण बाघ ने कउच ग्रहै कुण काळ ।
उण नूं कुण जीते ग्ररी समहर बांधै साल ।।४५ ।।

ग्राये जोध सधीर ग्रत वीर धकै सतवीस ।
कुण ठाकुर बावै कळह पाबू पर पांडीस ।। ४६ ।।

लकं सूं सांढ्यां लयै ग्रायो पाबू एथ ।
बाहर पूगो बाघरो जुध मैं दीठी जेथ ।। ४७ ।।

।। वात ।।

पार सुरजमल फूल कंवरी ने सुरनें रो पांतरो घालण ने पैल रो वात सुणा वे है इण में पूत्र रतन भाव बुन है

।। दोहा ।।

लांबै पर लागा लड़ण लांबी बूंटै नाळ ।
ग्रोलां भुज ग्रंबर ग्रड़ै पैलां छुटै पाल ।। ४८ ।।

लांबै पर लागा लड़ण भाळाला रा भींच ।
ग्राधां बाहर ग्रटक ली ग्राधां कीन्हो पीछ ।। ४९ ।।

पाबू रोकी पाल पर है जमसावळ हाथ ।
तद दीठो धांधळ तणो वीर बड़ो समराथ । ५० ।।

ग्रागे पाबू ग्रावियो पावण ग्रग पांणीह ।
समहर पूगो सायरो बांसै बगांणीह ।। ५१ ।।

पीर कणेरी पावरा धरतन के मग धाय ।
किम धर पर केता तुरी ग्रंबर मदद के ग्राय ।। ५२ ।।

किलमां दल घेरो कियो हैमर पांच हजार ।
ग्राधी सांढयां ग्रटकली ग्राधी गई ग्रगार ।। ५३ ।।

चांदो पूगो चौहटण परबत दीन्ही पूठ ।

ढेवै पर वागो गज़र उसरां वागां ऊंठ ॥ ५४ ॥
कमधज न्हांकी काळमी राड़ वजावण रीठ ।
समराळा भागा समर पाळां फरगी पीठ ॥ ५५ ॥
के दूजो धाड़ो करै खाट हुवे खारीह ।
कुसळै धन लेग्यो कमंध सांभळ सुपियारीह ॥ ५६ ॥
हण नांखां पाबू असी सज कर सांकेळाह ।
किलमां उर धीवै कमंध भालाळो भालाह ॥ ५७ ॥
मोह टाळा पूरा मरी जुध वांका जांमेत ।
घिर चमराळां घूमरां लाख दळां अख लेत ॥ ५८ ॥
रवदाळां मारग रुको पासै दळ पालीह ।
ले सावळ वादण लगो भगो न भालाळीह ॥ ५९ ॥
मिळियो खड़ आयो अलळ पूगो बकियो पीर ।
जमियै गिरनारी जपै फड़की बंध फकीर ॥ ६० ॥
नोहड़ी नरवंका नडर खध अंधा गिड़ कंध ।
जुद्ध करण नें ऊससें बळ वांका वाजिन्द ॥ ६१ ॥
आहेडी सतरां अगे दरकां टोळा देख ।
लीना वाद लड़ायतां अली अली गळ एक ॥ ६२ ॥
अठी बन्दूकां ऊपड़ी धनंक उठी धूंकार ।
धाड़ेतां वाहर धकै जुवो हको जिए वार ॥ ६३ ॥

पाबू वायक

चांदै विण वणियो समर ढेबा की ढाळीह ।
पाबू ऊभौ पाल पर भाखे भालाळीह ॥ ६४ ॥
घोड़ां वांधै घूमरा तोड़ां दए टकोर ।
नाळां लए कळाईयां कड़वा कज लंगोर ॥ ६५ ॥
मोड़े डावा जीवणा हय खासा हणणाय ।
लंगो लए लड़ायतो सिंघू में सुरणाय ॥ ६६ ॥

ढेबे वायक

धीरज रख म्हारा धणी ओढळयूं असमांन ।
वगतरियां पोवै वरम पीपळ हुंदा पांन ॥ ६७ ॥

खाखू भाखू खीजिया देसल नेसल डाक ।
ईसळ वीसळ ऊससे हठिया पठिया हाक ॥ ६८ ॥

पाबू रा पाराधियां अणिया रां भंमराह ।
सीहां खाडू सांवळां जोड़ायत जमराह ॥ ६९ ॥

वादळ वरणा वावरै तीर भुजां वळ तांण ।
घणां दरीजै भंगरी अंवळै मुख घर आंण ॥ ७० ॥

घणू वळीची गल करे होवे न सोढ्यां हाथ ।
चमराळां रै साथरै भीलांसूं भाराथ ॥ ७१ ॥

पोरस छकिया पाल रा भारत मांहै भील ।
तोड़ै वखतर तेवड़ा फोड़ै वांणां फील ॥ ७२ ॥

सिसकांनी छूटै सळक लाड़ी अलग लगाव ।
अणवर साहण संघणा ठह्यो जवर ठकाव ॥ ७३ ॥

घुणियासी धणियां घरी भुज वळ पाल भड़ांह ।
ले सळकां लाहोरणी छूटै लांवछड़ांय ॥ ७४ ॥

ते नायक तरवारिया रुपिया पाघर राड़ ।
ढेंबो कसैन सावरो पिड़ भूजांण पहाड़ ॥ ७५ ॥

हाटां छोड वजाज हव भैपड़ गया ज भाज ।
दरवांनां जीवा डरत दीना जड दरवाज ॥ ७६ ॥

सोढा वह आया सरव ग्रह तज राजघरांह ।
लांवै ऊपर दळ लड़ै कुण है खवर करांह ॥ ७७ ॥

रांमा राजड़ वैरसी भोजा भुरजाळाह ।
अमरांणे रा ऊमरा ढळिया ढालाळाह ॥ ७८ ॥

वीरम भुज वळ गंगदा सिंह ऊदा सुरतांण ।
घाटोचा आया घरै जंगी सवळ जुआण ॥ ७९ ॥

दूर घकांई देखतां जद म्हैं लीना जांण ।

धर मुरधर रा धाड़वी आपाड़े उसरांण ॥ ८० ॥
कमधज झाली काळवीं करग्रह दाढौ कूंत ।
काळा जुध हाका करै हींण बलोचां हूंत ॥ ८१ ॥
ओळी तट हिन्दू अखां पिड़ सिन्धू पारांह ।
किण सांमळ करसौ कळह सोढ़ा सिरदारांह ॥ ८२ ॥
माढू सारा मेलिया पाबू सांमा प्रौढ ।
हूं एकल पतसां हलै गयौ बलोचां गौढ ॥ ८३ ॥
सामां आयौ सायरौ ताजी चडियौ तूट ।
खोसा जावै खोस नै ओजो म्हारा ऊंठ ॥ ८४ ॥

धीर वायक

धमांसूं धाड़ो करै टोळा संहै तळाह ।
काफर जो आयौ कदन लारै नेजाळाह ॥ ८५ ॥
ठांभ परख सूजाठ कर पटकै जे गुढ प्रौढ़ ।
हणसी जण दन हालसी लै सांढ्यां जी लोड़ । ८६ ॥
तू राजा सोढां तणौ तूं रांणा अमरांण ।
धम्भां जो सिरदार तूं सम्भांजो रहैमांण ॥ ८७ ॥
बिलकुल सुतर छुड़ायलै खीम रहौ सह खैर ।
हण न्हाखै जद लैग्रसी वंजेवां अणवैर ॥ ८८ ॥
धाड़ेतां बाहर धकै वाज हकौ इकवार ।
दीठौ मो दोनूं दळां जंग मटांणो जार ॥ ८९ ॥

सूरजमल सुणियार कंवर नै कैवै

खत्र दळां तूठां भरण पूठौ पाबू पास ।
हूं आयौ लांबै हलै वाग अही वरहास ॥ ९० ॥
कथ मांनै मेटे कळह सुण मोटा सिरदार ।
सांढां धाधी सूंपदौ लूंट रहीजे लार ॥ ९१ ॥

पाबू वायक

पाबू समझ संभाय पह धर कीन्हा धाड़ाह ।
लड़ इब किणही नह लियो लेसी केम लड़ाह ॥ ६२ ॥

लीनोड़ा पाबू तणा आपड़ वांसे आय ।
वाद करे वत वारुत्रां लीना नह छोड़ाय ॥ ६३ ॥

डाढो तरफ बुकांनदे किलम दये फिटकार ।
अली टकोरो ऊछरै मोपर मेली कार ॥ ६४ ॥

रांणां यम भाखै रवद है नह वात हजार ।
सोढां केम छुड़ायलै मासूं डोढी मार ॥ ६५ ॥

दांतां झालै डाढियां खीजै गउ खांणाह ।
थे रांणां अळगा थयो वादरादो वांणाह ॥ ६६ ॥

करू गरक रण काळवीं अरक ढकूं रजआड़ ।
दरक कदे देऊं नहीं तुरक नखा दूं ताड़ ॥ ६७ ॥

छाडूं नांही छोकरी पायलयूं भुज पांण ।
अळगो होसी आसुरो मीठोड़ो मेहरांण ॥ ६८ ॥

जुलफ कार कर मेळिये आवे जो अभिराम ।
किलमायण आगे कदे छोडूं नह संग्राम ॥ ६९ ॥

चारू यार खुदाहरा कूंत अणी सर कोप ।
घूर आवै जो मो थकै मेळूं मकै सरीफ ॥१०० ॥

दोनूं जाया देवनी है जो हसन हुसेन ।
घांधल रा जाया थकै रण में अडग रहै न ॥१०१ ॥

दळ दळ रा असवार नै पूगै घांधळ पूत ।
जंग तणो वागो जरक तुरक होसी तावूत ॥१०२ ॥

आवै जो मैहदर अली हजरत अली हलाय ।
लोहां वळ ठांभै लयूं पाछा दयूं न पाय ॥१०३ ॥

पुरुषारथ में दीपक

पागाळा खेड़े पमंग दाढाळा जमदूत ।

किम न्हासूं वांणां अगे रांणां हूं रजपूत ॥१०४ ॥
किलमांयण हाका करै डुंच कसळै डीलांह ।
वाद तणो ढाळौ वुग्रो भालो की भीलांह ॥१०५ ॥
कर हथनाळ कळाइयां दे पूणछ टंकार ।
सरगण ऊपर सांध नै वळिया दळ वाकार ॥१०६ ॥

कवत डोढौ

अठी उरड़ आवियो विडंग खड़ ने वाघांणी ।
पाल उठी खड़ पमंग आच साबळ ऊवांणी ।
माहोमा मनुआर हुई हथवाह तणी हव ।
पाल कह्यौ तूं वाह तुज्ज गुनही धाड़ीतव ।
वीर वाह खग साह वरग हेरिया वडांणां ।
सकावार सापुरुष जबर नर समर जुडांणा ।
वाघांणी जिण वार वढण समसेर अबाही ।
दये रांण वेगड़े पाल केसर समभाई ।
कर ग्रेहत वाग केकी कळा तगग गई ऊंची तुरंग ।
हुल जांण व्योम पग हालियौ समळ कनां तजियौ चरंग ॥१०७ ॥

॥ दोहा ॥

गई भमर उड़ चढ गयण वदी रूंख जणवार ।
पुणै सायरौ पाल ने नजरां पीठ निहार ॥१०८ ॥
पाल संपेखे फिर पछो कळा वधी केवांण ।
पळकै खग रौ पींपळौ पाघन के परवांण । १०६ ॥
जद मन पाबू जांणियौ परचा सुध ओ पीर ।
सांढ्यां लै जीतै समर जावण न दै फकीर ॥११० ॥
आडा सोढा आविया सजवळ अहै चाळांह ।
किम हवै म्हां ऊभां कळह धीरे धुणियाळांह ॥१११ ॥
सूरज सह सोढांणरी महिपत धर पिछमाद ।
रांणां ऊभां रावतां ह्वैण न देवां वाद ॥११२ ॥

पाल तणै ग्रहे पागड़ो आखी म्है अरदास ।
अब सूरजमल आवियो वधै न वेर वणास ॥११३ ॥
धाड़ेती पाबू धकै बाहर वागांणीह ।
विण्टाळू सूरज हुवो तद नांहीं तांणीह ॥११४ ॥
पाबू मांनी वात पह तुरकां नै पड़ताप ।
वड हेटा दोनूं वुहा माहो माह मिळाप ॥११५ ॥
समपी आधी सांढियां धांधळ सुतन सधीर ।
समझ गयो जद सायरो भागांणी हुथ भीर ॥११६ ।
पीर सायरो इम पुणै पाल हुए सुख प्रांम ।
यता वर्ग थें हेरिया कहो पाल किण कांम ॥११७ ॥

पाबू बायक

नांम अमर राखै नरां चारण छत्रियां वीर ।
सांढ्यां ज्यांनें समपसू पाल कहै सुण पीर ॥११८ ॥
तुझ सकज खोसै तुरत दे धन ज्यांनै देख ।
जस करणो चारण जिको आप असी ने एक ॥ ११६ ॥
दीनो पाबू ने दरख मीसण लीनो मांग ।
चढियो पाछो सायरो पीर दयै पर छांग ॥१२० ॥
पैलो मिलण असैंधपण मांनी नह मनवार ।
कोळू दिस पुळियो कटक आप हुवो असवार ॥१२१ ॥
टळिया जे टोळाह जे मिळिया आगे जिता ।
भळिया ज्यां भेळाह क्रमि पायक पाबू कमंध ॥ १२२ ॥
पाबू में देवत पणो देव पणो दीदार ।
नर नाही धांधळ तणो औ कोयक अवतार ॥१२३ ॥
जध मन में यव जांणियो थित चोती घोड़ीह ।
वर लायक देवांगना जोवण जिम जोड़ीह ॥१२४ ॥
वसुधा पर मोटे विचै सुण रांणी सिरदार ।
सांवळ धांवळ सिंह रो जड़लग हुथ जोधार ॥१२५ ॥

ओ उसरायण आपड़ी वंगो ध्रमां वार ।
फिलमायण पाबू धकै न झाली फिटकार ॥१२६ ॥
है वैनोई जींधरो वूढो जिण रो वीर ।
अरनोई धिकतै उवर गण मन अकस गहीर ॥१२७ ॥
सुपियारी हरकी समझ वर रा सुणत वखांण ।
अतरै सुपनो आवियो याद हियै जळ आंण ॥१२८ ॥

रांणी वायक

तद रांणी ऊठी तड़क लाड करै उर लाग ।
कळपै फुलवंती कंवर भल अमीणा भाग ॥१२९ ॥
रांणै नै पड़पूं नहीं वैहतौं देखै वाट ।
दीनी मारी डीकरी घर कित कोळू घाट ॥१३० ॥
सैंण महीं भाई जिसो मीर चले इक वाट ।
नह दुसमण भाई जिसो कुळ उकटियो काट ॥१३१ ॥
कर सनमंध न्यारो कियो रतन अमोलख रार ।
सुपियारी थारो सजन म्हारो राज कुमार ॥१३२ ॥
सुपियारी रानळ सहिज भालाळो जिम भांण ।
इण जोड़ी रै ऊपरै कोड़ करूं कुरवांण ॥१३३ ॥
आसीसां नित ऊचरूं वरळ उदे री वार ।
आ जोड़ी रखजो अमर कोड़ जुगां करतार ॥१३४ ॥
सह देसन्तर धाट सर धाट सिरे अमरांण ।
अमरांणो पर ऊपनी अवछर मो ऊर आंण ॥१३५ ॥
मांणीगर हयरोट मझ भणियां थम भणियांह ।
उर मो अपछर ऊपनी पग पग पदमणियांह ॥१३६ ॥
मुखड़ो पूनम रो मयंक ऊगतड़ो अवितंस ।
बोलन्दी कोयल वयण हालंती गत हंस ॥१३७ ॥
रांणी जाई राजविण दूजू राज दवार ।
मां री जाइ रो जिसो आखूं किण उणियार ॥१३८ ॥

इण पर वारूं उरवसी वारूं सिर इन्द्राण ।
लोपै नह पित मात रा फूलकंवर फरमाण ॥१३९ ॥

आ सुपियारी उरमळा सुख साधी पत सेव ।
सखम पत धांधळ सुतन राखूं लछमण देव ॥१४० ॥

कुसळ जितै भड़ सांवळा कुसल जितै घन वाळ ।
काछळी केसर कुसल कुसल सदा सुखपाल ।१४१ ॥

फाट जिका कुळ ऊकटै राड़ वटै दव राज ।
दीनी म्हारीं डीकरी कोळू मढ किण काज ॥१४२ ॥

रांणा सूरजमल वायक

यम सूरजमल आखियो रे सांभळ रांणीह ।
लावै पाबू नै लयां पाछो अनपांणीह ॥१४३ ॥

नजरां लखूं न लोरटी सह ऊमर रो साल ।
पोहचासी घर पाल नै मरसी सूरजमाल ॥१४४ ॥

॥ सोरठा ॥

है साहब हाथेह वात कैयां नांही बणै ।
पीळी पह प्रातेह चढ़ कोळू नै चाल सूं ॥१४५ ॥

॥ कवित्त ॥

चख पूंछै रूमाल हाथ फेरै मुख ऊपर ।
ले नेड़ी उर भीड़ गोद बैठाड़ी कुंवर ।
करवाळी दुख मेट वात भ्रम री विसराई ।
सूरजमल सारधू कवा सुख दे जीमाई ।
उपजाय हरख सुखपाय ऊर रांणो कर जोड़त रह्यो ।
ले हुकम तात तनुजा तणां गढ मंझार भूपत गयो ॥१४६ ॥

॥ दोहा ॥

सूजै जिमाई सिधू माढां थाळ मंगाय ।
पोढातै परक पभ्रंर वात दई विसराय ॥१४७ ॥

रांणै सूरजमाल रे पमंगां हुवा पलांण ।
पोह फाटी परभात री हळचळ हुई हलांण ॥१४८ ॥
सुपियारी बैठी सदन दोढी मग चख देर ।
साधे भूळ सहेलियां लाड़ गहेली लेर ॥१४९ ॥
पग अगा मन पूंठ ने काळो वदन कियांह ।
आयो काळा आखरी ओठोड़ो अईयांह ॥१५० ॥

अईयांह वाचक ओठो सूं

देखै सूरजमल दरस हिय पाबू रे हेत ।
ओठी गळ लायो अधक दूर हूंता पग देत ॥१५१ ॥

ओठो वायक

खळवळ सूं जीता खळां रण राठोवड़ रांण ।
जुध में जीतो जींधरो छळ करने चोहांण ॥१५२ ॥
जाया धांधळ रा जुगळ धाया सुरपुर धांम ।
नह रोया मृत लोक में कर जुध आया कांम ॥१५३ ॥
आथमते नांमी अरक पड़ जेठी पाराथ ।
ऊगमतें दसमी अवन पड़ कणएठी प्रात ॥१५४ ॥

॥ कवित्त ॥

मह सीधो हणमंत महातन करै वज्र मय ।
गोरख सीधो गरु बजै ओहूं काळ एक वय ।
भव सीधो जड़ भरथ देह संजम इन्द्री दम ।
गरुड़ अवर गंगेव जती सीधो लछमण जिम ।
सीधी यळ कीयां धांधळ सुतन घन देवळ सत धारणी ।
पाल तिण पंथ सीधो सुपह सीधी नवलख चारिणी ॥१५५ ॥

॥ दोहा ॥

चार असी सिध चारणी सात सती सुपखाल ।
जिण मारग सीधो जती नवलख लोवड़ियाळ ॥१५६ ॥
सुणिया ऐ सूजेह श्रवणां दुखदायक सबद ।

अन्तर अम्मूजेह मुरछागत पांमी मरण ॥१५७ ॥
सुपियारी सुरतांण कर दातण वैठी कंवर ।
भू ऊगमतै भांण जद फरकी चख जीमणी ॥१५८ ॥
रांणी दर गहरौ रुदन वर अतै वणियोह ।
महिलां रोवंती मेहळ सुपियारी सुणियोह ॥१५९ ॥

॥ रांणी रो साद, कवित्त ॥

सज सारधू स्रंगार मैहल किण दिन मोकळसूं ।
त्रिच संवळै कुळ विधू हुंई जोवण कद हळसूं ।
सब उमंग साळियां रैण भर कद न रमासी ।
दारू अमलां दपट प्रगट परगैहै कद पासी ।
रागरंग हूंस मन में रही सोक रुदन फिर सांमणां ।
हमरोठ धणीरै मांडहै पाल हुसी कद प्रांमणां ॥१६० ॥

॥ सोरठो ॥

रांणी रोवंतीय सुपियारी सांमी चली ।
कंवरी कळपंतीय ऐवासां सूं ऊतरै ॥१६१ ॥

सुपियारी वायक

आंटीला अळखवणा वादीला वरियांम ।
त्रिण धणियामी कर वुवो सुपियारी रो सांम ।१६२ ॥
अतरै ले आईह दासी सुध धीरज दयण ।
वांचौ गळ वाईह मत सागर रौ मौळियौ ॥१६३ ॥

कवित्त सुपियारी वायक

मेल कंठ मौळियौ वोल सुपियारी वोलिय ।
अंवा मत स्रव उदक तेज सत नभ दरतोळिय ।
रोसी तिय कुळ रहत जकै पति तज रहै जावै ।
मोतिनियां री माळ आंख आंसूं किम आवै ।

पारकर नगर भूंडर पतय कळंजर रांणां कुळा ।
हमरोट कोट अमरांण नै आज करूं सह ऊजळा ॥१९४ ॥
दावानळ दीपते बीच आसण कर वैसूं ।
लूम झाळ विकराळ लाय लपटां तन लैसूं ।
झाळाळौ भरतार जिकौ दिल सीस रहाऊं ।
जाळानळ मये जळूं जदे सुरतांण कहाऊं ।
घमसांण हुवै नीसांण घुर गढां प्रसिध कथ व्हे घणी ।
सतीपुर पती लेकर चलूं तद हूं सूरजमल तणी ॥१९५ ॥

कव वायक

पिंड पोरस प्रगटियां करग तन कियां सकोमळ ।
लोवणप्रत रंगळियां अरकतप कियांस ऊजळ ।
मधुर वांण मुखमयंक मात हूंतौ फ़ुरमावै ।
मौ पत रौ मौळियौ अठै लायौ जो आवै ।
कळपव्रछ लता तूटी कना मिलण मनोगत मुख मुणै ।
दुलहणि थियोड़ी विण दुळह ऊभी सूजै आंगणै ॥१९६ ॥
करग कमल कूटतौ ऊअर पीटतौ अगावै ।
नयणै जळ नांखतौ पिता भीतर दुख पावै ।
अत लेतौ ऊसास स्वास नीसास लगावै ।
दुख सागर में डूबतौ धिया दुख देखण धावै ।
ऊठतौ अने पड़तौ अवन तन विपती सूं ताविया ।
मन दुमन थियौ फीकै मुखर यम सूरजमल आवियौ ॥१९७ ॥

सूरजमल वायक

हठ मत कर सत हमै जलण तन दहण कटण जुग ।
हर कीन्हौ जिम हुवौ मरण जांमण दौनूं मग ।
आ धर पुर अमरांण सरब थित सारी संपत ।
पुत्री थूं पाटवी हुकम सह कथ थारै हथ ।

मो दीधो नह सुख समझ मन रांम न सुख दीधो रिधू ।
लखत क्रम किसुं कारी लगे सुपियारी म्हारी सिधू ॥१६८ ॥

संभावना अलंकार : फूलकंवरी वायक

भांण न ऊगे भूम गरुड़ ऊडांण तजे गत ।
अरजण चूके वांण मांणरढ रांण तजे मत ।
जत छोडे खटजती सती सातूं सत छोडे ।
उष्ण तजे वळ आठ मेघयळ धारां न मोडे ।
कुळहांण लगे जिण दिन कहूं वांण मुझ झूठी वहै ।
सुरतांण भांण धारी सिधू रांणा किम वांसै रहै ॥१६६ ॥

सिर वेणी साजती कसूं काळी डोरी किम ।
रंग चूड़ो राखती लंब कंचुक पहरूं किम ।
सजणहार सिंगार सुतन तो हूंती सुहागण ।
हुय जोगण दुतहीण फिरत शोभूं नहिं आंगण ।
कोळूई रहूं जाय किण कतै धुर मो घर हाल्यौ धकै ।
सुण पिता कंध विण तो सदन रांम म्हनें नांही रखै ॥१०० ॥

॥ दोहा ॥

पन तन सूं छेटी पड़े नीर चडे नवनेज ।
हव कोळू दिस हळण री दाजा करो मजेज ॥१७१ ॥

सूरजमल वायक परगेसूं

॥ कवित्त ॥

हुवो सती रो हुकम वेग ताजी पलणावो ।
कस कजाव वढ करण अवै ओठी ले आवो ।
संहे भाई सुरतांण कसो संग चलण कमरां ।
पाट नृपत री विया यळा करसी जस अमरां ।
पति नूं मिळण राखण प्रसिद्ध वैहण सतीपुर वासरे ।
राम तन करण सांचो रतन सुतन पधारे सासरे ॥१७२ ॥

॥ दोहा ॥

अब उतार असोभता धरे सोभता अंग ।
कारण तिण मंजण करण गई सती धवळंग ॥१७३ ॥

॥ छन्द त्रोटक ॥

सद्रहो ओपमा ॥ झमकं ओपमा ॥ उतपं च्याव सुत ऊकत ॥ रूपग ओपमा
॥ संकल ॥ पर परंत ॥ रूपग उतपं आ अनुकंत ॥

कर मञ्जन अंग अंगोछ कियूं। सुपियार सती उमिया कसि यूं ।
सटकार दये कच गौख चढी । खित वाल समोहत द्रव्य खड़ी ॥१७४ ॥
धरियो तन रूप महाधर री । कस वागो अनोपम केसर री ।
घट होमण चित्त विनोद घणो। परमोद धरंत अमोद पणो ॥१७५ ॥
वरणी तन होमण री व्रत ले । लख अंग प्रतेसु अलंकृत ले ।
वर ओपम एम फबे वळसी । सिर सोभ सबे उत श्रीफल सी ॥१७६ ॥
सिध वीन्दिय भाळ सिंदूर सधी। उदियो नभ मंगळ कार अधी ।
मुख पंकज सीस हंसे मिळीयं । भ्रमरावळ जैम वुहा वळियं ॥१७७ ॥
लज ग्रहै विनै पत नेह लभै । अंत रूप लियां हरि नेत्र उभै ।
भ्रमरावळ नैण विचै भळकी । किर रेख अनोपम काजळ की ॥१७८ ॥

॥ अथ भ्रमरां री ओली ह्वै ज्यूं काजल रेखा वरनन ओपमा ॥

नथ वेसर सोभय सीळ खले । मुगता ग्रहै नूं सुक ज्यूं मुख ले ।
कुळ काग न दाड़म हीरकणी । तस सोभय दंत वतीस तणी ॥१७९ ॥
बिंव ओठ तणं सिर ओप वही। मिळियो रंग वीद्रुम चोप मही ।
गरदन्न सुवच्च कुरञ्ज घटौ । तिण कंठ प्रनाळ भुळै अवटो ॥१८० ॥

॥ प्रणाल पांनड़ी वालो छंद त्रोटक ॥

धर वांह उभै सिस सोभ धरी । कह डाळ अनोपम चंपक री ।
थिर हाथ हथैलिय कुंभ थळी । फवती कर अंगळ मूंगफळी ॥१८१ ॥
सिर स्वेत ससी हरवीज सिधू । वरणू नख आरुण इन्द्र विधू ।
छिव कंचुक तार प्रकाश तिसा। जिण में धण दोय अनार जिसा ॥१८२ ॥

॥ कांचर्न री तारां सिस रो प्रकास ॥

उपजी फिर ओप घनी उकवा। छिब सूं कर दोय जुड्या चकवा।
घर पेट प्रभाय मिळी पुणियूं। स्राक स्री ब्रख नांम धरी सुणियूं ॥१८३॥

जिण नाभ गंभीर सरूप जपं। प्रत जोट दयूं खुलतो पुसपं।
मिळ रैख सुरंग परागमयं। अवळी नव तीरथ राज पयं ॥१८४॥

कट खीण सती सब सोभ कहूं। मृगमंद धस्यो गजकुंभ महूं।
विन जंग रु कंठ दिपै वण रा। कदळी अभथंभक कुंदण रा ॥१८५॥

मळियाचळ वास तनूं महक्यो। थिर चाळ चलै जिम हंस थक्यो।
जन पायो महाधर धाट जिसो। हरणांखि तणो तन हाटक सो ॥१८६॥

कळधोत अभूखण अंग कियूं। नखचक्ख विचै सिणगार लियूं।
सुरतांण लये खट तीस सिरा। धिय आज उजाळत धाट धरा ॥१८७॥

॥ यां तुकां में लछण ॥

तिण काज त्रियां सिधपाल तणी। विप बारह सोल स्रंगार वणी।
सब साज विडंग भड़ां कसिया। करि अंग कमाल पळांण किया ॥१८८॥

हव जावत पुत्र अमोल हथं। रणबाह समस्त अरोह रथं।
नरखै पित माताय नोर नरै। कंवरी तन होमण कोड करै ॥१८९॥

राय आंगण ग्रेह थयो रिम रो। पळक्यो मुख चंदो ए पूनम रो।

॥ श्री मुख सूं फुरमावै ॥

पुणहूं जळ चाढुंअ तुज्झ पखां। सुण मां मत न्हाकैए नीर चखां ॥१९०॥
धन देख रहूं किम मोख धणी। तनुजा हुंए सूरजमाल तणी।
सज साथ लियां पित मात समी। कुंवरी हव कोलुअ प्राग क्रमी ॥१९१॥

धर आद हिये सुरतांण धियां। दुळही दुलहै नुं अवैण दिया।
झणणाहट जांझर साद हुई। हय पीठ सती असवार हुई ॥१९२॥

चित आवत ओपयसी सुरगा। दसमी दन सिंह चढी दुरगा।
सब साथ लियां पित मात मथै। मळफी चढ प्यार तुरंग मथै ॥१९३॥

दुन सूं तन होमण पैंड दिया। धन हो धन सूरजमाल धिया।
घर गैण प्रथीतळ सोज धणी। तिय लेवण जोत भालाळ तणी ॥१९४॥

धिय देखज नेतांय अंग दहै । विण पीठक माळक जाव वहै ।
सुरतांण लियां कुळभांण सगे । उणवार खड़े असरांण अगे ॥१९५ ॥
थळसूं रथ पूठय माग धिया । करहां चढ ढोल मुहार किया ।
कुंवरी तन जोखम जीव कळै । पत घाट खड़े असवार पुळै ॥१९६ ॥
घट पाल पड़े सुत छेह घणी । धुरजाळ खड़े हमरोट धणी ।
पिड़ मांझ रह्यो कर राड़ पती । सुपियार पधारिय होण सती ॥१९७ ॥

॥ दोहा ॥

कुटुम सरब साथै कियां गढपत पत गोढीय ।
आवी ऊमरकोट सूं सत करवा सोढीय ॥१९८ ॥
अमरांणा रा मारगां खैहती उड्डै खेह ।
आ आवै सोढी अवै नांह निबांहण नेह ॥१९९ ॥
आय हुआ जद एकठा सुत धांधळ सिरदार ।
पाबू बिण झांखो लगै वूढै रो दुरबार ॥२०० ॥
पड़ियो धांधळ पूत सुणियौ सूरजमल सिधू ।
आवी चढ अदभूत होण सती हमरोट सूं ॥२०१ ॥
तन चढियौ साहस तरण पड़ियौ समर पतीह ।
आवी ऊमरकोट सूं सोढी होण सतीह ॥ २०२ ॥

॥ फूल कंवर वायक सारा सोढां सूं माता पिता नै ॥

कुंवरी पित हूंता कहै सोढां सरब सुणोह ।
बियां म दीजो धांधळां निज त्रसटैळा नांह ॥२०३ ॥
हुतो भवस जिमही हुवो सुणो सरब मो साख ।
धिय फिर दैणी धांधळां तिणरी घलो तलाक ॥२०४ ॥

सोढां वायक

यम सह सोढा ऊचरै कीना वचन कबूल ।
घाटेचां धिय धांधळां फेर न देसां फूल ॥२०५ ॥
पिड होमण रो पेहल मैं कियो पती सूं कौल ।
वहूं जलण रणवास रा म्हनै बतावो मौल ॥२०६ ॥
हूं जासूं सग घोळहर उर तज मोटी आस ।

अब देखू जाय आंगणै अण घर रा एवास ॥२०७ ॥
दरसण सासू नै दियौ लियौ कुटुम सहै लार ।
आई वैहै गाय आंगणै छूटां पटा सुप्यार ॥२०८ ॥

माजी कमळादेजी वायक

गढपत रै जनमी घरां आई मो ऐवास ।
पाल भला तो परणियौ सुत सोढी संवास ॥२०९ ॥

कव वायक

सोढी जळवा सायधण हवळे पाल हलीह ।
आ किम मेलै एकलौ गढपत नू गैहलीह ॥२१० ॥
वारे आभूखण वांवधर सज सौळै सिणगार ।
संग पती काठे चढण हुई सती हुसियार ॥२११ ॥
धर पड़ियौ कोळू धणी रण वूडो राजंद ।
रत दीनो सारां सिरै गैहली नूं गोविंद ॥२१२ ॥
हैवर चढ आगे चली जस मय जेठांणीह ।
वय छोटी मोटो वडम दुलही देरांणीय ॥२१३ ॥

देवल वायक

॥ दोहा ॥

रांणी किम वांसै रहै सुपियारी तज सांम ।
सूरजमल री सारधू भालाळा री भांम ॥२१४॥

॥ कमळादे वायक ॥

महिपर घर म्हारोह सारो सरग सिधावसी ।
खित ऊपर खारोह ऊगो ग्यारस रो अरक ॥२१५ ॥
कुल दीपक तीनूं कंवर रण जूंभे रहआंण ।
बांध साहस हाली वलण वांसे त्रिहु वहुआंण ॥२१६ ॥

देवल वायक

वाजा वजवाड़ेह पमंग चढी दे पांमड़ा ।
सोढी जळ चाढेह पाल विधू दोनूं पखां ॥२१७ ॥

जण दन झंखौ जोय सूरज सैह सोढांणां री ।
सरस वरंगा सोय घणू घुरां मझ गूंजूए ॥६१८ ॥

आभूखण ऊतार देण लगी दुज संत दत ।
तन होमण हुइ त्यार तनुजा सूरजमल तणी ॥२१६ ॥

दत क्यावर दोढा सदा प्रथमी पर परमार ।
आ गाहड अमरांण री सावत रखै सुप्यार ॥२२० ॥

सोढी तन मन सेर अगन जलण री आदरी ।
ले हाथां नाळेर पाल लार दे पांमड़ा ॥२२१ ॥

साथे हालै सासरै सुख देखण सारीह ।
पत सरगां मारग पड़ै नह हालै नारीह ॥२२२ ॥

वहतां सतियां वाट आगे मोहरां ऊछळे ।
थटिया जाजा थाट विप्र भगत अभ्यागतों ॥२२३ ॥

अंग घारै ऊछरंग राव – कंवरी चालै रमण ।
अगन दहण निज अंग चाली सूरजमल सिधू ॥२२४ ॥

पत सूं जोड़ण पांण चंवरी दे सहको चलै ।
स्रग जावण सुरतांण काठां दिस तूं हिज क्रमै ॥२२५ ॥

माता सूं मिळ नेह पर लागी सासू पगां ।
कह दोनूं कुळ नेह अती भोळावण अंतरी ॥ २२६ ।

सुप्यार कंवरी वायक काठां चढतां माता पिता सूं

॥ कवित्त ॥

हूं जाई थां घरां राव कंवरी कहवाई ।
देसपती मो पिता रह्यो कुळ गरव सदाई ।
घन घन वाजै धिया वंस री वधै वडाई ।
आज अगन नह जळूं किमूं कुळ रो अधिकाई ।

मोह धर ग्यूं तन तज मरद जद ळांछण मो जात नै ॥२२७ ॥
नृपियार सती होवण समय मिळ आखै पित मात नै ।

सुप्यार कंवरी वायक सासू सूं

धर साहस कुळ धिया पुणै सासू सू पिआरी ।
मत कळपो मासाव प्रेम रचना विधना री ।
दन लागां गिर डुळे पड़ै ऐवास प्रथी पर ।
तरवर लाकड़ होय सूख जावै सिन्धू सर ।
नह मुवा नांम यळ पर नवौ सगतांवत कारण समर ।
जग थिरू गयण रिव सिस जितै आप तणा जाया अमर ॥२२८ ॥

रांणी वायक

॥ दोहा ॥

भाटी जुध भारात जींदा कुसल न जावती ।
जोवत हाथज पात कळैमही होवत कनै ॥२२९ ॥
किय साहस करडोह गेहली हाथ कटार ग्रह ।
भाड उदर भरड़ोह सुत अम्बा नै सूंपियौ ॥२३० ॥
पिड मोह प्रसुता पणै निज मृत समी निहाळ ।
कर साहस सुत काढियो पेट सती परनाळ ॥२३१ ॥
अंतहपुर भेळो हुओ जठै दुराजो जोप ।
सगतां मिळ देखै सको लोक संपेखे लोप ॥२३२ ॥

सती गैहली वायक अम्बा सुं

पोखे जणणी पूत प्रसिद्ध वचन मो पालजै ।
सुत ओ होयी सपूत वैर दोनी ही वाळसी ॥२३३ ॥
माता सुत म्हारोह लेखव वय पनरो लगै ।
खीची नै खारोह ओ जोय लागैसी अवस ॥२३४ ॥

वूहां वरस दस मांय काकै पित जींदा कने ।
मांगेह लेसी माय श्रो केवा उधरावसी ॥२३५ ॥

वहू सिहारे बंधवा रहियो जायल राव ।
झरड़ै वय बारह लगों मारै महळां मांय ॥२३६ ॥

राँणी वायक

॥ कवित्त ॥

अन विन रहै न अंग पुणां जळ विनां न पंकज ।
विन पैंड़ै रथ वहै आंख विण लखै न अंकज ।
जळ विन वहै जहाज पांख विण उडै पंखेरू ।
विनां भांण तम मिटै डाक विण वजै न डेरू ।
गेहली तूं हुई गेहली घणी श्रौर किम ऊछरै ।
सेह् कौम कहै संसार में मात विनां बाळक मरै ॥२३७ ॥

गेहली वायक

श्रो बाळक ऊपनो वंस कमधां उजवाळण ।
श्रो बाळक ऊपनो वैर काकै पित वाळण ।
श्रो बाळक ऊपनो अमर रहसी इळ ऊपर ।
खेल बड़ा खेलसी कांम वणियो अण ऊपर ।
वालको बड़ा लेसी विरद घूमर खळां रा गाळ सी ।
मारसी नृपत मोटै मथण श्रो कमधां उजवाळसी ॥२३८ ॥

॥ दोहा ॥

देवल सगत असीस दे पांण दिया सुपियार ।
अव वूढै पावू तणा तुझ भूजां भर भार ।

सगत गेहली वायक माता सूं

पाबूसर री पाळ पीपळ बांधे पालणो ।
भांण तणो तप भाळ वधसी दिन दिन बाळको ॥२४० ॥

दुई अंगूठी दूध मात तणो थण मांनसी ।
तुज निस दन मन सुध पवन हिलोळै पालणै ॥२४१ ॥
चार असी सिध चारणी रख्या करसी रात ।
रकतंबर दन राखसी नवग्रह नै नवनाथ ॥२४२ ॥
दुख भरड़ो बहु देखसी रण मांभल दन रात ।
छोरु होवे छोरळा मर जावे पित मात ॥२४३ ॥

कव वायक

भड़ चाकर भाईह चारण रैबारी सांवळा ।
थांरी वैह आईह सतियां सह काठे चढण ॥२४४ ॥

संख्या

सात वीस सो सांवळी चवदै चारणियांह ।
तवुं सहस छत्रियां त्रियां बारै रैबारणियांह ॥२४५ ॥
दियो सती कर दांन ग्रहणो सह अभ्यागतां ।
धरियो जावण ध्यांन पत गोडै वैकुण्ठपुर ॥२४६ ॥

गैहली वायक आल ऊदल कमळादेजी सूं

नृप चोढे डोगळ निलज आयो कुसळै अंग ।
मत देजो निमोण री तिण नै चढण तुरंग ॥२४७ ॥
मो खांवद जुध मेल ने भाग ले आयो भाग ।
नह राखै धांधळ असल अवस डूम री आग ॥२४८ ।

सुपियारी वायक

आसा कर ऊछाळ कमध तणी कर पर क्रमण ।
भव भव श्री भालाळ दे खांवद मो नूं दिनंद ॥२४९ ॥
लाखां देखे लोक कमळ तणा दरसण करै ।

अगन विचाळै ओक_ कीनो सूरजमल कंवर ॥२५० ॥

॥ कवित्त ॥

खड़क अगर श्रीखंड सती ग्रह धरण समारै ।
केसर कुंकुम छड़क धूप पर मल सिर धारै ।
करै काठमें कोट पाल वूडो पधरावै ।
चित्ता धर समसांण जोड़ आसण वैठावै ।
सिरदार लगा हर हर समर जाग्रत कर पूळी जळण ।
तिण वार ऊभै कमधां तरण वाह ग्रहै ऊठी वलण ॥२५१ ॥

॥ दोहा ॥

उजवाळै अमरांण धर उजवाळै धाट नै ।
भाले अम्बर भांण सुपियारी जाळे सुविप ॥२५२ ॥

॥ कवित्त ॥

काठ सदन कर कदन हुवो जाग्रत हूतासण ।
लाय पवन विध लपट घ्रत्त सींचें ऊपर घण ।
कोमळ तन मन करग किया होमण रायकंवरी ।
वैठी जोड़े वळण भलां वैठी तूं चंवरी ।
विण कंथ सती मृतलोक विच रांड होय नांही रही ।
पाल जिम सही धारां प्रबळ सुपियारी झाळां सही ॥२५३ ॥
रंग रैहण नह रमी पिंड संतोष न पायौ ।
सुख दीठो न सुहाग सुविपसा नेह न चायौ ।
आवौ राय आंगणै वहू लाडी नह वाजी ।
चंदो न कियो सदन वीच नह मैहल विराजी ।
पाल रै लार छूटां पटां अगन वळी तन ओरडां ।
वमायो सती आगे सदन वांध्या कांकण डोरड़ां ॥२५४ ॥
गैहळी सत संग्रहै कीध साहस अत करड़ो ।
कर सूं झाल कटार फाड़ उर काढे फरड़ो ।
काठी वांधे कमर पेट ऊपर कस पेटी ।

बैठी जम रायकंवर लाय तन झपट लपेटी ।
राव तन बांह कीधी रखत पिंड राख हुय धर पड़ी ।
सती होय पती साथे चली घन घन गैहलां धीयड़ी ॥२५५ ॥

सती जोत नभ चढत वहत फूलां री वरखा ।
प्रांणपती जय पाय हुई दोनूं मन हरखा ।
अरुणानुज आरोह आप ईस्वर वैह आया ।
इन्द्र ब्रह्म सिव सगत अमर सांम्हा वैह आया ।
वधाया पाल बूढ़ो विविध सतसूरपण सराहिया ।
लार नृप ऊभे सतियां लियां अमरपुरी में आवियां ॥२५६ ॥

सतीपुरै विच सदन सरब वणिया सोना रा ।
उठै नृपत आविया लीयां नर सतियां लारा ।
अपछर झूलर अगै वजै खट तीसां वाजा ।
वासव वहै जलेब राव वैकुण्ठ धराजा ।
हुव कमंध मैहळ दाखळ हुआ सिध सतियां लीनां सथां ।
मिळ गया पाल बूढो मुगत मोख तणी अंबारतां ॥२५७ ॥

॥ दोहा ॥

नीवै साथै ज्यालनल चढ काठां जयचन्द ।
वधू सरूपां राखियो चंद्राणण जसचंद ॥२५८ ॥

पाबू बूढ़ै पांचमी सिध गत ली जुध सांय ।
छठी गत पूगी सती मिळी पती जिव मांय ॥२५९ ॥

आयो पाबू एकलो घण नै मेले धाट ।
होमे तन भेळी हुई वैकुण्ठां री वाट ॥२६० ॥

नह तजिया एकल नरां अब मोटे पतियांह ।
मैहली उण साके मंही सहस हुई सतियांह ॥२६१ ॥

॥ कवित्त ॥

तिन कंवरी रै सोक जगत सैह सूंनो जांणे ।
ले अंतहपुर लार गयो सूजो अमरांणे ।

कमळादे कूकती मात आई राय आंगण ।
ले झरड़ो मूसाळ गई नांनी दुख रांगण ।
काछेला गाँव उजाड़ कर गया तड़ंगे दस दिसां ।
राज तप हीण लारै रह्या आले उदळरै जिसां ॥२६२ ॥

॥ गाहा ॥

जग में औ भाराथ हुवो जद स्रावण मास मही वाके सद ।
त्रजड़ हथां धांधळ गळिया तद, खीची आँण वसाई खीचंद ॥२६३ ॥

॥ दोहा ॥

राव समर कर धर रह्यो सुत धाँधळ समरत्थ ।
पूजाणो प्रथमाद पर रिण जूंझो रावत्त ॥२६४ ॥

इति श्री पोरसातन मुरधर भाषा आसिया मोडजी कृत सतियां रौ परवाड़ौ सम्पूरण

॥ अथ झरड़ै रौ परवाड़ौ लिखते ॥

॥ गाथा ॥

करनी कृपा मुज्ज पर कीजै देवी वचन वडाळा दीजै ।
घण उकतां घल समय घटाळी लाज धुजाळी लोवड़ियाळी ॥ १ ॥
सीधो कमधज सदन सवाड़ो पावूकर वारमो प्रवाड़ो ।
कुळ जिण वरदायक कुरड़ा नै जस रट वाखांणू झरड़ानै ॥ २ ॥

कव वायक

॥ दोहा ॥

सिध झरड़ो लेसी समर खीची सूं खेटोह ।
विरदाऊ हव वाळको बूढ़ा रौ वेटोह ॥ ३ ॥
वरदायक सतियाँ वचन माँनै नाँनी माय ।
गई सदन दोहीत नै पालणियै पोढाय ॥ ४ ॥

॥ सोरठा ॥

देखै चंद प्रकास देखे निस जळ देवियां ।
हे मन बाल हुलास पींगे सरतट पोढियां ॥ ५ ॥

॥ दोहा ।

देखै सूरज रो दरस हूंछै पवन हिलोळ ।
ओ बाळक उदियान में के के करै किलोळ ॥ ६ ॥

॥ सोरठो ॥

बोलै सबद अलूक रण मांझळ घुररावता ।
कररावै करकूक भरियै सरवर भैरवी ॥ ७ ॥
दे चूड़ेळण डाक ताल परै दे ताळिया ।
हुवै खवीसां हाक जोगणियां वाळै जमै ॥ ८ ॥

॥ कवित्त ॥

तर पींपळ रै तळै फरै फूंकार मणधर ।
तर पींपळ रै तळै रमै वेताळ पिसाचर ।
आधी निस ऊपरै सरव आवै जोगेसर ।
खेतपाळ खिळखिळै करै हूंकार वकेसर ।
बजाजी प्रेत बूढा वणें केहके निसचिरतां करै ।
देख ओकरै हंस डेहकळा बाळक भरड़ो नह डरै ॥ ९ ॥
अन बाळक पख वदै वदै भरडो इक छिन में ।
वदै बाळ अन वरस वदै भरड़ो इक दिन में ।
सम्मतसर अन सरिस अहे तन वधण जेम गत ।
महाबळी मास में वढै उतरो वूढावत ।
हुव बाळ वरस दन रो हुवो ओ कमधां उजवाळणो ।
संभाळै आय नांनी सदा पींपळ झूलै पालणो ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

वरस तणो बाळक हुओ ओ अरि हरा अदंत ।

तद नांनी कड़ तेड़ नैं सुत लेगई सदंत ॥ ११ ॥
हो मोटो सतियां हुकम झरड़ो उजळतोह ।
पौं पिडतो पिणिहारियां पणघट मझ रमतोंह ॥ १२ ॥
गज रिप बाळक जेण गत बूढ़ावत विरदाळ ।
कमधज रमै कवांण कर पंडुर जळ री पाळ ॥ १३ ॥
ग्रहियां हाथ गिलोल ऊभौ सर तट ऊपरै ।
बूढ़ावत अणबोल भांगै घट पांणी भरचा ॥ १४ ॥
छुटै गिलोलां सार री जो छेदै बह जाय ।
मैंण तणो लेरे मिळै जिणसूं पुणग न जाव ॥ १५ ॥
बूढा रो बेटोह अत बेटो अळखावणो ।
खीची सूं खेटोह करसी वेगो इज कमंध ॥ १६ ॥
जळ मैं देवळ जोर अणु पुंणंच ग्रह आछटे ।
कुंभ तणो दहूं कोर निपट रवंतो नीसरे । १७ ॥
टाळी बत नांही टळै खीची री खूटोह ।
दिलती खमिया सरव दन उण दिन छेड़ उठोह ॥ १८ ॥
मोसा दे मामोह जांणू हूं तोनूं जबर ।
जायलिये जांमीह रिण विच धारां राखिया ॥ १९ ॥
भूपत जींदो भांग करसु धोव कटारियां ।
भांमण घड़ा म भांग मांन वचन मो मारका ॥ २० ॥
दस ही दिस डाकोह जवतो जबर जमावतो ।
कहूं तुझ काकोह जमड़ै धक लीना जबर ॥ २१ ॥
जींदै समहर जांण मात पिता भ्रत मारिया ।
काकै नू केवांण दीधी नृप जायल दुरंग ॥ २२ ॥
अबळा रै आगेह कासूं सबळापण करै ।
वांगड़ जद वागेह केवा लै खीची कनै ॥ २३ ॥
पाई जींदै तात मात भ्रात लड़ मारिया ।
जबर गणू तो जात अरि नू दे जद ओळभो ॥ २४ ॥
अतरी अणहूंनीह अलखांमण न चलै अठै ।

मळहठ वापोतीह जहै तुझ पत री जमी ॥ २५ ॥
सब दन संतावेह पणघट मग पणिहारियां ।
यूं वैर न आवेह तात अनै काकै तणो ॥ २६ ॥
करड़ा वचन कठोर वाळो सुण बोलो रह्यो ।
सुध विसरीय सरीस कर दौय टूक कवांण रा ॥ २७ ॥
उर में ऊठी आग नयणां जळ वरसै निपट ।
वाळो ओ वजराग आपै आप न ओळखै ॥ २८ ॥
कमध मतै करड़ेह हव कथ पूछण हालियो ।
जोग तणी झरड़ेह उर विच में धारो उठै ॥ २९ ॥
बूढा रो वाळोह भातीजो भालाळ रो ।
वडां पखां वाळोह आयौ नांनी आंगणै ॥ ३० ॥

झरड़ै रा वचन नांनी सूं

नह राखूं नांनीह सुण म्हारो विपही सरब ।
छिप मत रख छांनीह कहदे पूरबलै कथा ॥ ३१ ॥
पण मो कवण पिताह कुण माता काको कवण ।
सिध नर जगत छताह ज्यांने किण मारया जवार ॥ ३२ ॥
सुध न हती छोटोह मात पिता री मुझ नैं ।
मोनूं तो मोटोह कीनो तैं नांनी कहूं ॥ ३३ ॥
मांमी पणघट मांय कहिया मो खारा कथन ।
वेरी वेग वताय जिण काको पित जोखम्या ॥ ३४ ।
नांनी तीर निमांण मांमी दीधा मैंहणा ।
विण मो नांह पिछांण काको पित मारया कवण ॥ ३५ ॥
तिण री जड़ तोडूंह हूं छोटो तौही हमैं ।
मारब न छोडूंह जिण काको पित जोखम्यो ॥ ३६ ॥

ग्रंथ करता वायक

करदे वाळ कळाप जद नांनी यम जाणियो ।

सूतौ दाटक सांप परत जगायो पापणी ॥ ३७ ॥
आगे तौ अळखावणो बोहत हटीलो गाळ ।
ओद जवार जिण ऊपरे क्रोध कियौ ततकाळ ॥ ३८ ॥

नांनी वायक

गियौं नहीं मांमी गनो विरथ सुणाई वात ।
पिता स्रग तुझ पौंछियो हुँ बैठी तो मात ॥ ३९ ॥
विष म्हारै भुगतूं विपत जो दुख सह्यो न जाय ।
आंण पड़्यो मो आंगणै अम्बर हुँ तौ आय ॥ ४० ॥
काढ मतो करड़ाह वेटा हट करने वचन ।
नांनी नै झरड़ाह क्यू अत दुखदायक करै ॥ ४१ ॥

झरड़ा वायक

मो पित हथमारोह वैगा वेग वताहयदे ।
तजदूं घर थारोह नांनी हूं रहसूं नहीं ॥ ४२ ॥

नांनी वायक झरड़े सूं

किता दुखां मोटो कियो पोख करै प्रतपाळ ।
हट मत कर वेटा हमैं अम घर रा उजवाळ ॥ ४३ ॥
पणां आपणी पेट ले खंजर मारण लगो ।
नांनी लियो लपेट चवसूं कथ मत मर सुतन ॥ ४४ ॥
जनम तणा जागीह क्यूं मो दुख द्रोगी करै ।
सव दन मन सोगीह रोगी जेम पड़ी रहुं ॥ ४५ ॥
वेटा थारो बाप नांम जिकण वूढ़ो नरिंद ।
पूरै तेज प्रताप काको तो पाबू कमंध ॥ ४६ ॥
वढ खळ दळ वाड़ाह उणकर भूप वडाविया ।
पाबू परवाड़ाह इळ ऊपर कीना अमर ॥ ४७ ॥

बूढ़ो पाबू या बहु बरदायक उणवार ।
ज्यांनें मारचा जींदरे जायल रै सिरदार ॥ ४८ ॥
बेटा थूं है बाळ अवर पखो नह एकलो ।
मागो वो भोपाळ भरड़ा किम मारिस जको ॥ ४९ ॥
जित सूं नभ लग सतखणा अै मोटा ऐवास ।
जठै विराजै जींदरो पवन न पूगै पास ॥ ५० ॥

झरड़ा वायक नांनो सूं

माता तन म्हारोह ओ केवा कज उदकियो ।
छै हर रो सारोह जांणू मारू जींदरो ॥ ५१ ॥
म्हारा सह मारेह गैरी वो कुसळै गयो ।
नह रहिया लारेह हालै जो साथै हमै ॥ ५२ ॥

नांनो वायक

पोरै पोहरायत खड़ा फिरै गिसत चहुं फेर ।
सारंग सुत पोढै सदा अत मोटै आसेर ॥ ५३ ॥

झरड़ा वायक

मो साम्रव मोटोह गढपत फिर नौवत घुरै ।
जिण कज जागे टोह हूं होसूं नांनी हमैं ॥ ५४ ॥
धरपत नह धारूंह जोग लयूं तज दूं जगत ।
म्हू उणनूं मारूंह माता दन गणियां मांही ॥ ५५ ॥
अणियां उवर उभेड़ जननी मोनूं जनमियो ।
बुवो वडो विचवेड़ जिणसूं डर नह जीव रो ॥ ५६ ॥
नांनी सू बरनार सदा विभाड़ै साम्रवां ।
आरै पम्र आधार किणरो है मोनूं कहो ॥ ५७ ॥
गोंसाणो अगनी सरप कहूं लियां वड कूंत ।

यता न छोटा जांणगा वाघ अने रजपूत ॥ ५८ ॥
ले खंजर मारग लग्यो अपड़ बळी आकाय ।

नांनी वायक

मो दुखदायख नै मुदै झरड़ा तन मत जाय ॥ ५९ ॥

झरड़ा वायक

कुळ सह केवाणेह केवा खीची काढियो ।
अंग आळस आंणेह हव घर बेठां सूं हुवो ॥ ६० ॥
उभै अमीणा आच इक खंजर राखूं अगर ।
वळकळ यूं दुख वाच सांच नहीं संसार में ॥ ६१ ॥

नांनी वायक

रंणा मोटो राज तवूं हूंतो सुत ताह रो ।
कर खीची सत्र काज रण विच धारां राखिया ॥ ६२ ॥
दीठांसूं पड़ती दहळ भूप बड़ा भैचक्ख ।
नर दुथणी जायो नहीं तो काकै री तक्ख ॥ ६३ ॥

झरड़ै वायक

मो पित काको मारनै जींदो रह्यो सजीत ।
देखै हाथ दोहीत रा अब थोड़ा आदीत ॥ ६४ ॥

नांनी वायक

चढ पोरस जीतण समर कमर कसत जिण वार ।
घण सत्रां मिटतो घुमर होतो भंवर असवार ॥ ६५ ॥
थित थंभ पित थारोह पह घांघळ री पाटवी ।
उणतक उणियारोह देखां जिण दिन दाखसी ॥ ६६ ॥
पाबू भंवरी पीठ अपड़ अभागो आवतो ।

देखणा जिण तक दीठ खित सूरज रथ खांचतो ॥ ६७ ॥

॥ छन्द त्रोटक ॥

अब रोस करै झरड़ो उठियो । गह छांडत ही वन मांझ गयो ।
दरसे दुरियां जमदूत दुग्रो । हव बाळ वडो अवधूत हुवो ॥ ६८ ॥
घट चाह लियां निरवेध घणी । तन लेपिय खाख मसाण तणी ।
घर ध्यांन सुझाय लिये विष में। वयराग सुभाग हुवो विष में ॥ ६९ ॥
नह मोद लियां उदमाद नसो । पह वैर विनां वयराग किसो ।
झरड़े उर लाय विखे जगनी । अत मेघसुं नांह बुझे अगनी ॥ ७० ॥
लघु वेष डिगम्बर धार लियो । हुय जोगिय जायल नूं हलियो ।
जिणरो हट ध्रू प्रह्लाद जिसो। छिब अंग लसै सनकादिक सो ॥ ७१ ॥

कवराज वायक

कमधां कुळ रा उजवाळक नैं । विरदावुंग्र जोगिय बाळक नै ।
खळ जींद तणै उर बीच खिसो। झरड़ो सिध काकय पाल जिसो ॥ ७२ ॥
रण मांझळ अंबर माग रम्यो । झरड़ो मृत जींद तणी जनम्यो ।
करड़ो हर धांधळ वैण कहै । छत्रपत्त वजे झरड़ो न सहै ॥ ७३ ॥
वरती जिदराव दिसा विषमी । भुज अंग भिड़ाय लई भसमी ।
दिन मध्य लुआं स्वळकै डरपै । तिम मीट पड़ै रवि घोम तपै ॥ ७४ ॥
झड़ पत्र वघूळांय दोट जुवा । हव भंखर खंखर रूख हुआ ।
कह बाळक सिंह जिसो करड़ो । जिण वेड में वाट हलै झरड़ो ॥ ७५ ॥
पहरघां सिघ चाखड़ियां पग में। मिळियो सुत माछंद रो मगमें ।
डरपै नहि काळ तणैं डरती । जुग कोड़ वुवा तोड़ बाळ जती ॥ ७६ ॥
जिण जोड़ तणो सिघ नां जगमां। भळ चौळाय पैरणनां भगमो ।
लख सींगिय कंथय सार लियां । कसमेरिय कुंडळ कांन कियां ॥ ७७ ॥
प्रत बंधिय सेल्हिय टोप परै । हद पंथम धूकर रूप हरै ।
मिळ अक्ष गुणावळ कंठ मई । लख चीपं कमंडळ हाथ लई ॥ ७८ ॥
नखचोळ अनै नखचोळ छटा । जिण अंग वभूत अभूत जटा ।

जतराव वड़ी करणा जरणा । मन मोख दिया डरणा मरणा ॥ ७९ ॥
चित वाळ डरची तक देख सही। मिळियो सिधराव विडांण मही ।
भ्रम लेसय जोगिय माग भगां । पड़ियो झरड़ो डर दौड़ पगां ॥ ८० ॥

गोरखनाथ वायक

वारदायक वाळ वडै वड़का । लख भेख नहीं डरणा लड़का ।
यतनी कहा आंण वणी अखी । दुनियां दोय रंग सुणी कदुखी ॥ ८१ ॥
भ्रम आगळ पीड़ न क्यूं उचरै । किस कारण बाळ विलाप करै ।
हव थापल पूठ लगाय हिया । दोऊं हाथ मछंदर पूत दिया ।
दुख कोण हुई है तुज्झ दछा । बलवांन वडो कुळवांन बचा ॥ ८२ ॥

झरड़ा वायक

विण मात पिता दुखियो वरणो। सिध राज रो आय अयो सरणो ।
कर जोड़ अरज्ज करूं तुमपैं । अब आयस आच दयो अमर्णें ॥ ८३ ॥
जतराव प्रकासीय नाम जरू । घणहुं दुखियो दुख काप गुरू ।
अपचार असी सधकी अपना । करुणानिध हो नवनाथ कना ॥ ८४ ॥

॥ छन्द किरीट ॥

गुरु गोरखो वचन

मैं नह चोळिय मैं नह चंचळ । वाळ गुदाइह नांम जुदागण ।
मैं नह धोरम मैं नह भूचर । धूमक धांमक नांह असी गण ।
लोहायळ भ्रन चोळिय सुन्दर । नागाय रूजण मैं न हुं दामिक ।
मैं न मछदर मैं न जलंधर । मैं हुंरी गोरख तूं झरडा लख ॥ ८५ ॥
मैं नह गौरव मैं नह गोचर । मैं नह दाडम की सिध होसिख ।
अया अईथा स्वारस्वतइया । नाम जुदे सब पीर हुदे दख ।
वेवण खंडिय है वोहो डंडिय । तीनूं ही थिर काया है सुख ।
मैं न मछंदर मैं न जलंधर । मैं हुंरे गोरख तूं झरडा लख ॥ ८६ ॥
मैं नह औगड़ मैं नह कूबड़ । मैं नह खूबड़ नाथ सुणे सिस ।

मैं नह कंथड़ मैं न विडंगिय । घोड़ा पंचोळिय आपढ सांतस ।
चंडकने रिप मैं नह चर्पट । नो भरणा बहुधा करुणा रख ।
मैं न मछंदर मैं न जलंधर । मैं हूं रे गोरख तूं भरड़ा लख ।। ८७ ।।

।। दोहा ।।

आंवी अंगीठीह घखै दवंग जिम धावड़ा ।
गोरख तक दीठीह श्रो बाळक ऊबांबरो ।। ८८ ।।

।। गोरख वाच ।।

किणरो है तूं केड़ कवण पिता दादो कवण ।
वहै अकेलो वेड प्रबळ महारथ पंथ में ।। ८९ ।।
क्यूं रोवै साहंस करै यती कळपना आज ।
यण वन आयो एकलो कंह बेटा किण काज ।। ९० ।।

झरड़ वायक

मों सिप कीजै कर मैंहर दिल करुणा दरियाव ।
भाग भलो जद भेटिया पाव तुहाळा पाव ।। ९१ ।।
मो काको पित मात भ्रात कुटंब परगे भड़ां ।
सारंग सुत समराथ महिपत जींदे मारिया ।। ९२ ।।
अर मो घर आरांण में अंबर धुग्रां उडाय :
जोतां मांगे जींदरो जो दुख सह्यो न जाय ।। ९३ ।।
मो धांनक खड़ ऊगिया किता वतीता काळ ।
ओ जायल ऐमां करै गोखां आफू गाळ ।। ९४ ।।
जोग लियूं भीखूं जगत देखूं ह्रोण न लाभ ।
अरि दोटां सिर आंगमूं जिणनूं पूछूं जाव ।। ९५ ।।
लाखां लसकर लार ताप वहै जींदो तपै ।
आयस राज उदार अब हुं बाळक एकलो ।। ९६ ।।
धांधळ कुळ धारेह केवी जींदे काढियो ।
मों वाळा माहेह प्रगण रह्यो सांवत पणो ।। ९७ ।।

गोरखनाथ वायक

विच मोनूं दे वदळियो अपत विनां आकाय ।
उण नुगरारै ऊपरै रहियो हुं रीसाय ॥ ९८ ॥

मोसूं ऊवेळोह तुरत हुवो जिणरो तवां ।
भीम गजां भेळोह करतो जोय पाबू कमंध ॥ ९९ ॥

जग जेठी जुध जीतणा वरदायक वोहाळ ।
वूढ़ो पाबू था वह काळ तणा हो काळ ॥१०० ॥

आंनै नह जीतै अमर समर करै समराथ ।
ज्यांनै मारै जींदरो हुतब उणी रै हाथ ॥१०१ ॥

जांमन दीनौं जींदरै मोनूं जिण पुळ मांय ।
परतन मारूं पालणौ विच जुध लेऊं वचाय ॥१०२ ॥

मोहर वूढ़ो मारियो पछै साजियो पाल ।
रती न संक म्हारी रखी तिण जींदे तेराळ ॥१०३ ॥

सोगन म्हांरी री सांपरत जींदे कीन्हीं भूठ ।
उण दिन सूं अपती परै रहियो हूं पिण रूठ ॥१०४ ॥

झरड़े वायक

मो काके पत रो मरण औ किम थयो अदन्न ।
रिप किण कारण राज नै जींद दियो जामन्न ॥१०५ ॥

ले जनमन्तर कळह लग वस भावी वळ वेढ ।
कहैं सुणावौं सह कथा म्हांने धुर सूं मेढ ॥१०६ ॥

गोरखो वाच

सुण भरड़ा मोटो समंघ जेज लगैसी जांण ।
सुगम संखेप सुणावसूं मग वेहंता वुधवांण ॥१०७ ॥

॥ कवित्त ॥

वूढ़ै कुळ वोळवा पेम जींदे परणाई ।
दे केसर दायजै अखै खीची अनियाई ।

लाग तणो धन लूट नमर सजियो सारंग नै ।
वीसरिया म्है वैर वचो थे नह विद्रंग नै ।
कमलायत सुत कहै सला विपरीत विचारी ।
गउवाड़ां री घेंच सुरह ले जावो सारी ।
आयतां वित्त अस आपियां ले न सकै बंधव लड़ज ।
भड़ पाल तणो घलसी घुमर भमर एम भिड़सी भिड़ज ॥१०८ ॥
जींदै नां कर जोड़ अरज फिर राव उचारी ।
मरण न पावै पाल वार पूगै जिण वारी ।
जांमन मो ज़िदरै दियो सौगन कढ जिण दन ।
परत न मारूं पाल गुना जो कोड़ करै गन ।
छळ साज कपट सारंग सुतन वचै मनै दे वद लियो ।
मोहर सूं वूढो मार नै लड़ पाबू मारे लियो ॥१०९ ॥

॥ दोहा ॥

नगुरो गुण मांनै नहीं वचन चूक वेकार ।
हुकम थनै म्हारो हमैं उणनै मार हमार ॥११० ॥

झरड़ै वायक

मात्रव नै हुं साजसूं राज हुकम सिर रक्ख ।
अब जायळ जाय ओळखूं अर नै किण आरक्ख ॥१११ ॥

गोरखो वाच

॥ कवित्त ॥

सह चख ऊजळ वरन श्रवण मोती वैडूरज ।
मुगताफळ गळ मई कड़ा कर वाघमुखा कज ।
कह पय सोभन कड़ो लियां पग सोभन नंगर ।
वर्स दिवस जिंदरो जठै जाडा तर भिंगर ।
हुवै वही नकीबां होकबा मेघाडंबर सिर खरो ।
निगम चहण गंगाजळ तुरी थण अहलांणै जींदरो ॥११२ ॥

रहै सरब रात रौ भूपरै पहरै भैरूं ।
कर एकण तरसूल दुहै कर ग्रहियौ डेरूं ।
सिंघ उकै ते सांकळां सदन जड़िया रिप सारूं ।
खड़ग बंध नर खड़ा रहै पौहरै रखवारू ।
यांहूंत गरज न सजै अबै हूं रूठै तोहितळौ ।
नह राख सके अब जींद नै खेडे बुरज रौ खेतळौ ॥११३ ॥

दसरावै रै दिवस जींदरौ देवळ जासी ।
झोटा वक्कर झेड़ प्रवळ सकतां रत पासी ।
उणरै आसापुरा दखां जाहर कुळ देवी ।
होम जवर होवसीं करै विग्रह नह केवी ।
सांम हुड़ तणी मांगै सरी ऐवाजो तोनै अपं ।
जद कांम हुवोड़ो जांणजै जरू सिद्ध गोरख जपं ॥११४ ॥

॥ दोहा ॥

छत्री नूं पोरस चढै वेंध तणी सुण वात ।
तद गोरख द्रोणी तणी सरब सुणाई वात ॥११५ ॥
रुद्र रिझावै रात रौ निज कर सूं खगधार ।
अस्वस्थामां एकलौ हण्या अठार हजार ॥११६ ॥
सुण झरड़ा अर ह्वै सवळ रचणो छळ सूं राड़ ।
मारचौ द्रोणी रातरौ पंचळनै पाछाड़ ॥११७ ॥
तूं छत्री वो विप्र थौ जिकण लियो पित वैर ।
वो अणनाथ सनाथ तुं माछंदर सिख मैर ॥११८ ॥
सुणी कथा झरड़ै स्रवण आयौ जद आपांण ।
दूजो द्रोणी दरसियौ सत्र साजण अवसांण ॥११९ ॥
धारे तन नांखां धड़च मारे प्रसण मरूंह ।
इमें हाथ म्हारो जोए गोरखनाथ गुरूंह ॥१२० ॥

गोरखो वचा

दस जाड़ो थारै दखूं खीची कुळसूं खेद ।

जींद री रांणी जका भुवा देही घर भेद ॥१२१ ॥
गुणग नह सोवेह एक घड़ी आराम कर ।
रात दिवस रोवेह भायां कज थारी भुवा ॥१२२ ॥
देवां कर्ने प्रकास केवां रो करजे कहूं ।
निज पति रो कर नास वेगो वैर वळावसी ॥१२३ ॥
इउ गुण झरड़ो ऊठ पांव तणे पड़ियो पगां ।
वीर थपेटो पूठ ज्यूं मारूं जाय जींद ने ॥१२४ ॥
कर सूं खोल कटार सिध झरड़ा नूं सूंपियो ।
मुझ हुकम जा मार नुगरा जायलनाथ ने ॥१२५ ॥
गोरख टळे जमात माछंद गुरु सैहती मिळी ।
रहूं जठै वोह रात फिर मिळसूं ग्यारस फजर ॥१२६ ॥
कोकड़ सूं किरणाळ हुव जोगन्द्र अलोप हुव ।
पुर जायल दिसवाळ गवन कियो वंदे गरू ॥१२७ ॥
मग्र ग्रह विरद खराह पुरजायल झरड़ो पूगियो ।
जण दन जायल राह धर अंबारथ धूजिगा ॥१२८ ॥
धांनक फळसै थावियो बूवो आई पंथ वेख ।
जागल जाय जगाड़ियो अब झरड़े आलेख ॥१२९ ॥

॥ छन्द त्रिभंगी ॥

गाट उरमी जीता अंग अदीठा । काळ वतीता थिर काया ।
रिद्ध कंते तांणे कुंभक ठांणे । पूरक आंणे फिर पाया ।
काया न कष्टे कांमन इष्टे । संजक चष्टे सीळ सती ।
जमका डर भागे भ्रम नह लागै। जागे गोरखनाथ जतीजी ।
जागे गोरखनाथ जती । मछळी उर जाया जोग कमाया ॥१३० ॥
मीन मछंदर कह वाया । सिसिया तै गोतम वडो तपोतम ।
व्यास कीरणी निपजाया । गागर तै कुंभज वाळो वंबज ।
मृग तै स्रंगज जोग मनि ।जग का डर भागे भ्रम नह लागै ।
जागे गोरखनाथ जतीजी । जागे गोरखनाथ जती ॥१३१ ॥

रिध सिध दोऊ वंदी रहैज संदी। सदा अनंदी गिर चाया ।
मरगां जिम जोवै परगट होवै । कबहूं लुकोवै छिन माया ।
निद्रा नह आवै ताल लगावै । जोग कमावै ध्यान थिती ।
जगका डर भागै भ्रम नह लागै । जागै गोरखनाथ जतीजी ।
जागै गोरखनाथ जती । माछंदर वाळो सिधौ सिंगाळो ॥१३२ ॥

बूढो वाळो जुग वाळो । जीतो जम जाळो जगत निराळो।
हुवो उजाळो दीवाळो । अनहद में बाजे सबद अग्राजे ।
वहै सदाजे जेत रती । जग का डर भागै भ्रम नह लागै ।
जागै गोरखनाथ जतीजी । जागै गोरखनाथ जती ॥१३३ ॥

मैं हूं अविनासी वैर वणासी । वाळ अभ्याखी सन्यासी ।
भूलासा भमता एकही रमता । मन कूं दमता वनवासी ।
गरु गोरख सरणा पार उतरणा। भवदध तरणा होय गती ।
जग का डर भागै भ्रम नह लागै। जागै गोरखनाथ जतीजी ।
जागै गोरखनाथ जती । है सूम गुमांई मुगता नाई ॥१३४ ॥

वांई वंवत नग ऊरा । गोपीचंद भरतर अवर जलंधर ।
कांनी पावन ढंढा रोरा ।कपल गुर जोगिय सोगन रोगिय ।
औघड़ जोगिय सिद्ध पती । जगका डर भागै भ्रम नह लागै ।
जागै गोरखनाथ जतीजी । जागै गोरखनाथ जती ॥१३५ ॥

सक्कर पय खाणा है हरियांणा । जहां सिधूं दा थिर थांणा ।
वसते अवधूता मिद्ध सबूता । जोग जगूता सब जांणा ।
तर हटड़ो ओरंग वैठे लोरंग । मैं आया जोवण वस्ती ।
जग का डर भागै भ्रम नह लागै।जागै गोरखनाथ जतीजी ।
जागै गोरखनाथ जती ॥१३६ ॥

॥ दोहा ॥

यूं करतो आलेख झरड़ो सह जायल जुवै ।
देवी पूजण देख चढ़ियो खीची छत्रपत ॥१३७ ॥
हुवै नकीवां हाक हाक हाजांपरै नौबत घुरै ।

धर धूजै रवि ढाक ग्रस पाडौं रज ऊड नै ॥१३८॥
जावै जायलियाँह ग्रासापुर पूजण ग्रवै ।
ग्राय नभेप कियांह झगड़ो जिन्द्र ने जोवै ॥१३९॥
देगो रूप डराय जाय पाय पड जींदरी ।
बाळकनाथ बलाय झूठी जिण दीसै निजर ॥१४०॥

कव वायक

गाह उतर सुखपाल सूं पड़ियो जींदौ पाव ।
ग्राप कठी सूं ग्राविया ग्राखो ग्रायस राव ॥१४१॥

ग्रायस उत्तर जींदराव नै

हूं ग्रायो उतराद सूं हालूं हरियाणेह ।
ग्राय लियो विसराम यत तर छाया जाँणेह ॥१४२॥
मन मांहे मुळकेह हव चह जींदौ हालियो ।
परगै हूंत पुणेह यण सिध नैं म्है ग्रोळख्यौ ॥१४३॥
नृपत कहै जोगी नहीं बेटो बूडारोह ।
परतक ग्रावै पाल रो इण में उणियारोह ॥१४४॥
भड़ परगह भाईह सावचेत रहजो सरव ।
ग्रम निजरां ग्राईह जोगीरी झूठी निजर ॥१४५॥
यण चत वरमं ग्राग जद नजरां म्हांनं जोवै ।
नंन्हो दाटक नाग ग्रो कमधां रे केड़ रो ॥१४६॥

परगै वाक

धांधळ कुळ धारेह कर ममहर म्है काढियो ।
नह रहियो लारेह वैर लेवण ग्रावे वहै ॥१४७॥
भरत भुजांणोह सुण नं परगै रा सबद ।
जींद कह्यो जांणोह एक न धांधळ ऊवरचो ॥१४८॥
देखी नै दीवांण हव गह नर भेळा हुवा ।

इंद्र तणो ऐहलाण जाजम बैठो जींदरो ॥१४६ ॥
चढो देग सुर राय नै त्यार हुई सिघताव ।
पैखण राव पधारियो कहै भाद्रवै कड़ाव ॥१५० ॥

जींदराव वायक

छै सांमग्री त्यार सह कहजे त्यार कड़ाव ।
पुणें राव परधांन नै महिषा धेग मंगाव ॥१५१ ॥
सांवत हुकम सुणेह नायक झोटा लाविया ।
धजवर कर धूणेह हव खगवाहा ऊठिवा ॥१५२ ॥
गज वरणा दारुण गजब जम वांहण जेसाह ।
कुम्भा सींगां रा कहूं भुज हंदो भैंसाह ॥१५३ ॥

॥ नीसांणी ॥

झोटा बकर झेड़िया खळकै रत खाळे ।
कीनी रिध मोटे कड़ाव भाद्रवै विचाळे ।
हुड काळी निज हाथसूं किय राव रंढाळै ।
आय हुआ नर एकठा सब पूजण वाळै ।
पूजें नृप आसापुरा घृत अगनी जाळे ।
रिध मंगाई थाळ भर ओछाड़ उजाळै ।
हुई तांम पूरणाहुती जद मंत्र जपाळै ।
गवड़ द्रवड़ दोनू गती दुरगा दरसाळे ।
जेंजेंकार उचारिया व्रम बंद विचाळे ।
हुवा तृपत तेंतीस क्रोड़ सुर सुरपुर वाळे ॥१५४ ॥
मांस रंधाणा देगचा वेसवार अपारा ।
सूळा त्यार किया सही जाझै घृत झारा ।
आया थाळ मिठाईयां पकवांन जझारा ।
भोजन छपन छत्तीस भांत जीमें जुग सारा ।
मांस पुलावां सोहितां तत होय तयारा ।
ऊभा थाळां ऊपरै पुरसैं पुरसारा ।
सुर सारंग चरुए सुगाळ वहे रिद्ध वघारा ।
जीमैं यम आमीस हे खट दरसण सारा ॥१५५ ॥

॥ दोहा ॥

जींद देग कीनी जबर जीमें सरब जिहान ।
प्रदं न मावो श्रोणरो दख आखी दुनियांन ॥१५६ ॥

॥ वात ॥

जायल कठोती रो लोग जीम जीम नै पाछा घर दिसा जावे है जिके जोगी ने पटळसो बैठो देख कैवे छै जीदराव रे नाथों रो भाव छै नै थे अठै किण तरै बैठा जीमणानै मदृं नहीं जवो ?

॥ दोहा ॥

आडी छड़ी न आपणो आवो वरण अढार ।
आयस क्यूं बैठा अठै जीमो जाय जुहार ॥१५७ ॥
घरपत चोरासी धणी वड चितदत वेवज्ज ।
हुव सुरपत तरपत हुवो नरपत किये नेवज्ज ॥१५८ ॥
लो गोरख रो नांम अव सिद्ध भरड़ो ऊठियो ।
करवा मोटो कांम कमध मतो करड़ो कियो ॥१५९ ॥

जावता लोगायत रा सुगन लेवे है

उण जाग्यासू ऊठतै ले जळ पण लीधोह ।
प्रात अरक ऊगे पेहैल जोखमसूं जींदोह ॥१६० ॥
भसमी अंग भड़ाय के ले गुरु गोरख नाम ।
हथ संजार ग्रहै हालियो हव मन पूरण हांम ॥१६१ ॥

कव वायक

जावतां दनां री जींदरो विजनठ पड़ती वीजा ।
हव आसंग घत्त हालियो भालाळेरो भतीज ॥१६२ ॥
पूरो विनै पखांह जो मोटे कुळ जनमियो ।
सामत देख चखांह अगन धुकै जिण अंग में ॥१६३ ॥
उण पुळ भरड़ो आवियो लोयण धुकती लाय ।
निण पुळ मंडियो जींदरै मदभड़ गजथट मांय ॥१६४ ॥

यणमें पुनरक्त दूषण गुण है

आवी कांठळ ऊपरै गहरै सुर गाजोह ।
दे दूहा घेगा दये जांगड़ मढ जाजोह ॥१६५ ॥

परवत गात पखाळजो दे विरहण दहलांण ।
इंद्र राजा खड़ आवजो जींद तणों मैंहलांण ।।१६६ ॥

झरड़ै अलख जगावियौ भ्रम मन रा भागेह ।
जुगां तणौ बाळौ जती जो गोरख जागेह ।।१६७ ॥

मिळ दुनियां मेळोह उणमें जींदै ओळख्यौ ।
आयो अवेळोह औ कोय घांधळ है अवस ॥१६८ ॥

पुणियौं यम जायलपती रोड़दार सूं रीस ।
जोगी ने जीमायनै वळदौं पतर भरीस ।।१६९ ॥

हलै सहंस भड हाजरी ले खग ढालां लार ।
उणसूं राव न आंणियो वैरी तणो विचार ॥१७० ॥

वाज लये आया विदर बिध विध रा पकवान ।
मांस मिठाई सोहता व्यंजन बहुत विधान ॥१७१ ॥

जीमण हूं नह जीमसूं जपियो यम जोगीस ।
आंण दयो म्हांनूं अबै स्याम हुड तणौ सीस ॥१७२ ॥

॥ सोरठो ॥

जपियो विदरां जाय यम जायळपत आगळे ।
काळो हुड़ कैंहवाय समपो जकण सिहा खरो ॥१७३ ॥

जींदराव वायक

दाखे औ जिमई दयो तिणरी करो म तीठ ।
अठा हूंत वेगो अवै अणनै करो अदीठ ॥१७४ ॥

अब उणहिज आंणेह सिर हुड वाळो सूंपियो ।
जोगी हठ जांणेह कहियो जिम सांचो कियो ॥१७५ ॥

झरड़ै माथो झाल विध यण सुकन विचारियो ।

पनरा करै नितपाळ मूड देगाइजा मांगसूं ॥१७६ ॥
परतो मावन पाय काचो हुड दांतो किरड ।
मावस बेठो आय पाछो आसण पीपळी ॥१७७ ॥

जींदराव वायक

दिन री जोगी देखियो जो आयो लारांह ।
जींद कहै मो जावतो रखजो सिरदारांह ॥१७८ ॥

झरड़े वायक

वरन वरन रा वादळा लगस चढो ले लाव ।
थित करती जळमय थळां मत वह वेगी आव ॥१७९ ॥
बुझै न अगन बुझाय पावग परताळां पड़ै ।
लागी मो उर लाय जळ वरसै जिम जिम जळै ॥१८० ॥
आठो अंधियारोह घोरारव करदे गयण ।
मेळ लगी म्हारोह कांठळ सूं झरड़ो कहै ॥१८१ ॥
अरर भीनै ऊतरै पिड केसर पोसाक ।
मोवाळा री रिणमहीं रळै विरंगी राख ॥१८२ ॥
नह देखै झरड़ो निजर पड़ै मघण परताळ ।
ऊभो पूठै आयनै भंवर चढै भालाळ ॥१८३ ॥
लगसगता मद लेवता भींज गया भारीह ।
हुय महलां दाखल हुई आवै असवारीह ॥१८४ ॥
हूवो दुसाला चानणो भूम उदै जिम भांण ।
निसमुख आयलनाथ रा कळहांठिया केकांण ॥१८५ ॥
पग पग घंमै पावटो समर तणो चाळोह ।
हुय पूगो रंग द्रोळहर मदचख मतवाळोह ॥१८६ ॥
हुवो जनांनां जावतो दिय फाटक दरवांन ।
मिळी रान वप तम मई भेंसा मती भयांन ॥१८७ ॥

॥ छन्द त्रोटक ॥

वरसै नभ वादळ वीट वळी । महि रात अंधारव घोर मिळी ।
धर व्योम विचै घण धार धरै । कइ वीर निसाचर हाक करै ॥१८८॥

प्रलवंबिय वीजळ तापळके । खत पालर तालर पै खळकै ।
मन पूर मयुरांय मोद मंडै । घण गाजत हैं उमड़ै घुमड़ै ॥१८९॥

लख मेह अनै ससनेह लड़ै । परताळ वजै परनाळ पड़ै ।
महि चोर जगै गिर स्रंग मुनी। धर वाजत है जळपूर धुनी ॥१९०॥

दुत चंद नखत्रन ढांक दिया । लख तुंगिय जांझर पैर लिया ।
करसै निस कांम कमंधज रौ । यळ आहट साद वजै अजरौ ॥१९१॥

भरपूर सरोवर नीर भरै । कड़खां ढहि मोर झिगोर करै ।
छिबदे रवदात्र हरे सुर री । दिल मून ग्रहोधुन दादुर री ॥१९२॥

दत गोरख नांम जपै दनमें । क्रमियो सिध बाळक कादम में ।
कहजे धन पौंछ कमंधज री । अजरायल आसंग की अजरी ॥१९३॥

ग्रह छिद्र गवाक्षन मीट घणी । तिण दीठिय जोत पिलोत तणी ।
अहवास है व्योम अदंतर रौ । उड घांण रह्यौ यक अंतर रौ ॥१९४॥

कहजे विय जाय गनांह कठै । अणमांन पिछाण्यौय राव अठै ।
मुक पत्र दियौ जळ अंग मिळै। तक सूतोग्र बाळक गोख तळै ॥१९५॥

॥ दोहा ॥

अजरायल मदछक अडर नखत वडै नरनाह ।
राणी सूं हसनै रटै है निघड़क मनमांय ॥१९६॥

जींदराव वायक

कमधां रा केवाह लेवा कज मनहट लगै ।
मोनूं मारेवाह यत इक धांधळ आवियौ ॥१९७॥
भगमा पैहरे भेख वैर लियण आयो वहै ।
परतक पाबू पेख उणयारो जिणरो यसो ॥१९८॥
धुई रात काजळ वरण सत्रव मरण सहल्ल ।

धुवें अंग गिरवर घरण धण सोभळ घांधल ॥१६६ ॥

पेमां वायक जींदरा नें कंहै

जळ परियो देवे जितो रयो न घांधळरोह ।
एकन आप उबारियो क्यू पत ठेक करोह ॥२०० ॥
एकण हायन ऊठता वरदायक मो वीर ।
धोन्त घरे दुसमण धणी पूरो कीन्हो पोर ॥२०१ ॥
सूतो घारे सांत मांभळ असत्री रा सबद ।
मत फोगट को मांत उण दन जींद अमीर री ॥२०२ ॥
अघपत ऊंघांणोह फिरयो दारू ऊपरे ।
तोणो जमरांणाह घोर जवर सुर जिण घड़ी ॥२०३ ॥

कव वायक

रांणी मन रूड़ोह विघ यण तरह विचारियो ।
केयां तो कूड़ोह हव कदई सांचो हुवो ॥२०४ ॥

पेमां रो अभिप्राय

खीची सूं खेटोह लागू हुण केवा लयण ।
बूढारो बेटोह आंने भरड़ो आवियो ॥२०५ ॥
गोत्र विचाळे गात कांमण पेमां काढियो ।
पळकी बीज उपात सूतो कमंध सपखियौ । २०६ ॥
पिंड नहचो पायोह देर्न जोगी री दशा ।
भूरा मन भायोह बाळक नै बोलावियो ॥२०७ ॥

पेमां वायक

धानिम अपरांगीह जींदे नै मारे जिसी ।
हुवै तू जोगीह पह घांघळ रो पाटवी ॥२०८ ॥

झरड़ै वायक

नारो हूं सिख नाथ री गोरख ध्यांन ग्रहाह ।
किस कारण कमधज कहैं हम झड़ देख रहा ॥२०६ ॥

वादळ वरखाईह गोख तणौं ओलो ग्रह्यौ ।
मोनूं तूं वाईह किस कारण धांधळ कह्यौ ॥२१० ॥

झरड़ो वीजखियोह ओळखियो मोनूं अवै ।
कुण जींदो कहियोह किण कारण मारूं कहौ ॥२११ ॥

पेमां पहछांणीह बोली गळ बूढ़ै तणी ।
पखां अमां पांणीह सात्रव मार चढावसी ॥२१२ ॥

वैरी तणां वखांण सुण नह अंग छिपावसी ।
पेमां कियो पमांण ओ जो हैं ऊण ओधरौ ॥२१३ ॥

सूवा पेमां वायक

जोगी जींदारोह सहज बुरो पतसूं सरक ।
निरदह निद्रारोह गहपूरत झूटौ घणौ ॥२१४ ॥

जाग्योतौ झूठेह छिपयांही न छोडसी ।
अध निद्रा ऊठेह कइ जोगी कूटाविया ॥२१५ ॥

भूपत भालाळेह विरद कहाह्यौ वेगड़ो ।
सुत सारंग वाळेह समहर जिण नूं साजियो ॥२१६ ॥

झरड़ै वायक

माई तूं ऐसीम कहै नृप री डरहै नांह ।
इण नरपत नैं हूं हमैं मारू महलां मांह ॥२१७ ॥

पेमां वायक

अरध निसारो आवियो रिम कज लेपी राख ।
मो आगे कहदे मुदो आयस कूड़ म आख ॥२१८ ॥

दुग यारं पेमां उरे मन रो भ्रम मोटोह ।
जांण्यो तोनूं जोगटा बूडा रो वेटोह ॥२१६ ॥

॥ छंद मोतीय दाम ॥

बकै भरड़ो वजके जिणवार । त्रभै मन वाल कियो निरधार ।
कह्या गुर आगम वैण कबूल । भूवा सुण पेमल ग्यो तुज भूल ॥२२० ॥
प्रगे यम आवस वाल उचार । विमास लई सुध नांम विचार ।
अख्यो गुर गोरख वैण उभेद । भुवा घर तुज्ज वतासिय भेद ॥२२१ ॥
पिछांण लियो निज बंधव पूत । हली भर प्रेम भरोखय हूंत ।
पड़ै चख नीर रिलै प्रथमीज । भुवा उर भीड़व लीन भतीज ॥२२२ ॥
पुछूं पित मातय वीर प्रमाद । उणी पुळ पीहर आयीय याद ।
विचारिय जांण व लीव विसेख। अपे अंग ओळख लोहिय एक ॥२२३ ॥

पेमां वायक

अघी पर माम म्हांरोयय पीर । वड़ा वरदायक था दोहू वीर ।
न नांमय खाधाय जायल नाथ । मुई जिण मोक लियां मुझ मात ॥२२४ ॥
खिडंगण केसर पाखर मीड़ । भुजाळोय बांधव आवध भीड़ ।
ग्रहे कर सावळ अंग गरीठ । पघो चढतो जद केसर पीठ ॥२२५ ॥
दवंताए भूप जणो नुय देख । उसै प्रथवी जणियो नह एक ।
वणे चित विभ्रम सोच विचार। महा बळ बांधव लीनाय मार ॥२२६ ॥

॥ दोहा ॥

जोर प्रबळ नन मधरजो सबळ पकड़लै सींह ।
दुसमण खीची भांजदै महिप एक मुकीह ॥२२७ ॥

भरड़ा वायक

॥ छंद ॥

बुद्दायत बोलियो भूवा पेमां तूं भोळी ।
रजवट वाळी रीत जका जग हूंता ओळी ।

मैंगळ मोटो होए सिंह तन हौवै छोटौ ।
हाथ लहै कणहरण दए कूंभाथळ दोठौ ।
घण वोझ ऊठावै सिर गधौ सबळवांन वाजै न सुण ।
विप धरै पतंगौ आग विच कहै सूर जिण नूं कवण ॥२२८ ॥

पेमां वायक

खीची सूं ळड़णो खगां अवस काळ सूं आळ ।
आगे तूं झरड़ा अजै बार वरस रौ वाळ ॥२२९ ॥
तन बळ आवै है तरुण धावै जद धर धेस ।
जा भतीज पाछौ जपूं नांनी वाळै नेस ॥२३० ॥

झरड़ा वायक

॥ कवित्त ॥

मैं नह दीठी मात उदर जिण जनमण आयौ ।
हीयै सीस हुलाराय पोष कर नह पय पायौ ।
काकै पित रौ नांम जप्यौ नांनी जद जांणूं ।
हींण माख म्हारी अगे किण दोरम आणूं ।
भुवा तूं बांधवां भूलगी वीसरगी चहरावरण ।
किण आगे जाय हूं कहूं मो साथे हालौ मरण ॥२३१ ॥
सिंह एक गजथट्ठ अनेक मार रनसंक मनावै ।
ग्रीखम सूरज एक दुनी सारी अकुळावै ।
इन्द्र वज्र है एक कड़क सारी धर धूजै ।
गुरड़ एक वसंग अनेक पंख आपांण न पूजै ।
म्हैं सुंणी साख गोरख मुखै अब मनसुत पाराध रै ।
रण सहंस राज सुत राखिया वीर त्रयौदस वरस रै ॥२३२ ॥

॥ दोहा ॥

धन म्हारै नह है धरा भटकूं सारै भूंण ।
वैर वळावण वासतै कटक दयै संग कूण ॥२३३ ॥

आगू कच कानूं अखां वाधूं की वजरांह ।
मोनूं भुवा बतायदै नरपत नूं नजरांह ॥२३४ ॥
हर रूपी थारो हुवो भोळै मिलण भुवाह ।
मेळो करदै भूपरै म्हांनू महळां मांह ॥२३५ ॥

पेमां वायक

गुण झरड़ा कीनो समंध जोय गढां जोड़ीह ।
पेमा नै थारै पिता बूढै नृप वोड़ीह ॥२३६ ॥

॥ कवित्त ॥

जोय झरड़ा भुंबियो कहूं विसहर किसना नै ।
रावत की राखड़ी सिद्ध सह भरी सुथानै ।
दे टीको मेलियो पाल इक विप्र ऊठासूं ।
गोगामेड़ो गयो जाय वद्यो वरहासूं ।
पीर एम पूछीयो गोग चहुआंण देवगत ।
लायं थूं नाळेर आवसुं लै वरात उत ।
ददरेळ नृपत पूजै दुनी चारूं चख ऊपर सुणी ।
दूसरे दिवस दरसण दियो धजा बंध मेड़ी घणी ॥२३७ ॥
धांधल रै मांढ हैं वरण आयो जेवर री ।
उठी तणी बंध पाल ढाल घरवट री घर री ।
आगू किसनू अगे पाल देव मत प्रकासी ।
नो आणा जावणा नुतन मत थए उदासी ।
रह जाय अठै तीनूं रटै परतख देव प्रभाव सूं ।
तूं कहै अठै रहसूं नहीं हूं पत साथे हालसूं ॥२३८ ॥
वर तोरण वांधियो पीर चढ़ियो नीलै पर ।
गढ चंवरी चहुआंण दियो दरसण अंतेवर ।
धन बूढै री धिया लोक राह जोवण आयो ।
सालेस्र नडां करी पाल गोगां परणायो ।
मिळी धिया नूं मात भुवा दादी भोजायां ।

कुळ धांधळ रै कहुं चढी सोभा तो जायाँ ।
डेरां लग जोडम्र विग्रह दुरस सकौ जग देखियौ ।
तिण चखां धिया जामात रौं पाछौ रूप न पेखियौं ॥२३९ ॥

औ कवत्त डोढौ

॥ दोहा ॥

वर जायक जिण धर विधू सुतन सिधू सारीह ।
भात्रीजा धांधळ भवण आया अवतारीह ॥२४० ॥

झरड़े वायक

धूहड़ धांधळ धुर धवळ जोया खींया जोय ।
वड़ै वंस नरपत वडा कैवो लियौ न कोय ॥२४१ ॥

पेमां वायक

पाल संदोसौ पूगियौ पह चढियौ रायपाळ ।
पकड़ तिस पूनमी भकर तणो भौंपाळ ।२४२ ॥
वैर सवे खोवाळियौ कमधज जेज न कीन ।
खेड़ नृपत वळ खागरै चांदो चारण कीन ॥२४३ ॥

छन्द बेअखरी

आयो खळ पकड़े आघांणे, जायल चढण जेज नह जांणे ।
ग्रहण सुणोणी गोग घरांणै, ढवियो यण कारण नृप ढोणे ।
सातळ सोम हुता भगनी सुत, पह घेरीया जका ढूळी पत ।
वचिया कागद खेड़ विहांणे, छै संगट रौं सिवियाणे ॥२४४ ॥
पडसां रत वाहै रवदां पर, आवै आप करीजो ऊपर ।
मिळियो जायल सिर मेळावो, चढियो ले धूहड़रो चावौं ॥२४५ ॥
वळको खगन सरी ल्याखवटै, असपत सेने धणू आवटै ।
आलम किलम जोम आफाळै, वसियो नृप वैकुंठ विचाळै ॥२४६ ॥

॥ दोहा ॥

बूडै पाबू रा वहु केवा लेत कमंध ।
जिण मभ्क दहियो खेड़पत सांचो हुतो समंध ॥२४७ ॥

कुळ वांधळ रो कढियो केवी करमाळांह ।
अंग मो भळ म्हारै ऊठै जिण दीठो भाळांह ॥२४८ ॥

मो मुणायदे मैहणां खैंग नाम घर खार ।
बूड़ा वाळी ऊपरै चढ तूं चरवादार ॥२४९ ॥

सोजत नह हूं खिमत मूं पति मार मरूंह ।
यता वेण बोलै अपत भरड़ा केम जरूंह ॥२५० ॥

नहीं लगाऊं तुज्भ नै लांछण हेक लगार ।
सूर ऊदे काठां चढे तन होमूं पति लार ॥२५१ ॥

अवचळ चूड़ो चूदड़ी रखियो पाबूराव ।
मो लारै कुसळे रह्यो सारंग तणो सुजाव ॥२५२ ॥

जग बूढे पाबू जिसा किया नहीं किरतार ।
वार वार नह वेण रा यहां जेड़ा ऊणिहार ॥२५३ ॥

वांधव वागे सीह मैहपत होसी मारका ।
ज्यांनै लागे सीह बूडै पाबू रा विरद ॥२५४ ॥

॥ कवित्त ॥

रात दिवस रंग राग वीर होक वैरी हंतो ।
फजर भंमर फेरतो पाल भुज सेल ग्रहंतो ।
आठ सिद्ध नव निद्ध रही मो पिता रसोड़े ।
मो कमळायत माय जिका अन पूरण जोड़े ।
अंतेवर सगतां आवती म्हैं रमती महलां परै ।
सोनार लाड मां आत री रात दिवस आंसू भरै ॥२५५ ॥

॥ दोहा ॥

झरड़े वायक

पाबू बूडे रा प्रगट केवा लूं ततकाळ ।

म्हनै लेजावै महल में दुसमण नै देखाळ ॥२५६ ॥

पेमां वायक

जो तोसूं सजियौ नहीं हूं सभसूं हणवीज ।
आव अमां वांसै अवै रहै सधर आतीज ॥२५७ ॥

झरड़ै वायक

निज सिध गोरखनाथ अस्व दिया मो पर ऊभै ।
सात्रव नूं यण साथ मू चख देखे मारसूं ॥२५८ ॥

न्होखे निसरणीह सिसु गोखां पर चाढियौ ।
तिकण कपाट तणीह जड़ सांकळ कीन्ही जरू ॥२५९ ॥

पौहरायत पाछेह केई निस हाका करै ।
विध पेमां वाचेह ऊभौ रह भ्रतीज यत ॥२६० ॥

आवी जोवण आप सूती सांम संपेखियौ ।
यू रण अवध प्रताप नरपत ऊघांणौ बसै ॥२६१ ॥

तस दोहु खग नो लेह चीर विलूटै सींहणी ।
असमर ऊतो लेह ऊभी पेमां ऊपरै ॥२६२ ॥

पेमां वायक

मत कर हव मौड़ौह जमड़ौं नीतर जागसी ।
सात्रव सूतौड़ौह साज हमै भरड़ा समर ॥२६३ ॥

तस हुंता ताळीह दे पेमां समचा दई ।
आवस उताळीह हव सिध भरड़ौ हालियौ ॥२६४ ॥

महिपत महलां मांय वीजड़ काच विड़ावियौ ।
जोयौ भरड़ै जाय दुरस भुवा कीनौं दगौ ॥२६५॥

झरड़ा रौ अभिप्राय

परघळ घल पांणीह भूपत हौंद भरावियौ ।

अहा ससभग जांणीह कितरीही ऊंडी कहूं ॥२६६ ॥
भागै नह आगीह ऊभी हुव भरड़ी ऊठै ।
मन में भ्रम लागीह ईस काच राय आंगणे ॥२६७ ॥
देखां पहचांणीह तद मन धुन भरड़ा तणी ।
ओ जांणै पांणीह पळकौ काच तणौ पड़ै ॥२६८ ॥
कर नं दूर करेह महिलां न्हांकी मूंदड़ी ।
सद्रम सबद सुणेह इण पहचांणची आदरस ॥२६९ ॥
पड़तां काच परेह विण खणणाटौ बाजियौ ।
प्रांपाणे तन एह ग्रहियौ जद पोरस घणौ ॥२७० ॥

॥ कवित्त ॥

मुगताफळ गळ मंहीं फबै स्रावणां मुगताफळ ।
दुवटी सोभा दये बंद सिर पेच महाबळ ।
सिर ओढ़िया दुसाल नगां आभूपण लागां ।
पह जींदौ पौढ़ियौ विलंग सोव्रन रै पागां ।
रंगमहल जिलोचो जय रही नृपत कंठौ रवनां दरौ ।
तिम उडै घाण अंनर तणौ जालम सुतौ जींदरौ ॥२७१ ॥

॥ दोहा ॥

भरड़ी उर जांणांह साबव री देखे चखां ।
जागे जमरांणीह चेत्यौती देसी सजा ॥२७२ ॥

पेमां वायक

दूहागी वेटोह भात्रोजौ भालाळ री ।
दुसमण तक दीठौह पूठ तनै पाछौ फिरै ॥२७३ ॥
झुरी करग माहेह आव पसण उर ऊपरा ।
मृग निद्रा मांहेह सोवै जायल पत सदा ॥२७४ ॥
कढ़ियौ खंजर काढ मुवा दियौ अवसांण भल ।
सठ दुहावत गाढ मायौ छाती ऊपरा ॥२७५ ॥

वुडावत वैठौह छाती पर ग्रहियां छुरौ ।
भळ स्वत जगजेठोह जायलराव जगाडियौ ॥२७६ ॥

झरड़ा वायक

भूपत तो मांगूह कर खंजर ग्रह आर कर ।
मू जींदा मांगूह काकौ पित थारै कनै ॥२७७ ॥

जागे जायलियौह काळ रूप मारै कमंध ।
लोयण लाय लियौह चपळा जिम ग्राहियौ छुरौ ॥२७८ ॥

प्रांण अमां पावूह झरड़ा सूं जींदौ जपै ।
पुत्री परणाऊंह राजंद मैंहदर राव री ॥२७९ ॥

झरड़ा वायक

सात्रव नह छौडूंह तोडूं हूं जड़ ताहरी ।
मूं खंजर मोडूंह काळज फींफर छेक कर ॥२८० ॥

एक हुकम सूं ऊठता हाजर सहस हजार ।
आज न दीसै आप रौ प्राण बचावणहार ॥२८१ ॥

जींदा मन में जांणतो रह्यौ न धांधळरौह ।
करूं थनै वेगो कहूं पंथीं जमपुर रोह ॥२८२ ॥

धण ऊभी मारण घणी यसी वणी पुळ आय ।
आज न होवे इष्टसूं सारंग सुतन सहाय ॥२८३ ॥

धण ऊभी सिर घेस घर खग कर बीच खवंत ।
वूओ वना वळ काळ वस जींदो नृप जोवंत ॥२८४ ॥

सुखसूं वाजी सदन में सायंकाळ विचाळ ।
वाजी खीची रै वुरी अधख री घड़ियाळ ॥२८५ ॥

आइयौ अनियायीय धर पुड़ किणी न धारतौ ।
यसी घड़ी आयीह नवळ हुवौ निरखै निजर ॥२८६ ॥

पेमां वायक

वैरीसूं वातोंण कासूं हव झरड़ा करै ।

इण मावद हाथांण केवा लै जमड़ा करै ॥२८७ ॥

॥ छन्द पद्दरी ।

पड़ प्रबळ मत्रु कृत आप ताप, मझरात कियौ झरड़ै मिलाप ।
रिम दीठी चख इम जींदराव, सुत काका पित हूंता सवाय ॥२८८ ॥

पर प्रबळ अगन परताप मांझ, चेय सिरी सरस नर साप मांझ ।
हूतसूं परस सात्रव तणौ होय, जैसी रीस झरड़ा तणी जोय ॥२८९ ॥

अत जींद वदक उर छुरी मेळ, अर कियौ खुड़द अणियां ऊथेळ ।
वहै रक्त हुंत वप वरगवाट, महल प्रत फूटो जनु रंगमाट ॥२९० ॥

मिळ राव प्रभंजन गत मंझार, ऊचरै न सुणै नृप व्रतीय द्वार ।
लागू हुण केवा मांम लीन, काको पित सर घड़ जुदा कीन ॥२९१ ॥

॥ दोहा ॥

केवी ऊपर कटार रा किया घाव करड़ाह ।
वैर दोनूंही वाळिया जाभा रंग झरड़ाह ॥२९२ ॥

तोड़ कंठ तरवारसूं कमधज लीह करीह ।
हुव झरड़ो ले हालियौ माथौ चपर महीह ॥२९३ ॥

पांणांसूं पीधीह झरड़ै लोही जींद रौ ।
कर पेमां कीधोह वण आरक्त विलोवणो ॥२९४ ॥

राजंद आपस रीझ वैर दुनेइ वाळिया ।
मुवा अनै भाणेज पाव तणै आया पगां ॥२९५ ॥

कमधेरी कानेह कंथा नवरंगी कियां ।
एकल उध्यानेह पांव विराजै पीपळी ॥२९६ ॥

दांतांसूं डसतोह आपस मसतक ईखियौ ।
आयो ऊससतोह जींद तणौ सर जांणियौ ॥२९७ ॥

आन लियां ऊतमंग आपस दीठौ आवतौ ।
रावत झरड़ा रंग मत्रु नुगरौ साजियौ ॥२९८ ॥

परक्रमणा दे पड़ पगां वंदन कर जिण वेर ।
नाग अगाड़ी नाखियौ नृपसिर रौ नाळेर ॥२९९ ॥

पेमां झरड़ौ यम पूरणं कर प्रणाम सिर नाय ।
वैर दुनोई वाळिया राज कृपा सिघराव ॥३०० ॥

गोरखनाथ वायक

॥ छपै ॥

पवन नहीं वसरतौ जठे रव करण न जाती ।
जवर नखत्र जींदरौ चढै जिण दीठां छाती ।
वानी ग्रंग वळेट मेखळी भुज पर मेळी ।
ले माछंदर नाम साहतन कंथा सेळी ।
ग्रह लियौ प्राण ग्राधी गजर ठह सूं कर वज्जर हियौ ।
झरड़ा रिम मारे जींदरौ कहुं काम करड़ौ कियौ ॥३०१ ॥

॥ दोहा ॥

पेमां बूढ़ै पाल नैं निज विसरी महन्न ।
वैर सवायौ वाळियौ बांधव तणौ बहन्न ॥३०२ ॥

पेमा वायक

पतन हुतौ वो पीर हुँतौ भवस जिम हुवौ ।
वण सजिया मो वीर घीर सुतनकर वाहियौ ॥३०३ ॥
जग ऊपर ऐ जाव ग्रण कथ रा रहसी ग्रमर ।
सत मो वगस सताव चढूं काठ माछन्द्र सिष ॥३०४ ॥

गोरखनाथ वायक

कीन्हां लायक काम खळ खामद खायक खगां ।
खग घायक मिळ सांम सुण वायक पेमां सुता ॥३०५ ॥
दीन्हा कर गोरख दहुं तोर वडै कुळ तास ।
सह सतियां पेमां सरे वसै ग्रमरपुर वास ॥३०६ ॥

पेमां वायक

जनम मांही जाळूंह श्रम पांते वेळी दईआ ।
पावन ऊजवाळूंह पंड होमे चारू पखां ॥३०७ ॥

गोरख वायक

॥ कवित्त ॥

मांझ रात री सपन कहूं जायळपत कीन्ही ।
अवरत जातां पैहल प्राण झरडे हर लीनो ।
रतनां छाई रात तसकरां भवरां वाळी ।
वळे नघर वैरियां टाळ नह जावै टाळी ।
नज जकण कोध झळियो नहीं यसी तेज विप आप में ।
चुपचाप मही रावव राझे पाछी ग्यो चुपचाप में ॥३०८ ॥

इंद्रजीत अवतार प्रथी मालम जायल पत ।
त्यां लिछमण अवतार सुपह पाबू धांधळ सूत ।
चांदो ढेंबो सुभट हडू अंगद कपि होता ।
वदळी देवा वचन अखै नर व्यापा एता ।
शिव ऊमिया पेमां सुलोचना तुज तणां अवतार त्यां ।
आगळे जनम वाळी अठे यण तन वदळै दीधियां ॥३०९ ॥

॥ दोहा ॥

जोगी तिय बाळक जके त्यां नर वाही टेक ।
हट तीनू भेळी हुई अवपत दहियो एक ॥३१० ॥
नवां मात जोधु तणी वीर पाल री वैन ।
थां देह जोडै यळ परै हुई न कोई हैन ॥३११ ॥
हाथ दियो राजी हुए पेमां ऊपर पाव ।
गह गनियां हूतां सिर सत समपे सधराव ॥३१२ ॥
पान गनो पाळेह जीवत छोड्यो जींदरो ।
वैद जको वाळेह चढ काठां पेमां सती ॥३१३ ॥

पेमां वायक झरड़ै ने

॥ कवत्त ॥

घांधळ नृपरी धिया अधप सारंग घर आई ।
पावू वूढौ वीर जपूं कमळादे जाई ।
सोढी गहली जिसी भणूं म्हारी भौजाई ।
गोग देव संमरी जिसौ भो भ्रात जमाई ।
झरड़ा भतीज तो जेवड़ौ आसथान दादौ अमां ।
पायौ भ्रतार जायलपती मुझ पख दोहु गिरमेर मां ॥३१४ ॥

॥ दोहा ॥

समप पती रौ सीस आछै तणा लूं आरणा ।
ऊजवाळू अवनोस पंड होमे चारूं पखां ॥३१५ ॥
मो पत रौ माथोह आप म्हने भ्रातीज अब ।
जिव पिय रौ जातौह अतुर जावे आपडूं ॥३१६ ॥
लार रयां लाजेह धूहड़ नै धांधळ धरा ।
सुत मो विप साजेह लांछण तो कुळ नै लगे ॥३१७ ॥
नकलिणी नेठीह यूं जुग सारौ आखसी ।
बार वळां वैठीह धणी मार धांधळ धिया ॥३१८ ॥
जद अंजस झरड़ेह सीस भुवा नू सूंपियौ ।
वजर कपाट वड़ेह कर छाती पेमां क्रमी ॥३१९ ॥

॥ कवित्त ॥

जांम निसा जावतां भूआ सूं मिळ भ्रातीजो ।
कंथे ऊवर कटार जडी जद पौहरौ वीजो ।
पाव पगां पोपळी जांम तीजी वह आया ।
चौथैं पौहरै सती काठ चढ होमैं काया ।
गळळाई रैण गळंतियां सांम नांम नीजर चखां ।
ऊदियाचळ सूरज आवतां पेमां उजवाळै पखां ॥३२० ॥

कव वायक

कमळादेवी कुख जिका जूनै पर जाई ।
अमर अंस अवतार पाल बूढौ जिण भाई ।
भेदे मंडळ भांण अगे भोजाइयां आई ।
दोय धांधळ रा कंवर त्रितिय धांधळ री जाई ।
तण तागत साहंस तेजसूं बूई व्योम मग विण वहल ।
मिळ गई जदि सूं मुगत में पौहर दिवस चाढ्यां पहल ॥३२१ ॥

॥ दोहा ॥

दे गोरख वरदांन अंबर रवि सिस नखत यळ ।
चौकर वेस समांन अमर रहे भरड़ा यतै ॥३२२ ॥
नह रहसी गिर तर नहीं केइ वैहसी जुग वाळ ।
पण तन थूं रहसी अमर वार वरप री वाळ ॥३२३ ॥
हण दोयण ले गुर हुकम लोपण मोद लगांह ।
अब भरड़ी वैह आवियो पाबू तणेह पगांह । ३२४ ॥
आवे भरड़ी आवियौ पाल तणे पावेह ।
जमपुर मेल्यौ जींदनै जायल गढ जावेह ॥३२५ ॥
छत्रपत हणियौ चूक कर मोटा महलां मांय ।
भेद दयौ घर री भुआ सिववर री वळ स्यांम ॥३२६ ॥
सावत सारंगरौह राज गनौ घण राखियौ ।
पथ मरणापुररौह वणनैं म्हे हिज वोडियौ ॥३२७ ॥
गळ अणखाटी मेह मो पित काको मारियां ।
उणनै आधी देह करसूं दइ कटारियां ॥३२८ ॥
रसियौ कुसळै राज जींद वैहन पत जांणनै ।
उण टणकां नै आज मारग लांबै मेलियौ ॥३२९ ॥
मारे महलां मांय सीस भुआनैं सूंपनै ।
अरि रा धुंवा उडाय आप पगांहूं आवियौ ॥३३० ॥
तारै सूं टाळोह मैं नह लीनौ मारियौ ।

वैर आप वाळौह रिम ऊपर नह राखियौ ॥३३१ ॥
दिस दिस जींदरोह उर्वे लोक सह ईखतौ ।
लड़ जिय लीधे रोह वारस कोइय न आवियौ ॥३३२ ॥
हिय मांझळ होळीह अर साबत सुण ऊठती ।
झळकत झखझोळीह लोहड़ियाळी पुण चळग ॥३३३ ॥
वसुधा पर मे वाजतौ छत्रपत नह सहियौह ।
आसंग कर नै एकलै जींदो जोखमियौह ॥३३४ ॥
सूतौ जायलपत सदा अंबर तणै घरांह ।
तेम भुवा परताप सूं हणियौ धोळहरांह ॥३३५ ॥

यणमें लछण

वायक विसराळाह मुणिया थें मने ।
वे धांधळ वालाह केवा मैं सह काढिया ॥३३६ ॥
भालाळा सतभेव परचा सिध पाबू प्रतक ।
दीजै काकादेव मन सुद्ध दरसण मुज्झ नूं ॥३३७ ॥
प्रगट दरसियौ पाल सांभळ झरड़े रा सबद ।
धर हिदवांणी ढाळ सुतधन देणा सेवगां ॥३३८ ॥
साथे वीसां सातहो चापड़ियौ पौहचाळ ।
दरसण झरड़ा नै दियौ भंवर चढे भाळाल ॥३३९ ॥

पाबू वायक

वा जाइ वूढ़ोह तूं सवाई धांधळ तवां ।
रिम हण नै रूड़ौह आछौ धर उघावियौ ॥३४० ॥
विजड़ी सूं वीजाह पिड़ में खीची पाडियौ ।
भालै भात्रीजाह रिम तो सारूं राखियौ ॥३४१ ॥
वूढ़ौ पाबू वाजिया वांधड़ अगली वार ।
रिम हण छोगा राळिया झरड़ा सुत जोधार ॥३४२ ॥

भतीजा मो भ्रात कळ चाळौ बूढौ कमंध ।
नंद वधावे वांत मो साल्ह मारीजियौ ॥३४३ ॥

बेटा काकै बाप री लड़नै वैर लियौह ।
अंजस तो मनमें अरी रिम हण कुसळ रियौह ॥३४४ ॥

पाल मोद पायौह यम श्रीमुख सूं उचरै ।
जिण तो नग जायोह धन गहलां री धीयड़ी ॥३४५ ॥

अम कुळ रा अवतंस रैण पर चिरंजी रहै ।
वजै सिवो रा वंस कहवत तैं सांची करी ॥३४६ ॥

छळ छिद्र खीचीड़ोह तुल जोड़ै तोलीजतौ ।
घांघळ तणो घड़ोह हव चेले भारो हुवौ ॥३४७ ॥

भाखे इम भालाळ तौनै रंग बूढ़ै तणा ।
अग कुळ रा ऊजवाळ भतीजा जनम्यौ भलो ॥३४८ ॥

वैर दुनै ही वाळिया प्रसण विभाड़ पलंग ।
केरडी थें आसंग करी रंग बूढावत रंग ॥३४९ ॥

पाबू री वर

नौकर वेस चतेह ना तन वधै घटै नहीं ।
जग मो नाम जतेह यतै तुज्झ तन श्रो अमर ॥३५० ॥

बारै वरसां बाप री लड़ नै वैर लियौह ।
भरड़ा मारे जोंदरो करड़ो काम कियौह ॥३५१ ॥

रवि जेतै ऊगै रसा सिव जेतै कैळास ।
एतै तूं भरड़ा अमर वसजे नरपुर वास ॥३५२ ॥

कव वायक

पाबु सूं मिळनै पछै गोरख कनै गयौह ।
पाबू गोरख री क्रपा भरड़ो अमर थयौह ॥३५३ ॥

रूपनाथ गुर पाल री गुणी यसी म्हैं ख्यात ।

रूप नाम झरड़ै तणो जद मो कह्यौ न जात ॥३५४ ॥
दखै गोरख देव कर जपतप सीधा किता ।
मन पोरस अह मेव तूं सिध झरड़ा तू हिज तूं ॥३५५ ॥

॥ कवित्त ॥

सीधो गोपीचंद दियौ उपदेस जलंधर ।
दृढ भक्ती प्रहलाद करी तूठो करुणाकर ।
अत डरसूं सुलतान बलखपत लई फकीरी ।
पत भुज करी नैपात चलीमत भूरी स्रमरी ।
वय राग जो अंग दुसार वैज्ञान भगत विण लाग में ।
भरथरी तुज्झ मत भाळतां वडौ फरक वैराग में ॥३५६ ॥

॥ दोहा ॥

चित फाटो संसार सूं तिय देखे चिरताळ ।
थयौ वैरागी भरतरी धारा नगर भोपाळ ॥३५७ ॥
अरि मारण थें आदरी तन घर धर बहु त्याग ।
तूं सीधौ बूढै तणा वैर तणा वैराग ॥३५८ ॥
व्यापै मन नरवेध वैरागी आगे बुत्रा ।
विप भागूलू वेध औ वैराग तो ऊपजै ॥३५९ ॥
ग्यान भक्त विभचार मृत रसाभाष विणराग ।
वैर वहण छडौ वजै वडौ वीह वैराग ॥३६० ॥

॥ कवित्त ॥

दात गुर रीत सूतौं कळजुग कित सजय ।
सरवनास सन्यास सूतौ सब आस समज पय ।
बात रागवैराग राग सब ग्यान ग्यान मय ।
भ्रष्ट धूत अवधूत नियम देख्यां वैरामां नय ।
दम व्रम सोज इंद्रियदम सवद ध्यान जाग्रत सरू ।
मृत जोग जीत दृढ जोग मय त्वां नमांमी गोरख गुरू ॥३६१ ॥

कंद मूळ फळ खाय वसै गिरवर की छाया ।
बिण पांतां उड़जाय काळ नह व्यापै काया ।
पवन रूप पसरंत नहीं आपा ओळखावै ।
ध्यान रहे एकंत पुरुष जांण न पावै ।
दस दिसा बाळ लीला फरै आप करै मुख रूप लख ।
झरड़ो अजपै मय यम जपै सत्य सत्य माछंद्रसिष ॥३६२ ॥

॥ दोहा ॥

पाबू दरस प्रकास झरड़ा नै दिनां विजै ।
वणियो आंगड़ वास वणद जसू थानक वडो ॥३६३ ॥
पूरण परवाड़ोह झरड़ा रो सू सवद जयो ।
रात दिन सवाड़ोह रहजे धांधळ रावउत ॥३६४ ॥
सूरा मन हरखै सुणै कायर जाय थरक्क ।
विष ऊगी मो वचन में श्री इग्यारमो अरक्क ॥३६५ ॥

इति श्री पालपोरपातन मुरधर भाषा आसिया मोडजीकृत झरड़ारो प्रवाड़ो
॥ सम्पूर्ण ॥

परचा री समो लिखंते

॥ दोहा ॥

कुण म्हारी करणीह धरपुड़ पाबू विण धणी ।
जिण री जस वरणीह आखर दीजे ऊजळा ॥ १ ॥
धार मनां इक धारणा तज दूजा सहतंत ।
परचा आखूं पाल रा सगत समाप सुमंत्त ॥ २ ॥
धपै बळाबळ थांन पाबू पूजै सैहै प्रथी ।
राणा नै राजान दरसण आंगड़ वा दिया ॥ ३ ॥
दे दरसण दीनोह अन धन रिध निध थित अपट ।

कमधज थें कीनीह खाती चावौ खंड में ॥ ४ ॥

वाजो इळ वजियौह धाम गढां मढ धांधळां ।
कर कमधज कजियौह आवागमन मिटावियौ ॥ ५ ॥

नेचा लीना रग्ग री गुड़िया गिड गज गंध ।
कमधां चावांणां कियौ समहर साका बंध ॥ ६ ॥

जवरौ जूंभांणोह अजड़ां मुंह धांधळ तणौ ।
पाबू पूजांणांह वे देवत यळ राठवड़ ॥ ७ ॥

धौळी धजा धणीह फाबै देवळ फरकती ।
घट मो चाह घणीह कोळू जाय दरसण करूं ॥ ८ ॥

थांन धणी थाराह अतही दीसै ऊजळा ।
वजता नग्गारांह सोभा लगै सुहावणी ॥ ६ ॥

कमधज लेपे कार दुख चीपण वागे कियौ ।
दुठ आप दुर वार मठ सूं ढौल मंगांड़ियौ ॥ १० ॥

आरोपे आगेह भोपा मिळ भालाळ रा ।
भूप पाल भांगेह मरजादां सह यूं मुणे ॥ ११ ॥

भू पर भालाळाह हेक तूंह असतौ हुवौ ।
विलखातो वाळाह सेवग धांधळ रा सुतन ॥ १२ ॥

पाबू मोटी पोछ तो वाळी धांधळ तणा ।
अजेन आई आंच तौर सहत बाधौ तपै ॥ १३ ॥

महि पर कई मोमाह कई परा जूंभार कर ।
चवै आप सामाह यूं वायक ओ अधपती ॥ १४ ॥

रूपै वाळौ राव सांभळ धांधळ री सुतन ।
पाबू देव प्रभाव प्रांगड़वा आवौ धणी ॥ १५ ॥

आवै आधीरोह सावळ हथ सवद सुणै ।
वांधव सगती रोह अगे अलोप इम ऊचरै ॥ १६ ॥

ऊखड़सी आवूह पड़सी धर ऊपर पतंग ।
प्रथो परै पावूह तद होसी सदना सतक ॥ १७ ॥

कर वधा पर कोन कमधज भोपा ने कहै ।

थण सायत आरोप आंगण ढोल उतावळी ॥ १८ ॥
गैट दुबायो पाड़ ततखणही वाघै तणो ।
थण सायत गुळवाड़ सह सोजत घरसूं कही ॥ १९ ॥
पडियो भोपो पाय कर वांधे वाघो कमंध ।
नृप कै सीस नमाय कीन्हीं सो माई कहूं ॥ २० ॥
नरपत तैं मतनीच कीन्हो कृत भोपा कहै ।
बुरछी छानी वीच सो रोपी धांधळ सुतन ॥ २१ ॥
दूजो दोहाड़ेह देवत पूगो दुष्ट नै ।
पुळ तीजी पाड़ेह पाल सेवगां प्रसण नै ॥ २२ ॥
सांचो सुर सुणियोह दस ही दस पाबू दरस ।
ग्योई जतै गुणियोह रै है धांधळराव रो ॥ २३ ॥
गुण नह हुवे लगार भोपा यम वायक भणै ।
अण नै भंमर सवार पाल दोप कर पाड़ियो ॥ २४ ॥
वाघै वाजंतोह ढोल मढायां तत घड़ी ।
पण लख भाजंतोह पाल तणै ल्यायो पगां ॥ २५ ॥
अंग रो ऊवेलोह पाल जदी करसी पतख ।
मढ नम तै मेळोह आठ सहस ओईचणै ॥ २६ ॥
होता प्रसण हजार एकल वाघो ऊबरयो ।
ए पाबू उपकार कीन्हो जे जो कारणै ॥ २७ ॥
वाजे हूंत वणास हव नृप रा घट मे हुवो ।
वाघै आंगड़वास पाछो ढोल पोछाड़ियो ॥ २८ ॥
थापे सोजत थान पाबू रै पड़ियो पगां ।
नृप कर धूप नित्यांन मूरत राखै गळ मई ॥ २९ ॥
थापै सोजत थान पाणां वागै छात्रपती ।
जांणै नरख जिहांन आरोपो भारी उठै ॥ ३० ॥
मूरत भोपांगेह वांधी मरजादा वडी ।
गेह न लोपांगेह तृणा सो वळी तलाक तिण ॥ ३१ ॥
आयो गांगै ऊपरै दोलतखांन दुरीह ।

पाबू रै आये पगां कमधज अरज करीह ॥ ३२ ॥
दुसमण ओदा दाह चमराळो आयो चढ़ै ।
जपां किसूं जादाह राज लाज मो राखजौ ॥ ३३ ॥
उसर हूता म्हे अज्ज लोह जरीकौ लेवसां ।
लज थंभ म्हांरी लज्ज तूं राखो धांधळ तणा ॥ ३४ ॥
चमराळां सूं चापड़ै भिड़सां म्हैं भाराथ ।
गते वगां धांधळ तणा हार जीत तो हाथ ॥ ३५ ॥
भाखे भालाळोह सुपनैं मझ गांगो सुणे ।
वाघे मो वाळोह थांनक सोजत थापियो ॥ ३६ ॥
खग वाहां खं धार पिड़ थे रचजो प्रात रो ।
हुवां तुहाळी हार हूं चोखां नै मार हूं ॥ ३७ ॥
हींच उड़ै हाथेह लग गांगो दोलौ लड़ै ।
मचिये जुध माथेह कमधज ओरी काळवी ॥ ३८ ॥
धीबी धांधळ रेह साबळ वांम भरे सबळ ।
पल क्यौं कृत परेह उथळ तो दीठो उसर ॥ ३६ ॥
समहर सेखो साजियो पाबू देव प्रभाव ।
दौलतियो भागौ दुरत प्रसणां छूटा पांव ॥ ४० ॥
राजन धांधळ रो रह्यो महि खावड़ थळ मेह ।
रतनां धांधळ पाल नै पूजै जिण पुळ मेह ॥ ४१ ॥
रतन सींच राखीय खावड़ घर में खेजड़ी ।
सुरमो कुळ साखीय थांन पाल रो थापियो ॥ ४२ ॥
जैसींगे नै जैतिय अत कीधी अज गत्त ।
वृछ थांनक रो वाडियौ कर मृत होण कुमत्त ॥ ४३ ॥
वरजें वारंवार रतनां धांधळ कर रुदन ।
जैसीगा जमद्वार क्यूं जावै अवगत करै ॥ ४४ ॥
पूंगीसर री पाल वृछ जो खेजड़ वाढ़ियो ।
तोनूं तीजी ताल मो कुळ देवत मारसी ॥ ४५ ॥
यम आखै मद अंध कुण पाबू हव है कठै ।

गामू मांगे कमंध मो पित दादे री मही ॥ ४६ ॥
मोन आय केयक मरे केक करे अपघात ।
मारीजे केई कळह मझ जिण सूं देवत घात ॥ ४७ ॥
घींठ हुवे घींगाह पाल तणी वृछ पाड़ियौ ।
जींजे जंसींगाह हवै तुझ मांहै हुवे ॥ ४८ ॥
मो धर यत सूं मूक कूखत्री आखै कुवच ।
कोळू जावे कूक घांधळ पाबू री धिया ॥ ४९ ॥
जळ आंखां झरतीह पड़ करती कइ कळपना ।
दुनटी रा डरतीह कोळ आवी कूकवा ॥ ५० ॥
रतनां करे पुकार सांभळ धांधळ रा सुतन ।
जेसींगे जोरार वृछ थानक री वाढियौ ॥ ५१ ॥
दुरबळ रतनां दौड़ पाल तणें आवी पगां ।
रे देवत राठोड़ कुळ री ऊपर कीजिये ॥ ५२ ॥
पाबू सुणें पुकार देवळ कज माथौ दियौ ।
वीर अमीणी वार कमधज जेज घणीं करी ॥ ५३ ॥

॥ कवित्त ।

कोळू थांनक कमंध दियौ रतनां ने दरसण ।
धिया देख घांधळी पाल वीह थायौ परसण ।
बाहर पाबू वीर मुणे बाई कर म्हारी ।
धीरप रतनां धिया करूं ऊपर हुं थारी ।
भाटी ने जम भेट कियां हूवंती किरणां ।
तड़ळे घर जैतियौ घणू घट करतौ गिरणां ।
तोक कहे हमे बचै नहीं सेल अणी तो चाढियौ ।
धी निजर न देखी थापना वरजंता तर वाढियौ ॥ ५४ ॥

॥ दोहा ॥

म्हारो वृछ रोपियो सोना री कर साख ।
गोम्रन रो फिर सांगरी नग लागा पर लाख ॥ ५५ ॥

वणरै विप आरांम लाख वात होवत नहीं ।
पाल पगां परणांम हुव कीनौ साता हुई ॥ ५६ ॥

रतनां सुण रोतीह भाटी नै पूगौ भलौ ।
जद जस सैंजोतीह थान पांन थप थापना ॥ ५७ ॥

॥ कवित्त ॥

केई वेळा कोटड़ै दळां आय घेरौ दीधौ ।
कमधज ऊपर करै वार उवारै लीधौ ।
वीखेरै वैरियां चक्र न्हांखै गेबाऊ ।
रखी लाज रांणी री सरब जांणै आसाऊ ।
राज गिर भूप रण रंध्रियौ वळे पाल अगलै वरस ।
कांगरै कांगरै काळवीं दीठी सत्रावां दळ दरस ॥ ५८ ॥

॥ दोहा ॥

केहवत सारेही कहै है जाहर आ हाल ।
कहूं जिकां री कोटड़ो धणी जिकां रै पाल ॥ ५९ ॥

अर जवरा अड़ियाह प्रथवी सीमाड़ै परै ।
कुसळै कोटड़ियाह राज विखय पुळ में रखौ ॥ ६० ॥

होवै सदा गढ कोटड़ै राज थपो सो रांण ।
धणी पाल मो द्रांगड़ै वा साची कर थाण ॥ ६१ ॥

॥ कवित्त ॥

परचौ बीकानेर

राज गिरे हरराज रतन पुत्री जिण आई ।
नरपत वीकानेर सिंह सूं करी सगाई ।
भूपत पंड में भूत हुआ वौह दीह विळागौ ।
सो अचेस्ट चंडाळ वहोत दुख देवण लागौ ।
मण सवातणै वेगर मई कथन प्रेत डोरो कियौ ।
चे फूल अरधमण सार रौ नरपत गळ बांधे लियौ ॥ ६२ ॥

नृप कन्या वर जोग हुवौ कमधज जीवत म्रत ।
जेसलमेरे जदो पूछ कीनी वीका प्रत ।
नवें नाट रायसिंह पेड वेदन नह परणां ।
भणै भाटियो भांण कारबारी बुधकरणौ ।
जिण वंस मई पावू जिसौ सतदेवत ऊभौ वजै ।
छळ छद्र नमें जिण नाम सुण भूतप्रेत अळगा भजै ॥ ६३ ॥
मिळ सला मंत्रियों सिंहसा राखी छांनै ।
अरबद जेहड़ौ अवर है न तीरथ हिंदुआंणै ।
जो थांनक जांणरी घणी जंगल मनधारी ।
ले वेहळ सांकर लार करी परभात सवारी ।
राज गिर हूंत हरराज चढ़ दळ मुकाम आवू दिया ।
पाल पग ऊभै छत्रपतियां कोळू आय डेरा किया ॥ ६४ ॥

॥ दोहा ॥

ले सरणौ सूतौ नृपत मढ ओळखै मईह ।
भूत किमाड़ा भांजिया कर छळ छिद्र कईह ॥ ६५ ॥
घोर निसा लागौ गयण दरा दस वुरछौ दांत ।
कियो कमध ऊपर द्रवौ भूतावळ यण भांत ॥ ६६ ॥
सुर भंगवे नरपत चवै उरड़ी प्रेत अणोह ।
विखमी पुळ अवै वणी धावै पाल धणीह ॥ ६७ ॥

॥ कवित्त ॥

दौड़ भंमर वज दड़ौ हुवौ मढ हूंकारव ।
वीर हाक सांभळौ धनुप टंकी धूंकारव ।
कमध तणा कोरड़ा प्रेत मौरां पर वाजै ।
पूळियो कूक पळीत चीह करतो रव जाभै ।
दाना दिराड़ गीलाड़ वृद्ध चंचळ होठ्ठ चाढियो ।
पाल कर कार समदौ परै कमध भूत नै काढियो ॥ ६८ ॥

॥ दोहा ॥

गज समपै गाढा गरू सिंह सूरदां छत्र ।
दुरगा भोपां नै दई कोळू तांबा पत्र ॥ ६९ ॥
पाल दरस वीकांण पत सो कीनौ रायसिंह ।
बावन हाथी बगसिया एक दिवस अरडिंग ॥ ७० ॥
वूठै पावू रा विनै देवळ ऊजळ दूत ।
कमधज सिंह कराड़िया सोव्रन कळस संजूत ॥ ७१ ॥

॥ कवित्त ॥

पनरै सै पनरोतरै वरस संवत वर तीजै ।
मास भाद्रवै मई सुकळ ग्यारस साखीजै ।
सोम भतनै सैलाळ दियौ दरसण ऊजळ दिल ।
मरूधर ऊपरै तपै जोधावत सांतळ ।
खजाना खरवरा खोलने कर आरोप कराड़ियौं ।
आरोप हतौ कचौ अगे दरसण वीका नै दियौ ॥ ७२ ॥

सोभे धांधळ नै पोते री खजांनां बतायौ तिणरौ

॥ कवित्त ॥

रूगो रावत दुसट जुलम कारक जलोड़े ।
देछू जातां दिसट पड़ी कूंपासर ग्रौड़ै ।
ताडां गोहू वाव मिन्दरां माळा मांडूं ।
कर ओवण सह किलम सेवगां दड़े छोडूं ।
सुण वात पसी भोपै स्रवण पाल पगे आया पुळै ।
कर जोड़ उभे अरदास कर विलखै मुख सावळ वळै ॥ ७३ ॥
पावू डगां पाड़ यळा जिण दिन रिव ऊगौ ।
भोपा करसी भिसट दुसट घर वळतौ रूगौ ।
सुण सावळ सैलाळ हुकम देवळ रै हुकमी ।
किधौ सत्रुवां केध वार यण भांगू विखमी ।

उगाटी जबर भीगा अगी जालोड़े वाळे जड़ा ।
गाळगां तोड़ मुह मोड़ कर धूड़ मिळादे ढेंवड़ा ॥ ७४ ॥

॥ दोहा ॥

कियो हुकम जिम हिज कियो धर खंजर धानंक ।
नींग बधाया सेवगां सत्रगां मांनी संक ॥ ७५ ॥

चारण मेहाजी रा लारा सू लिखणा

॥ नीसानी ॥

ऐक चारण जनमंद हो वसुधा वीकाणें ।
नर वन जांचण नीकल्यो रजपूतां ढांणें ।
वेड मजारे वीसरघो ऊनाळ लुवाणें ।
धीज करे थळ धूपळां तप धोम तपाणें ।
किराट पड़े तेतीस कोड़ सुर कुसमां रांणें ।
ऊपर करण न आवियो कळ घोर कहांणें ।
धायो पावु धांधलोत जप नाम जपांणें ।
चंचळ जे केसर चढ़ण कर कूंत ग्रहांणें ।
गरवी ऊठ पताक ग्रह ढळ मारग ढांणें ।
पाल कृपा जनमंत्रपण मिट दुष्ट खुलांणें ।
रेण मिटे जिम होत है तम नास विहांणें ।
पात धणी नै पूछियो उतपात धरांणें ।
हुव आगे की होवसी जसवंत धरांणें ।
दागें पाल जवाब दे नालक नासांणें ।
पैंलीमें धर पालटे जालम जोधांणें ।
रैसी राव मंडोवरो सिर कावळ थांणें ।
अजन मुरधर धर आवही एक छत्रपत पांणें ॥ ७६ ॥

॥ दोहा ॥

पाल तणा वायक प्रगट सो सुणिया जसवंत ।
जद मन में यम जांणियो अटक रहे सूं अन्त ॥ ७७ ॥

अजन अगंजी गजन हर गाहया वपन गिराह ।
चवियौ भोपै भाकचन्द आगू कथ अवरांह ।। ७८ ।।

सम्मत सतरौ अड़सटौ महिसुध फागुण मास ।
कहिज नखत्र किरतका तिथ सप्तमी प्रकास ।। ७९ ।।

अजन ढाल हिंदू अवन कहूं चेढावण केत ।
पाल दरस आयौ पगां सुन अभमाल समेत ।। ८० ।।

भालाळा सत भाव सूं मेहाणंद कवंद ।
जस तौ तोहक जातरा चविया बावन छंद ।। ८१ ।।

माहेजी रौ छन्द

मेही भूलौ वेढ मझ अस कज विनां अमल ।
जस गायौ यूं जांण नै धायौ सुत धांधल ।। ८२ ।।

॥ छन्द त्रोटक ॥

दरसाव महासुर पाल दियौ । किरणांपत जांण उद्योत कियौ ।
प्रथमी तिण नांम अखी पढणौ। सिध ताजण केसर जे चढणौ ।। ८३ ।।
कर चोड़व पोतोये केसरियौ। दत स्रीहथ हूंत अमल दियौ ।
तवजे सत वायक आप तणा । छंद सावत पाल तणा सुणणा ।
अखियौ मत संभ्रम मेह इयूं । हिव चाह यति वंस धांधळयू ।
कहणी मझ नावत आद कियै। हय मुज्झ गमाणिय सोच हियै ।। ८४ ।।
स्रवणे जस छन्द पछै सुणहूं । हत्र आंगुअ तुज्झ तुरंगण हूं ।
देवादि कळा विप में द्रढ यूं । अस केसर धांधल आरुढ यूं ।
महि सोघ वळावळ देव मगे । अस वेग हुड़ाविय घाल अगे ।
अत व्याकुल कीध कुखैग अणी। तुरगांण संभाळव तुज्झ तणी ।। ८५ ।।
विध सांभळ जोस वधै विप जे। जस धांधळ पाल तणो जपजै ।

मेहे वायक

कमंधां रिव तौ मझ मान करौ। घण हेत लजावेय मुज्झ धरां ।। ८६ ।।
सिध खत्रिय धांघल वंस सतै । पढ छंद सुणासुअ तुज्झ पछै ।

जन देवकळा गज हुंत जुग्रो । हव वाज समेत ग्रालोप हुग्रो ॥ ८७ ॥
बरस्या नभ फूल जणी वरियां । भुग्र डावर केसर सूं भरियां ।
सव देत प्रसाद हमें कळियो । रिव खत्रिय पाल म्हनें छळियो ॥ ८८ ॥
तण धांधळ देव तणी तकयूं । ग्रसवार ग्रने ग्रस ग्रोळखयूं ।
सुर पाल वजं जग सीस सची । निज पायीय मेह घणी नेंहची ॥ ८९ ॥
गजियो मुझ ग्राप तणीज गुणी। घन भाग लख्यो चख ग्राज घणो।
कह ग्रोह कियो किण कारणनूं । छळतो नहतो सुर चारणनूं ॥ ९० ॥
करसूं ग्रपघात हमें करसूं । मन धारिय पाल परै मरसूं ।

श्री मुख सूँ फुरमावै

नर मंद क्रमी तुज भाग नहीं । सुर पाल कह्यो नभ वेंण सही ॥ ९१ ॥
पुण छंद सुणूंह परस्सण है । हठ कीनव नांह दरस्सण है ।
तर मोद लियां छंद मेह पढ़ै । सुण पाल तणी चित मोद चढ़ै ॥ ९२ ॥

मेहे वायक

॥ गाहा चौसर ॥

वंस कमधजां पाल वरदाई । वेगड़े विरद वहण वरदाई ।
वेरीहरो वंको वरदाई । वांको पाघोरण वरदाई ॥ ९३ ॥
उदियो कुळ खोची ग्रणभंगी । ग्रापेह पाण इसी ग्रणभंगी ।
ग्रावध हंत हुग्रो ग्रण भंगी । ग्ररियां गमै न की ग्रण भंगी ॥ ९४ ।
जींदो पाल वीनै जग जेठी । जग जेवंत वीनै जग जेठी ।
जागै छळ वीनै जग जेठी । जगसै जुद्ध वीनै जग जेठी ॥ ९५ ॥

॥ छन्द मोटक ॥

जग जेठिय जींदोय पाल जगा। ग्रधपत्त ग्रनंमिय ग्राप वगा ।
गळ मार गेंमार न बोल समै। नह कोय किणी पर टांक नमे ॥ ९६ ॥
पाबू जिदराव प्रमाण पहं । गहवंत घड़ाल सपूर गहं ।
वह कोप हुग्रा त्रिन्देन विनै । वाघ धारण वीरत जूंझ वनै ॥ ९७ ॥

वयरां वदवादन काय वळी । टळ सिद्ध सगपण माम टली ।
थांबळां खीचियां वैर धकै । वेयस नर लाग दबंग विखै ॥ ९८ ॥
मेहले दळ जींदय मच्छरियौ । पाबू धर खीचिय पस्सरियौ ।
जिंदराव तणा भड़ जोड़ जिकं । किय जेत परद्ध तणा कटकं ॥ ९९ ॥
भड़ होय हुकम्म सताह भड़ं । कस जद्द जरद्द कड़ी छकड़ं ।
किय टोप रंगावळ क्रगळियूं । सज हाथळ सींह सरक्कथियूं ॥१०० ॥
तस रूप तणौ कसणौ तणियूं । जोहग्गिद हुआ भड़ जूसणयूं ।
खुरसांणिय खग्ग छतीस खरा । निज अंग सुछंग रहंत नरा ॥१०१ ॥
कर वेग मलावोय वार कहै । विणाल विडंगय भीण वहै ।
मंढ पीठ पिळांण लगाम मुखं । रिम पाखर रोल घंटाळ रुखं ॥१०२ ॥
कस तंग तुरी सब साज कियं । बलही जिन बाळ विछोवळियं ।
तन रोम रकाव तणीं तरसै । अणभंग हुआ असवार असै ॥१०३ ॥
जिंदराव चढै जमराव जिसौ । दल हालय धांधळ देस दसौ ।
हव हींस हुकम्म हुलास हुवै । भय भंग भयं छत्रपत्त हुवै ॥१०४ ॥
पथपूर कटक्क हुव प्रबळा । जिंदराव कजांमळ हेम जळा ।
वहतै दळत्राट धमी त्रिखमी । खळ चाढत सेस न भार खमी ॥१०५ ॥
यम सेन इसा अस ऊळटियं । गिर भंगर पाधर गाहटियं ।
ताअजंत अहो निस तंग तुरी। दुरिया निध लेवण हेट दुरी ॥१०६ ॥
फाटी पह पासरणै फरयू । पाहबू धर खीचिय पासरियू ।
लेइ हत्थ करै सब लोभ हरं । धण थाट वळे पतदेस घरं ॥१०७ ॥
पुवकार मुखै पुळ लंग पगै । आयौ जाहण उत्त पाल अगै ।
पाळै तिण राव तणी प्रथड़ा । जिंदराव उपाड़िय देस जड़ा ॥१०८ ॥
उठियौ धिक पोरस पाल इसौ। जोय जाणव निग्रंथ वास जसौ ।
भड़ चोळ चखां अत रोस भली।मुख भ्रूह अणी जाय भ्रूह मिळी॥१०९ ॥
वधिया भुज भोम लगै विमळा। क्रम तेदेय टीकम जेम कळा ।
भड़ वीर हकारत पाल भला । वरियांम चढो वहळा वहळा ॥११० ॥
वड तूंग विरत्त विलक्कुळियं । अत चोडोय लास उतावळियं ।
साकत्त पलांण लगांम सहूं । तसलीम कियां तंग तांणतहूं ॥१११ ॥

महड़ां विध वेग सनाह सजे । करमाळ छतीस करग्ग कजै ।
अणभंग तुरंगण आरुढियं । सुरही छळ सूरत सन्नढियं ॥११२ ॥
पाबू पर नेत परठ्ठवियं । काळवीं चढियो करकूंत कियं ।
भड़ पाल तणा पाराथ भड़ं । आया अणभंग इसा अनड़ं ॥११३ ॥
वरियांम संग्राम जहांम विपै । किये तैल चंपेल सु चील कंपै ।
धूणियाळ बांहाळ घेटाळ घुवं । हटियाळ कांधाळ अकाळ हुवं ॥११४ ॥
लछराळ रंढाळ रोसाळ मनै । विकराळ वडाळ जो काळवनै ।
ढेनाळ मुनाळ रोदाळ ढहै । सत वीसांए सूर सधीर सह ॥११५ ॥
सोहड़ा चांदियो इण रूप सजं । मिळ पूनम चंद नखत्र मजै ।
सा आबू पग्रमळ खंधार खळं । विसळे वद वीरत वीस वळं ॥११६ ॥
भड़ हेकाहे हेक विसेक भणं । पाग्रारविय पावक पाल तणं ।
होइया सत्र धंसेय एक मनं । धनधन्न नरां नर पत्त वनं ॥११७ ॥
धांग्रधळ समीभ्रम धूम्र धड़ै । खित मारग पाल तुरंग खड़ै ।
भड़ ईसाळ वोसळ भींच भला । गीया पय पाधर जूंभ झळा ॥११८ ॥
धर धूजत पाय धनंक धरं । कर जोड़ कुदीळ खड़ग्ग करं ।
पाग्ररधिय लोधिय धीस पुळं । पायक्क अधक्क पुळै प्रगळं ॥११९ ॥
लेवार छक आरत प्रब्ब लगै । वाहरू आय पाल प्रमांण वगै ।
को कर सनेह सह सेम कसं । दम ऊपर डम्मर गैण दिसं ॥१२० ॥
विध तेण रजी अंग पाल वसी । घट जांण महेस वभूत घसी ।
कमवज्ज वदन्न संजोत करा । किर सूरज निकळियो सेहरा ॥१२१ ॥
इम धांधळ अंस उरव्वड़ियूं । खीचियां दळ आपड़ियो खड़ियूं ।
विसवांण वदै जिंदराव वरूवा ।आवग वाळिय सांमिह वाहर उवा॥१२२ ॥
नर पेन धणो धाहीत नरें । फौजां सज वींटिय जोड़ फरै ।
नीहसांण दहूं दिस नोब सियं । हरखे पलचारी मनै हसियं । १२३ ॥
ताळी मिल नारद वीर महा । डमरू किय हायण डाक डहा ।
गड़ पाल अनै जिंदराव वहा । नह साय सुभट्ट अया नेयड़ा ॥१२४ ॥
पड़ियाळ पनै धिक सार पणं । भड़ कांठळ वीज जवक्क जगां ।
वळिया गड बोळ दमांह वहूं । गुण तांण कवांण सुपांण गहूं ॥१२५ ॥

सवरी गण पारधिये समरै । किये कुण्डळ राह गनीम करै ।
सर पूर समूह विछूट सनं । मिळ घोर अदारक मेह मनं ॥१२६ ॥
छणकार खतंग निछंट छणै । रुग वज्जिय पंख धनंक रणै ।
फर फाटस नाह सवाह फड़ै । भाग्रलोड़ वंभार करंत भड़ै ॥१२७ ॥
गमियौ गयणाग धराग हतं । मिळ घाय घणो दिल रीठ मतं ।
जयकार भणै सुर धार जटा । निकल्या भड़ पाल तणा नेहटा ॥१२८ ॥
होय इक्क सधक्क कटक्क हमं । साबक्क जसक्क घसक्क समं ।
जभ बड़क्क भड़क्क भटक्क भड़ै । फाड़क्क फड़क्क तड़क्क फड़ै ॥१२९ ॥
कसणक्क भड़क्क बड़क्क कड़ा । पिडवक्क थड़क्क दड़क्क पुड़ा ।
मुरडक्क मुडक्क असंध मुड़ै । जुध पाल अनै जिदराव जुड़ै ॥१३० ॥
मिळ चट्ट पगट्ट सुभट्ट मिळं । दुजड़ाहत पाल भड़ै दुभळं ।
फरड़ाहक बोलत फीफरियूं । करवा हत पाल करं मरियूं ॥१३१ ॥
काळवीं कर हाहुळ मोर कळा। लख थाट थिरै पिक भंपलुळा ।
असवार अभंग सुचंग इसी । रण जाय जणौजण रूकरसी ॥१३२ ॥
मछराळ खेंगाळ सुताळ मतौ । रोहराळ बंबाळ भलाळ रतौ ।
हाडाळ गोडाळ डालाळ हुआ । जांण साल जंभाळ जड़ाव जुवा ॥१३३ ॥
विमुहाळ कांधाळ विचाळ विपं। उवचाळ बंगाल सिगाळ अपं ।
घड़ घाव वडाळ ओलाळ घड़ै । पड़नाळ प्रनाळ चाणाळ पड़ै ॥१३४ ॥
गळमाळ रम्भाळ गुंथाळ ग्रहै । कर माळ मुंछाळ भूटाळ कहै ।
मोसाळ भूखाळ पंखाळ मिळै । गूदाळ रसाळ गालाळ गळै ॥१३५ ॥
तज रज्ज रडै धारां त्रजड़ै । भल साळ पड़ै भळ पाल भड़ै ।
वड नांम समापेय धेन वड़ै । चांदियौ रण नांमेय चांद चड़ै ॥१३६ ॥
लोहां मुख पायक चीत लहै । रिण खाखूअ पेमल साथ रहै ।
विसळै वियरत्त विखंम कियूं । खिचियां दळ जुद्ध थयौ अखियूं ॥१३७ ॥
किय पारधियै कल नांम कथं । सत वीसांय सीधाय पाल रथं ।
राठोड़ संग्राम करै रहियूं । गऊ बाहर पाब्रूह गोग हियूं ॥१३८ ॥

॥ कवित्त कळस रौ ॥

गउ बाहर गोग इयूं पाल पर जुड़ै इसी पर ।

जींदे सूं जुध जाग कियो उजळो कर सर ।
वांने रम्भ वरेह वांन कमधज्जां वद्धे ।
पूरो आस पळछरां लियो अमंख धो लद्धे ।
अत्र जींद थये घांधळ सूं इम थिर नांम ससेन सह ।
प्रणमंत मेह पाबू प्रसिध तो पर सिळूं प्रमांण पह ॥१३६॥

मेहेजी रं कह्या सम्पूर्ण

॥ पुनरपि ॥

कळ खेंग वलावळ वेग क्रमै । रिण पाल जणोजण रूंख रमै ।
अहे मेह परै निज भाव घणो । तुझ सांभळ घांधळ राव तणो ॥ १ ॥
लिप मेह पढै विसरांम लियै । दिन ऊजळ देव हुंकार दियै ।
मनस्या हित देविय पुत्र मनै । कन मेह हतो जिणवार कनै ॥ २ ॥
सुर पाल दियो जस सांभळियो । करसूं नभ मारग कांवळियो ।
तन तुज्झ रहे जग मेळ गत्यां । झड़सी इक मोहर झाटकतां ॥ ३ ॥
कर धूंप प्रभातेअ छन्द कियूं । दत मोहर रीझ हमेस दियूं ।
चित मून अतंत यहे सहजे । किण आगळ वात मती कहजे ॥ ४ ॥
विण दीहसु पूज स्तुती वणिया । श्रवणे छन्द मेह कह्या सुणिया ।
सुकया फिर दूहाय बंध चवो । कर राज कृपाल धराज कवी ॥ ५ ॥
कथ वात सम्पूरण चाढ कळो । वुधराज वखाणिय ख्यात वळो ।
गुनरां मुख वेण जिता सुणिया । कवता मतसूं कर छन्द किया ॥ ६ ॥
गवही कथ मालम वात सखी । लघराज कही बुधराज लखी ।
लम ओज तणा गुण अंग लई । सुणिया सब छन्द प्रसाद भई ॥ ७ ॥

कव वायक

मन वाय अनै क्रम हूंत मणो । तत कीरत पाल कमंद तणो ।
घट मांझ रखे द्रढ भाव घणो । तवियो जस मोडय पाल तणो ॥ ८ ॥
मन दीह सुधारण मो मव रो । काळवीं असवार धणी कव रो ।
घर आंणत वित्त नटो गमियो । सेवगां धन दे अण चितवियो ॥ ९ ॥

पुळ आंण वरण कव मोड़ परे । कमधेस रती नह जेज करे ।
सुण पावुअ थांन रहै सुख में । दरसै नजदीक घणौ दुख में ।। १० ।।
तुरतां लज राखण मोंड तणी । धर धावेय तीजिय ताल धणो ।
रज बंधिय वात हुवां रिम री । भुअपाल तुं पाल चढे भँवरी ।। ११ ।।
दोहरी पुळ सेवण भीड़ दियां । काळवीं चढ आवेय साद दियां ।
अम संगट मोद धरे अरसै । दनजे तुरंगांण चढ्यौ दरसै ।। १२ ।।
प्रभणौ थळ खावड़ देसपती । जसलै जुगजीवहै पाल जती ।
देय खाग अरी थट सींह दुअौ । हव पाल महा सिध पीर हुअौ ।। १३ ।।
धव्र लंगाय धांम धजा धवळी । घरही घर माट वजै गवळी ।
अम पीड़ हरे सुर वार अणी । धन है कवळू मढराज धणी ।। १४ ।।
कमधेस मनै वडभाग कियौ । दत तौ सुत पाबुअदांन दियौ ।
थिर पावळ गावेअ मोद थियौ। कवळू मढ़ जाय जुहार कियौ ।। १५ ।।
गणिया तद अमृत री घड़ियां । पढियौ जद रूपग पावड़ियां ।

॥ गीत ॥

गायौ पालनै सुकवी गुण गीत । धारे अढगरी देवीध ध्यान ।
दीनो पाबू देव करे दत । दांन मनै सुत पाबू दांन ।
सोळै तेवीसे लग सांचौ । रटियौ नित कोळू मढराय ।
धांधळ सुतन जिसां धणियांरौ । जस कीधौ ऐहळौ नहिं जाय ।
देमां वंस वधारण दीपक । घणौ उजाळो कीनौ घर ।
भांमी तो ऊपर भालाळा । जोमी सुध लीनी जबर ।
माथौ हव जिणरौ दूखो मत । धणी अमी रौ निजर धरो ।
राखे कुसळ वेगड़ा रावत । करो रीझ निरवाह करो ।

॥ छंद ॥

जस सूं रम भाग वधे जग में । पढतां अतरा गुण रूपग में ।
जस भूपत ईश्वर रौ सजियौ । कव पाल तणौ वरणांम कियौ ।
जुध थांनक राज सख्यात जथा। कुळ धांधळरी यण मंझ कथा ।
भल रूपग मोड कह्यौ भणतां । सुरपाल रंजै पढतां सुणतां ।

मन ग्रामय मोड उदेग मिटै । पढतां विप तेज कळा प्रगटै ।
वड भाग हुवे सुभ दीह वळै । तिण पाठ कियां सह रोग टळै ।
दोरसातन जोम वधै प्रबळा । कजियं घट व्यापत देव कळा ।
ग्रत भोमज पाबुग्र नांम ग्रगे । भूतावळ गोटाय दूर भगें ।
रोहियां मग भूल विडांण रहै । छळ छिद्र नसै जिण नांम सुणे ।
जळ ग्रानळ पाल घणी जपजे । ग्रह ग्रादवड़ा डर नां उपजे ।
केइ भूप पखायत बंधकणी । धुर मुज्ज हेमायत पाल धणी ।
गय बाज ग्रवै धन धांन घणी। तन मोड तणां वळ पाल तणी ।
मुझ ऊपर पूर रखो मरजी । ग्रतरी सुण पाल ग्रमां ग्ररजी ।
घर सोस लई सत्र मुझ धणी । कव गांव महीं नह जोग कणी ।

॥ कवित्त ॥

गयण नखत्र कुण गणै गणै कुण वसुधा रजकण ।
तेरू दघ कुण तरे निगम गम करै कवण जण ।
कुणलै उतर छेह कवण चित्रै नभ मण्डळ ।
ब्रह्मनाळ कुण गणे कवण घण पुणग गणे यळ ।
रमापत सेस नह कर सकै धर हिंदुवांणी ढाल रा ।
कुण कहै रसण एकण कवी पूरण परचा पाल रा ॥

॥ दोहा ॥

परचा पूरण पाल रा सो कुण कहण समत्थ ।
सुणिया जै मोटे सुकव कहिया रूपग कत्थ ।
रात दिवस मन में रहै वरणु वचन विचाळ ।
दरसण मोनूं दीजियै भमर चढै भालाळ ।
सबदाडबर कोय सूं घर ग्रम्बर लग धार ।
रुगग ग्रमर रहावसी रैवत भमर सवार ।

॥ कवित्त ॥

साधुरमां सूरमां ग्रगी गाहण ग्रड़साळां ।
जबरां दयण जवाब ग्रवग मत दात्रीयाळां ।

जीव जोत जोधरां कळह धीरां कंठीरां ।
रखणा सरण खूनियां वचन कायम वर वीरां ।
वायक सुण विळकुळै हुवै पोरस हूंकारौ ।
अंग वीरारस आय चखां मुख दरसै सारौ ।
पिंड पाल तणौ पोरस पवन वधै जोस मौ मन घणौ ।
उण सभा मंहो सावत अरथ बंधै रूप रूपग तणौ ॥

कम पौछां कायरां ठहै सठ ठीगा ठोळी ।
मैला घटां जवांन तठै जिण सूरां टोळी ।
भगत भाव गउभेष मिळै ठाकुर मावड़ियां ।
सूधा सरल सभाव छैल पिणघट लावड़ियां ।
नर यस सभा आवै नजर चित मझ रोस न चाढणौ ।
तिण ठौड़ पाल रूपग तणौ कवियण वचन न काढणौ ॥

कव वञ्छना कवित्त कुण्डलियौ

पाल तुझ देवत पणौ कमधज जदे कहाय ।
मैं कीनौ रूपग जिकौ यळ पर मालम थाय ।
यळ पर मालम थाय वरत लख जाय वळावळ ।
जांणै नृप जोधांण अरथ चरचूं जिण आगळ ।
मोद रंजै मुरधरा अरग पाबू आठौ मझ ।
जांणै सकळ जिहान रूप डींगळ रांणा रज ।
ववरै तुकां सारी वसा सोखै के चरचै सुणौ ।
तद गणूं तूठ वांधळ तणा पाबू तो देवत पणौ ॥

पाल जेम आविया सुणै देवळ री सावळ ।
पाल जेम आविया राव गोगै तणी आचळ ।
पाल जेम आविया धिया रतनां दुख हरवा ।

पाल जेम ग्राविया कोटड़े ऊपर करवा ।
कड़ियाळ हुवां सावळ सुणे घुरज भंमर चढ धावजे ।
मत मोह तणो ऊपर करण उण वध पाबू ग्रावजे ।।

ग्रपापत ज्यां ग्रळग भाग प्रापत ज्यां नैडा ।
नह मांनै ज्यारै कदन सुदन मांनै सुख खेड़ा ।
निरधन जे नह नमै नमै धनवंत सदाई ।
है गरीब नह जपै जपै जे धींग सदाई ।
कर पाठ उदै सेवा करै कमी जकां वात न कणी ।
पावै तुरंग गज गांम पुत्र ध्यावै जे कोळू धणी ।।

।। दोहा ।।

नवी वतीस छतीसा या वडा बाप मो वंक ।
तबूं भाग जाडे तिके ग्राखर ग्राडे ग्रंक ।
मालम धर बुधमाल रा ग्राखर चारू ग्रोड़ ।
गहू रूपग भेळा किया रैणाकज राठोड़ ।
कवराजा नरपत कियो मेधा पारख मांन ।
कव मत मंडण गुण कियो वंधु बांकीदांन ।
पाल पोरसातन प्रगट जोड़ नाम दिय जव्व ।
कव जूंजाळ गुण कियो मोडें पोछ मुजव्व ।
वैर पुराणा वाळवै उर विच ऊठै ग्रग्ग ।
सुण सूरां मन दे जळै पाल तणा रूपग्ग ।
सहर कोय ठाकुर चढै भुज पाकड़ भालोह ।
तिण ने जग पाबू तणो पोरस रो प्यालोह ।
विर ऊठै वैराग थाकल यूं ग्रंजस चढै ।
वीर ग्राग वजराग रूपग पाल सुणेर जो ।
कायर ही सूरो हुवै पाबू सुजस प्रसंग ।
ज्यूं ग्रांवळा सार सूं पारो काजळ रंग ।

॥ कवित्त ॥

ऊगेइज ऊगे अरक निसा दरसै हिज उडगण ।
पसरै हिज धर पवन तरैइज दध पर तारुण ।
नारायण रै नांम हुवै उद्धार न संसय ।
पड़ी वस्तु ज्वाळानळ दहण दाहै इज संदय ।
करसै सहाय विजनस कमंद घट मांझळ धीजौ घणौ ।
नर हियै यतौ नहचौ रखै तौ नैड़ौ धांधळ तणौ ॥

॥ दोहा ॥

देसी जद पाबू दरस करसूं मन अत कोड ।
जग सारौ यम जांणसी मेहे ज्यूइज मोड ।
मिळसै जद पाबू मनै सो दन अत सारौह ।
औ मो लेखे ऊगसी सूरज सोनारोह ।
दरसण मेहा नै दियौ जस थोड़ै जूंझार ।
रटियौ मोडै राज रौ रूपग तीन हजार ।
बांधव धाबळियाळ रौ पाबू सर प्रगत्त ।
सांभळ रूपग पाल रौ सुप्रसन हुवौ सगत्त ।

कवी री फरियाद

॥ छंद ॥

कहिया सु पाल घणी कळजे । सुकवी रौ सावळ सांभळजे ।
वत लेकर वैठौय साहवजे । उण दी धन मोनुग्र जाब अजै ।
थित पूगइ राज तणी थळियां । उणनू कर पायक आवळियां ।
न वधे तन गाम लगौ न रती । धुणियाळा रा भूप छुटौ धरती ।
हल कीजै ऊपर वेग हमै । सुप्यारी रा सायब एण समै ।
वैरियां मिळ वार करी विषमी। हव सांभळ देवळ रा हुकमी ।
मम साथ दरावेय आय मणा । व्रजलाळय नायक आप तणा ।
सेवगां दुखियां री कूक सुणी । काळवीं असवार गो दीपकणी ।
राखौ जद खांवद लाज रहै । विप डूबां ऊपर वांस वहै ।
सुकवी री तौ ऊपर रीझ समै । खिण फौरिअ छाछ न फूंक खमै ।

मग नरट में नह काय मणा । थू गयो कित धांधळ राव तणा ।
१ घाद अने २ गींळरो ३ चिनोदक ४ फेर विरोधी ।
५ पाल व्याव ६ अक्रान्त समय पुर बावण सोधी ।
७ उत्तर समर प्रहार अवर ८ बूढा जुध आगळ ।
९ रातीवाहो रात १० क्रमी सतीयां सुण कागळ ।
११ ले वंर जोग झरड़ै लियो १२ परचा देवत पाल रा ।
छं रूपग द्वादस समा म्हनैं दिरावण माल रा ।

॥ दोहा ॥

छै द्वादस रासा सिरे भणू द्वादस भेद ।
द्वादस समिया पाल रा एवा करण विछेद ।
पुंज तेज री पूतळी पाबू सुजस प्रचंड ।
ओ मेटै कातर पणो तिम ओ मेटै तड ।
अरक उगै मेटै अवन सिय तम चोर उपाध ।
तं मेटै धांधळ तणा वीर आद नै व्याघ ।
जोग पंथ हरि भजन सूं तीन पीर काबूह ।
पीर जूंझ पूजीजिया गोगो नै पाबूह ।
उदै एक आदीत सूं रहै वरण ध्रम रीत ।
कव मोडै वरणन किया ऐ वारै आदीत ॥



इति श्री पाल पोरसातन मुरधर भाषा कवि आसिया मोडजी कृत
पाबू प्रकास सम्पूरण



पाबू प्रकाश का कथा-सार

उतपत रौ समौ (१ से १४)— कवि मोडजी आसिया (चारण, राठौड़ों की कीर्ति और गौ-रक्षा की भावना की प्रशंसा करते हुए पाबूजी के पूर्वज राठौड़ों की वंशावली का वर्णन करते बताते हैं कि कोलूमढ (जोधपुर-मारवाड़) के राठौड़ आस्थान के पुत्र धांधल बहुत ही चतुराई से अपना राज्य चलाते थे। उनके राज्य की शोभा अतुल एवं वर्णनीय थी। वे महान प्रतापी और वीर राजा थे। एक समय उन्हें किसी इन्द्र की अप्सरा को देखने का सौभाग्य मिला, जो इन्द्र के श्राप से, धरती पर मानव देह धारण कर अपने श्राप के दिन बिता रही थी। इस अप्सरा का यही दोष था कि इसने इन्द्र के दरबार में मानव देही की प्रशंसा कर दी थी धांधल अपनी रानी कमलादे के साथ सुख से जीवन बिता रहे थे। एक रात वे मृगया करते किसी सरोवर के किनारे विश्राम करने रुके और प्रातः स्नान कर तैयार हुए तो एक अप्सरा आकाश मार्ग से उतर कर उनके पास आई। परस्पर नजरें चार होते ही धांधल अप्सरा के रूप पर मोहित हो गये। प्रेम में फंसे धांधल दिन को राजकाज करते और रात को रानी से छुप कर अप्सरा के साथ, विशेष महल में, जो उनके महल से दूर अन्यत्र ही बना था, उसमें आमोद-प्रमोद करते। अप्सरा की कोख से ही कथा के नायक वीर पाबू का जन्म हुआ। रानी कमलादे को धांधल के इस उपक्रम के प्रति संदेह होने लगा और एक रात वह भी चुपके से सत्य की खोज में उनके पीछे-पीछे घोड़े पर सवार होकर चल पड़ी। रानी को आई देख अप्सरा ने धांधल को अपनी कथा का रहस्य बता दिया और अपनी मानव देह तज अलौकिक अप्सरा बन कर आकाश मार्ग से स्वर्ग में चली गई। राठौड़ धांधल रानी कमलादे पर बहुत नाराज हुए और उसकी प्रताड़ना की। रानी ने उसे पाबू को अपने पुत्र के समान पालन - पोषण करने का विश्वास दिलाया और उसको अपने महलों में ले आई। प्रातः ही पाबू के जन्म की विधिवत् घोषणा की गई और महलों में बधाइयां दी गई। अब पाबू दिन प्रतिदिन बड़ा होने लगा। उधर आणंद के घर देवल का जन्म हुआ। वह भी अपने पिता के घर बड़ी होने लगी। उस अप्सरा ने देवल से कहा था कि वह घोड़ी के रूप से उसके पास आयेगी और युद्ध के समय पाबू की रक्षा करेगी। धांधल राठौड़ के दो रानियें थी। बड़ी रानी भटियाणी से 13 पुत्र हुए तथा छोटी रानी कमलादे से पाबू सहित 8 पुत्र व 2 पुत्रियें सोनल व पेमल हुई। इस प्रकार कोलूमढ पर राज्य करते धांधल का अंत में स्वर्गवास हो गया।

गोळ रो समो (१४ से २८)— धांधल की मृत्युके पश्चात् उसका पाटवी पुत्र बूडो(बूढा)कोलूमढ की गद्दी पर बैठा। बूढो छत्तीस गुणों से सम्पन्न था और राजसी गुणों से भरपूर था। सारंग ने बूढो से गोल (नागोर) वापस लेना चाहा। युद्ध के बाजे बज उठे। अकाल के समय बूढो ने अपने पाराधियों की रक्षा की थी जिससे वे उसके स्वामीभक्त बन गये। सारंग का दूत बूढो के पास आया परन्तु बूढो बिना युद्ध के जमीन वापस देने को तैयार नहीं था। जब दूत के मुख से यह बात सुनी तब सारंग नाराज हुआ और हुक्म दिया कि अकाल के कारण इधर आये लोग अब वापस चले जायें। लेकिन जायलनाथ जींदराव फौज ले आया। कोलूमढ में रणभेरी बज उठी। धांधल के युद्ध पराक्रम से जींदराव घबरा उठा। चांदा और ढेबा के विकट प्रहारों के सामने जायल-फौज के पैर उखड़ गये और गोल की भूमि राव बूढो के पास रह गई। बूढो ने जींदराव को भागता देख क्रोध से पाबू को कहा कि यदि जींदराव जीवित चला गया तो हमारे क्षत्रियत्व को धिक्कार है। पाबू ने भी प्रण किया कि सारंग व जींदराव को कैद न कर लूं तो धांधल का पुत्र नहीं। पाराधियों ने भी बूढो के आगे प्रण कर लिया कि वे खीची जींदराव की सांढियें, गायों व घोड़ियों को लूट लावेंगे। जींदराव व बूढो परस्पर युद्ध के लिये पुनः तैयार हो गये। जींदराव युद्ध छोड़ कर भाग गया और पारधियों ने उसके घोड़े लूट लिये, पाबू भी पारधियों को साथ ले युद्ध करने लगा और गाय, भैंस, घोड़ियां लूट ली, सारंग मारा गया। तब गोरखनाथ ने जींदराव को दर्शन दिया और वैर लेकर विजय प्राप्त करने का आशीर्वाद दिया, जींदराव को अमरता का वरदान देकर गोरखनाथ लुप्त हो गये।

विनोद रो समो (२९ से ४१)— खीची जींदराव अपना वैर लेने हेतु फिर से सेना इकट्ठी करने लग गया। उसने अपने पिता सारंग का बदला लेना चाहा। अप्सरा ने अपने वचन-प्रमाण देवल के घर घोड़ी के रूप में जन्म लिया जिसे देवल ने पाबू को सवारी के लिये दे दिया और इस 'केसर' नाम की घोड़ी से पाबू ने पहला युद्ध जीता। कोलूमढ में बूढो की विजय की खुशियें मनाई जाने लगी। सभी लोग पाबू का यशोगान करने लगे। उसके प्रभाव से गोओं की रक्षा होने लगी। पाबू और कालवीं केसर का यह मिलन एक दैविक संयोग था जो अप्सरा माँ की इच्छा का परिणाम ही था। फिर देवल के भतीज की बरात में पाबू भीलों को साथ लेकर गया। सिंध के अलहणपुर पाटण में रात को ठहरा उससे पहले अलहण राव की सांढियां को सिंध का मिरजा सायर उठा ले गया और चारण पाबू के पास रक्षा के लिये गये। अलहणपुर पाटण के बाग के माली ने उनको वहां निवास करने से रोका पर रात को वे जबरदस्ती वहां ठहर गये। प्रातः मिरजा का पीछा करके दिन भर चलते हुए उसे पकड़ लिया और वापस लौटते सोनभद्र नदी में घोड़ों को नहलाया। जब उन्हें मालूम हुआ कि खीची लोग कोलूमढ पे धावा हमला करने आये हैं तो सभी राठोड़ वापस रवाना हुए और खीचियों को पराजित कर अमरकियों को लूट कर कोलूमढ में आ गये। इधर माता कमलादे अपनी

दोनों पुत्रियां सोनल और पेमल को विवाह योग्य जान बूढो व पावू से कहने ल
वे उनके विवाह की व्यवस्था करें। बूढो ने बताया कि सोनल को सिरोही
को व पेमल को जींदराव खीची जायल वालों का व्याह देगा। इस पर पावू ने
किया कि पेमल जींदराव को नहीं व्याही जाये। बूढो ने बताया कि जायलनाथ
मिटाने का यही मात्र उपाय है। माता भी बूढो के विचार से दुःखी हुई। बूढ
आग्रह पर पावू और बूढो में भी परस्पर विरोध हो गया। सातों थोरियां पाराधिय
साथ ले वह घर से निकल गया। फिर कभी कोलू सीमा में न आने की उसने कस
ली। इस प्रकार पावू व सातों भील लूटपाट मचाते घूमते रहे। रायपाल व प
लड़ाई छिड़ गई और साथ आमेर आ ठहरे। पावू ने मण्डोर इन्दावाटी भी जीती

विरोध रौ समौ (४२ से ५०)— माता कमलादे और पुत्र बूढो ने गुप्त
करके पेमल की सगाई का नालेर खीची जींदराव के पास भेज दिया, जांत आ
सांमेला हुआ। कमलादे ने पावू को भी निमन्त्रण दिया, तब चांदे ने घोड़ों को
करने का हुक्म दिया। सांमेला के बाद पावू वापस घोड़े फेर कर चला गया। जीं
ने दायजे में केसर घोड़ी को लेने की इच्छा जाहिर की। बड़ज़ानियों ने जींदरा
केसर घोड़ी न लेने को समझाया पर जींदराव नहीं माना। उसने कहा कि केसर
दायजे में नहीं दी गई तो अपना वैर नहीं मिटेगा व पेमल के साथ विवाह नहीं
बूढो इस विपत्ति में माता के पास आया। मां भी दुःखी हुई। जींदराव ने गोर
का वरदान याद कर पेमल से विवाह कर लिया। पेमल के साथ आमोद-प्रमोद
हुए भी वह केसर घोड़ी को नहीं भूला पाया। सोनल के विवाह के लिये सिरो
देवड़ा की वारात भी कोलूमढ आ गई। पावू मन ही मन बहुत प्रसन्न हुआ। वह
दत-दायजे सहित विदा किया। बूढो के मुख से जींदराव की वात जब पावू ने सु
वह मन में क्रोधित हुआ। पावू ने अपने भील साथियों से कह दिया कि
अपने मरण के दिन आ गये हैं, सभी तैयार रहें।

आव्हान रौ समौ(५१ से ८५)—पावू ने कहा यदि जींदराव केसर घो
ही जावेगा तो फिर पावू किस गर्व से जीवित रहेगा। इधर पेमल व जींदराव
मुटाव हो गया। देवल चारणी भी इससे संतप्त हुई। उधर सोनल को जव देवड़ा ने
दिया तो पावू घोड़ी पर सवार हो लूटमार मचाते सिरोही आ धमका और देवड़
को कैद कर लिया, पर वहिन के याचना करने पर वहनोई को छोड़ दिया। पा
वीरता सुन अमरांणे के सोढा राणा ने अपनी पुत्री सुपियारदे का विवाह पावू से क
निश्चय कर नालेर भेज दिया। पावू की माता को इससे महान् हर्ष हुआ, अमरकोट के
का सारा हाल पूछा व जोशी को अपना राठौड़ वंश का सारा वृतान्त सुनाया। इस वी
बूढो की पत्नी गैली वोल उठी कि यह सम्वन्ध उचित नहीं। हमारा व सोढों का प
रागत वैर रहा है इसलिये शादी करके भी पावू का जीवन सुखमय नहीं रह पा

चांदे ने मैंसी के कथन का विरोध किया और बोल उठा कि पाबू को कोई नहीं परणावें तो हम भाटी और विनाश करा जावेंगे । चांदे के कथन से नाराज हो बूढो माता से कहने लगा कि पाबू को पाराधि मिल ही परणायेंगे, हम तो जांन में नहीं जायेंगे, अब मरुधर की धरा पर मसाण होकर रहेगा । चांदा तब बोल उठा कि नियति ने जो लिखा है वह होकर रहेगा । जींदराव ने जो युद्ध किया तो मुक्ताफल की माला बिखर जायेगी लेकिन पाबू उसकी दासता स्वीकार नहीं करेगा । भोजोराण ने घोड़े लूट लिये पर चांदे ने उसे लगातार मारा माल उससे लूट लिया । सोढों से कुंकुंपत्री आई, तब पाबू ने कहा कि अमरकोट विवाह करने को वह अकेला ही जायेगा । पाबू वर बन कर गया तो देवल अपशुकन देने लगी । पाराधियां के पूछने पर देवल ने बताया कि इस व्याह में विघ्न होगा । देवे ने उत्तर दिया कि पाबू के रहते किसी को दुःखी होने की जरूरत नहीं । पाबू के जांन चढ़ते ही ऊजर धरती हरी भरी हो गई । ढोल बजते वह बरात अमरकोट के गढ़ में चली गई । जांन में आळ ऊदल, नींबो, बाहड़दे, रणधमल आदि अनेक राजा साथ गये । इस तरह मेड़ के राजा रायपाल, जसराज, बलोच आदि लोग सोढा सूरजमल के सामेले में मिले । उधर बूढो ने जायलराव को पत्र लिख कर एक ओठी के साथ भेजा । उसने नागौर के पास बरात से मिलने की तैयारी की । राघोगढ व गढ गागरौण के खींचियों को साथ ले जींदराव पाबू से लड़ने को तैयार हो गया । जब पेमल को दासी से यह समाचार मिले कि जींदराव पाबू को मारने जा रहा है तो उसने कहा कि पाबू अप्सरा का दूध पीकर बड़ा हुआ है उसे कोई नहीं मार सकता । परन्तु यह षड़यन्त्र रचा गया कि देवल की गौओं को लूटा जाय तो पाबू जरूर उनकी रक्षा में आयेगा, तो पेमल ने कहा यह बूढो ने बुरा किया; इसमें राठौड़ व खीचियों के वंश का नाश ही होगा। मार्ग में अपशुकन होने लगे । बरात के लोगों में शंका होने लगी । पाबू ने भी शकुन विचार कर सभी सरदारों से कह दिया कि अब सुपियारदे को तेल चढी नहीं रखेंगे, शादी अवश्य करेंगे; परन्तु हमारा भविष्य निश्चित् ही युद्ध और मौत है। अतः क्षत्रिय के नाते युद्ध करके मंगलमय मृत्यु के साथ भी आलिंगन करेंगे । उधर देवल की गायों को जींदराव ने लूट लिया, वह पाबू से गौरक्षा की याचना करने लगी । इधर जसराज व रायमल होनहार गत पर चिन्ता करने लगे । अमरकोट सोढा के साथ बारह सरदार-पाट, कच्छ, डूंगर, बड़, नवा, ईडर आदि के मौजूद थे । लांबे तालाब के पनघट पर पानी भरने वाली युवतियां की रूपशोभा अवर्णनीय थी । वे नवकोट के धणी की बरात को एवं वर के रूप में पाबूको देख मोहित हो गई । बरात का सामेळा हुआ तब सोढा सूरजमल ने कहा कि जींदराव बड़जानी बन कर बरात में क्यों नहीं पधारे ? बूढोजी भी जान में नहीं आये, यह क्यों ? चन्द्रभाण ने बताया कि देवल ने पाबू को केसर घोड़ी प्रदान की उससे बूढो नाराज हो गये और जिस जींदराव ने गायें लूटी उसने केसर घोड़ी दायजे में न देने से नाराजगी दिखाई है । पाबू-सुपियारदे का विवाह होने लगा । चौंरी में ही गठजोड़ा त्याग पाबू चारणी की गायों की रक्षा हेतु घोड़ी पर सवार हो युद्ध हेतु प्रस्थान करने लगा । सुपियारी ने पाबू से विनय की कि यदि नाथ का हुकम हो तो वह

भी रण में उनके साथ चले। उसने बहुत ही आग्रह किया। अन्त में सती होने की इच्छा प्रकट की और पावू से कहा कि आप विजयी वन वापस आकर सुपियारी की सार संभाल नहीं करोगे तो यह क्षत्रिय-कन्या विधवा वन कर जीवित नहीं रहेगी; अग्नि में जल कर आपका साथ निभायेगी। तव पावू ने अपनी प्रियतमा से इतना ही कहा कि, "हे प्रिये ! जिस दिन मेरा मोलि़या (साफा) तेरे पास आये उस दिन तू देरी मत करना और जो जीवित आ जाऊँगा तो अपने जीवन का सुख-लाभ हम दोनों जरूर भोगेंगे।" इस प्रकार सभी सगा-सम्वन्धियों व वरात के साथ के सरदारों को प्रणाम कर मांझल-रात में ही पावू ढेंवे को साथ ले युद्ध-प्रयाण कर गये। प्रभात के समय कोलू की धरा पर युद्ध का कोलाहल मच गया।

आक्रान्त रो समौ (८५ से ११६)— गायें लेजाते जींदराव के साथ युद्ध करने की देवल की प्रार्थना को बूढा ने ठुकरा दिया। तव देवल ने बूढा को धिक्कारा और कहा कि तू राठौड़ आसथान का वंशज है इसलिये मुझे तुझ पर अति भरोसा था, परन्तु तू क्षत्रियत्व को कलंकित करने वाला कायर ही रहा। धाँधलोतों ने जव ललकार की तव बूढा ने सवको युद्ध में न जाने की वात कह रोक दिया। देवल गढवाणों से कहने लगी कि मेरा सपूत भाई पावू वहुत-2 दूर अमरकोट गया है, उसको मेरी पुकार कैसे सुनाऊँ ? सामन्तों ने कहा- हे, काछेलियों। मन में दुःखी मत होवो पावू तुम्हारी पुकार सुन विवाह-मण्डप से ही आधी रात को तुम्हारी रक्षा हेतु रवाना हो चुका है। देवल को सन्तोष हुआ। पावू मोड़ वंधे ही देवल के पास आ गया और उसे मुजरा किया। चारणियाँ रोने लगी। तब पावू ने उन्हें ढाढस वंधाते हुए कहा- हे वायां चुप रहो ! तुम्हारी गौएँ तुम्हारे ठिकाने आयेंगी, पावू के रहते गाँओं पर कौन आघात कर सकता है ? देवल से कहा कि तेरी दुःख भरी पुकार सुन मैं अमरकोट छोड़ कर आ गया हूं। अव तो गायों के लिये मरण-त्यौहार ही मनाया जायेगा। चांदा व पावू अपने साथियों सहित युद्ध के लिये तैयार हो गये। ढोल वजने लगे, चांदा भयंकर हूंकार करने लगा। चारणी देवल अन्य देवशक्तियों के साथ पावू का पराक्रम देखने लगी। मां कमलादे ने मन ही मन पावू की वीरता पर सुख का अनुभव किया और कहा हे क्षत्राणियो ! तुम यदि पुत्र पावो तो पावू सा पुत्र प्राप्त करना। वूढा भी माता के कहने पर पावू के साथ युद्ध में गया और देवल से क्षमायाचना की तव देवल ने दोनों भाइयों को वरदान दिया। वूढो की वहू गेली ने वूढो को युद्ध में जाने से रोका पर वह नहीं रुका और धांधल के चौदह पुत्र पावू के साथ जींदराव से देवल चारणों की गायें छुड़ाने को प्रस्थान कर गये।

उत्तरायण सम्प्रहार रौ समौ (११७ से १३६)— पावू ने जींदराव के दल को जाकर ललकारा। जींदराव ने अचलावत एवं मेलावत सरदारों से कहा कि गायों को घेर कर शीघ्र ले जावो, मार्ग में ही युद्ध होने की सभावना है। जव वे लोग

खींची भागने लगे तब डेवे ने युद्ध के लिए ललकारा और उनसे कहा कि कायरो! क्यों भाग रहे हो? पाबू के सामने युद्ध करो, हम युद्ध में मर कर ही पाबू के सच्चे साथी कहलाएंगे। तुम भी युद्ध करो। तब तक पाबू भी वहां आ गये और उन्होंने खीचियों सहित गायों को घेर लिया। इस तरह धांधल के इक्कीस पुत्र वहां लड़ने को उद्यत हो गए। जींदराव अपने किये पर पछता रहा था, परन्तु गोरखनाथ के शब्द उसे बार बार याद आ रहे थे। उसे तो गोरखनाथ पर ही भरोसा था। पाबू को जीतना व केसर घोड़ी को लेना उसके लिए मुश्किल था। पाबू की घोड़ी ने डेवे को पहचान लिया और डेवे ने कालमी की हिनहिनाहट से पाबू को, तब डेवा बोल उठा कि पाबू को शक्ति का वरदान है और जींदराव को गोरखजती का, परन्तु हम तो पाबू के साथ ही मरेंगे-जीयेंगे। पाबू की घोड़ी ने युद्ध में भयंकर तूफान मचा दिया। पाबू ने केसर घोड़ी से कहा-- हे कालमी! तू जल्दी मत कर, मैं रुण्डमाल पहना कर तुम्हें अमर कर दूंगा। पाबू ने जींदराव को पकड़ लिया। उसकी जीत हो गई। कई वीर युद्ध में मारे गए। बहिन पेमल ने अपने वीर भाई की वीरता को खूब सराहा और वह भ्रातृत्व प्रेम से विव्हल हो गई। पाबू ने गायों को एक ओर इकट्ठी की। देवल चारणी ने मुक्ता थाल लेकर पाबू की आरती की। उसके ललाट पर कुंकुम का तिलक निकाला, मंगल गीत गाए। क्यों कि पाबू उसकी गायों को बचाकर ले आया था। देवल ने पाबू की खूब प्रशंसा की तब पाबू ने कहा कि वह क्षत्रिय है, उसका छोटा भाई है, सब दुखियों की पीड़ा मिटाने वाला है और सातों वीरों को साथ लिये इसीलिये तैयार रहता है। इस प्रकार बहिन का आभार मानकर उसको देवी शक्ति का अवतार मान, उसको प्रणाम करने लगा। उसने देवल से फिर कहा कि अपनी गायों को संभाल लो, कोई बछड़ा भी छूट गया हो तो वह उसकी दुगुनी कीमत अदा कर देगा। तब ग्वालों ने अपनी गायों को संभाल लिया। तीन दिन की प्यासी गायों को कोलूमढ में पानी पिलाया फिर चांदे के साथ गायें रवाना की।

बूढा रो समो (१३७ सें १४३)— वीर साथियों सहित हांफते हुए बूढा भी वहां आ पहुंचा और कहने लगा कि भानजे भाई के बिना कोलूमढ जाना उसके लिए संभव नहीं है बूढा जींदराव सेती मिला और जुहार किया परन्तु उसने बहनोई को बुरा-भला भी कहा। तब जींदराव ने बूढा को अपशब्द बोलने से टोका और उसने बताया कि पाबू गायों को छुड़ा कर वापस अपने घर गया है, इसमें किसी तरह का झूठ नहीं है। इस पर बूढा व जींदराव में तकरार हो गई और दोनों में लड़ाई हो गई। कई वीर जींदराव के मारे गये परन्तु बूढा इस लड़ाई में जींदराव के हाथों मारा गया। इस तरह जींदराव का भाई मेहन्दर व पाबू का भाई बूढा ये दो वीर इस युद्ध में काम आये। जींदराव का मामा पाबू की वीरता का स्मरण कराते उससे बोल उठा कि पाबू अब बूढा का बैर लेकर ही रहेगा। जींदराव पाबू से घबराता था ही वह इस परिस्थिति में

सारी सूझबूझ भूल गया और गोरखनाथ का मन में स्मरण करने लगा। उसके मन में यही भाव आते रहे कि रात में जब थका पावू सो रहा हो, उसके साथी भी थके पड़े हों, उस समय हमला कर पावू को मार डालना ही उचित है, अन्यथा यह हार की आग उसे शान्ति से नहीं रहने देगी और इसी मानसिक उद्वेग में उसने रात के समय पावू पर हमला कर दिया।

रातीवाहो (१४३ से १८१)— क्रोध से तमतमाता अपने वीर सरदारों के साथ जींदराव पावू पर चढ आया और मन ही मन कहने लगा कि पिता सारंग व भाई मेहन्दर की मौत का बदला पावू को यमपुर पठाने पर ही पूरा होगा। जींदराव को युद्ध प्रमाद में देख शक्तियें कहने लगी कि यह पावू पर हमला आधी रात के समय उसके सोते समय करेगा तो निश्चय ही पावू का वध हो जाएगा इसलिए कोलूमढ जाकर पावू को जगाना चाहिये। जींदराव के सैनिकों ने चुपके से गढ पर चढने को योजना बनाई। कुछ दूरी पर घोड़े छोड़ गढ़ की ओर बढ़ने लगे। चांदे ने कुछ आवाज व पैरों की आहटः सुनी तब वह सचेत हो गया। चन्द्रभांण ने कहा पावू को तुरन्त जगाओ और घोड़े तैयार करो। ज्यों ज्यों जींदराव आगे बढने लगा त्यों त्यों चांदा और खाखू मोरचे के लिए सबको तैयार करने लगे और सभी भयंकर सिंहनाद कर युद्ध के लिए तैयार हो गये। शक्तियों ने जान लिया कि कमलादे के पुत्र की आज कुशल नहीं। अतः वे गढ के कांगरे–कांगरे पर बैठ गईं। पावू के लिए वीर वैताल भी लड़ने को तैयार हो गये। कमलादे भयभीत होकर पावू के महल की ओर दौड़ी और देवल दौड़ती हुई पावूको जींदराव की खबर देने लगी। सभी राजपूत सरदार माता कमलादे को सांत्वना देते हुए कहने लगे कि हे माता आप चिंता न करें,हम पावू की रक्षा करेंगे या तो जींदराव को मारकर ही आयेंगे या हम सब रणखेत रह जायेंगे। माता देवी-देवताओं से पावू की रक्षार्थ प्रार्थना करने लगी। जींदराव ने भयंकर आक्रमण बोल दिया। पावू भी क्रोधित हो कर निर्णायक युद्ध करने को आमादा हो गया, कई राजपूत योद्धा रणखेत रह गये। पावू का और उसकी घोड़ी का चमत्कार देखते ही बनता था। पावू के साथ उसके सातों भील भी अपना युद्ध कौशल दिखाने लगे। इस तरह राठौड़ और खीची भयानक युद्ध करने लग गये। करीब 500 खीची सैनिक इस युद्ध में धराशायी हो गए। जींदराव ने जब पावू को ललकारा तो पावू और क्रोधित हो शत्रुओं पर प्रहार करने लगा। जींदराव पावू के वध का अवसर ढूंढता रहा। पावू ने जींदराव को कई बार जीवन-दान दिया, बहनोई के नाते, परन्तु जींदराव ने मौका पाते ही पावू को घायल कर डाला, युद्ध शान्त हो गया। जींदराव वापस जायल को रवाना हो गया और महलों में राणियें शोक में डूब गईं। उधर देवल (चारणी) भी शक्ति से कहने लगी, जब उसने गौ-रक्षक पावू के शरीर को खून से लथपथ रणांगण में देखा) कि आज हमें कमधज को अमरत्व प्रदान करना है

क्यों कि पाबू मानवता का अवतार था और स्त्री - जाति गौ व निर्बल का रक्षक था। इस प्रकार सभी शक्तियें चारणियें बन कर वीर पाबू का यशोगान करने लगी। पाबू ने अपने सातों साथियों के बारे में पूछा तो देवल ने बताया कि वे सातों उसके साथ ही निष्प्राण पड़े हैं। तब पाबू ने कहा कि पेमल के सौभाग्य की चिन्ता से ही जींदराव जीवित बच पाया है परन्तु हमारे वंश में "झरड़ा" पैदा होगा वही उसका वध कर बाप व चाचे का बदला लेगा। पाबू के शरीर से बहता खून भीलों के खून के साथ मिल एक हो गया। पाबू, माता कमलादे तथा देवल व दूतों में परस्पर संवाद होता रहा। अन्त में माता कमलादे ने जब पाबू की आत्मा को वात्सल्यपूर्ण विदाई दी तब ही वह आत्मा सूर्य की साख में परमात्मा में विलीन हुई। धांधल वंश का अन्त देख माता कमलादे विकलता से रोने लगी और दूत पाबू का 'मोळिया' लेकर अमरकोट राणी सुपियारदे के पास जाने के लिए रवाना हो गया।

सती रो प्रवाड़ो (१८१ से २०९)-- इस तरह युद्ध का अन्त बुरा हुआ। धांधल का वंश ही नष्ट हो गया, कोई पानी देने वाला भी नहीं रहा। उधर अमरकोट में सुपियारदे को अपशुकन होने लगे। उसने अपनी माता से यह बात बताई कि उसका पति वीर पाबू कुशल नहीं है। माता की सान्त्वना उस पर बेअसर रही। सूरजमल भी बेटी की चिन्ता से शोक-मग्न हो गया। बलोच से सोंडियाँ जीतने के पाबू के पराक्रमी युद्ध का चित्र उसके आंखों के सामने आने लगा और उसे स्मरण हो आए अपने इष्ट के बोल, जिसमें पाबू को देवता का अवतार बताया था। पाबू के मरने की शंका से ही उसे चिन्ता हो गई। माता ने भी बेटी के वैधव्य की शंका से अपने पति को बुरा भला कहा। मां ने बेटी को प्यार से गोदी में बैठाया, पिता ने उसको भोजन करवाया। इतने में ऊंठ-सवार वहां आ पहुँचा। उसने बूढा व पाबू की मृत्यु के समाचार सुनाये। सुपियारदे पाबू के प्रति बिलख कर रोने लगी। उसने सती होने का निश्चय कर लिया और अमरकोट के सरदारों को साथ ले सती होने कोलूमढ़ आ गई। उसके मुख पर सतीत्व का तेज झलक रहा था। माता नव-वधू का सती के रूप में स्वागत करती बिलख उठी। सुपियारदे सभी परिजनों के पैरों पड़कर सासू के पाय लगी और यही कामना की कि दोनों कुलों में स्नेह बना रहे। बूढा की राणी गेली ने चिता पर बैठते ही कटार से अपना पेट चीर कर हिम्मत के साथ अपने गर्भस्थ शिशु को पेट के बाहर निकाल कर अपनी माता को संभलाते हुवे उससे कहा कि "यह झरड़ा बारह वर्ष की उम्र प्राप्त करते ही जायलपति जींदराव खीची को उनके महलों में ही मार कर अपने पिता व चाचा का वैर लेगा" इसके बाद गेली व सुपियारदे सती हो गई। सूरजमल व उसका परिवार रोता बिलखता अमरकोट आ गया व माता कमलादे अपने महल में आ गई, नानी बालक झरड़े को लेकर अपने ठिकाने वापस चली गई।

झरड़े रो परवाड़ो (२०९ से २४८)— बूढ़ो का पुत्र झरड़ा अपनी नानी के संरक्षण में दिन दिन बड़ा होता गया। घर में मामी आदि उसको असह्य वचन कहने लगे कि 'पनघट पर पनिहारिनों को सताने से पिता व चाचा का वैर नहीं लिया जा सकता।" इन अपमान भरे कथनों से नाराज होकर झरड़ा नानी के पास गया और उससे पूछ बैठा कि उसके जीवन की पूर्व कथा क्या है ? नानी ने बहुत समझाया परन्तु वह नहीं माना और कहने लगा कि यदि उसने सत्य नहीं बताया तो उसके घर को छोड़कर वह चला जायेगा। तब झरड़ा की नानी ने सारी कथा विस्तार से उसको बताई। कथा सुनते ही झरड़ा जींदराव को मारने को तैयार हो गया। वह वन में चला गया और अवधूत बनकर शरीर पर भी भस्मी रमा कर, दिगम्बर वेष में ही घूमने लगा। वन-प्रांगण में गोरखनाथ से उसकी भेंट हो गई; वह उसके चरणों पर गिर पड़ा और विलाप करने लगा। गोरखनाथ ने झरड़े को समझाया और उसका वंश परिचय पूछा। झरड़े के मुख से सारा वृतान्त सुनकर गोरखनाथ ने कहा कि जींदराव ने जो कुछ किया वह सब अन्याय था और उस दिन से वह उससे रूठा हुआ है। गुरू गोरखनाथ ने जींदराव की सारी बात बता दी और झरड़ा से कहा- "मेरा हुकम है तू जींदराव को मार डाल।" गुरु का आयस पाते ही झरड़ा जायल की ओर रवाना हो गया और उसके वहां पहुँचते ही जींदराव के महल कंपित होने लग गये। झरड़ा ने उसके फळसे के पास ही अपना आसन जमा दिया और गोरखनाथ का जाप करने लग गया। जींदराव बालक अवधूत के पैरों पड़ा और उसने उसकी यात्रा का कारण पूछा। जींदराव ने अपनी विजय की खुशी में सामिप भोज बनवाया। सभी लोग भोजन खाने आये पर झरड़ा नहीं गया, तब लोग आश्चर्य कर उससे पूछताछ करने लगे।

झरड़ा की भुवा पेमांदे ने जींदराव को अपने भाइयों की हत्या का दोषी मानकर उसे उपालम्भ दिया और जोगी अवधूत के भेष में झरड़ा भतीजे को देख कर अपने वंश का अंश मान उसे अपने पास बुलाया और उससे कहा कि वह अपने आने का कारण निश्चित होकर उसे बताये। उसने प्रगट कर दिया कि वह जोगी नहीं बूढो का बेटा, उसका भतीजा ही है। और झरड़ा ने कहा कि वह छोटी उम्र का होते हुए भी जींदराव के लिये महाकाल स्वरूप है, वह तो इतना ही सहयोग चाहता है कि किसी प्रकार वह जींदराव के महलों में पहुँच जाये। पेमांदे ने ताली का संकेत देकर झरड़ा को महलों में बुला लिया। पलक मारते ही सोये हुए जींदराव की छाती पर झरड़ा खंजर निकाल कर चढ़ बैठा। जींदराव प्राणदान मांगने लगा व अपनी भतीजी के साथ उसके विवाह की चर्चा करने लगा। पेमांदे ने झरड़ा से बातों में न उलझने का संकेत दिया तो झरड़ा ने तत्काल कटार से जींदराव की आंतें बाहर निकाल ली। तलवार के वार से उसका सिर धड़ से अलग करके वह महलों के बाहर सिर ले चला। गोरखनाथ कहने लगे कि 'हे झरड़ा ! जींदराव को मार कर तू ने महान शौर्य का काम किया है। पेमांदे

ने झरड़ा को बहुत आशिष दी। पाबूजी ने झरड़ा को वरदान दिया कि जब तक सूर्य पृथ्वी पर उदय होता रहेगा, महादेव कैलाश पर विराजमान रहेंगे, तब तक झरड़ा इस पृथ्वी पर अमर रहेगा। झरड़ा जोगी रूप में ही वन में फिरता रहा और अलख भेष में अभी तक विचरण कर रहा है। इस प्रकार झरड़ा के परवाड़े के साथ पाबू की जीवनी समाप्त हुई।

फुटकर कथाएँ (२४८ से २६८)—

वीर पाबूजी के बाद उनके भतीज झरड़े द्वारा अपने पिता व चाचा का बदला ले लिया गया और वह अमर हो गया तब से 'पाबू - भालाळा' के असंख्य भक्त भारत-भर में हो गये। गुजरात, माळवा और राजस्थान में पाबूजी के अगणित चमत्कार उनके भक्तों को मिलने लगे। पाबूजी का मूल स्थान तो फलोदी के पास कोलूमढ़ में है जहां साल भर उनकी पूजा होती रहती है। दूर दूर देशों से लोग अपनी मनोकामना सिद्धी के लिये तथा कष्ट निवारण के लिये आते हैं। पाबूजी के अनेकानेक चमत्कारों में श्री रूपाजी का, बाघाजी का व राव गांगोजी का चमत्कार वर्णित किया गया है। जैसिंग ने हरे वृक्ष को काटा तो उसे जो यातना पाबूजी ने दी उसका भी वर्णन बहुत प्रभावशाली है। जैसलमेर के हरराज की कन्या के योग्य वर बीकानेर नरेन्द्र के शरीर में भूत आ बसा तो कन्या की प्रार्थना पर उस राजा के शरीर में से भूत भगा दिया। धांधल शोभा को उसके पोते के खजाने के चोरी गये माल का पता बता दिया और उसे आरोप मुक्त करवा दिया। रुगा रावत बहुत अत्याचार करने लगा और थान के भोपों को यातना देने लगा तो वीर पाबूजी ने रुगा रावत की गर्दन तोड़ उसे मार डाला। चारण मेहाजी को भी अनेक परचे पाबूजी ने दिये, महाराजा जसवन्तसिंह प्रथम का काबुल में स्वर्गवास होने की पूर्व सूचना पाबूजी ने महाराजा को दे दी थी। मेहाजी ने भी पाबूजी के यश का पवाड़ा बना कर गाया और इसी चारण वंश में कवि आशिया मोडजी ने अपनी मनोकामना पूर्ति हेतु इस ग्रन्थ की रचना की और पाबूदान पुत्र को प्राप्त कर कोलूमढ़ पाबूजी की पूजा करके कृतकृत्य हुआ। वीर पाबूजी की यह पराक्रम गाथा सारे भारत में प्रचलित है तथा मालवा एवं गुजरात के लोगों के जन-जीवन पर पाबूजी के चमत्कारों का अमिट प्रभाव है। ❀

शब्दार्थ

'अ'

अंजळ	अन्न-जल
अंजस	गर्व
अंबुवा	भील
अखी	अक्षय, अमर
अगीण	अंगारे, क्रोधाग्नि
अड़पायत	अडिग, दुर्द्धष वीर
अड़ियाला	वांका
अजरेल	जबरदस्त, न दबनेवाला
अजरोह	विकट, वीर
अजहूणी	आज की
अधकांणाह	बढ़े चढ़े, उन्नत
अधपत	राजा, शासक
अनड़	पहाड़, वीर
अणसात	इसी समय
अणियाल	भाला
अणी	फौज, फौज की टुकड़ी, भाले का अग्रभाग
अपखां	पक्षरहित, संबल रहित
अपट	अपार
अपत	विश्वास न करने योग्य
अप्रमांण	अत्यन्त, अथाह
अमरां	देवता
अभीरां	पक्षहीन, निर्बल
अलखामणा	न सुहानेवाले
अलल	घोड़ा
अलोप	अदृश्य, अप्रकट
अयराक	इराकी नस्ल का घोड़ा
अवनाड़	– काबू में न आनेवाला, वीर
अवन	अवनी, पृथ्वी
अवतरी	अवतार लेकर प्रकट हुई
अवरो	कुमारी
अवितंस	शिरोमणी, श्रेष्ठ
अस	अश्व; घोड़ा
असमर	तलवार
असमादां	व्याधि
अहफीण	अफीम

'आ'

आंटोय	वैर
आखड़ी	प्रतिज्ञा
आखाड़सिध	युद्ध प्रवीण
आखूं	कहूं
आगहथो	शस्त्रधारी वीर
आछटो	प्रहार किया
आंछौ	शीघ्रता
आंटोय	वैर
आताळै	– घोड़े को छलांग भराना
आथमियौ	अस्त हुआ
आपमणा	सचेत, संगठित
आफरीवाद	आशीर्वाद
आफू	अफीम
आभरण	वस्त्र
आरत	आर्तनाद
आळ	छेड़
आलहणो	मना करना
आव	आयु
आवड़ा	एक देवी का नाम
आवटकूट	विध्वंस
आवध	आयुध
आसंग	सामर्थ्य
आसव	शराब
आहेड़ी	भील का पर्याय

'इ'

इकडांणी — एकछत्र
इळ — पृथ्वी
इहग — चारण, कवि

'ई'

ईड़ — ईर्ष्या, दुश्मनी

'उ'

उखांण — कहावत, उक्ति
उगराणोह — वसूल किया
उजवाळो — उज्जवल करनेवाला
उतमंग — सिर
उतराफजर — उत्तरापाड़ा
उथाळ – उलटना, धराशायी करना
उदमांदा — उन्माद
उदियामणी — अनमनी, उदास
उघरावै – लेता है, वसूल करता है
उरव्वडियू — तेजी से भागता हुआ
उरस — आकाश
उवेळो — रक्षा, सहायता
उसरांण — दुश्मन

'ऊ'

ऊंडलियां — गोद
ऊतळियू — लपका
ऊकट काट — क्रोध में उफनता
ऊबंवरी — साहसी, विचक्षण

'ऐ'

ऐवास — गृह, महल

'ओ'

ओठंम — संरक्षण प्रदान करने वाला
ओठी — सुतर सवार
ओठीड़ौ — सुतर सवार
ओथसां — वहां से
ओदी — शिकारगाह
ओद्रक — चमक कर
ओद्रकती –जोश के आवेश में आई हुई
ओळ — ओट
ओळख — पहिचान

'औ'

औजग — जागरण
औध — जाति, वंश

'क'

कंठीर — सिंह
कंद्रप — कामदेव
कड़चियौ — उद्यत हुआ, लपका
कजियौ — युद्ध
कणएठिय — लघुभ्राता
कणणाय –घायल की रोसीली आवाज
कमठाळाय — भील लोग
कमंद — राठौड़
कमधांगुर — राठौड़ों में श्रेष्ठ, पाबू
कमाड़ — कपाट
करंड –देवी की मूर्ति रखने की पेटी, आसन
करणाटी — कर्नाटक की
करमाणंद आणंद — प्राचीन दो कवि
करिन्द — गजराज
कळ — युद्ध
कळचाळ — युद्ध

कळचाळा	युद्ध, वीर
कळेह	युद्ध, झगड़ा
कांठल	काली घटा
कांण	कायदा
कांधोधर	वृषभ सा बलिष्ठ
काप	काटना
कापण	काटने वाला
काळा पहाड़	एक प्रसिद्ध योद्धा
काली	बावली
किरणाळ	तेजस्वी वीर
किरणाळौ	देवता, सूर्य
कुखतरी	–क्षत्रियत्व के गुणों से रहित
कुलढाकण	-कुल की रक्षा करने वाला
कुळधी	कुल की पुत्री
कुळमंडण	कुल का पोषक नाम करने वाला
कुळवट	कुल की राह
कुवच	बुरे वचन
कूंजडियाँ	क्रौंच पक्षी
कूंत	भाला
केरड़ी	बछड़ी
केवाह	दुश्मनी, कठिन कार्य

'ख'

खंड वेखंड	टुकड़े - टुकड़े
खड़	घास
खगां रसिया	युद्ध रसिक
खटतीसां	छत्तीस की संख्या
खत्री	क्षत्रिय
खथाळ	तेजी से
खरळदिसा	–उत्तर व पश्चिम के बीच की दिशा
खरलां	अफीम घोटने का पात्र
खरहंड	नष्ट-भ्रष्ट
खळ	दुश्मन
खळां डळां	खंड विखंड
खही	क्षय हुई
खाट खाय	अपनी जीती हुई भूमि का उपभोग करता है, पक्की कमाई
खिमए	शान्त रह, ठहर
खोटवियोड़ा	छेड़े हुए
खेंगण	घोड़ी
खेड़	मारवाड़ में राठौड़ों की प्राचीन राजधानी
खेम	क्षेम
खेळा	भैरु, गण
खोटिय	बुरी

'ग'

गजगाह	युद्ध
गजगैहण	युद्ध
गढ़वाड़ा	चारण वर्ण
गढ़वी	चारण का सम्मान सूचक सम्बोधन
गरठ	बलशाली, वीर
गरबावै	गर्वित होते हैं
गळगळो	अश्रु गलित
गवण	गमन
गहेठौ	गाहटा
गांजे	नष्ट करें, परास्त करें
गिरवांण	दैविक शक्ति
गुडळापळ	गर्द से आच्छादित
गुद्दू	गूढ बात, अप्रकट
गेवाऊ	अचानक
गोडै	पास
गोप	गोपनीय
गोल मथांण	संकल्प विकल्प

गोळ् पशुओं को लेकर अकाल के समय अन्यत्र जाने वाले लोग

'घ'

घोऊरारव युद्ध की भयंकर आवाज

'च'

चंचाळ घोड़ा
चंद्रहास तलवार विशेष
चहुंकानिय चारों तरफ
चकडाळ खुमारी
चख आंख
चलूए चुल्लू भर
चांचड़ा बाजरी के सिट्टे
चाखड़ियां खड़ाऊ
चिरतां चरित्र
चींतविया विचारा हुआ
चीतारेह याद करता है
चोभड़ियाळ सुअर के बच्चे
चीह चीख पुकार
चूंथलिया लूटलिया
चोल चखां लाल आंखें
चोळी दांवण चोली दामन

'छ'

छड़ भाले की डंडी
छीतर पठार
छेहली अन्तिम
छेवास शाबास

'ज'

जग जेठिय दुनियां में श्रेष्ठ
जड़लगां तलवारें
जमजाल युद्ध
जमदाढ कटार
जवार जुहार, प्रणाम
जितेन्द्र जितेन्द्रिय, पाबू
जिरांण श्मशान
जूंझमल जूंझने वाला, वीर
जेज विलंब
जोतांइ खोजने पर भी

'झ'

झाट प्रहार
झूसण कवच, बख्तर

'ट'

टीकायत टीका ग्रहण करने वाला, गद्दी का अधिकारी
टूंकस शिखर
टूंकां शिखर
टोप सिरत्राण

'ड'

डारण प्रचंड शरीर वाले

'ढ'

ढेंचाळ हाथी

'त'

तंत तत्व
तइयां दुश्मन
तइयूं दुश्मन
तड़ता बिजली
तवै कहता है

त्रजड़	तलवार
त्रभागो	भाला
ताजरा	घोड़ी
ताजी	घोड़ा
ताता	तेज त्वरा से
ताताय	तेज
तारायरा	तारावलि
तोड़ा	छोटी नाल की बंदूक
तीन तड़ा	तीन शाखाएँ
तूंग	फौज की टुकड़ी
तेड़यौ	बुलाया
तेराल	कुलहीन, दुष्ट
तेलंगी	तैलंगाना की
तोखार	घोड़ा

'थ'

थपोट	थपथपाना

'द'

दधरेल	पानी का रेला
दळथंभ	युद्ध में अडिग वीर
दळपांगळी	बड़ी फौज वाला जयचन्द का विरुद
दवा	दुआ
दसरा	दांत
दहवाट	संहार
दांणवी	दानवी
दाकल	ललकार
दात्रडियाळ	सूअर
दामरा चोळ	चोली दामन का सा सम्बन्ध
दायौ	दावा
द्वादसभांण	बारह आदित्य
दावौ	बदला
द्राह	वेदना
दिसाटाळ	दिखाई पड़ना
दुगाळ	कुवचन, गाली
दुजाळ	तलवार
दुझाल	तलवार
दुतियां	धारण वर्ण की स्त्रियां
दुथनी	स्त्री
दुबारा	दोबारा खेंची हुई तेज शराब
दुवाह	वीर
देवंसी	देव अंश वाला
देवळी	पत्थर में स्मारक स्वरुप कोरी हुई पुतली
दोळियां	इर्द-गिर्द

'ध'

धजराज	श्रेष्ठ घोड़ा
धजवाड़	ध्वजधारी
धरिणयापरा	छत्रछाया, रक्षा
धनवाळ	पशुधन
धनंखां	धनुषों की
धयर	धैर्य
धवळकंध	बलिष्ठ, वृषभ
धाईह	दौड़ी
धाट	ऊमरकोट की धरती
धाटेती	धाट धरती की स्त्री. सोढी
धानंक	धनुषधारी
धायौ	पीया, स्तनपान किया
धींचवियूँ	रौंद डाला
धुरिणयाळाह	धनुषधारी योद्धा
धौलहरांह	राजप्रासाद

'न'

नगकोड़ीक	अतिश्रेष्ठ पुरुष
नरेहरा	निष्कलंक

नरनाह	राजा, शासक
नवलाखरी	नौलाख लोवडिवाल देवियां
नवखंड	नौ खंड
नहठाळ	धैर्यवान्
नहराळा	जंबुक आदि
नागाणो	मारवाड़ का एक गांव जो राठौड़ों की कुलदेवी नागणेचियां का स्थान है
नागोणराय	नागणेची देवी
नायक	भील
नींहंग	आकाश
नींपियो	उत्पन्न हुआ
नेतियार	न्योते हुए लोग

'प'

पखाळे	धोता है
पतसाळ	पितृगृह
पतियारो	भरोसा
पनंगणी	नागकन्या
पमग	घोड़ा
पयाण	प्रस्थान
परग	साथ, मण्डली
परव	पर्व
परवाड़ा	वीरता पूर्ण कार्य
परसेवो	पसीना
पलाडण	प्रतिकूल
पह	योद्धा
पांतरै	भूलता
पाथरियाह	ध्वस्त किये, बिछा दिये गये
पांमणो	पाहुंना
प्रामणो	पाहुंना, जामाता
पाराधियां	भील लोग
पिड़	युद्ध
पिड़जान	बारात के स्वागतार्थ कुछ दूरी पर सामने जाने वाला समूह
पींगै	पलने में
पुड़ां	धरती के पर्त
पुरबंध	भरपूर
पुळै	चले
पेथड़	चारणों की एक शाखा
प्रोखता	एक विशेष प्रेतयोनी जो प्रेमी का पोषण करती है
पौंछाला	पहुंचवान, वीर
पौरसातन	पौरुष से परिपूर्ण
पौहचाळ	पहुंचवान, समर्थ

'फ'

फजरे	प्रभात
फळ	भाले का अग्रभाग
फींफराह	फेंफड़े
फुणावण	शेषनाग का फन
फेट	टक्कर
फोई	एक छोटा जानवर जिसकी आवाज के साथ अग्नि निकलती है
फोट	धिक्कार

'ब'

बाग	लगाम
ब्रन	चारण वर्ण
बराचक	भरपूर
बळह	बलाहक
बलीठ	बलिष्ट
बांहां प्रलंभ	श्रेष्ठ पुरुष
बुकानी	दाढ़ी पर का बंधन
बुरचींतोय	बुरी विचारने वाला
बुरछी	बरछी

बू हो — भौंह
बूंब — चिल्लाहट, पुकार
बूहरे — भुंआरा; जमीन में किया हुआ आच्छादित गढ्ढा
बेल — सहायता वेलि
बोवतौ — बरबाद करता

'भ'

भंगमा — भंगवे रंग के
भंवरो — पाबू की घोड़ी
भद्रटोळा — गज-समूह
भयरवी — एक चिड़िया
भ्रक — भक्षरण
भागल — युद्ध से भागने वाला
भालाळ — भालाधारी, पाबू का विरुद
भाविय — भविष्य, भावितव्यता
भुइयाल — पृथ्वी
भुजिये — बुर्ज
भूंण — भुवन
भूंडरण — सूअरनी
भुगतणी — भोगना, कष्ट व्यतीत करना
भूतावल — भूतों की जमात
भूरा — शेर, वीर
भूरोह — सिंह, वीर का पर्याय
भिड़ज — वीर, योद्धा
भीच — योद्धा
भीत — भय

'म'

मचराल — क्रोधी
मभमांनांह — मेहमान
मणधर — सर्प, बड़ा वीर
मनूर — मनोदशा
मयूरिय — मयूर की तरह नृत्य करने वाली-घोड़ी
महमाई — महामाया, देवी
महियां — दही
महीरेलण — दानवीर, रायपाल का विरुद
माखिय — बन्दूक की नाल पर निशाना साधने का चिन्ह
मांढिया — वधूपक्ष
मिसटांण — मिष्टान्न
मींढ — समान, तुलना में
मीसण — चारणों की एक शाखा
मुणिया — कहे
मुदवी — प्रधान, जिम्मेदार
मुदरालाय — मुद्राधारी, नाथयोगी
मुहमेज — आमने-सामने
मुकग्र — त्यागूं
मेकादसा — ग्यारह
मैंगळ — हाथी
मेरधड़ — सुमेरु के समतुल्य
मोख — मोक्ष
मोडो — मोडजी आशिया

'य'

यणताळ — इसी घड़ी
यळ — पृथ्वी

'र'

रंडू — विधवा करूं
रंदाळा — अदुर्दमनीय
रखवाळण — रक्षार्थ
रखै — ऐसा न हो कि
रजबंद — आज्ञा में
रढ रांमण — हठीला, वीर
रणंदे — बजते हैं
रतनाळियां — मांस भक्षी पक्षी

रत्र	रक्त
रन	जंगल, ऊजड़ जमीन
रवदां	मुसलमान लोग
रहस	रहस्य
राईतन	-राजेश्वर्य, राजाओं की रीति
राड़	युद्ध
राजंद	प्रियतम, राजा
रिणवां	चारण
रिघू	अविचल
रिव्यंद	अरविन्द
रूंआंवल	रोमराजि
रूपग	प्रशस्ति काव्य, गीत
रूपारेल	शकुन चिड़ी
रूहराळ	रक्तरंजित
रागी	राघोगढ़
रोधिया	अवरुद्ध किये
रोळ	ध्वनि
रोद्राल	भयंकर गुस्से में

'ल'

लंगेय	लांघकर
लांवे	ऊमरकोट के तालाब का नाम
लूथ वथां	गुत्थम गुत्थ
लोकाईह	लोग, जनता
लोतर	लक्षण
लोह	शस्त्र

'व'

वखमी	विपरीत, कठिन
वडकापणी	वड़प्पन
वजरेह	वकना, ललकारना
वजो	कहलाते हो
वढिया	युद्ध में काम आया
वनड़ोह	दूल्हा
वज्र कमाड़	वज्र कपाट
वरग	ऊँटों का टोला
व्रनपाल	-चारण-वर्ण को पालने वाला
वळोवळ	चारों तरफ
वांकाय	वांके
वायक	वचन
वाळला	एक प्रकार का हार
वाळवौ	वापिस घेरना
वालोह	प्रिय
वावळ	वर्षा के पहले की हवा
वासे	पीछे
वाहरू	वाहर चढ़ने वाला, पीछा करने वाला
विडंगाल	घोड़ा
विजड़ाहत	वीर
विजड़ोहथ	वीर
विजड़ी	तलवार
वित	गोधन
विलकुळिया	युद्ध में प्रवृत्त हुए
विरदायोह	उत्साहित किया
विरोळाय	नष्ट करें
वींटिय	घेरे हुए
वीभरियोड़ा	गुस्सेल
वेगड़ौ	प्रचंड वीर
वेध	युद्ध
वेसवार	मसाले
वोकार	ललकार

'स'

संक्रम्या	चले
सको	समस्त
संगट	संकट
संज	पिलान आदि
सम्भाड़ा	सघन
सतखणा	सात खंडों वाला

सपतास	सूर्य
समवड़	समानता, बराबरी
सम्भरी	चौहान
समेहळा	वर-वधू पक्ष का प्रथम मिलन आयोजन
सलामी	अधीनता में रहने वाले
सलुळी	उमड़ पड़ी
सवली	चोल
सवादोह	अनुकूल
सहड़	वीर
सांक	शंका
साकंबरी	शाकंभरी (देवी)
साकर	शक्कर
साकुर	घोड़ा
साख्यात	साक्षात्
साद	आवाज
सावळ	एक प्रकार का भाला
सांम	स्वामी, पति
सायर	समुद्र
सारविध	शस्त्रों से घायल किये, मारे
साँवळा	भील लोग
साहणी	तवेले का अध्यक्ष
सिंगाल	सामर्थ्यवान, वीर
सिधियळ	सिद्धि प्राप्त
सिमाड़	सीमा
सिरायत	श्रेष्ठ, प्रधान
सींगाळा	बलशाली, स्वाधीन
सींचाण	बाज जैसा पक्षी
सीलणौ	खिमायजा देना; बदला चुकाना
सुरांतर	कल्पवृक्ष
सुरै	सुरही, गायें
सूरमण	श्रेष्ठ, सूरमा
सेवगी	सेवक
सैलाड़	अेक साथ
सोनहरी	सुनहरी
सोरभखी	बन्दूक
सोहड़	वीर, योद्धा
सोहळा	शादी के समय गाया जाने वाला एक गीत

'ह'

हड़ांवाय	खदेड़े
हथनाळ	बन्दूकें, हल्की तोप
हथलेवोय	गठबंधन
हनोज	अभी तक
हमरोटियां	ऊमरकोट की स्त्रियां
हणणाट	हिनहिनाट
हरखांणी	प्रसन्न हुई
हरणांखुर	घोड़ा
हाकड़ौ	एक विस्तृत नदी का नाम
हीणाय	हीन, कान्तिरहित
हुतब	होनहार
हेकधड़ै	एक साथ
हेतारथ	प्रेम सम्बन्ध
हेरूअ	पीछा करने वाला
होफरती	प्रचंड आवाज करती हुई।



परिशिष्ट – ३

शुद्धि-पत्र

पृ. सं.	पं. सं.	अशुद्ध	शुद्ध
3	11	हरिया माली	हरियामाली
5	8	वोघ	वोध
7	13	पर गहै	परगहै
7	20	सैं है	सैंह
8	14	घणीह	धणीह
9	27	कत हूंरू	कथ हूं रू
10	17	भड	भड़
15	7	वांहनकरै	वाह न करै
20	23	डीलियां	डोलियां
30	6	उगनूं	उग नूं
32	25	मखरं	भखरं
34	23	जवरेल	जथ रैल
40	18	मणले	मण ले
40	26	रागपाल	रामपाल
49	16	करकंद्रप	कर कंद्रप
51	6	ध्रस लावै	ध्रसलावै
54	2	खत्रां	सत्रां
59	3	नगरां	नगारां
65	2	देवर	देव रै
67	16	मारे	मोर
70	17	हवसाण	हव सूण
74	5	सुरंगद कूल	सुरंग दकूल
74	19	खजै	सजै
74	24	कुंआँ रखव	कुंआंर खंवा
75	4	आसवा	आसव

78	2	वंधस नै	वंध सनै
78	24	सखो	सीख
79	2	घड़ी कनरैं	घड़ीक न रैं
85	1	सदमारां	सद मोरां
85	6	सीस	सीम
86	11	सेर	सोर
86	20	कुस मांडव	कुसमांडव
87	19	कीट	कीन
88	14	करा एठिय	कराएठिय
90	19	घीचोजै	घीचीजै
91	13	खेहांखमां भल़	खेहां खमाभल़
92	2	जघसो	जावसो
93	6	सूरांतर	सुरांतर
100	6	धट	घट
102	12	थांधाभ	घांधल
104	1	अंग मसो	अंगम सी
105	15	भीडत	भीड़त
107	17	जोवरा	जोगरां
113	3	मगती	मुगतो
114	8	खोखलई	खोस लई
115	5	किस	किम
119	3	धरवा	भरवा
119	23	पखराललांय	पखरालांय
122	10	विरियां मांने	वरियांमां नैं
122	25	कमठां गुराले जमतांरा	कमठांगुरा लेजम तांरा
123	2	प लवीट	पल वींट
123	9	रावजरी	राव जरी
124	21	करा एठिय	कराएठिय
131	2	ऊपरै ठोक	ऊपरैठो कनोती
132	4	त्रिधाई	त्रिघाई
132	21	घावली वार	धावल़ी वार
132	26	जख	जग
136	21	भूरा रोलू	भूरा रा लूं
141	12	वरा चक	वराछक
148	14	सम रुखल़	समरू खल़

148	23	रीठन त्रीठ	रीठ नत्रीठ
149	13	जल़	भल़
152	24	हृथ लाल	हृथनाल़
154	3	पेमड़ाराय	तेंमड़ाराय
170	12	साल़ खला	साल खळां
172	8	घावै	थावै
174	9	द्वाज	द्विज
174	12	वादळ	वाळद
175	22	पोथल	पीथल
175	27	सोकरां	सोक रा
191	16	चरंग	सरंग
229	11	पालणै	पाल नै
231	20	ऐसीम	ऐसो म
235	14	सवे खौवालि़यौ	सवेगो वालि़यौ
237	15	ऊतो लेह	ऊतोलेह
338	16	कंठी रवनां दरौ	कंठिरव नाद रो
238	16	जय	जल़
242	19	नर वाही	नरवाही
244	6	तड़ तागत	तड़ता गत
245	5	पुण चगळ	पुणच लग
246	14	केरड़ी	करड़ी
249	28	सदना सतक	सद नासतक
250	11	दस	दिस
251	11	खं धार	खंधार
251	16	उथल तौ	ऊथलतौ
256	17	दुष्ट	दिष्ट